समकालीन मलयालम कहानियां

अंतर्भारतीय पुस्तकमाला

समकालीन मलयालम कहानियां

संपादक

एम. मुकुंदन

अनुवादक

पी. लक्ष्मी कुट्टिअम्मां

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

प्रथम संस्करण : 1976 (शक 1898)
प्रथम आवृत्ति : 1990 (शक 1912)

रु. 16.00

Original title : Samkaleen Malayalam Kahaniyan (*Malayalam*)
Hindi translation : Samkaleen Malayalam Kahaniyan

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क,
नयी दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित।

भूमिका

सन् 1930 से 1950 के बीच का समय मलयालम कहानी का स्वर्ण युग था। इसी काल में मलयालम कहानी-साहित्य विकसित और प्रौढ़ हुआ।

सन् 1930 से पूर्व भी मलयालम में अनेक मौलिक कहानियां प्रकाशित हो चुकी थीं। माना जाता है कि मलयालम में पहली मौलिक कहानी सन् 1894 ई. में प्रकाशित हुई। इसके लेखक मूर्कोत्तु कुमारन थे। बाद में इनकी सौ से अधिक कहानियां प्रकाशित हुईं। सचमुच इन्हें मलयालम कहानी का जन्मदाता माना जा सकता है। इस शताब्दी के तीसरे दशक तक कहानी विधा मलयालम में पांव नहीं जमा पायी थी। उस समय की कहानियां शिल्प-सौंदर्य रहित तथा कोरी वर्णनात्मक थीं। मंगल पर्यवसायी विवाह या वीर एवं अद्भुत कृत्यों पर आधारित विषयों पर कहानियों की रचना हुई।

पहली कहानी के प्रकाशन के चार दशकों के बाद ही मलयालम में असली कहानी का जन्म हुआ था। विश्व साहित्य के 'एडगर एलन पो', 'चेखव' आदि कहानीकारों की कहानियों के अनुवाद मलयालम में प्रकाशित होने लगे। अधिकतर लेखकों को अंग्रेजी भाषा का समुचित ज्ञान भी था। नये कहानी-संकेतों को जानने के लिए यह जानकारी सहायक रही। धीरे-धीरे 'मोपासां' व 'चेखव' की कहानियों का 'शिल्प-विधान' व 'सौंदर्य' मलयालम की कहानियों में भी दिखने लगा। साथ ही कहानी व्यक्तिपरकता के स्तर से वस्तुपरकता के स्तर पर आ गयी। रूस की क्रांति तथा उसके फलस्वरूप उद्भूत नयी सोशलिस्ट स्टेट प्रगतिशील मार्क्सवादी कहानीकारों का प्रेरणा स्रोत रहा। इस युग के कहानीकारों में 'तकषि', 'केशवदेव', 'पॉनकुन्नम वर्कि' आदि सर्वप्रमुख थे।

लगभग इसी काल में 'फ्रायड' के मनोविज्ञान व दमन, आशाभंग, कुंठा आदि

का भी मलयालम साहित्य पर असर पड़ा। वैज्ञानिक जागरण, नवीन संकेतों के प्रवाह आदि में अपनी प्रतिभा को पहचानने व अपने ही मार्गों से चलने तथा इसके द्वारा कथा-साहित्य का विकास करने में इस युग के कहानीकार सफल हुए। 'तकषि', 'वर्कि'व 'चेरुकाट' सोशलिस्ट रियलिज़्म (समाजवादी यथार्थता) को बल देने वाले थे। 'पोट्टेक्काट' ने स्वच्छंदतावाद का शीश महल खड़ा किया। इन धाराओं से अछूते रहकर अपनी ही प्रतिभा के बल पर बषीर ने मलयालम कहानी साहित्य को अमूल्य योगदान दिया। मलयालम कहानी-साहित्य का यह स्वर्ण-युग कहा जा सकता था। उपर्युक्त कहानीकारों के बाद के कहानीकारों में 'पारप्पुरत्तु', 'मलयाट्टूर रामकृष्णन', 'सी. राधाकृष्णन', 'उणिकृष्णम पुतूर' आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। मलयालम कहानी साहित्य में इन कहानीकारों का योगदान भी अमूल्य था।

समाजवादी यथार्थवाद के इन प्रामाणिक कहानीकारों के बाद मलयालम कहानी में दो प्रतिभाशाली कहानीकार हुए—'एम. टी. वासुदेवन नायर' तथा 'माधवी कुट्टि'। 'वासुदेवन नायर' की कहानियां शिल्प सौंदर्य के सर्वोत्तम नमूने थे। मलाबार प्रदेश के पतनोन्मुख नायर परिवार को अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए जो कष्ट उठाने पड़े तथा बाद में उनका जो पतन हुआ, वे ही 'वासुदेवन नायर' की कहानी के प्रतिपाद्य विषय रहे। जबकि 'माधवी कुट्टि' ने बड़े शहरो में बिछुड़े एकाकी व्यक्तियों तथा स्त्री-पुरुष संबंधों पर आधारित इतिवृत्तों को इसी शिल्प चातुरी से प्रस्तुत किया।

इन वादों से अछूता रहकर मलयालम भाषा साहित्य का पोषण करनेवाले कहानीकारों में 'एन. पी. मुहम्मद', 'एम. गोविंदन', 'पट्टत्तुविला करुणाकरन', 'जयदेवन', 'तुलसी' आदि हैं। मेरा नाम भी इनमें जोड़ा जा सकता है। 'मुहम्मद' की कहानियों की खूबी यह थी कि उनके कथापात्रों में अधिकांश दैनिक जीवन के नाना प्रकार के झंझटों के ऊपर अपनी आत्मसत्ता को बनाये रखते थे। मुसलमानों के जीवन के सुख-दुख भी 'मुहम्मद' की कहानियों को लय प्रदान करते हैं। अपने गांव के झरने के समान उनकी शैली भी स्वच्छ और सुंदर थी। कभी-कभी उनकी भावना कुरान और पुराणों की कहानियों में विचरण करती दिखाई देती है। 'एम. गोविदन' तो कहानीकार के साथ-साथ चिंतक, प्रबंधकार व कवि भी हैं। दार्शनिक बुद्धि व प्रकांड पांडित्य दोनों उनकी कहानियों को गहराई एवं व्यापकता

प्रदान करते हैं। 'पट्टत्तुविला करुणाकरन' ने बहुत कम ही लिखा है, तो भी उनका कहानी जगत में एक विशिष्ट स्थान है। उनकी प्रतिपादन शैली की अपनी अलग विशेषता है। 'करुणाकरन' की कहानियों के नायक-नायिकाओं में अधिकांश मोह-भंग या कुंठाओं के शिकार बुद्धिजीवी या बुद्धिवाद से प्रभावित लोग है। वे मार्क्स-वाद को स्वच्छंदतावाद का रूप देते हैं। 'करुणाकरन' की कहानियां 'वासुदेवन नायर' या 'माधवी कुट्टि' की कहानियों के समान सर्वसम्मत नहीं हैं। तो भी वे नयी मलयालम कहानी के लिए अमूल्य देन है। प्रारंभिक काल में 'तुलसी' ने ऐसी स्वच्छंदतावादी कहानियां लिखी जो अत्यंत हृदयस्पर्शी भी थीं। बाद में उनकी कहानियां नये-नये कहानी-संकेतों की परीक्षणशाला ही बन गयीं। और सीमित जगत में भटकनेवाली नैसर्गिकता की धड़कन को ही इनके कथापात्र अभिव्यक्त करने लगे।

पुरानी पीढ़ी के कहानीकारों का ध्यान कथा के रूपविधान पर न होकर भाव-विधान पर था। 'तकषि' व 'केशवदेव' की कहानियों की शैली कथावस्तु प्रधान थी। उनकी कहानियों का ओज भी उनमें उभर आनेवाली जिंदगीमात्र रह गया। दैनिक जीवन की समस्याओं में उलझी उस पीढ़ी को शब्दों की क्षमता को खोजने का समय नही था। दैनिक जीवन के मोह व मोहभंग से उन्होंने कहा-नियों को रूप दिया। लेकिन नयी पीढ़ी इस प्रयत्नमात्र से तृप्त नही हुई। जिंदगी के यथार्थ चित्रण मात्र से वे संतृप्त न हो सके। उसमें 'वासुदेवन नायर' अग्रणी हैं। उनकी कहानियों की चेतना स्पंदित जिंदगी ही है। बल्कि उस जीवन चेतना को वे काव्यात्मक सौंदर्य प्रदान करते हैं। मलयालम कहानी 'वासुदेवन नायर' की कहानियो के साथ भावगीत के निकट पहुंच सकी। 'एन. मोहनन' व 'जयदेवन' उनकी ही शैली को अपनाकर आगे बढ़े। 'जयदेवन' की अनेक कहानियां कविताएं मानी जा सकती हैं। उनके द्वारा प्रयुक्त होने वाले शब्द घुंघरू के समान झन-झन करते है। 'एन. मोहनन' कहानी को काव्यात्मकता देने में 'वासुदेवन नायर' से भी आगे हैं। उनकी कहानियों की पृष्ठभूमि व्यापक नहीं है। अकसर उनमें गहराई व व्यापकता नही पायी जाती। फिर भी उनमें हृदय को द्रवीभूत करने की अद्भुत शक्ति है। नयी प्रतिपादन शैली की खोज में बहुत दूर तक पहुंचा हुआ एक दूसरा कहानीकार है 'कोविलन'। वे प्रारंभिक दिनों में 'नंतनार' व 'पारप्पु-रत्तु' की तरह केवल फौजी कहानियां ही लिखा करते थे। पर 'नंतनार' की शैली

उन्हें नहीं मिली। 'मोहनन' की कहानियों की कोमलता 'कोविलन' की कहानियों में नहीं। भाषा की दुरूहता के कारण उनकी कहानियों की संवेदनात्मकता नष्ट हो जाती है। 'कोविलन' की कहानियों में झनझनाते मधुर शब्द कहीं भी सुनाई नहीं देते। उनकी शैली में काले पत्थर के कंकरों की तीक्ष्णता है।

समाजवादी यथार्थता एवं स्वच्छंदतावाद को पार कर मलयालम कहानी आधुनिक दशा में पहुंच गयी है। नयी कहानी को आधुनिक कहानी की संज्ञा दी गयी है। इस आधुनिक काल के कहानीकार हैं 'काक्कनाटन', 'ओ. वि. विजयन', 'एम. पी. नारायण पिल्लै' आदि। और मैं भी। मलयालम में नयी प्रवृत्तियों का सूत्रपात कहानी में ही हुआ था। करीब बारह साल पूर्व इस आधुनिकता का बीज पड़ा। यह कहना मुश्किल है कि प्रथम आधुनिक कहानी कौन-सी है क्योंकि आधुनिक कहानी किसी एक दिन की उपज नहीं है। नवीन कहानियों के बीज 'वासुदेवन नायर' व 'मोहनन' की कतिपय कहानियों में पाये जाते हैं—खासकर कहानी की तकनीक की दृष्टि से। नवीनता के प्रति अतीव मोह 'मोहनन' की कहानियों में दिखाई देता है। आधुनिक कहानीकारों की खूबियों में एक यह भी है कि परंपरा या सदाचार बोध उनकी आत्माभिव्यक्ति में बाधा उपस्थित नहीं करते—यह बात विशेष उल्लेखनीय है। बषीर की कहानियों की भी यह खूबी रही। शिल्पविधान की दृष्टि से आधुनिकता के मूल्यों की पकड़ 'वासुदेवन नायर' की कहानियों तक है और भावपरकता की 'बषीर' की कहानियों तक।

आधुनिक कथा का श्रीगणेश पूरी तरह से सन् 1960 के बाद ही हुआ। युवक लेखकों के एक दल ने इसका सूत्रपात किया था। 'एम. पी. नारायण पिल्लै' की कहानी 'जार्ज आरामंटे डायरी' (जार्ज छठे की डायरी) पढ़कर पाठक दंग रह गये। 'नारायण पिल्लै' के साथ कहानी-जगत् में पदार्पण करनेवाले कहानीकारों ने 'जार्ज आरामंटे डायरी' से भी अधिक आश्चर्यजनक कहानियां लिखीं। 'ओ. वि. विजयन' की 'एटटुकालो' (मकड़ी) तथा 'तीडम' (मल) आदि कहानियों ने पाठकों को चौंका दिया। इनमें पहली कहानी यौन विकृति के बारे में थी तो दूसरी कहानी मल (मालिन्य) के बारे में।

आधुनिक कहानियों की खूबियों में मुख्य बात यह है कि उसने परंपरागत मोह से अपने को छुड़ा लिया है। ऐसा मालूम होता है कि समाजवादी यथार्थता से कहानी के ढांचे में हेर-फेर नहीं हुआ। परिवर्तन अधिकतर भावाधिष्ठित था।

स्वच्छंदतावाद के युग में इसका उल्टा परिणाम हुआ—विकृतियां शिल्पविधान में अधिक दिखाई पड़ीं। आधुनिकता से उद्‌भूत परिवर्तन भाव और शिल्प में समान रूप से प्रत्यक्ष हुए। कहानी के भाव एवं रूप समूल परिवर्तन के शिकार हो गये। 'तकषि' और 'काक्कनाटन' की कहानियों में जमीन-आसमान का फरक है। 'कारूर' व 'वेट्टूर' की सी प्रारंभ, मध्य और अंत की कहानियां आज देखने को नहीं मिलतीं। आधुनिक कहानियां प्रायः साप्ताहिक पत्रिका के दो-तीन पृष्ठों की ही होती हैं। न कथावस्तु का क्रमिक विकास, न किसी एक मोड़ पर उसकी समाप्ति। आधुनिक कहानियों में कथावस्तु भी अनिवार्य नहीं। रूप और भाव की सही पहचान करना भी मुश्किल है। ये दोनों आपस में घुलमिल गये हैं। 'काक्कनाटन' की कहानियां इस हेलमेल के सर्वोत्तम नमूने हैं। उनकी कहानियों में रूप—भाव का संपूर्ण मेल है। आधुनिक कहानी एक विस्फोट है। क्षणिक होने पर भी उनका प्रभाव तीव्र कंपन पैदा करता है।

रूढ़िवाद से मुक्ति नवीन कहानीकारों के लिए एक वरदान सिद्ध हुआ। आत्मान्वेषण के नये रास्ते उन्हें दृष्टिगोचर होने लगे। समाज से बिछुड़े व्यक्तियों की रचनात्मक चेतना की फल हैं—ये आधुनिक कहानियां। 'विजयन' की कहानियां 'काक्कनाटन' की कहानियों से बहुत भिन्न है। 'पुनत्तिल कुंजब्दुल्ला' की कहानियां 'सेतु' की कहानियों जैसी नहीं हैं। समाजवादी यथार्थवाद के समर्थक कहानीकारों की रचनाएं जीवन के प्रति उन सबके एक ही दर्शन का प्रतिफलन थी। 'तकषि' 'वर्कि' व 'चेरुकाड' को मिलानेवाली शृंखला भी यही थी। लेकिन इस प्रकार के किसी खास दर्शन या उद्देश्य का अभाव आधुनिक कहानी-कारों को आपस में मिलाता है।

दूसरी भाषाओं के कहानीकारों के समान मलयालम के आधुनिक कहानीकारों में वैचारिक भिन्नता है। वे संदेहवादी अधिक होते हैं। जिंदगी के प्रति दुविधा उनकी कहानियों मे अंधेरा फैला देती है। कभी-कभी समाज में फैले मूल्यविघटन के विरुद्ध कुछ कहानीकार भभक उठते हैं। एम. सुकुमारन का नाम इसमें विशेष उल्लेखनीय है। पुरानी पीढ़ी के कहानीकारों के पास लिखने के लिए काफी सामग्री थी। सामाजिक जीवन में आयी नवचेतना से वे काफी प्रभावित हुए। पर नये कहानीकारों का युग सामाजिक स्थिरता का युग था जिसकी चेतनधारा सूख गयी और दिन-ब-दिन मूल्य घट रहे थे। एक समाजसुधारक की भांति वे भाषण नहीं

देते। दैनिक जीवन के दर्दनाक प्रश्नों का प्रभाव उन पर नहीं पड़ा। उनके प्रश्नों में अधिकांश अतिभौतिक होते हैं। किसी एक स्पष्ट आदर्श की कमी ने नये कहानीकारों को दिशाहीन बना दिया है। वे अंधों के समान विभिन्न दार्शनिक मान्यताओं में भटकते रहते हैं। कोई अस्तित्ववाद को गले से लगाता है, तो दूसरे सर्वखंडनवाद (निहिलिज) को छाती से लगाते हैं। एक आधुनिक कहानी का पात्र कहता है "चितेरों का नाश हो, अराजकता के प्रचारकों का नाश हो। श्रमिक जातियों का नाश हो। जनतंत्रवादियों का नाश हो। पूंजीपतियों का नाश हो। कुलीनों (अरिस्टोक्रेट्स) का नाश हो। सबका सर्वनाश हो।" 'ज्यां पाल सात्र' के समान ये नये कहानीकार अनस्तित्व की स्थिति से सब को पुन: आरंभ होते देखना चाहते हैं।

आधुनिक कहानीकार परस्पर विरोधी रास्ते से होकर चलते हैं। बल्कि उनमें से कुछ के विचार आत्मान्वेषण के केंद्र पर आकर मिलते हैं। वे लगातार स्वयं प्रश्न करते रहते हैं "साहब मैं एक रास्ता ढूंढ़ रहा हूं।" "मुक्ति का रास्ता" (1)—(पुरत्तेवकुल्ला वषि)—'काक्कनाटन' "सही गलत के उस पार क्या है ? भूत, भविष्य व वर्तमान के पार क्या है ?" (2) "(नचिकेतन यमदेवनोडु चोतिच्चुत)—नचिकेता ने यमराज से जो पूछा"—'पट्टत्तुविला करुणाकरन'।

आधुनिक कहानीकार के लिए कोई भी शब्द या प्रयोग वर्जित नही। शब्दो की यह स्वतंत्रता आधुनिक कहानीकारों का योगदान है। पुराने संकेतों को अपनी आत्माभिव्यक्ति के लिए अपर्याप्त जानकर वे शब्दों व प्रयोगों की क्षमता की खोज-खबर में बहुत दूर तक भटकते फिरे। शब्दों व प्रयोगों के चुनाव में वे पूर्णत: स्वतन्त्र हैं। जिनको पुरानी पीढ़ी अछूता या वर्ज्य मानती थी, ऐसे शब्दों का वे प्रचुर मात्रा में प्रयोग करने लगे। यह आजादी आधुनिक कहानीकारों की रचना-शक्ति को गति देती है। स्वतंत्रता की लहरों में कही-कहीं विषय की प्रमुखता लुप्त हो जाती है। कहानियां कभी-कभी तीव्र व्यक्तिगत अनुभूतियों की अभिव्यक्ति मात्र रह जाती हैं। 'काक्कनाटन' तो भारतीय पौराणिक कथाओं व निगूढ़ विज्ञानों में ये अनुभूतियां ढूंढ़ निकालते हैं। 'नारायण पिल्लै' इनकी खोज सर्पों व तंत्र प्रयोगों में पाते हैं। 'विजयन' अतियथार्थवादी (सुर्रियलिस्ट) हैं। कल के कहानी-कारों ने जिस चांदनी को चंदन लेप की संज्ञा दी है, आज के कहानीकार उसे चोटों से बहनेवाली मवाद का विशेषण देते हैं। समालोचकों का कहना है कि आधुनिक

मलयालम कहानी की यह जीर्णता, आधुनिक युग में हुए मानवीय मूल्यों के विघटन का परिणाम है।

पुरानी पीढ़ी के कहानीकारों में मार्क्सवाद का स्पष्ट प्रभाव था। समाजपरक यथार्थवाद के पतन के साथ, इस प्रभाव का भी लोप इन कहानियों में दृष्टिगोचर होता है। आधुनिक कहानीकारों में कई अपने को मार्क्सवादी मानते हैं। लेकिन वे चुप्पी साधे बैठे हैं। यहां भी आधुनिक कहानीकार की दुविधा ही मुख्य समस्या है। कभी न आनेवाली क्रांति के दुःस्वप्न 'पट्टत्तुविला करुणाकरन' व 'एम. सुकुमारन' की कहानियों में पाये जाते हैं।

'काक्कनाटन', 'ओ. वि. विजयन', 'एम. पी. नारायण पिल्लै' आदि कहानीकारों के साथ नयी कहानी का पोषण करनेवाले कहानीकार हैं 'सेतु', 'पद्मराजन', 'पुनत्तिल कुंजब्दुल्ला', 'सक्कारिया', 'ई. सुकुमारन' आदि। आधुनिक मलयालम कहानी प्रेमियों की मंडली में इनकी चर्चा लगातार होती रहती है। 'हरिहरन' का 'स्वप्न' एक मनोवैज्ञानिक कहानी है। नयी कहानी की आलोचना दोनों ओर से हो रही है। एक ओर तो रूढ़िवादी कहानीकार व पाठक हैं तो दूसरी ओर कम्युनिस्ट बुद्धिजीवी। आधुनिक कहानी इस आलोचना का सामना करते हुए अविचलित खड़ी है। यही नहीं, यह लगातार निखर भी रही है। आधुनिक कहानी अभी पूर्ण विकसित नहीं हुई। नये कहानीकारों में अधिकांश पैंतीस वर्ष से भी कम उम्रवाले हैं। उनसे मलयालम कहानी साहित्य को अमूल्य योग मिल सकता है। कुछ समालोचकों की राय है कि आधुनिक कहानी अपने जीर्ण-स्वभाव का उत्सर्ग करेगी तथा 'समाजवादी यथार्थपरक विचारधारा' जैसे स्वस्थ विचार-युक्त कहानी परंपरा के लिए मार्ग प्रशस्त करेगी।

—एम. मुकुंदन

क्रम सूची

1. सिर्फ एक कदम

जलता झुलसता जीवन और नगर की तड़क भड़क दोनों को पार करता हुआ यूसुफ नगर के फाटक के उस पार पहुंचा।

आकाश ऐसा दिखायी दे रहा था मानो मोती के दाने सुखाने को फैलाये गये हों। दूर पर अंधकार की तह में ढके हुए रेगिस्तान से हवा सांय-सांय करती बह रही थी। रेगिस्तान के मुख पर मस्से की तरह दिखायी देनेवाले नगर फाटक के उस पार मृत्यु के मुंह में पड़े ऊंट सिकुड़ कर सिमटे पड़े थे।

यूसुफ जरा रुका। उसने एक बार फिर उस शहर को देखा जिसने उसे पाप से पाला-पोसा था। उसने आह भरी।

नगर पाप से लोट-पोट हो गया। आसमान की ओर उठाये भालों के समान, ऊंचाई पर दिखती मस्जिदों की मीनारों पर बस्तियों का धीमा प्रकाश फैला था। नगर फाटक के ऊपर लटके चमगीदड़ का कुहकना सुनायी पड़ रहा था।

अब विदा लें।

खुला हुआ नगर फाटक। सोने के लिए उतावला नगर। उसके पैर डगमगा गये। नहीं ! मैं इस नगर के श्मशान में पहुंचनेवाला हूं। शेष दिन भी यहीं बिताऊंगा।

यूसुफ ने प्रजा को डराकर उस नगर पर शासन किया था। यूसुफ की टेढ़ी मूंछें, लंबी दाढ़ी, लाल-लाल आंखें तथा लंबा कुर्ता इन सबको देखते समय उसकी कमर पर लटकी तलवार जनता के मन की गहराई तक चुभ जाती थी। उसको देखने पर मातायें बच्चों को छाती से लगा लेतीं। पुरुष भय विह्वल हो जाते। वह उस नगर के लिए एक आतंक था।

यूसुफ ने सिर झुकाया।

दूर उतार-चढ़ावदार रेगिस्तान में कहीं भी प्रकाश का जुगनू दिखायी नहीं पड़ता था। कितनी दूर तक उसे जाना पड़ेगा, वह नहीं जानता था। जिससे मिलना है, उसका पता भी नहीं। वह कहां होगा ? यह भी मालूम नहीं। यूसुफ केवल इतना जानता है कि जन्म से लेकर आज तक के सुखपूर्ण जीवन से वह पीछे हटता आया है।

ज्यों-ज्यों वह पीछे हटता त्यों-त्यों विगत जीवन की स्मृति के मील के पत्थरों पर उसका मन जाकर टकराता था।

तब यूसुफ ने फिर मस्जिद की मीनारों से गूंजती हुई अजान की आवाज सुनी।

अल्लाहो अकबर—खुदा महान है।

प्रार्थना के आह्वान के साथ सब कुछ मन के अंदर कूट-कूटकर भरे रहते हैं। यह कैसे हुआ और क्यों हुआ ?

जब दीपक बुझ गये और आदमियों की आंखें मुंद गयीं, जब रेगिस्तान से होकर विरह-वेदना सहनेवाली आंधी जोर की आवाज से रोती थी तब उसकी लाल गोल आंखें दीप्त हो उठीं और म्यान में पड़ी तलवार हाथ में उठी। बंद दरवाजे उसके लिए खुल गये।

सोते हुए घर के स्वामी, उसके पास पड़ी हुई उसकी पत्नी, फर्श पर पड़े बच्चे। यूसुफ ने हथियार से संदूक खोला। लोहे के संदूक की आवाज सुनकर पति जागा।

"मेरे रब्बे···"

"चुप रह, बोला तो तेरी जीभ काट दी जायेगी।"

संदूक में छिपाई हुई रुपये की थैली निकालकर वह मुस्कराया।

यूसुफ की तलवार चमक उठी। चमकी तलवार का छोर लाल हो गया।

"अल्लाह।"

छाती पीट-पीटकर रोती हुई पत्नी, चीखते-चिल्लाते नन्हें बच्चे। यूसुफ को उनके चेहरे की ओर देखने की अब जरूरत नहीं रही।

तलवार खींचकर वह बाहर दौड़ा। कितनी रातें, कितने परिवार। रक्त को छहराता गला धड़ से अलग हुआ। डर से कांपती लड़कियों के कुरते उसने फाड़ डाले। वह एक आवेश था। उसका जी जो चाहता था, उसने किया। यूसुफ की करतूतों से लोग भयभीत हो गये थे।

यूसुफ।

जब वह राजपथ से आगे की ओर बढ़ता तब लोग उस रास्ते से हट जाते। उस लुटेरे के सामने राजमहल तक कांप जाते।

यूसुफ ने अंधकार से आच्छादित जंगल की तरफ देखा। क्या अंधकार दूर होता है ?क्या सूरज चमक रहा है ? यूसुफ के मन में बीते दिन जाग्रत रहते।

वह मुसाफिर और ऊंट धीरे-धीरे आ रहे थे। ऊंट की पैरों की छाप मरुप्रदेश पर पड़ी। मुसाफिर छिपे बैठे थे। चारों तरफ आग धधक रही थी। रेत की धूल लहरों की तरह बहती-बहती गिरती और रेगिस्तान में नये चिह्न और नये मार्ग खीचती थी।

"अरे रुक जा।"

मुसाफिर के हाथ की बागडोर ढीली हो गयी। ऊंट रुक गया। क्रोधी सूरज भभक उठा। सूखे होंठवाले उस आदमी का चेहरा साफ दिखायी न पड़ता था। माथा, नाक और कान कपड़े में लपेटे थे, केवल आंखे दिखायी दे रही थीं।

प्रश्न चिह्न अंकित आंखें।

यूसुफ ने आज्ञा दी—"उतर आ।"

मुसाफिर ने आज्ञा का पालन किया और नीचे उतरा। यूसुफ ने तलवार उठायी। प्रकाश में चमकनेवाली तलवार में रक्त का निशान देखनेवाला वहां कोई न था।

"तेरी थैली कहां ? दे दे।"

उन सूखे होठों पर मुस्कराहट आयी।

"बस इतनी सी बात के लिए इतना गुल करता है ?"

उसने थैली निकाली और दोनों हाथों से उसे भेट कर दी।

"अल्लाह के वास्ते तुम इन्हें अपने परिवार की भलाई के काम में खर्च करना।"

इस बात ने यूसुफ को विशेष रूप से प्रभावित किया। किसी ने उससे ऐसी बातें कभी न कही थीं। लोग धन की थैली देने में हिचकते थे और यूसुफ उसे छीन लिया करता था। कोई-कोई चीखते-चिल्लाते थे। कुछ लोग डर के मारे कांपते थे।

"तेरी गठरी में क्या है ?"

"ओ हो, मैं धन की थैली के साथ अपनी गठरी और ऊंट को भी देना भूल गया। माफ करना।"

वह ऊंट से उतरा। यूसुफ चढ़ बैठा। वह चोरी की चीजें देखने लगा। कीमती रेशमी कपड़े, घड़े भर सोने की मोहरें, मेवे और हृष्ट-पुष्ट ऊंट। अब सब कुछ यूसुफ का हो गया।

कुछ सोचकर यूसुफ ऊंट से उतरा। मुसाफिर को तलाश किया पर वह दिखायी न पड़ा। चमचमाता सूर्य, छायाविहीन रेतीले वन। उसने दाहिना हाथ माथे पर रखा। दूर शून्य मैदान पर वह एक सफेद जंतु की तरह चलता रहा। चोरी की चीजों और उस आदमी की ओर यूसुफ का मन फिर आकृष्ट हुआ। इससे पहले यूसुफ ने कभी भी ऐसा न सोचा था, जिसको लूट लिया, लूट लिया।

वह ऊंट की पीठ पर फिर सवार हुआ। छड़ी लगायी। ऊंट आगे बढ़ा। यूसुफ फिर चिल्ला उठा।

"रुक जा।"

मुसाफिर रुक गया।

यूसुफ उसे एकटक देखता रहा। दाग लगे तांबे जैसे उस मुख पर नीले रंग की छोटी आंखें। काली गोल दाढ़ी पर हाथ फेरा और वह यूसुफ को देखकर हंस पड़ा।

"भइया, क्या चाहिये ?"

वह न यूसुफ से भयभीत था, न डगमगाया, प्रसन्नचित्त डटा खड़ा रहा और पूछा,

"मेरी चादर चाहिये क्या ?"

"नहीं चाहिये।"

"मेरे जूते चाहिये क्या ?"

"नहीं।"

"मुझे गुलाम बनाकर बेचना चाहता है क्या ?"

"नहीं।"

"तो फिर तुम्हें और क्या चाहिये ?"

"तू कौन है ?"

"मैं, मैं तुम जैसा एक मनुष्य।"

"लुटेरा है क्या ?"

मुसाफिर हंस पड़ा।

"हो सकता है। मगर तुम्हारी तरह मैंने लोगों को धमकी देकर धन नहीं कमाया। उनमें व्यापार का मोह बढ़ाकर सामानों का लेन-देन लाभ से कराकर धन कमाया है।"

"तेरा नाम क्या है ?"

"यह जानने से तुझे क्या लाभ होगा ? मैं एक मुसाफिर हूं। क्षणभंगुर मनुष्य।" मुसाफिर फिर हंस पड़ा।

"तेरा वतन कहां है ?"

"खुरासान।"

यूसुफ सन्नाटे में रह गया। लोगों से मीठी बातें करने की आदत अभी तक सीखी नहीं। सामने खड़े आदमी से उसे कुछ और कहने को नहीं था।

मुसाफिर धीरे-धीरे तपे हुए रेतीले मैदान में चलने लगा तो पैरों तले की रेत के कण चारों तरफ फैल गये। यूसुफ ने उसे देखा। कुछ देर वहीं खड़ा रहा। वह ऊंट पर चढ़ा। धीरे-धीरे शहर की तरफ चल पड़ा।

यूसुफ ने बहुत कुछ लूट लिया। सोना लूटा, उस लूट की शराब पी, शराब के बुल्लों के साथ अदृश्य हो गये। लूटी हुई सोने की गिन्नियों से उसने जुआ खेला और सोना जुए में हार गया। फिर भी यूसुफ ने चोरी की, हत्या की। मोहर पानी की तरह बहाई और लाशें मरु-भूमियों पर पड़ी सूखकर चूर्ण-चूर्ण हो गयीं।

दिन बीत गये। पर मन के अज्ञात कोने में वह मुसाफिर जीवित रहा। उसके हृदय में अंदर-ही-अंदर वह पथिक यूसुफ को बेचैन करता रहा। भयभीत पड़े आदमियों से वह कैसे बेहतर है ? यूसुफ के मन में भय की पतली बत्ती जलने लगी। उस फीके प्रकाश में उसने अपने जीवन में अंधकारपूर्ण पहलू को देखा। यूसुफ चौंक पड़ा। नौजवान लड़कियों की शादी के लिए बचाये धन, उस रात के अंतिम पहर पर उसने डकैती की थी तब तलवार के वार से चोट खाकर गिरे पिता के सामने पत्नी और बच्चे फूट-फूट कर रो पड़े थे तब उनको जीवन का एक नया अर्थ दिखायी दिया। यह सब सोचकर यूसुफ भौंचक्का रह गया।

यूसुफ ने डरावने स्वप्न देखे। जाग पड़ने पर शरीर पसीने से तर और पीला

पड़ जाता था। हाथ-पैर शिथिल हो जाते थे। लोगों को देखने पर उसका हृदय दुख विह्वल हुआ करता था। यूसुफ सिर झुका-कर चलता था, परिचित नगर उसे देखकर सिर झुकाता था, तब यूसुफ अभिमान का अनुभव करता था। नये यूसुफ को वे नहीं जानते थे। वे केवल लुटेरे यूसुफ को ही जानते थे। यूसुफ को मस्जिद में जाने के दिन स्वयं याद आये। मीनार के ऊपर सफेद दाढ़ी, खुला रखा हुआ कुरान, विशेष लय से पढ़नेवाले मुफ्ती अब्दुल रफान ने यूसुफ को न देखा था। उनकी आंखें बंद थीं। यूसुफ ने कुछ कहा।

मुफ्ती यूसुफ को देखते ही डर गया। यह दुष्ट मस्जिद में भी घुस आया।

भयभीत मुफ्ती से उसने मन की सारी बातें कह सुनायी कि उसके मन को बिलकुल शांति नही। कुछ काम करना संभव नही। यह नगर उसका गला घोंट चुका है। खुरासान के व्यापारी की कथा सुनायी।

यूसुफ में जो परिवर्तन आया उससे मुफ्ती दंग रह गया। उन्होंने ईश्वर को धन्यवाद दिया।

"मुफ्ती, मुझे अच्छाई की ओर ले चलिये।"

यूसुफ की आंखें दीप्त हो उठीं। उसमें एक विशेष परिवर्तन आया।

"यूसुफ, तुम्हें इसकी मानसिक शक्ति है?"

"मुझमें आदमियों को मारने की ताकत थी।"

"क्या वह ताकत अब भी है?"

यूसुफ जवाब न दे सका। मुफ्ती ने जवाब सुनना भी न चाहा। उन्होंने पूछा--

"जानते हो तुम्हारे गुरूदेव कौन हैं?"

"मेरे गुरू नहीं।"

"हैं।'

"नहीं, मुफ्ती साहब।"

"हां, तुम्हारे गुरू वही खुरासान के व्यापारी हैं। उनकी खोज करो और उनसे सीख लो। तब तुम भलाई पर पहुंचोगे।"

नगर फाटक पर पहुंचते ही बीती घटनाओं की याद ताजा हो गयी। विगत अंधकारपूर्ण भूमि को उसने अपनी आंखों के सामने तैरते देखा। यूसुफ का अब ऊंट नहीं। मालूम नहीं कि खुरासान का व्यापारी जिंदा है या मर चुका।

वह व्यापारी अब खुरासान में ही है या और कही व्यापार के लिए चला गया ?

यूसुफ जानता था कि वह यात्रा लक्ष्यहीन है। फिर भी उसने नगर को देखकर आहें भरीं। पाप में डूबा हुआ नगर। पापों से उसको पालने-पोसने वाला नगर। यहां मैं आदमी नहीं था।

"लुटेरा यूसुफ था।"

विकारों ने उसके मन को फंदे में फंसाया था।

यूसुफ ने अंधकार में पैर रखे।

यूसूफ चला गया। रास्ते के किनारे भूमि पर लेट कर सोया। रूखा-सूखा खाना खाया। भूखे-प्यासे दिन, और वे रातें। मरुभूमि में सूरज का उदय और अस्त हुआ। लाल झिलमिलाते सूरज ने दूर तक फैले, झपकी में पेड़, रेगिस्तान को प्रकाश और गरमी दी। बालू के टीले हवा में तितर-बितर हो गये। रेत के गड्ढों से पैर बाहर निकालना तक उसके लिए कठिन हो गया।

वह इसी तरह रेगिस्तान में फिरता रहा। उसका दाहिना पैर रेत के गड्ढे में फंस गया। यूसुफ का मुख पीला पड़ गया। शरीर पसीने से तर हो गया। कुरता फट गया। थकान से गढ़े में पड़ी लाल आंखें।

रेत की आंधी की झंकार गूंज उठी।

नहीं, रेत के गड्ढे से वह पैर ऊपर उठा नहीं सकता। यूसुफ जमीन की गहराई में धंस जाता है क्या ?

उसने पूरी ताकत लगाकर पैर खींच लिया। पैर फिसल गये। पैरों के चारों ओर रेत के कण जोंक के जैसे जोर से काटते हैं।

यूसुफ की आंखें भीग गयीं। धुंधले प्रकाश मे झिल्ली पड़ी आंखों के उस पार एक सफेद जंतु की तरह खुरासान का व्यापारी चलकर अदृश्य होता है ?

'यार।' रेतीली आंधी के झोंके में वह आवाज गूंज उठी।

रेत लहरों की तरह गरजती चारों ओर तितर-बितर होती है।

यूसुफ के हृदय की धड़कन बढ़ गयी। वह रोया 'अल्लाह।'

उसके साथ वह आगे बढ़ा। उंगलियां रेत के गड्ढे से बाहर निकली। उस वेग में वह झट गिर पड़ा।

जहां गिरा था वहीं से वह हाथ के सहारे सरकने लगा। हाथ शिथिल हो गये थे। एक कदम आगे सरका, केवल एक कदम।

एक कदम आगे बढ़ने पर जो सीधी रेखा खींची वह एक पल तक रेत में दिखायी पड़ी। हवा के झोंके से वह रेखा अदृश्य हो गयी। आंखों की पहुंच के परे दूर-दूर फैला हुआ रेगिस्तान मात्र।

यूसुफ हाथ गाड़ न सका। शिथिल मांस की तरह उसका शरीर गरम रेत से सट गया। सूरज की निष्ठुर रश्मियां उसके कानों में चुभ गयीं, उसे खांसी आयी। वह कराहने लगा। उसे ऐसा लगा मानो उसका कलेजा कोई तोड़े डाल रहा है। मुंह खुल गया।

सूरज धधक उठा। रेतीला तूफान शोर मचाकर चलता रहा।

किसी नें न देखा, किसी ने न जाना। हजार आदमियों के हत्यारे यूसुफ ने एक बूंद पानी के लिए सिर हिलाया। सिर फेरा। पर हिल न सका।

आसमान, जो कमान की आकृति का है, दूर पर घुटने टेके पड़ा है। क्षितिज से बादलों के टुकड़े एक-एक कर गिरते दिखायी पड़े। विदीर्ण आसमान से सफेद पक्षियों के समान बादलों के टुकड़े उड़ते रहे। वे सफेद फूल मरुभूमि की ओर उतर आये। यूसुफ ने आंखे बंद न कीं। खुले पंखवाले फरिश्ते यूसुफ के दाहिनी ओर आकर खड़े हुए।

यूसुफ सब कुछ देख सकता था।

बादलों के टुकड़े फिर भी नीचे उड़ आते। पंखवाले फरिश्ते। वे जमीन पर उतर आये। यूसुफ के बायीं ओर वे खड़े हो गये।

बीच में एक ओर लेटा हुआ यूसुफ। दोनों तरफ फरिश्ते।

दाहिने ओर के फरिश्तों ने जब उसे उठाने को हाथ बढ़ाया, तब बायीं ओर के फरिश्तों ने रोका—

"यह हमारी आत्मा है।"

दाहिने हाथ के फरिश्तों ने पूछा—

"तुम कौन हो?"

"हम स्वर्ग के पहरेदार देवदूत हैं।"

"प्यारे। तुम्हें भूल हुई है। हम इसे नरक की तरफ ले जाने के लिए आये है।" बायीं ओर के फरिश्तों ने कहा।

देवदूतों ने उसकी आत्मा के लिए झगड़ा किया। यूसुफ सब कुछ देख रहा था। सुन रहा था, पर उसके हाथ ऊपर न उठे। होंठ न हिले। शरीर में

गरमी नहीं थी। वह आंखों के सामने आइने की तरह सब कुछ देख सकता था।

"हजार आदमियों का हत्यारा पापी है यह। नरक का अधिकारी।"

"यह सब बात ठीक हो सकती है। पर इसने पश्चाताप कर लिया था।"

"कसूर करने के बाद पश्चाताप करने से क्या फायदा ?"

"सात्विक जीवन बिताने के लिए इसने शहर छोड़ा।"

"किसी का कर्म ही मर्म है। यह बुराई का प्रतीक है।"

"यूसुफ बुराई से बच गया था।"

"नहीं।"

"वह भलाई की तरफ बढ़ रहा था।"

"उद्देश्य की शुद्धी प्रधान है न ?"

"उद्देश्य की शुद्धी ही प्रधान है।"

"यह नरक का अधिकारी है।"

"यह स्वर्ग का अधिकारी है।"

"हम दोनों ईश्वर की सेवा करनेवाले हैं। नरक के पापी के लिए झगड़ा करना ठीक नहीं।"

"हमें झगड़ा नहीं करना है। पर स्वर्ग के अधिकारी को नरक की तरफ भेज दें तो कर्तव्य से विचलित हो जायेंगे।"

"नही।"

"दूर के नगर से आया है, यह देखो, इसकी कमर में न तलवार है, न हाथ में थैली। यह अच्छा बनने निकला था।"

नरक के फरिश्तों ने उसके आमाल नामें की फिर से जांच की। स्वर्ग के दूतों ने जो कुछ कहा, सब ठीक निकला।

"लेकिन इसका पूर्व इतिहास।"

"जिसका पिछला इतिहास काला है ऐसे कितने पापी फिर महात्मा बन गये हैं।"

"खैर, उनका कर्म ही उनके महत्व का प्रमाण है।"

"जैसे यूसुफ का यह कर्म भी।"

"यूसुफ का सत्कर्म बताओ।"

"यह यात्रा, भलाई की तरफ की यह यात्रा।"

"वह कहां जा रहा था ?"

"खुरासान की तरफ। वहां के एक व्यापारी ने उसको भलाई की सच्ची राह दिखायी थी।"

"उसका प्रमाण क्या है ?"

"प्रमाण नहीं।"

नरक के जिद्दी देवदूत उसे छोड़ने को तैयार न थे। स्वर्ग के दूतों ने बहुत कुछ आग्रह किया।

धूप लगकर रेत के कण ढह गये थे। यूसुफ की खुली आंखों की तरफ देवदूतों ने देखा। अश्रुभरी आंखे, प्रसन्नचित्त चेहरा।

"क्या तुम्हारे पास कोई मापदंड है ?"

"हां।"

"हम एक काम करें। हम इस आत्मा के लिए बहुत देर से झगड़ रहे हैं। मरे पड़े यूसुफ के स्थान से नगर तक की दूरी माप लें और यहां से खुरासान तक की दूरी भी माप लें।"

"क्यों ?"

"नगर से यहां तक की दूरी कम हो तो तुम ले जा सकते हो और यदि यहां से खुरासान की दूरी कम हो तो हम ले जायेंगे।"

नरक से आये देवदूत सोच-विचार में पड़ गये। उन्होंने आपस में धीरे-धीरे कुछ बातें कीं। प्रश्न हल करने का कोई दूसरा रास्ता न था। पर उस शर्त मे वे ज्यादा लाभ उठाना चाहते थे।

एक और शंका है। "यहां से आपका मतलब क्या है ?"

"जहां यूसुफ का सिर पड़ा है वह भाग।"

"वह ठीक नहीं, हम नहीं मानेंगे।"

"फिर ?"

"वह भाग जिसे यूसुफ का कदम बालू को छूता है।"

स्वर्ग से आये देव सोच में पड़ गये। कोई और चारा न था। उन्होंने नरक के देवदूतों की बात स्वीकार कर ली।

दोनों दूत सहमत हो गये। एक पक्ष के लोग नगर की ओर गये, दूसरे खुरासान

की तरफ। दोनों पक्षों के दूतों ने दोनों छोर से नाप लिया। वे दोनों भाग से एक ही समय में पहुंचे। यूसुफ जहां पड़ा था दोनों उस स्थान पर पहुंचे। एक ही समय।

उन्होंने माप फीते के छोर को मिलाकर देखा। मिले सिर से उस फीते को लपेट लिया। मापदंड का दूसरा सिरा दिखायी पड़ा। दोनों ने कुतूहलता से देखा। दोनों बराबर हैं। यूसुफ का आधा भाग स्वर्ग की ओर और आधा नरक की ओर जायेगा क्या ?

यूसुफ की आंखें खुलीं।

देवदूत माप फीते को घुमा रहे थे।

नरक से आये देवदूतों का चेहरा काला पड़ गया।

"कितना फरक होगा ?" स्वर्ग के देवदूतों के नायक का प्रश्न है।

स्वर्ग से आये हुए दूतों में से एक ने नीचे की तरफ देखा। उसके मीठे होंठों पर मीठी हंसी झलक पड़ी। जब वह फीता लेकर यूसुफ के जड़वंत पैरों की लंबाई माप रहा था तब नरक के दूत आकाश की ओर जा रहे थे।

स्वर्ग के देवदूतों ने माप लिया। उसकी आवाज गूंज उठी।

"सिर्फ एक कदम"।

2. नचिकेता ने यमराज से जो पूछा

मैंने कितनी बार तुझे समझाने का प्रयास किया पर तूने कभी समझाने न दिया। मेरे सारे प्रारंभिक प्रयत्न असफल रहे। तू सफलता से हमेशा इतनी सरलता से बचती रही कि किसी को यह न लगा कि तू जान बूझकर ऐसा करती थी। तूने बच्चों का सा व्यवहार किया।

मैंने तुलसी माला धारण की जब भी तुझे संदेह न हुआ ! तूने खुद तुलसी के दानों को चुना। तूने खुद मंदिर में देकर पूजा करवाने की बात पर हठ किया। तूने छिपे-छिपे दूसरों से कहा :

—मेरे प्रिय थोड़ा भक्त हो गये हैं।

भक्त, तूने कितनी सरलता से वह कह दिया। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मुझ-में भक्ति का थोड़ा सा प्रभाव देखकर तू अभिमान करती है। चार-पांच व्यक्तियों को यह बात समझाती है। उससे अधिक तू कुछ नहीं समझी। तुझे यह भी मालूम नहीं था कि मेरे अबोध मन में क्या-क्या भाव हिलोरे ले रहे हैं।

दूसरा आश्रम ढूंढ़ने की यात्रा में मैंने तुझे कम-से-कम एक दर्शक के रूप में देखना चाहा। मैंने दाढ़ी बढ़ायी, केश बढ़ाये, कभी-कभी गांजा पिया और नशे की दवा भी पी। तेरी धारणा थी कि ये सब नयी पीढ़ी की नकल करने की चेष्टाएं मात्र हैं। तूने सोचा कि तुलसी माला उसका एक पहलू मात्र है। इसके माध्यम से मैं तरुणाई की ओर, ब्रह्मचर्य की ओर लौट जाना चाहता हूं। तेरी यह धारणा कितनी क्रूर थी।

अब भी मैं तेरे साथ मंदिर में घुसा तो तूने तुझे किसी एकांत स्थान में केवल दर्शक सा खड़ा हुआ देखा। तूने छिपकर देखा है—"मेरे प्रिय क्या करते हैं ? हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं ?" भगवान की वंदना करना और प्रसाद लेना तेरा ही

कार्य था न ? पर अब तेरे साथ मंदिर में आने को मैं संकोच नहीं करता। मेरे माथे पर चंदन लगाने का धैर्य अब तुझमें है। तू जानती है कि मैं नहीं रोकूंगा। तूने इस बात का पता न लगाया कि मुझमें यह परिवर्तन कैसे हुआ। कब से हुआ, यह भी तुझे मालूम नहीं। यदि तू वह बात जानती तो हम एक-दूसरे को समझ सकते।

"हम देख लेंगे, कुछ समय बीत जाये।"

पंद्रह वर्ष पहले हमारे विवाह के तीसरे दिन मैंने तेरे साथ मंदिर जाने में अनिच्छा प्रकट की तब तेरी बड़ी बहन ने जो कुछ कहा, वह अभी तक मुझे याद है। हम दोनों एक दूसरे के आत्मीय बने और हमने एक साथ मरने की प्रतिज्ञा की, वही समय था न ? फिर भी तेरे भगवान के सामने सिर नवाने मैं तेरे साथ नहीं आया। तूने उससे दुखी होकर आंसू बहाये। मैं उससे विचलित न हुआ। तूने आशा की कि समय बीतने पर मैं तेरे वश में हो जाऊंगा। तेरी चतुर बहन यह सब जानती थी।

समय बीत गया। हमारी एक बच्ची पैदा हुई। वह बड़ी हुई। तूने उसे संध्या भजन और कीर्तन सिखाये। वह जोर से ताल लय से गाती थी। मैंने रुकावट न डाली। फिर भी हमारे बीच अनबन बनी रही, क्या तुझे इससे इंकार है ?

पहले मैं भगवान की हंसी उड़ाता था तब तू बिगड़ जाती थी। तू गहरी वेदना के साथ कहा करती थी :

"देवता के सामने सिर न झुकाना कोई बुरी बात नहीं है, पर उसकी निंदा तो मत किया करो।"

यह सुनते ही मैं भड़क उठता था। अत्यधिक घृणा भाव से बचपन के अनुभव बताता।

जॉनी ने देवी को गालियां दीं। इससे क्या हुआ ?

तूने मेरी निंदा भरी शैली में ही फिर प्रश्न किया :

"कौन है वीर पुरुष जॉनी ?"

बचपन का साथी एंग्लो इंडियन लड़का।

मैंने पूरी कथा सुनायी।

मैं हर शनिवार को माता के साथ देवी मंदिर में जाया करता था। जाकर हाथ जोड़े प्रार्थना न करें तो दुर्गा नाराज हो जाती है। छूत की बीमारियां फैल जाती

हैं। लेकिन एक दिन जॉनी ने मंदिर के सामने अपने सारे कपड़े उतार दिये।

मैं सुनना नहीं चाहती।

फिर भी मैं कहता रहा।

जॉनी और मैं मंदिर के मैदान में कबूतर को उड़ा रहे थे। मेरा कबूतर उड़ता-उड़ता रजत मेघ के ऊपर छिप गया और जॉनी का कबूतर उड़ता गिरता देवी मंदिर के छज्जे पर उतर गया। उसके गुस्से का ठिकाना न रहा। उसके हाथ में पत्थर फेंकने की गुलेल थी। उसने काले पत्थर की देवी मूर्ति को लक्ष्य करके पत्थर फेंका।

उस दिन जॉनी के मुंह से जो गालियां निकलीं मैंने तुझे बतायी नहीं। वह तेरे सुनने लायक न थीं। देवी ने अवश्य सुनी होंगी। मुझे चेचक लगी। अठाइसवें दिन जब मुझे नहलाकर, धुले कपड़े पहना कर वाद्य निनादों के साथ देवी मंदिर के चारों ओर परिक्रमा करायी गयी तो जॉनी को यह सब तमाशा लगा।

अब भी मेरा अधिक देर तक पढ़ते रहना या कमरे में अकेले दाढ़ी के बालों पर हाथ फेरते हुए छत को देखते रहना तुझे पसंद नहीं है। तूने जबरदस्ती मुझसे किताबें छीनकर छिपा दीं। मैंने उसके विरोध में कोई बात नहीं कही क्योंकि मैं जानता हूं कि पढ़ने की उम्र बीत गयी। मेरा विश्वास भी नहीं है कि अब पढ़ने से मन का विकास होगा। अब तो आत्मा की मुक्ति चाहिए, ताकि दूसरा जन्म न हो। मैं बहुत देर तक चुप्पी साधकर बैठता तो तू मुझे अतृप्ति से देखकर पूछती।

क्या हुआ?

मैं चुप रहता, उत्तर न देता तो तू और अधिक बिगड़ जाती। मेरा चुप रहना और तेरी आंख बचाकर तुझे देखना जब तू सहन न कर सकती तब हताश होकर रेडियो लगाती। बर्तनों को फोड़कर उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर देती। इस पर भी क्या तूने मुझे गुस्सा करते देखा है?

विशाल चारदीवारी के अंदर घिरे बंगले में जॉनी रहता है। उसके फर्श पर संगमरमर लगा हुआ है। दीवार पर महात्मा ईसा का सुंदर चित्र टंगा है। कांटे का किरीट भी देखने में सुंदर था। हर रविवार को जब जॉनी गिरजाघर जाता था तब कोट पतलून पहना करता था, उसपर उसे बहुत गर्व था। उसकी बड़ी बहन डयाना भी साथ जाती थी। डयाना अपनी दादी के दिये कीमती कपड़े

पहनती थी। उतना बढ़िया कपड़ा मैंने कभी देखा नहीं था।

जब मैं जॉनी को ढूंढ़ता उनके बंगले में जाता था तब डयाना मुझे अंदर ले जाकर थाली भर 'केक' खिलाती थी अधिकतर वह आइने के सामने बैठती थी। मेज पर करीने से सजावट की चीजें रखी होतीं। कमरे में क्यूटीक्यूरा पाउडर और वैसलीन की सुगंध सर्वत्र फैली हुई होती। डयाना मुझे कभी-कभी बुलाकर नाखूनों पर नैलपालिश और गालों पर यूडिक्कोलोन लगा देती थी। जॉनी कहीं भी न दिखता। मेरी इच्छा उससे सटकर खड़ा होने की होती। डयाना अपने केश पर तेल न लगाती। कंधों तक लटकनेवाले केशों को ब्रुश से संवारती हुई वह मुझ से कहती···

वह रिब्बन जरा देना।

भीतर के कमरे से लगातार बातचीत कानों में पड़ती। मुझे मालूम था कि वह जॉनी की मम्मी हैं। उनका कमरा बंद रहता। वे किससे बातें करती हैं? दूसरे किसी की आवाज सुनायी नहीं पड़ती। फिर भी वे अपनी बातें खत्म नहीं करतीं मैंने उनको कभी गिरजाघर में जाते नहीं देखा। गिरजाघर के पादरी कभी-कभी बंगले में आया करते थे। मैं जॉनी की मां को एक बार देखना चाहता था।

एक दिन बाहर कोई नहीं था। मैंने जोर से आवाज देकर जॉनी को बुलाया। अचानक दौड़कर आती डयाना पर मेरी दृष्टि पड़ी। पास आने पर ही मैं जान पाया कि गह डयाना नहीं थी। उन दोनों में बहुत अधिक समानता थी। उन्होंने मेरा चिबुक पकड़कर कुछ पूछा जो मेरी समझ में नहीं आया। उन्होंने फिर हंसते हुए मेरा गाल नोच लिया। अचानक उनकी आंखों में मैंने भय देखा और अनुभव किया कि वे एकदम सिकुड़ गयी हैं। मुड़ कर जो देखा तो ऐसा लगा कि डयाना बेंत पकड़कर मारने के लिए मेरे पीछे खड़ी थी। वे आज्ञाकारी बच्चे की तरह खुले दरवाजे की ओर सरक गयीं। डयाना उन्हें कमरे में बंद करके लौट आयी और मुझसे कहा—

अरे, किसी से कहना नहीं, समझे?

सिर मुंडाए, काषाय वस्त्रधारी भिक्षु मुझसे मिलने लगातार तीन दिन आये तब तूने उस पर ध्यान दिया। रात भर तू जागती रही। सवेरे भिक्षु के जाने पर तूने पूछा—

कौन हैं?

भिक्षु।

मुझे मालूम है।

आजकल तू कितनी जल्दी भड़क उठती है। शायद दिल खोलकर सारी बात बताने का उचित अवसर था। पर बात समझ लेने की इच्छा तेरे चेहरे पर दिखायी न पड़ी। अध्ययन छोड़कर मैं क्यों गुरू की खोज करता हूं ? मोक्षदेने वाला व्यक्ति कौन है ?

एक बार मैंने तुझसे सब कुछ बताने की ठान ली। उस दिन तू अच्छे मूड में दिखायी पड़ी। मैंने सोचा यह उचित अवसर है। मैंने उचित वाक्य और उपक्रम भी सोच रखा था।

ऋषिकेष चलें ?—मैंने शुरू किया।

ऋषिकेश में क्या है ? तूने मेरे उपक्रम पर ही झट लगाम डाली।

तेरी प्रतिक्रिया पर ध्यान दिये बिना मैंने कहना शुरु किया था। यह मेरी त्रुटि थी।

फिर हताश होकर मैंने बच्चे के समान हठ किया—मुझे संन्यास लेना है। तू खिलखिलाकर हंस पड़ी।

ओ हो। ऐसा है ? तो मैं भी आती हूं।

तूने उस आयु में बड़े तमाशे देखे होंगे। धीमी हंसी हंसते हुए तूने मेरा मजाक उड़ाया।

पर जब मैंने अपने शयनगृह पर गेरुआ रंग लगाया तो वह तुझे बहुत अच्छा लगा।

मनोहर रंग। तूने कहा।

तू अपनी सहेलियों को निमंत्रण देकर बुला लायी और उसकी मनोहारिता दिखाने लगी। उन्होंने भी उस रंग को पसंद किया। शयनगृह के लायक रंग। तूने उस पर गर्व किया।

तूने उनको बताया, "मेरे प्रिय का अपना ही चुना हुआ रंग है।"

लेकिन जब मैंने तेरा बिछौना कमरे में से ले जानें का अनुरोध किया तब तूने क्या कहा ? याद है ?

मैं यह आश्रम छोड़ने का निर्णय कर चुका हूं। लंबी यात्रा। घर से निकलते वक्त तू मुझे रोकना मत। वेद के दो भाग हैं—कर्म और ज्ञान। मैं दावा नहीं

करता कि मैंने कर्तव्यों और कर्मों को पूर्ण रूप से निभाया है। हमारी बेटी सयानी हो रही है। मुझे विदा लेने की आवश्यकता नहीं। मेरे ज्ञान प्राप्त करने का समय आ गया है। मैं बाहर निकल रहा हूं। नचिकेता ने यमराज से जो कुछ पूछा था, वही मुझे पूछना और जानना है।

सही और गलत के अतिरिक्त और क्या है ?

हेतु और फल के परे क्या है ?

भूत, भविष्य और वर्तमान के उस पार क्या है ?

3. पित्त

"कमला की मां है ?"

दरवाजे के पास एक छाया सी देखी तो डाक्टर के चेहरे पर प्रश्न भाव प्रकट हुआ।

बातूनी राममोहन ने डाक्टर को नहीं देखा। अपनी वाचालता के प्रवाह में वह स्वयं बह गया। छाया थोड़ी देर संकोच भाव में खड़ी रही। परदे के नीचे दुबले पैर, उभरी हुई नसें, छितरी हुई एड़ी और उजले नाखूनवाली उंगलियां दिखायी पड़ीं। "मालुकुट्टि ही है। वह अब तक गयी नहीं ?" "मोहन, जरा धीमे स्वर में बोल। यह अस्पताल है।" डाक्टर ने उठने की चेष्टा की तो वे पैर हट गये। "मोहन, तुझसे डरकर, तेरी आवाज से डरकर, वह भीतर नहीं आयी। वह क्यों नहीं आती ?"

डाक्टर ने अपनी घड़ी की ओर देखा। घड़ी, नहीं, कलाई पर कमला का गोल चेहरा दिखायी पड़ा। न सुइयां, न आंखें, न अंक, न छोटे दांत-कुछ भी नहीं। सूजा हुआ गोल छोटा चेहरा कलाई पर भरा पड़ा है।

"डैनी, वह उनका संकल्प है। देश की मूल संपत्ति जनता है। मां और बच्चा"

"तू चुप भी रहेगा ? हमेशा का बातूनी। तेरी पूंजी ही बकवास है। उसका निर्लोभ वितरण करके तू युवक समाज का नेता बना। तू ही युवक समाज का प्रतीक बना। तेरा लंबा सुकुमार शरीर, तेरी मूंछ, दुनिया भर का दौरा। यह त्योहार है या मृत्यु का खेल। तू यहां से जायेगा ? मुझे एक बच्चे को बचाना है। मोहन, कमला मर गयी। उसकी लाश और मां अस्पताल में हैं। मैं पता लगाऊं कि वे अभी तक क्यों नहीं गये।"

"बाई द वे, क्या हुआ था डैनी ?"

"एक बच्चे का केस था। अभी देखकर आता हूं। जस्ट ए मिनट।"

दरवाजे पर परदा उलटा लटका हुआ है। मैंने अभी तक यह देखा नहीं। दरवाजे के निकट कोई नहीं है। परदा हिल भी नहीं रहा है। क्या वह दुखी है ? वे फूल कितने सुंदर हैं। परदे पर पौधे के डंठल नीचे की ओर बढ़ते हैं। वे मिट्टी से अंगाराम्ल कार्बनिक अम्ल और वायु से लवण ढूंढ़ते हैं। किसने उनकी गति रोक दी। दर्जी ने, सेवक ने या मेहतरानी ने ? सिस्टर ऐसा क्यों करेंगी। वे फूलों की आराधना करती हैं। वे पौधा लगाती हैं, सोचती हैं और पालती हैं।

कमला की मां कहां है ?

अब डाक्टर डेनियल ने घड़ी देखने की चेष्टा नहीं की। कलाई पर स्मृतियां सुरक्षित नहीं रखी जातीं। डाक्टर को कमला के सरल, मोहक एवं पवित्र चेहरे की तलाश नहीं करनी। राममोहन की दृष्टि दाहिने हाथ की कलाई पर सेकंड गिनती है। चार चालीस—सेकंड वाली सुई चल रही है। चवालीस, पैंतालिस…। पांच बजकर तीस मिनट पर दिया जानेवाला स्वागत भाषण।

प्रियजनों,

जन युवक सभा का सौहृद पूर्ण अभिवादन प्रकट करने…

दुनिया के हृदय ने राममोहन की छाती पर नगाड़ा बजाया। कलाई में कसक। सेकंड वाली सुई…

डाक्टर लौट आये। उनके चेहरे पर अपूर्व शिथिलता दीख रही थी।

"डैनी, मैं क्या कह रहा था ? तू किस ध्यान में लग गया ? सोवियत संघ में भी धर्म के श्रद्धालु हैं। गिरजाघर और मदर मरियम को भी मानते हैं। वे माताओं की आराधना करते हैं। किसी स्त्री के गर्भवती होने का समाचार मिल जाये तो…"

अब डेनियल के चेहरे पर जरा भी कमजोरी नहीं दिखती। उनकी बड़ी-बड़ी आंखों में प्यास की ज्वालाएं दहकती हैं। वे अपने कानों से कुछ नहीं सुनते। राम-मोहन के चेहरे और उनकी आंखों की ज्वालाएं भभक उठती हैं।…

सोवियत संघ में किसी के गर्भवती होने की सूचना मिल जाये तो क्या होगा ? पति शाप देगा ? मामी अमंगल बात करेंगी ? बड़े बच्चे मां को तंग करेंगे ?

मैंने यूरोप और अमरीका देखे। सोवियत संघ भी देखा। अमरीका के दंपति दूसरों की अपेक्षा अमीर ही हैं। काफी धन है उनके पास। हर एक के पास अपनी

अपनी मोटरगाड़ी है। शृंगार प्रसाधन हैं। फिर भी किसी स्त्री के प्रसव के साथ-साथ, उनकी सारी कमाई नष्ट हो जाती है। पति, मोटरें, घर सब गिरवी रखने पड़ जाते हैं। वहां के खर्च भी उतने ही बड़े हैं। वे मेटेरनिटी होम जाने से डर जाते हैं। सोवियत संघ में तो किसी स्त्री के गर्भवती होने का पता लगना ही काफी है। ऐसा मालूम होना मानो सोवियत संघ उसकी ताक में रहता ही है। देश उस गर्भवती की जिम्मेदारी स्वयं पर ले लेता है। पीठ में दर्द है ? हड्डी की कसक है ? उल्टी आती है ? या कोई भी कष्ट वह माता बनने वाली है अतः वह देश की संपत्ति है। वह अपनी कोख में एक निधि को वहन करती है। स्त्री माता बनती है। बच्चे सोने की मणि हैं। गर्भकाल की शुश्रूषा, सुखपूर्ण प्रसव, नर्सरी, सभी सुविधाएं, दायित्व न माता का, न पिता का। देश माताओं की परिचर्या करता है, बच्चों को पालता है।"

डाक्टर डेनियल दरवाजे की ओर भी देखते रहते हैं। राममोहन का भाषण सुनने के लिए एक कान और दरवाजे पर आनेवाली आहट सुनने के लिए दूसरा कान। यह उनकी पुरानी आदत है। रोगी, रोगी के साथ और स्थेटेस्कोप एक ही साथ कई बातें सुनने के आदी हो गये हैं। विवेचन शक्ति हमेशा काम करती रहती है। "मोहन, तू कहता रह मैं सुन रहा हूं।"

परदा उलटा टंगा है। पौधे के डंठल पर फूल लटके हुए हैं। यही अभिशाप है। देखते-देखते परदा एक बार फिर हिला।

कमला की मां है ? हवा थी।

हवा परदे पर तरंगों की हिलोरें लायी। हिलोरें परदे पर तैरती रहीं।

फिसलती, उतरती फूलती-फूलती रहीं।

गर्भ है क्या ?

हिलोरें एकदम शांत हुई। पौधे के डंठल और अधोमुख फूल रूखे, मुरझाये से, पीले पड़े कांपते रहे। क्या वे झड़ते हैं। "डैनी तू कुछ बेचैन है ?"

"मेरा एक बच्चा मर गया।"

राममोहन चौंका "तेरा—?"

"मेरा नहीं, कमला का। मेरे इलाज में थी।"

"कमला को क्या था ?"

मोहन, मुझे समझाने के लिए कमला को दत्तक लिये भाव से तू मुझसे परा-

धीन होकर पूछता है। तेरे कापट्य भाव से दुनिया वाले भ्रमित होंगे, सहानुभूति प्रकट करेंगे पर डाक्टर डेनियल नहीं। डेनियल को तेरे प्रति नफरत नहीं। तू भी एक मनुष्य है। तुझे पालनेवाले 'जीन्स' ने तुझे पराश्रयी बनाया। मैं तुझे सतत माफी देता हूं। तेरी आदत को बदलने का कोई तरीका नहीं है। मृत्यु के पहले, अपने जीते जी, मैं उसका तरीका भी ढूंढ़ निकालूंगा। हरगोविंद खुराना का नाम सुना है। तू स्टेटस में उनसे मिला होगा। जिन जीन्स ने तेरी सृष्टी की, उनके डी. एन. एन. तेरे स्वभाव का निर्णय करते हैं। मैं मेहनती और ईमानदार एक व्यक्ति के जीन्स से इन गुणों के जीन्स को प्रथक कर तुझमें इंजेक्ट करने का प्रयास करूंगा।

कमला को हृदय का रोग था। उसका हृदय कमजोर था। छाती में हृदय की कमजोरी के कारण उसको पित्त रोग है। पहले पीलापन दिखायी पड़ा। फिर दम घुटने लगा। फिर सूजन, सांस लेना मुश्किल हो गया। वैद्य ने कहा, कोई बात नहीं, पित्त है। कमला यहां लायी गयी तो उसका केवल पेट ही दिख रहा था। पेट बहुत फूल आया। सूजन के साथ छाती की ओर निकल आया था। कमला के हाथ पैर ही नहीं चेहरा, सिर सभी पेट रूपी शरीर में धंस गये। उभय जीवियों की तरह चेहरा ही दिखता है, उसका ऐसा हाल था। उसकी मां ? मां विधवा है। पति के मरते वक्त चौथा बच्चा गर्भ में था। राममोहन, मालुकुट्टि, मां है। माता : श्री. रूपी तेरी संपत्ति। उसका छोटा बच्चा पेट में उलटा पड़ा है। दुबले पतले सूखे, बांस के डंठल जैसे पैरों के सहारे मंद-मंद चलती कमला परदे के पीछे आकर खड़ी हुई। उसकी सिसकियां सुनायी पड़ती हैं। अंदर कोई नहीं आता। परदा पकड़कर हटाने की ताकत उसमें नहीं। एक बच्चा गोद में, दूसरा अंगुली पकड़े। हाथ छोड़ दे तो दोनों गिर पड़ें। तूने ऐसा एक दृश्य नही देखा। तू भाग्य-वान। युवक सभा का सेक्रेटरी, जनरल सेक्रेटरी, तुझे सैर करने के लिए चाहिये मोटर, रहने के लिए होटल, सेवा करने के लिए नौकर-चाकर, अनुकरण करने को आराधक। मैं किसकी परिचर्या करूं ? मां की, दूधहीन सूखे स्तन को चूसने वाले बच्चे की, कमला की ? मां सिर्फ कमला के लिए कार्ड ले लिया है। दवा के लिए मेरे पास पैसा नहीं। मेरे आज यहां आने के कारण हैं चार भूखे बच्चे।

भूख !

राममोहन असह्य हो गया। मैं यहां आया इस आशा से कि कम-से-कम डाक्टर

डेनियल भूख की कहानी नहीं सुनायेंगे। वार्डों में घूम चुका फिर भी समय बाकी है। स्वागत समारोह के समय तक कहां जाऊं ?

"तूने क्या किया ?"

कमला को कारडियो मयोपति रोग है। वैद्य कहेगा उसको पित्त है। खून की कमी है। रक्त के कम होने से जल का अंश बढ़ जाता है, पीलापन आ जाता है, शरीर सूज जाता है तब पित्त होता है। इस देश में किसको पित्त नहीं। रक्त पंप करने को असमर्थ हृदय की मांस-पेशियां कमजोर बन रही हैं। मालुकुट्टि को पता नहीं कि उसकी बेटी की मृत्यु हो रही है। राममोहन, "तूने वह पर्दा देखा ?"

राममोहन ने मुड़कर देखा। पर्दे में क्या है ?"

फूल नीचे की ओर खिलते हैं। अधोमुख मिट्टी की ओर। किसकी गलती से ?

बेचारा, राममोहन, स्वागत सभा में बोलने के लिए पल गिनता है। अधोमुखी होकर विकसित होनेवाले फूलों के बारे में कैसे कुछ कह सकता है।

मैंने डिजोक्सिन दे दिया। हृदय की थकावट दूर करने और जलांश कम करने के लिए डेनसालिन दे दिया। राममोहन ने नेता के निस्संग भाव से, निस्संग मुस्कान से पूछा, "दवा मुफ्त दी ?"

"दी जा सकती है।अनाथों के इलाज के लिए, अस्पताल के पास अलग से फंड

"क्या इस देश में दवा खरीदने को असमर्थ दरिद्र भी हैं ?"

यह प्रश्न बिलकुल एक विदेशी का सा लगा।

राममोहन ने प्रश्न को संशोधित किया।

"· · ·यहां आनेवालों में ?"

"कभी कभी"

"तेरी आंखों में धूल डालकर इलाज कराया जा सकता है।"

"डाक्टर बन गया न ?"

"तेरी संतानें इसका फल भोगेंगी। उन्हें तू भूखा रखेगा। परिश्रम न करके दर-दर भीख मांगते भटकनेवाले फाटक पर आकर थोड़ी कंजी का राग अलापा करें तो तू उनको खिलायेगा।"

डेनियल हंस पड़ा। उस हंसी में उसका चेहरा फीका पड़ गया। "राममोहन, मेरे बच्चों का विकास सोशलिस्ट इंडिया में होगा न ?" बातूनी होने पर भी राममोहन अभिमानी है। उसने पूछा :

"डैनी, तू पादरी क्यों नहीं बना ?"

"मैं भी यही पूछता हूं। मैं विश्वासी हूं। आत्मा की अपेक्षा शरीर की सेवा करता हूं। मैं ऐसे मनुष्य की सेवा नहीं करता जो हाथ मल कर आकाश की ओर देखता है।। मेरे मनुष्य के बुद्धि, सिर, हृदय, फेफड़े, भोजन नली, पेट, जिगर, अंतड़ियां, शिराव्यूह, अस्थिपंजर, मांस-पेशियां तथा त्वचा का आवरण···"

"क्यों रुक गया ?"

दरवाजे के पास कोई है।

"तू अपने मनुष्य के बारे में बोल।"

डाक्टर उठ खड़ा हुआ। राममोहन आश्चर्य से स्तब्ध हो गया।

इसकी संतानें।

दरवाजे पर मालुकुट्टि ही है।

"चली गयी न ?"

"वह बोल नहीं पाती।"

डाक्टर डेनियल दुबारा प्रश्न न करके तेज चाल से निकल गया। डाक्टर नाराज होकर चला गया। यह मालुकुट्टि नहीं देख सकी। एकमात्र आशा वह डाक्टर था। वह भी गुस्से में। मदर को भी गुस्सा।

क्यों नहीं गयी ?"

यहां रोगी हैं। मृत शरीर पड़े रहे तो रोगी डर जायेंगे। ले जा ! सबको गुस्सा।

उसको सांस नहीं। सांस है। छाती की सांस फूल उठी। हाथ दबाया तो उसकी छाती हाथों के नीचे उभर आयी सांस लेना मुश्किल हो गया। छाती दहक उठी। छाती कस गयी। उभरी हुई छाती नोक बनी, नोक सुई बनी, सुई कुलहाड़ी बनी, छाती फट जाती है, मारती है, अब फट जायेगी, फट गयी। रोना झीकना बीच-बीच में फूट पड़ा तब राममोहन से वहां बैठा न गया। वह उठकर दरवाजे के पास आया और परदा हटा दिया।

नाश ! कहां है डनियल ?

"गला अवरुद्ध होने के कारण अक्षरों को जोड़कर मालुकुट्टि का यह शब्द— सरकार"

"क्या, क्या ?"

एकाएक राममोहन का कलेजा पसीज गया।

"मैं डाक्टर नहीं हूं, डाक्टर नहीं हूं, डाक्टर बाहर चले गये हैं।"

अभी तेरह मिनिट हैं। जाऊं ?

वह संकोच से खड़ा था तभी डाक्टर आ जाता है। उसके पीछे मदर आती हैं।

राममोहन ने पूछा :

"क्या, क्या हुआ डैनी ?"

"कोई बात नहीं, इनकी बेटी मर गयी। शव को ले जा नहीं सका।"

थोड़ा विवेक हो तो।

राममोहन ने दूसरे ढंग से प्रश्न किया।

"यहां कोई टैक्सी स्टैंड नहीं है ?"

डाक्टर ने कहा, "तीस रुपये भाड़ा मांगते हैं। इनके पास पैसा नहीं है। क्या किया जाये ?"

राममोहन ने मन ही मन निश्चय किया, न ले जाये। अस्पतालों में इलैक्ट्रिक क्रिमंटोरियम की आवश्यकता है। ओवन में शव फेंका। स्विच आन। और राख शेष। मां, बेटी, छोटी बहन—सब पित्त रोगी तथा सब हृदयरोगी—देश के अभिशाप—मदर सब ओर दृष्टि डालती पहुंच गयी। मालकुट्टि से कहने लगी, "इधर आ।" राममोहन को ऐसा लगा कि मदर की आवाज कठोर है।

जब डाक्टर देवता बनते हैं तब अस्पताल में मेट्रन को देवदूत—फ़रिश्ता बनना पड़ता है।

वे धीरे-धीरे चलती हुई कुछ दूर पहुंच गयी तो तो डाक्टर ने पूछा, "राममोहन की गाड़ी कहां ?"

राममोहन को अपना सा मुंह लेकर चुप रहना पड़ा। आज सैर करने को एक अच्छी गाड़ी नहीं मिली। पुरानी· · ·

"मेरे पास छोटी गाड़ी है। शव लिटाने पर मां को बैठने के लिए जगह नहीं होगी। मैं तेरी गाड़ी ले जाने को सोच रहा हूं।"

राममोहन को यह बात अच्छी नहीं लगी।

घृणा को दबाये राममोहन ने कहा :

"स्वागत के लिए केवल दस ही मिनट बाकी हैं। सारी दुनिया का दौरा कर आया हूं न, मुझ तो पंक्चुअल होना ही चाहिए।"

उसके लाल गालों पर एक-के-बाद-एक भाव आये और गये। हंसी की सफेदी को टिकाये रखने के लिए उसने दांत बाहर दिखाये।

डाक्टर ने फिर कुछ नहीं कहा। जल्दी से सीढ़ियां उतर कर मोटर में बैठ गया। औरतों के वार्ड के सामने पहुंचते ही सिस्टर्स कमला का शव लिए आती हैं। पीछे की ओर मुड़कर डाक्टर ने दरवाजा पूरा खोल दिया। उनकी दृष्टि में फिर कुछ न पड़ा। उसके मन में फूल थे। वे फूल अधोमुखी होकर खिलते हैं।

सीढ़ी पर घृणित भाव से खड़े राममोहन स्वागत समारोह की वाक्पटुता का पता लगाता था।

प्रिय बंधुओं।

4. पूजा में न चढ़े फूल

वह सीढ़ियां उतरकर आगे बढ़ा। एक बार मुड़कर भी नहीं देखा। हर कदम के साथ क्रोध प्रकट हो रहा था। नहीं, वह फिर मुड़कर कभी नहीं देखेगा। वह कभी नहीं आयेगा। असह्य पीड़ा से वह रो उठी।

मेरे प्यारे भैया,

तेजी से सीढ़ियां चढ़कर छत की रेलिंग के किनारे खड़ी होकर उसने बाहर रास्ते की ओर देखा। उसकी जीप तूफान की चाल और झंकार से निर्जन मार्ग से दूर जा रही थी। वह भीगी आंखों से देखती रही।

आखिरी नाता भी टूट रहा है।

अब अपना कोई नहीं, कुछ नहीं। इस विशाल विश्व में एक एकांत टापू की तरह वह अकेली रहती है। वह उसे टकटकी लगाये देखती रही, शायद वह उसे फिर देख भी न सकेगी और उसे मन से छूटने देना भी नहीं चाहती। मोड़ पर वह गाड़ी अदृश्य हो गयी, वह फिर भी जड़वत देखती ही रही।

शारदा दीदी…

पीछे से किसी ने पुकारा। कात्यायनी होगी। उसने यंत्रवत घड़ी की ओर देखा। कुछ देर और खड़ी रही तो दफ्तर के लिए देरी हो जायेगी। लेकिन वह वहीं वैसे ही जड़वत खड़ी रही। हिल भी न सकी। बोल भी न सकी। उसके आगे केवल एक ही सत्य है—

वह अकेली है।

कात्यायनी ऊपर आ गयी थी। उसने उसके कंधे पर हाथ रखकर उसे हिलाया और पूछा—

"क्या हुआ शारदा दीदी ?" उस चेहरे के क्षोभ और परेशानी को देखकर

वह अकस्मात चुप हो गयी। कात्यायनी को कुछ भी मालूम नहीं हुआ होगा। कैसे मालूम होगा ?···वह तो अभी बच्ची है। जिंदगी के द्वार तक ही पहुंची है। चैत्र का बादलविहीन आकाश तो उसने देखा है। मनुष्य का दुख देखने और उसे समझने की क्षमता उसमें है। शायद पीड़ा के नीरव कंपन ने उसकी वाणी को भी विमूढ़ कर दिया है।

शारदा ने कहा, जैसे वह अभी-अभी नींद से जागी हो, "कार्त्ती, आज मैं नहीं जाऊंगी। तबीयत ठीक नहीं है। मेरी छुट्टी की एप्लिकेशन आफिस में दे देना।"

एप्लिकेशन लिखते समय भी कात्यायनी ने शारदा से कुछ नहीं पूछा। दुख से सूजा हुआ मुख और व्यथित आंखें देखकर वह चुप रह गयी। केवल किसी एक अनपेक्षित दुख के कठिन आघात को उसने वहां देखा। वह क्या हो सकता है ? कुछ समझ में नहीं आता। केवल इतना मालूम है कि सवेरे शारदा से मिलने के लिए उसका छोटा भाई आया था। वह कभी-कभी आया भी करता था। आई. पी. एस. प्रोबेशनर उस छोटे भाई के अलावा शारदा दीदी का और कोई नातेदार नहीं था। वह कौन-सा दुखद समाचार लाया होगा। कुछ पूछने को अवसर नहीं था। एप्लिकेशन को सहेजकर कात्यायनी नीचे चली गयी।

सीढ़ियों से उतरती कार्त्ती को शारदा एक निमिष तक देखती रही।

जोर के कदम से आवाजें करती हुई वर्षों की सीढ़ियों से स्मृतियां भी उतर कर भाग रही हैं।

सबके सब उतर कर चले गये। एक-एक करके सब चले गये, एकांत की रात में उसे अकेले छोड़कर। अब आखिरी व्यक्ति भी चला गया।

नगर के शोरगुल के बीच में वह एन. जी. ओ. बनिता होस्टल, पुराने स्नेह सा, जिसका स्मरण करने का व्यर्थ प्रयास किसी ने नहीं किया, अनाकर्षक रूप में खड़ा रहता है, उस होस्टल के एक अंधेरे कमरे में वह अकेली बैठकर रोयी। बिना आंसू बहाये रोयी। वह अठारह वर्ष की इनक्रिमेंट और अड़तीस वर्ष का पुराना एक यंत्र मात्र थी। तब उसमें आंसू कैसे होंगे···?

छत के जाले को देखती हुई वह पीठ के बल सीधी लेटी रही। वह एक जाला ही था जिसे काल दूर करना भूल गया।

सुदूर कहीं बचपन की हरी-भरी तलहटियां थी। फूलों से भरी हुई तराई। उस दिन वह नानी को प्रभात के नैवेद्य के फूल तोड़ने गयी थी। पैरों में कांटा लगा, हाथ

पर खरोंच लगी। फिर भी उसने फूल तोड़े। लेकिन जब लेकर आयी तो नानी ने कहा—"ये सब बेकार हैं बिटिया। ये फूल पूजा में नहीं चढ़ाये जाते···।"

छुई-मुई के फूल बेड़े के कपास फूल, कदली और जंगली केतकी के फूल।

पूजा के लिए अनचढ़े फूल आंगन के एक कोने में, कूड़ाखाने, में उपेक्षित पड़े रोते रहे। एक लड़की जिसके गले में काले धागे पर ताबीज बंधा हुआ था, कपोलों पर आंसुओं की सूखी लकीरों के साथ बरामदे के स्तंभों पर टिके उन्हें देखती रही। सिसकती रही।

वह नानी वर्षों पहले हमेशा के लिए चल बसी। उससे भी पहले स्मृतियों की पहुंच के भी परे, भूतकाल की हिमाच्छादित भूमि पर उसकी मां भी अदृश्य हो चुकी है। और इस तरह उन्नीस साल की उस लड़की पर घर का सारा भार आ गया। कच्ची उम्र के एक छोटे भाई की और आयु के बंदरगाह की ओर तेजी से बढ़ती एक छोटी बहन की वह माता-अविवाहिता माता बनी, नानी बनी जिसने किसी को जन्म न दिया हो।

पिता अंदर लेटे थे। लकवाग्रस्त शरीर का एक पक्ष जड़ पड़ा है। जरा सोचो तो इन सब कष्टों के जिम्मेदार पिता ही हैं न? पर ऐसा सोचा भी नहीं जा सकता। पिता इतिहास के विकृत जमाने का खिलौने मात्र थे। उन पर इलजाम लगाने से क्या फायदा?

स्वतंत्रता, समता और समाजवाद, इन शब्दों का मतलब मुझे मालूम न था। देश और देशवासी क्या हैं, ये भी मैं नहीं जानती थी। हाय! पिताजी, मेरा यह जीवन कैसे ऊसर बन गया। यह सोचते वक्त मैं दुख विह्वल हो जाती हूं।

पिता स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी थे। सत्याग्रह तथा हड़तालों में भाग लेकर जेल गये। नारों और जुलूसों के अप्रतिहत विकारों के आवेश में वे बह गये। उनका सब कुछ खो गया। धान की खेती और बहुत कुछ प्रचलित अखबार भी खत्म हो गये। स्वास्थ्य भी बिगड़ गया। अंत में बिलकुल थके मांदे लेट गये। उस हाल में भी बाप के सारे चिंतन और बातें वहां थीं। ये सब बातें उसकी समझ से बाहर की थीं। उसकी समझ के बाहर की बातें, लोगों को, घटनाओं को, देश, देशवासी और सार्वजनिक समस्याओं की बातें। ये सब पिताजी की मनोवृत्ति को आघात पहुंचाने वाला बेइलाज कैंसर रोग थे। बीमार पड़ने के बाद कुछ दिनों तक लोग पिताजी से मिलने के लिए आया करते थे। पर धीरे-धीरे वह भी खतम

हो गया। अंत में विस्मृति की गहरी झील की ओर फेंके एक पत्थर के समान बाप एक चटाई पर, लेट गये। उस त्यागोज्वल जिंदगी का महत्वपूर्ण अंत ऐसा था। लेकिन एक दृष्टि से पिता धन्य थे। जिंदगी की आखिरी घड़ी तक वे यह सत्य नहीं समझे थे कि वे विस्मृत तथा अज्ञात हजारों में केवल एक मात्र हैं।

वे यह भी न जान पाये थे कि उन्होंने अपने ऐसे जीवन को बरबाद कर दिया जो दूसरों के लिए निस्सार होते हुए भी अपने तीन बच्चों के लिए बहुमूल्य बन सकता था। मां ने अनेक कामनाओं के बाद एक बेटे को जन्म दिया उसके बाद के अस्वस्थ दिनों में कहीं दूर के अंधेरी जेल में न पड़े रहते तो कभी शिकायत न करने वाली बेचारी पत्नी की अकाल मृत्यु न होती, पर उन्होंने कभी इस ओर ध्यान भी नहीं दिया।

"जो आज़ादी तुम लोग ऐंठकर बैठे-बैठे भोगते हो उसके लिए मैंने भी कष्ट झेले हैं।"

"यह जनतंत्र है न, उसकी प्राप्ति के लिए मैंने अपना जीवन अर्पण किया है।"

ऐसे घमंड से स्वनिर्मित की मूर्ख दुनिया में पिता सतत झपकी लेते रहे।

"मैं कुछ पाने की चेष्टा में आगे नहीं चला, किसी की सिफारिश और चापलूसी नहीं की। जीवन यापन के लिए वेतन पाने का प्रयत्न भी नहीं किया। समझे···?"

लेकिन घर में अहाते के अलावा और कुछ बाकी नहीं था। चूल्हे में आग जलाना तो दूर, गुजारे के लिए भी कोई उपाय न था।

पिता पतंगे की तरह आदर्शवाद की दीपशिखा में अपने आपको लगातार जलाते रहे।

बेबसी के बीच में ही उसने अपनी पढ़ाई छोड़ दी। उस छोटी उम्र में ही इधर-उधर नौकरी के लिए आवेदन पत्र भेजने लगी। वह एक लोवर डिविजन क्लर्क के पद से 45-75 रुपये मासिक की पगडंडी पर आगे बढ़ने लगी तो एक नये निर्णय का प्रारंभ भी हुआ।

लगता है जैसे सब कुछ कल ही घटित हुआ है। वह फूट-फूटकर रोती हुई कालेज छोड़ आयी। सहेलियों के साथ जो उल्लासपूर्ण जीवन व्यतीत हुआ, वह सब मुसीबतों और कष्टों को विस्मृत करानेवाला आनंदप्रद क्षण था। वह एक ऐसा सुखद जमाना था जब वह बिना किसी कारण के, हंस सकती थी। क्या-क्या

अभिलाषायें थी। स्वप्न···। सभी कामनायें मुर्झायी पंखुड़ियों की तरह झड़ गयीं। हाथ में पहनी खनकती आशा के कांच की चूड़ियां टूटकर तितर-बितर हो गयीं। जीवन एक ठेंकी के रूप में बदल रहा था। संतोष के साथ बिना किसी शिकायत या भुनभुनाहट, उसने उस दुर्भाग्य को स्वीकार कर लिया। किसी एक अज्ञात निर्णय की सुदृढ़ नींव के पत्थर-सी होकर वह धीरज बांधे आगे बढ़ी, दायें-बायें देखे बिना एक पल की भी अस्थिरता के बिना।···

हां एक पल की भी अस्थिरता के बिना···ऐसा कहा जा सकता है क्या ? वहां स्मृतियों के पैर कांप जाते हैं। क्षत विक्षत आशाएं चिल्ला उठती हैं। पुराने दिनों का नासूर फिर मुंह निकालने लगता है। त्याग का मीठा प्यारा नाम देने पर भी वह सचमुच हत्या ही न था। केवल अपने जीवन की ही नहीं, एक दूसरे के जीवन की भी···। जीवन की अभिलाषा का गला दबोचकर मारना ही था।

यह सब किसके लिए···?कुछ नहीं मिला। कहीं भी नहीं पहुंच सकी। लक्ष्य-हीन निरर्थक प्रयाण मात्र रह गये सब कुछ।

हे भगवान ! मुझे क्षमा कीजिये।

भीगी पलकों के सामने बालचंद्र आज भी आ खड़े हैं।

आज के से सफेद बालों से नहीं। ऊपर की ओर फैलते विशाल माथे से नहीं। चेहरे पर झुरियां और सिकुड़न, आगे की ओर जरा झुके हुए और थके मांदे असिस्टेंट सेक्रेटरी के रूप में नहीं। मोटी फ्रेम के चश्में पहने, कुलीन मुस्कान का गोरा पतला, स्वास्थ्य युवा के रूप में—किसी को भी वशीभूत करनेवाला कोमल स्वभाव पुरुष···

बालचंद्र तब सुपरिंटेंडेंट थे। उनके ही सेक्शन में शारदा को काम करने का मौका मिला। उन्होंने ही उसे परसनल रजिस्टर, ड्राफ्ट, नोट, सबमिशन सब कुछ सिखा दिया। एक कर्मचारी के रूप में उसे सभी कामों में दक्ष कर दिया।

एक दिन ड्यूटी के बाद वापस आते समय आफिस के पीछे, पत्ते फैलाये जंगली केले के उद्यान के पास प्रफुल्लित झूलते गुलमोहर के नीचे बालचंद्र ने उससे पूछा था—

"मुझमें शारदा को पाने की योग्यता है ?"

उस गुलमोहर पौधे के समान ही उसका मन भी अवाक् रह गया। फूल झड़ गये, पत्ते उड़ गये।

वह ऐसे किसी प्रश्न पर कभी ध्यान न देगी। उसने मन ही मन दृढ़ निश्चय किया था इसलिए उस निश्चय पर डटी रही। मन के उस पक्ष के समस्त झरोखों को बंद करके स्वयं सुरक्षित रही थी। फिर भी अब···

तुमने जिससे बचना चाहा, वही अब···

उस प्रश्न के उत्तर के लिए वह तैयार नहीं थी। उसके बारे में सोच भी नहीं सकती थी। वह लकवा मारे एक बाप की मातृहीन बेटी थी। वह सयानी होने-वाली एक बहन और कच्ची उम्र के एक भाई की बड़ी दीदी थी। ऐसे एक प्रश्न के लिए उसकी जिंदगी में स्थान ही नहीं था। इसी वजह से इस प्रश्न पर सोचने का कभी उसे समय ही नहीं मिला।

मैदान से आयी हवा पहाड़ी केलों के पत्तों को फाड़कर झालर बना रही थी। गुलमोहर के फूल हवा में उड़ रहे थे। यौवन की रक्ताभ मुस्कान लाल फूल लगा कर यूफोर्बिया की बेलिया लोहे के घेर से टिकी हैं। आसमान में संध्याकालीन मेघ इसके साक्षी हैं।

उसने कुछ नहीं कहा। धीरे-धीरे कदम उठाती चली गयी। मुड़कर देखा भी नहीं। मुड़कर देखने की हिम्मत नहीं थी। एक बार मुड़कर देखती, उस चेहरे के भावों की मनोहारिता देखती, उन आंखों के चुंबकीय आकर्षण की परिधि में पड़ती तो···

तो···क्या होता ?

जड़ ही न उखड़ जाती ?

एक तप्त हृदय की सभी व्यथाओं के साथ उसके चरणों पर स्वयं को न्योछावर न करती···? धीरे-धीरे चलते हुए हृदय के अंतस्थल में कहीं पर एक अनाथ आग्रह की निस्सहाय चिल्लाहट सुनाई पडी। एक अथाह तराई से उत्पन्न हुंकार जैसी वह आवाज गूंज उठी। फिर भी उन्हें अनसुना कर वह आगे बढ़ गयी। उसने अपने निश्चय के पत्थर पर से दृढ़ता से कदम आगे बढ़ाये।

"हे ईश्वर ! ये कदम न कांपें, न फिसलें, न गिरें···।"

लेकिन रात भर सो नहीं सकी। और कुछ दिनों वह आफिस भी नहीं जा सकी।

स्मृति का दरवाजा आधा खोले; वही पीठ के बल पर टिके, आंखों के दिव्य प्रकाश रूपी ज्योति दिखाकर शांत कोमल स्वर में पूछता है—

"मुझमें शारदा की कामना करने की योग्यता है क्या···?"

लज्जा से नत मस्तक होकर खड़ी रहने की ही ताकत है। खुले-जूड़े की आड़ में अपने चेहरे की अरुणिमा छिपाये चुप रहने की ही क्षमता है।

शारदा, तुम्हारा जन्म ऐसा प्रश्न सुनने के लिए ही हुआ।

कोई अंतकरण में सतत फुसफुसाता रहता है। उन शब्दों के मदमाती नशे में, उस स्मृति की सुगंध में, सब कुछ भूलकर अलौकिक आनंद में लीन हो जाती है। आत्मा में एक गुलमोहर···

गुलमोहर फूले झूले खड़ा है।

उसका स्वाभाविक परिणाम क्या हुआ होता···?

स्त्रीत्व का वह कोमल स्वर जीवन के मधुर संगीत के रूप में विकसित होता न ?

उस आह्लादप्रद गान की रागधारा दिशाओं के कानों पर टकराती प्रतिध्वनित होती न···?

लेकिन खेद की बात है कि कुछ भी उसके सहज परिणाम तक पहुंच न सका। भाग्य के अदृश्य हाथों ने सब उलट-पलट कर दिया। सब गिरकर फूट गये। भाग्य को क्या कोसना···?

···तो क्या इस सबका कारण मैं ही हूं ?

हाथियों के समान मदमत्त काले बादलों से भरा आसमान ही अब बाकी है। मूसलाधार वर्षा जब चाहे तब बरस पड़ेगी।

बाप की मृत्यु अकस्मात हुई। मृत्यु ने आकर बाप को प्रेम से सहलाया तो वह निर्विकार होकर देखती रही। वह छाती पीटकर रोयी नहीं। बेहोश होकर गिर नहीं पड़ी।

टकटकी बांधे देखती रही।

आगे बाप नहीं। अपने बच्चों के प्रति दुलार प्रकट करना। पिता जानते ही नहीं थे। वे अपने हृदय का वात्सल्य प्रदर्शित नहीं कर सकते थे। पिता के मन में छह हजार कोस दूर बसनेवाले अंग्रेजों के प्रति घृणा का भाव भरा था। वह भाव बदल गया तो बदले में आये नये लोगों के प्रति भी वही घृणा जाग गयी। उनकी जिंदगी साहस और जोश से प्रज्वलित रहती थी। पिता एक ऐसे आदमी थे जिन्होंने सिर्फ जीना नहीं सीखा।

लेकिन आश्चर्य की बात है कि मृत्यु के पहले किसी शायद किसी अज्ञात प्रेरणावश बाप ने बेटी को पास बुलाया। शाम का समय था, छत के द्वारों से लाल लाल किरणें कमरे में प्रवेश कर रही थीं। अहाते की सीमा पर खड़े लंबे ताड़ वृक्षों की काली छाया बढ़ते-बढ़ते बरामदे तक आ गयी थी। पास जाकर देखा पिता की आंखें छलक आयी हैं। बालों से भरे चेहरे के गढ़े में आंसू की दो झीलें।

पिता जो कभी नहीं रोये, अब रो रहे हैं क्या···?

अपने दुबले पीले हाथों से उसे पकड़कर गद्‌गद स्वर में बाप ने पुकारा।

"मेरी भाग्यहीन···बिटिया।" जीवन के समस्त वात्सल्य और स्नेह के भाव उस पुकार में अंतर्निहित थे। कुछ बोलने के लिए उनके होंठ लालायित हो उठे। पर एक भी शब्द बाहर नहीं निकल सका। कुछ बोले बिना, वह जिंदगी समाप्त हो गयी।

वह जड़वत बैठी रह गयी। छोटी बहन और छोटा भाई छाती पीटकर फूट-फूटकर रोने लगे तब उसे होश आया।

उन होंठों पर रुके हुए शब्द क्या थे···?

पिता आखिरी क्षण क्या कहना चाहते थे···?

वर्ष कोलाहल मचाते हुए आंखों के सामने से सरक गये। बड़े-बड़े जुलूस—सार्वजनिक सभाएं—सत्याग्रह—हड़तालें। सबके सामने खादी टोपी पहने आजानुबाहु एक व्यक्ति दिखायी पड़ते थे। अखबारों में उनका चित्र छपता था। उनके भाषण छपते थे। बापू!

उस समय वह केवल बच्ची थी। घाघरा और फ्राक पहने, कंधे से झोली लटकाये वह स्कूल जाती थी। तब उसकी ओर लक्ष्य करके लोग आदर से कहते।

···की बेटी है, जानते नहीं···?

उस बाप की बेटी आज इस तरह···

या उस बाप की ही दशा क्या से क्या हो गयी। दुनिया से अनजान किसी से स्वीकृत या आदर पाये बिना छह फुट मिट्टी में समा गये।

जिस श्मशान में केवल जंगली अकौआ और जंगली केतकी के फूल अर्पित मन नत मस्तक खड़े थे; उस श्मशान में अभी-अभी लगाये नारियल के उस पेड़ के नीचे एक जिंदगी समाप्त हुई पड़ी है, गहरी नींद में सोयी पड़ी है, विस्मृति के ठंडे अंधकार में अदृश्य पड़ी है।

अभी वे आंखें छलक पड़ती है क्या · · · वे होंठ सिसकते हैं क्या · · · ? आखिरी लफ्ज अभी वहीं डटे रहते हैं क्या · · · ?

पिताजी जरा बताइये। अंत में बताने के लिए क्या कोष रह गया था · · · ?

जिंदगी की सुनसान भूमि पर निस्सहाय छोड़े इन बच्चों के बारे में कुछ कहना चाहा होगा क्या · · · ? या पंख न निकले छोटे भाई के भविष्य के बारे में · · ·? या लक्ष्य तक नही पहुंची नादान छोटी बहन के बारे में · · ·?

जीते जी तो पिता को कोई शांति नहीं मिली। कम से कम मृत्यु के बाद तो उन्हें शांति मिले। सो जाइये। शांति से सो जाइये। आखिरी पल में आप प्रयास करने पर भी जो कुछ कह न सके, उन शब्दों को मैं ही अब कह रही हूं।

मैं सबकी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेती हूं। बाप के नाम और प्रतिष्ठा की तथा बहन और भाई के भविष्य की ये सब कुछ मैं अपने ऊपर लेती हूं।

उस प्रण को पूरा करने के लिए उसका सारा भविष्य समर्पित था। एक एकाग्र प्रयाण। उस प्रयाण में कई इच्छाओं को दूर हटाना पड़ा। कई अमूल्य वस्तुओं को दूर फेंकना पड़ा। एक औरत के जिंदा रहने का मोह भी छोड़ना पड़ा। उस निर्णायक दुविधा के मुहूर्त्त की आज भी व्यक्त स्मृति है।

पिता की मृत्यु की खबर पाकर बालचंद्र तत्क्षण आये। एक रिश्तेदार या जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में दाह संस्कार से संबधित सारा कार्य चलाने में उन्होंने मदद की। उसके बाद भी वे कई बार आये। वे अपनी स्नेहपूर्ण उपस्थिति से प्रकाश प्रदान करते थे। दुख के बादलों से आच्छादित उसकी एकांत रातों में बसंत पूर्णिमा के चंद्रमा की तरह वे पहुंचते थे। बढ़ते मेलजोल से उसको भय होने लगा कि पहले का समस्यापूर्ण जीवन और अधिक जटिल हो रहा है। इसलिए उसने स्पष्ट कह दिया। जो प्रतिदिन, स्नेह, सहानुभूति तथा सहायता ही देते आये, उस भले आदमी से कृतघ्न होकर कह दिया। कटुवचनों को चुनकर, जान बूझ कर, निष्ठुरता से कह डाला।

"मेरे लिए विवाह करना असंभव है।"

पीले मुख में व्यथा भरे वह सिसकती खड़ी रही तो उन्होंने कहा, "जितने ही दिन चाहो मैं प्रतीक्षा करूंगा।" स्त्रीत्व की सहज कामना और जवानी के प्रखर मोह के जाल में पड़ने से पहले दृढ़ स्वर में उसने कहा—

"नहीं, नहीं, मैं विवाह नहीं करूंगी, मेरी प्रतीक्षा न ही करें।"

निष्कपट स्नेह की छाती पर भोंकी हुई एक कटार की तरह वे शब्द उन पर जा लगे। फिर कुछ भी कहे बिना वे वहां से चले गये। और इसके बाद उस रास्ते में उनकी छाया तक न पड़ी।

जिंदगी एक कठोर एकाग्र तपश्चर्या बन गयी। एक पुरानी फाइल की तरह मन को उसकी समस्त कमजोरियों के साथ उसने लाल फीते से बांध दिया। समाज के नैतिक नियमों का पालन करती हुई वह सावधानी से भविष्य के पथ पर आगे बढ़ी।

नौकरी में 45-75 से 50-150 तक, तथा 90-200 तक तरक्की पाती आगे बढ़ी। वर्षों के पायदानों को पीछे छोड़ती रही। एकांत दिनों की नीरसता आवर्तन मात्र रह गयी। अपनी जिम्मेदारियों को वहन करती रही। यही एक मात्र आत्म संतृप्ति है। छोटी बहन की शादी करायी। वह अपने पति बच्चों सहित सपरिवार सुदूर एक नगर में बस गयी। छोटा भाई भी एक ऊंचे पद पर पहुंच गया। इस बीच घर और अहाता भी बेचना पड़ा।

तो क्या ? जिम्मेदारियों के बोझों को एक-एक करके उतार तो दिया। करने के लिए अब बाकी कुछ नहीं है। परंतु आयु ने अब तक उसके सिर पर रजत फूलों को लगा दिया है। गालों की लालिमा मिट गयी है। जवानी की मादकता ने भी धीरे धीरे विदा ले ली। सूरज अपराह्न तक पहुंच चुका है। इतने में कई लोग जीवन में आये, कई छोड गये। दिन-रात, लंबे वर्ष इस पुराने होस्टल के अंधकारपूर्ण कमरे से सेक्रेटेरियट तक के तंग रास्ते के बायें ओर से सरक गये। कितनी सहेलियां एक के बाद एक आयी और बदल गयीं।

सुमति, आनि, राधा, मैरी, इंदिरा, श्री देवी ··· सब एक-एक करके छोड़ गयीं। हरेक छोटे परिवार की तंग चार दीवारों के भीतर की ओर ··· झनझनाते नूपुर पहनें बच्चों की किलकारियों से मुखरित धूल भरे आंगन की ओर शतावरी फूल-सी दुबली पतली, कपोत-सी विनम्र मैत्रेयी भी प्रेम विवाह के लिए कमर कसकर होस्टल छोड़ गयी। वे सब माताएं बनीं। कई तो नानियां बन गयीं। अपने-अपने पारिवारिक सौंदर्य की सुखानुभूति में परस्पर मिलाये लघु रूप धारण की हुई उन मातृ पक्षियों को केवल एक दर्शक की तरह वह ताकती रही। अतृप्त प्यास से, निराशा की व्यथा से, दीन बेबसी से वह देखती रही।

केवल मुझे ही ठोकरें खानी पड़ीं।

उसकी जिंदगी एक सराय की शाम सी थी जहां लोग आते हैं, आराम करते हैं और छोड़कर चले जाते हैं। एक ही रास्ते से आफिस और फिर वापस होस्टल आती जाती रही। एक अविराम जीवन—स्वयं निर्मित वृत्ताकार मकड़ी के जाले में चक्कर काटते रहना। शून्यता के मकड़ी के जाले में ही सबका अंत होता है।...

स्मृतियों के सामने फूल की थाली लिए एक वही, गुलमोहर के अंदर ही अंदर आंसू झरता था। उस आंसू के झरने के किनारे कभी न खिलने-वाले गुलमोहर के नीचे किसी को भी प्रतीक्षा की आशा न करते हुए भी वह अकेली बाट जोहती रहती है।

मेरी शादी कभी नहीं होगी। किसी को भी मेरी प्रतीक्षा नहीं करनी है।

भूतकाल की पगडंडियों पर अपने लगाये हुए वे कांटे स्मृति के पैरों पर चुभकर खून बहा रहे हैं।

बालचंद्र। आषाढ़ महीने पहले फूल की तरह तुमने अपने हृदय की सुगंध के साथ मुझे क्यों जगाया। समय ने तुम्हारे आंसू तो पोंछ दिये लेकिन मेरे...?

बालचंद्र से कभी-कभी मेरी मुलाकात होती थी। उन्होंने जानबूझ कर अपना सेक्शन बदल दिया। उसके बाद भी कभी-कभी मिल जाते थे। पर उन्होंने कभी भी कुछ याद नहीं दिलाया। केवल सौहार्द भाव को एक मुस्कान देकर चले गये। लेकिन देखते-न-देखते उन्होंने विगत नष्ट सौभाग्यों की दुखद स्मृतियां जमायीं। तीक्ष्ण वेदना की आग की लौ धधकती रही।

उनका विवाह हो गया। पिता भी बने। जीवन यात्रा में बहुत आगे जा पहुंचे।

फिर भी किसी एक अज्ञात शक्ति ने उसे हमेशा उनकी ओर आकृष्ट किये रखा। उनकी जिंदगी और सुख चैन जानने की उत्सुकतापूर्ण बेचैनी से मौन—अन्वेषण किया। जिज्ञासा भरी अभिरुचि के साथ मन उसके पीछे-पीछे चला। मौन स्वर में रोज प्रार्थना की।

"ईश्वर आपका भला करे।"

उनके परिवार के साथ परिचय हो गया। धीरे-धीरे उस परिवार की आत्मीय बन गयी। उन बच्चों की सहेली और चेहती बन गयीं। उन बच्चों को गले लगा कर चुंबन देते समय छाती मातृत्व से भीग उठती।

लेकिन उस नाते के संबंध में लोगों ने जो बातें फैलायीं, वे उनके कानों पर

न पड़ीं। बाल पकने लगे। उस प्रौढ़ और पुराने अपर डिविजन क्लर्क के नये रिश्ते के नारे में तरह-तरह की कहानियां फैलने लगीं। वह नहीं जानती थी कि वह एक वार्ता विषय बन रही थी। नौजवान कर्मचारियों को एक मध्य-वयस्क औरत की हास्यास्पद कमजोरी बातचीत के लिए ताजा विषय था। पोनिटेल बांधें, लिपिस्टिक लगाये, महीन नायलोन के कपड़ों से अपने शरीर का भूगोल प्रदर्शित करती युवतियां वेटिंग रूम में उसके सामने ही उसके संबंध में फुसफुसाती।

"बूढ़ी और बूढ़े का प्रेम . . ."

वे युवतियां, जो अपनी उम्र एवं ताकत से भी अधिक कहानियां स्वयं ढोती थीं, बढ़ा-चढ़ाकर खबर फैला रही थी।

"आजकल वहीं रहती है"

"थोड़े दिन पहले दोनों को कन्याकुमारी में देखा, आज कसिन कह रहा था।"

"इतनी बूढ़ी हो गयी; इस पर भी शरम नहीं आती ? यही आश्चर्य की बात है।"

वह ये सब झूठी बातें नही जानती थी। कल ही बातें उसने सुनी वह चौक गयी। एक कठोर विरोधाभास की तरह रामचंद्र से सुनना भी पड़ा।

पुरानी पृष्ठभूमि में सब कुछ घटित हुआ। आफिस का पिछवाड़ा शाम की धूप के सुनहले प्रकाश में डुबकी ले रहा था। मैदान से हवा झकझोर कर आ रही थी। संयोग से बालचंद्र मिले। दृश्य और अभिनेता सब वही पुराने है। सिर्फ अभिनय के भाग ही परस्पर बदलने पड़े।

"मेरे पारिवारिक जीवन को तितर-बितर न करना, शारदे, तेरे अनुरोध पर ही मैं तुझ-से दूर हट गया। . . . अब इस रास्ते पर भी तू मुझे शांति से नहीं जीने देगी क्या . . ?"

वह स्तब्ध होकर सुनती रही। निर्विकार। एक शब्द भी न बोली। मन के भीतर भंवर घिर आये। झाग और फेन प्रक्षुब्ध होकर उलट-पलट रहे थे। अपनी लंबी छाया के पीछे उस क्लांत आदमी को चलते देखकर वह निर्जीव रह गयी।

कहीं कोई न था। पत्ते फैलाये जंगली केले भी नहीं। प्रफुल्लित गुलमोहर का पौधा भी नहीं। जवानी की कालिमा लिये विकसित यूफ़ोर्बिया की विषैली बेल

भी नहीं। पुराने जमाने की कहानियों की यादगार आदि कुछ नहीं। शून्य आकाश मात्र वहां भौंचक्का-सा रह गया था। काल पलक झपके बिना देख रहा है। पत्ते फैलाये मनोहर जंगली केलों की पृष्ठभूमि में प्रफुल्लित गुलमोहर की जगह अब नये-नये मकानों के निर्माण के लिए पत्थरों का ढेर लगा है।

काले पत्थरों के टुकड़े। अपने-अपने स्वप्नों के सुखद आलस्य में झपकी लिये वे फूल इन काले पत्थरों के नीचे कुचले पड़े हैं।

वह क्षत-विक्षत मन लिये रात-भर रोती रही। निद्रा रहित रात। वह सिसक-सिसककर रोती रही। सब आशाओं पर पानी फिर गया। सब कुछ चूर-चूर हो गये। निद्रा रहित रात के अंधकारपूर्ण पहरों में उसने एक दृढ़ निश्चय किया। सवेरे आफिस में पहुंचते ही छोटे भाई को फोन करना है।

"शाम को हॉस्टल आना। जरूर आना। जरूर।"

फिर उससे कहूंगी।

"नहीं, मुझसे सहा नहीं जाता। जहां तक हो सकता था, उससे अधिक ही किया। अपनी शक्ति के बाहर का भी। अब बिलकुल थक गयी हूं। मैं अब नौकरी कर नहीं सकती। तू कहता था, न···मैं नौकरी से इस्तीफा दे चुकी। कहीं भी जायें मैं प्रस्तुत हूं। ट्रेनिंग के बाद वह कई बार कह चुका है···

"अब यह छोटी नौकरी किसके लिए ? छोड़ दीजिये···दीदी के गुजारे के लिए मुझे काफी वेतन मिल जाता है।"

दुनिया केवल मुझसे ही अन्याय करती है, उसने सोचा। यह आई. पी. एस.। यह उसके लिए अपमान की बात है कि उसकी दीदी एक क्लर्क है। उसके विवाह के बड़े-बड़े प्रस्तावों तथा बड़े-बड़े कुलीन परिवारों के सामने दीदी की नौकरी बिलकुल छोटी लगती है। बुरी लगती है। उसकी हैसियत को ठेस पहुंचती है। शायद शादी का प्रस्ताव लानेवालों में किसी ने इस बात की ओर संकेत किया हो।

तू नहीं जानता कि तेरी दीदी की इस छोटी नौकरी से प्राप्त तुच्छ वेतन ने ही तुझे आई. पी. एस. की उपाधि दिलायी। मैं समझती हूं कि तेरा यह आक्रोश भरा आदेश अपने मिथ्याभिमान की कालिमा को छिपाने के लिए ही है।

एक और डर भी था। छोटे भाई का विवाह करने पर, उसका घर बसने पर दीदी वहां भी उपेक्षित रहेगी क्या। उस परिवार के संगीत में एक अपस्वर बनेगी ? बहन के लिए चिट्ठियों में जो ही विरले प्राप्त होती थीं, प्रदर्शित सहानु-

भूति और दया ही एकमात्र अवलंब था और इससे अधिक उसे किसी से आशा भी नहीं है।

"बेचारी दीदी। कोई पाथेय नहीं, शेष जीवन के लिए कोई लक्ष्य भी नहीं। कुछ-न-कुछ कहा होगा। तू उसे भूलकर क्षमा क्यों नही करता ?"

भविष्य के अनदेखे निर्देश को अनसुनाकर अपनी व्यथा छिपाते हुए उसने कहा—"जो भी हो, इतने साल बीत गये इस नौकरी को करते और कोई कष्ट भी नहीं है यहां। कोई कष्ट होता तो उसका तिरस्कार किया जाता।"

आगे रास्ता बंद है। वह जड़ हो गयी है। हृदय खोलकर इतना कहना ही है।

"नही, मुझसे सहा नहीं जाता, भइया। मैं बहुत परेशान हूं।"

इस प्रकट अवहेलना और अपमान से बढ़कर और कुछ भी हो सकता है ? लेकिन सवेरे आफिस न जाना पड़ा, फोन न करना पड़ा। इससे पहले ही वह आ पहुंचा। छोटा भाई आया है, यह जानकर सीढ़ियां उतरते समय उसने सोचा—"ईश्वर पहले से ही सब कुछ जानता है। उसे स्वय ही भेज दिया है।"

लेकिन मिलने पर चकित हो गयी। पहले की अपेक्षा असाधारण रूप से यूनिफार्म में काम करते-करते दौड़कर आया है। मुख आग की लपटों की तरह लाल हो गया है। घबराहट दूर ही न हुई, पहले ही वह चिल्ला उठा।

"तुम मेरी बहिन हो, ऐसा कहने में भी शरम आती है। सिर उठाकर चल नही सकता—लज्जा और सम्मान छोडकर···आज से मै तुम्हारा छोटा भाई नही हूं। तुम्हारे साथ मेरा कोई नाता नही है। उस बूढ़े सहायक सेक्रेटरी की रखेली बनकर ही जियो···।"

स्तब्ध होकर सुनती रही। रोने के लिए आंसू शेष रह ही नहीं गये थे। लज्जा और सम्मानहीन स्त्री; इसलिए सिर भी न झुका। निर्विकार होकर सुनती रही। कहकर वह चला गया। एक तूफान की तरह।

बचपन से ही वह बड़ा क्रोधी था। क्षुब्ध असहिष्णु और दुर्बल भी था। असिस्टेंट सेक्रेटरी की रखैल।

"अरे, लाल, तुझे ये शब्द मेरे मुंह पर कहने की हिम्मत कैसे हुई।"

उसके हाथों से पलकर वह बड़ा हुआ। उसके हाथो से ही उसने खाया। उसकी लोरी सुनकर वह सोया। वह उसके लिए मां, भाई, दीदी सब कुछ थी। आंख की पुतली की तरह अत्यधिक लाड़ प्यार से बिना किसी स्वार्थ के उसने उसका लालन-

पालन किया। जिंदगी में किसी भी फल की प्रतीक्षा न करने की शिक्षा मिली—यह दुखपूर्ण सत्य—पहले से ही प्राप्त हुआ था। लेकिन यह···यह···।

यह कठोर आघात। उसे इसकी आशा कभी नहीं थी।···

"आगे तुम्हारे साथ मेरा कोई नाता नहीं।"

सब कितनी जल्दी घटित हुआ। जल की रेखा की तरह।

अतीत के फाटक बंदकर ताला लगाना क्या इतना सरल कार्य है ?

मन रेशमी लंगोटी और महीन धोती पहने दौड़ा, बचपन की हरी-भरी तराई की ओर। वहां चारों ओर फूल ही फूल खिले थे। वह फूल तोड़ने को तरस उठी। चारों ओर दौड़ती फिरी। उसके स्वर गूंज उठे "फूल···फूल समृद्धि के प्रतीक फूल (पूवे···पूवे···पोली)"[1] पैरों पर कांटे लगे तो क्या ? हाथ पर खरोंच लगे तो क्या ?···लौटते समय थाली भर फूल थे। उन फूलों की तरह उसका चेहरा भी प्रफुल्लित था।

लेकिन वे सब कुछ अकस्मात मुरझा गये।

पूजा कक्ष के दरवाजे पर फूल रखने लगी तो नानी ने कहा—

"ये सब पूजा के लिए नहीं चढ़ाये जाते बच्ची। पूजा कक्ष की फूल-थाली में एक फूल को भी स्थान न मिला। आंगन के कोने में रखे कूड़ेदान में गिरकर वे बेचारे फूल चीखे-चिल्लाये फिर मुरझा गये।

"पूजा में न चढ़े फूल।"

वर्षों की पीड़ा से घनीभूत हृदय है, तो भी मैं शांत भाव ले अब पूछती हूं नानी—क्या उस दिन मुंह से निकले वे शब्द स्नेहसिक्त जीभ से ही निकले थे। या अंधकारपूर्ण भावी विधान की काली जीभ से···?

आकाश की कालिमा से अभिशाप की तरह, वे शब्द जिंदगी में टूट पड़े हैं। अच्छी तरह झुलसाया है। राखकर दिया है।

पूजा के लिए अनचढ़े फूल मैं ही हूं नानी···मैं ही हूं···।

अनचाहे व नालायक। फूल की तरह ठुकरा दी गयी।

पूजा को नहीं चाहिये।

पुजारी को नहीं चाहिये।

जीवन के कूड़ादान में पड़े रोती हूं, जलकर राख बनती हूं।

---

1. मलयालम का एक लोकगीत है। पू. फूल। पोली—धान्य, समृद्धि।

5. सर्प

खिडकियों के गीले वार्निश से गुजर कर भीतर आती हुई तिरुवातिरा त्योहार के दिनों की चांदनी एक नयी ही स्वर्णिम आभा से युक्त थी। और यही चांदनी खिड़की की जालियों से छनकर गेरु में रंगे चिकने फर्श पर पड़ती हुई सूरजमुखी फूलों का सा अहसास दे रही थी।

यह किसकी आहट है ? आधे कटे और तिरछे रखे नारियल जैसे छोटे-छोटे घने बालों से भरे मुखवाला एक नाटा आदमी, जिसने अपना कान काट कर अपनी प्रेमिका को अर्पित कर दिया है। पागल वॉन गोग। कटे हुए कान का आधा भाग फैलट हैट में छिपाये, कुछ कहता हुआ जा रहा है।

शुभकामनायें या संवेदनाये ? चांदनी मे खिलते सूरजमुखी फूल ! उसने स्वयं ये प्रश्न किया—"क्या तूने उस पर ध्यान दिया !"

ये सब मन के मायामोह है।

वॉन गोग की कला मानसिक पीड़ा में घुला हुआ आत्म संवाद है। स्वयं अपने से गुनगुनाता हुआ मैं अपना ही गीत गाता हूं। विविध रंगों के मिश्रण का एक-एक रंग उस गीत की धुन पर नाचता हुआ मेरे चित्रो को अंकित करता है। यह कथन आधा गलत है कि कला आत्माभिव्यक्ति है। सही तो यह है कि प्रत्येक कला आत्मसंवाद है।

वह आत्मसंवाद में तल्लीन है। कलाकार बनने की लालसा नहीं, पर वह उसकी ऐसी नैसर्गिक वृत्ति है जो थन में दूध भरते ही उसे स्वयं भीतर खीचने वाली एक गाय की सी है। सुहाग रात में भी वह अपनी निराली आदत से अपने आपको मुक्त नहीं कर सका। दुलहन खाट पर लेटी है। दूल्हा चार घोड़े जुती कल्पना की सवारी में सैर करता है। उस सैर के बीच आंखों देखे समस्त दृश्यों

से वह मनोविनोद करता है। मानव मन के तीन भाव हैं—विश्वास, कल्पना और विकलता (फेथ, फैंटिसी, फ्रैगमंटेडनेस)।

हर एक का व्यक्तित्व इन भावों के उतार-चढ़ाव के अनुसार ही होता है। उसमें कल्पना और विकलता अधिक मात्रा में रहती है और विश्वास की मात्रा कम। इसलिए वह शंकित, चिंतित एवं चंचल स्वभाव का हो गया।

उसने मनोवैज्ञानिकों के सिद्धांतों को कभी नहीं माना। ये पुण्यात्माएं हवाई किले बनाने के बदले पाताल में कुएं खोदती हैं। जैसे ऊंचाई पर फरिश्तों की बस्ती है, वैसे ही मन की गहराइयों में पिशाच बसते है, यही उनकी धारणा है। जन्म-भूमि में झुलस कर भुनी हुई संस्कृति की गठरी लिये 'वियाना' नगर की गलियों व अस्पतालों के दालानों में घूमे फिरे सिगमंड फ्राइड अन्य दृष्टिकोण से सोच ही नहीं सकते। आदि पाप की चित्तियों ने यहोवा के द्वारा उपेक्षित उस यहूद की आत्मा में तहें बनायीं फिर हर एक तह के लिए ढक्कन के रूप में परिणित हुई।

युंग महोदय ?

एक दूसरा खोटा सिक्का।

उन्होंने मनोवैज्ञानिक विश्लेषण में थोड़ी पूरबी विचारधारा भी मिलाकर उंडेल दी। कलाकार काँसे के बने इन खोटे सिक्कों को जेब में डालकर झनझन बजाते हुए व्यापार करते हैं। समालोचक इसको आदिरूप रटते हुए समालोचना का विधान बताते है। यह जान लो कि आदि पाप से आदि रूप तक अधिक दूरी नहीं। ये कंगाल हैं। माना जाता है कि कला ऐसी चीज है जो मानव हृदय की अथाह जलराशि में बीजारोपण करके वंश वृद्धि करनेवाले मगर बच्चों की जंभाई में टिकी रहती है।

तट तक पहुंचे बिना वापस जानेवाली लहरों के संबंध में तू कुछ जानता है ? स्वयं झिलमिल करते समय भी आंखों में अंधेरा व्याप्त तारों को शोक गीत सुना है ? क्या तूने इस पर ध्यान दिया है कि मुंह से सीटी बजाते समय होंठ से निकलने वाली गरमी से चारों ओर के तिनके मुरझा जाते हैं।

शादी समारोह के उपरांत दुलहन के कमरे में घुसते ही सूरज मुखी फूलों के दिवास्वप्न के नशे में तू पड़ गया इसका क्या कारण हो सकता है ? भ्रांति या विकलता ? क्या वह सूरजमुखी का फूल है और दुलहन सूरज है ? क्या यही

संकेत है कि वह उसकी प्रत्येक चाल के अनुसार पंक्ति में खड़े होने का एक मोहरा मात्र है।

छाया और रंग प्रस्तुत करनेवाले सजे पुतलों का कुछ संचालन। थोड़ी दूर पर लहलहाते आम के पत्ते हवा में हिलते हैं तब छांहें सूरजमुखी के गालों को सहलाती हैं। वह दृश्य देखने पर उसकी स्मृति दूसरी ओर यों गयी मानो धीमी धूप में ऐंठता एक मणि नाग कुछ देर फन फैलाकर एक दो बार हिलकर, झूमता हुआ बिजली की चमक के समान दूसरी ओर सरक गया हो। उसके पत्ते कपड़ों पर की जानेवाली इस्तरी की नोक के आकार के हैं। इस्तरी की नोक। वह एक बहुत बढ़िया प्रयोग है न ?

मुख पर मुहासेवाली दीदी, पसीने की बूंदों को तर्जनी से पोंछकर काली और लाल चित्तियोंदार ब्लाउज पर इस्तरी करती है। इस्तरी हो या इस्तनी, कुछ भी हो, वह हंस पड़ा।

"चेच्ची चेच्ची, कावकच्ची
चेरिंटे चोट्टिले माक्काच्ची"
(दीदी, दीदी, काकली (कौए की स्त्री)
चेर[1] के नीचे का मेंढक)

एक दिन दीदी उस लड़के को लेकर सहेलियों के साथ चावल की हंडकुलिया पकाने का खेल खेलने लगी। उस समय उसके मुंह से उपर्युक्त शब्द निकले थे। उसने यह कहानी भी सुनायी—चेर के पेड़ की डाली पर एक कौआ और नीचे एक मेंढक रहते थे।···बाद को जब कभी वह उस बच्चे को लेकर चलती थी तब वह वही पद गाता था। उसकी पहली कविता जिसके संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिए रिपोर्टर अपनी पुस्तिका और आधी पेंसिल लिए आयेगा। वह शुभ दिन कौन-सा होगा ?

जब दीदी सयानी हो गयी तब एक दिन घेरे के समीप खड़े एक मुर्गे ने कुकडूं-कूं करके बांग दी। उस छबीले नौजवान ने लाड-प्यार की बातें कहीं। वैद्य ने सलाह दी; बाल का तामा बांधकर उखाड़ने से मस्सा झड़ जायेगा। मां ने कहा, "मेरे प्यारे वैद्य जी ! वह तो उसके मुख की शोभा है। उसके चेहरे पर चार

---

1. चेर—एक प्रकार का पेड़ है जो निशान लगाने के काम आता है।

चांद लगाता है। उसे उखाड़ा न जाये। वह तो दिल की बात है। 'अष्टांग हृदय' की नहीं। पड़ोसियों ने कहा कि जब मस्सा घुंघची के आकार का बनेगा तब उसके लिए एक दूल्हा आयेगा। दुबला नौजवान पतली नोकदार मूंछ का नायर युवक। कुछ दूर से देखने पर दीदी के चेहरे का मस्सा उनकी नीलम-जड़ा नासा-मणि-सा लगेगा। खासकर उन दिनों जब अमलतास पर फूल लगते हैं और झीलों के तटों पर काली मछलियों का झुंड पानी भरे खेतों की ओर इतराता कूदता है। जब कालेज बंद होने के बाद वह आया तब दीदी से उसकी आंखें चार हुई। फागुन मास की फगुनाहट गलियों, पोखरों,तालाबों में नारियल पत्तों के बने पंखों की-सी सरसराहट पैदा कर रही थी। इस समय विवाह का प्रस्ताव, निश्चय, कपड़ादान आदि विवाह संस्कार सब कुछ बात की बात में संपन्न हुए। आग बरसानेवाले मेघ (चैत्र) के बीतने पर और वर्षा ऋतु के बादलों की कड़क, बिजली की कौंध और बरसात के पहुचते ही पड़ोस के घेरे के बाहर प्रतीक्षा करनेवाला वह मूंछ-वाला नौजवान उसका साला बन गया। ऐसा हो जाने पर तब न जाने क्यों, उसको गुस्सा आया। दीदी के पति को उसने केवल "वह" ही कहकर संबोधित किया।

मां ने कहा, "वह" नहीं, तेरा भाई, बहनोई है।

नहीं, नहीं बहनोई नहीं, दीदी का पति है।

तब उसने समझा होगा कि दीदी की नाक पर का मस्सा नासामणि नही था। इसीलिए उसने उसे उखाड़ना नहीं चाहा। वह दोनों के भाग्य का प्रतीक था। पतली नोकीली मूछवाले को मिली मस्सेवाली स्त्री। फेथ, फेंटिसी और फ्रेगमेंटेडनेस।

दीदी की शादी धूमधाम से सपन्न हुई। उस दिन सवेरे संयोग से अपने उस छोटे भाई को साथ लेकर मंदिर के तालाब में नहाने गयी। पनघट पर थे सिर्फ वह और दीदी तथा "मंजपावट्टा" नामक पेड़ की डाली पर चोंच मारते हुए दो बगुले।

दीदी ने पहले उसे नहलाया। वह पत्थर की सीढ़ी पर खड़ा हो गया। उसके गीले कच्छे (कौपीन) के छोर से पानी की बूंदें टपक कर घास की नोक पर पड़ी।

"मेरे चले जाने पर तुझे दिक्कत होगी न ?" छाती पर साबुन के बुलबुले सी

चमकती उस युवती के प्रश्न का उसने कोई उत्तर नहीं दिया। उसकी आंखें एकदम घास की नोक पर बैठी एक लाल चींटी पर पड़ी।

तू चिट्ठी लिखेगा तो मैं तेरे पास तुरंत पहुंचूगी। आते समय तेरे लिए कुछ साथ भी ले आऊंगी।

वह हंसा।

लेकिन उसने दीदी को चिट्ठी नही लिखी। जितने पत्र लिखे गये थे सब फाड़ डाले गये। फाड़कर फेंके हुए पत्रों की पंक्तियों की याद कर वह हंसा वह अपना वादा किया हुआ "कुछ" भी न लायी।

उसकी दीदी के सिर्फ अच्छा दिखायी देनेवाले विशेष मस्से से शोभित नाक ही नहीं, अति मनोहर सफेद पतली अंगुलियां भी हैं। शादी के दूसरे ही दिन पति ने उसकी अंगुली की मुंदरी पर हाथ फेरा था। मुंदरी पर अंकित था एक अक्षर 'बी'।

उसने पूछा, "यह 'बी' क्या है ?"

यद्यपि वह यह बात जानता था फिर भी उसके सबंध में उसने पूछताछ की।

"बफून"

दीदी हंसी। वह भी हंसा।

नहीं, बुलडाग—उसने सुधारते हुए कहा।

भौं-भौ-भौं—वह भूंकी।

उसने पांडन कुत्ते की तरह दांत निकाले। फौरन उसकी दीदी ने उसको छाती से लगाया। तब क्या वह रोयी; रोये भी तो किसलिए ?

अब अपनी उंगली पर भी एक अंगूठो है। जिस स्त्री ने उसे अंगूठी पहनायी थी। वह खाट पर दीवार की ओर मुख करके लेटी है। अंगूठी पर 'एस' अक्षर. अंकित है। जिस पर अक्षर अंकित है, उसका रंग नीला नही पर मजंटा है।

कल सवेरे दीदी आकर मेरी उंगली पकड़कर मुझसे अंगूठी पर अंकित अक्षर का मतलब पूछ ले तो मैं क्या कहूंगा।

सूरजमुखी ?

सुर सुंदरी ?

सुप्रिया ?

सुन्नामुक्की[1]।

सिर्फ यह नाम न कहूंगा—सरला जो मृदुलता और लालित्य भरा दुलारा नाम है। उच्चारण करते समय मेरी जीभ पर लघुता और शीतलता की अनुभूति होती है। भावगीत के प्रारंभ के जैसे। यह शब्द मणिकांचि[2] छंद में लवलीन हो जायेगा। कलकांचि[3] और उपसर्पिणी[4] छंदों में भी हो जायेगा।

उपसर्पिणी।

मजंटा उसका प्रिय रंग है। मणिकांचि छंद की कविताएं भी उसको पसंद हैं। गहरे रंग के मिश्रित द्रव्य में रंजित है उसकी पसंद और नापसंद। धुंधलेपन के लिए वहां कोई स्थान नहीं। जिंदगी और मृत्यु के समान उसकी पसंद और नापसंद परस्पर मिले जुले रहने पर भी अनमेल भाव से उसके जीवन में लागू होती है।

बिसमिल्ला खां की शहनाई का गीत उसे बहुत मनोरंजक लगता है। आत्मा की सिस्कियों और स्पंदनों की स्वच्छ निर्मल रागमलिका। उसकी पसंद के रंग की रचनायें बहुत कम ही हैं।

वॉन गोग के प्रति उसका आदर भाव है। वॉन गोग के चित्रों में रंगों की गरिमा नहीं पर सघन भावात्मक तल्लीनता है। रंगों की युवतियां तन कर खड़े झूले पर झूलती हैं तब "मजंटा" नामक सुंदरी झूलने की उस लीला से पृथक रहकर कहती है "मैं रंगों की राजकुमारी हूं। तुम्हारे संग खेलना मुझे पसंद नहीं है। नृत्य कला के प्रति उसका जरा भी आकर्षण नहीं। उसका कहना है कि अंगों के संचालन की मनोहारिता में आत्मा की सुषमा छनकर नष्ट होती है। सिहरती लहराती भोगलालसा से उत्प्रेरित काम विकारों और सरकती उंगलियों में कुछेक कुत्सित चेष्टा निहित है।

उसका मनचाहा ग्रंथ है "एक जमाने में एक बेवकूफ था"।

यह एक हजार तीन सौ से अधिक पृष्ठों का एक उपन्यास है। उसके रचयिता मिस्टर एस. ब्रिग्स हैं। वे एक विश्वविख्यात अमर साहित्यकार हैं। तो भी उनके साथ तुम्हारा परिचय नही हो सकता। मिस्टर एस. ब्रिग्स की मास्टर पीस पुस्तक अब तक प्रकाशित नहीं हुई है। रचना अभी तक अपूर्ण है।

1. एक कड़ई औषध। (2), (3) (4) मलयालम के विशेष छंदों के नाम।

समूचे संसार में ब्रिग्स ही एक ऐसे उपन्यासकार हैं जिनका उपन्यास दुनिया में अभी तक अप्रकाशित ग्रंथों में सर्वोत्कृष्ट है।

पूर्णतया अपने आपको ढके कुछ ओढ़े लेटी नींद का अभिनय करने वाली सुंदरी! तू इस दुनिया के संबंध मे क्या जानती है ?

"एक जमाने में एक बेवकूफ था" बेवकूफी के सामयिक खेत में आश्चर्यो का पल्लवन और विकास होता है। मैंने उसके लिए 'आश्चर्य' को सुरक्षित कर रखा है। मेरे जादू से प्रफुल्लित होने के कारण उसके गालो पर गुल और गुलों पर मणि तथा प्रवाल मंडित ज्योति दिखेगी। वह उन रत्नों का रज अपने होंठ पर डालेगा। कीचक केशधारी काबुगंल शंकर पनिकर के आर्सनिक नारंगी रंग से रंगीन चेहरे पर अभ्रक चूर्ण की चमक दमक भी उसकी दृष्टि में रची-बसी है। हाथ की मोटाई के, कांसे के दीपक की बत्तियों की धधक के बीच में प्रवाल की लाली लिये होंठों पर और हरे रंग के गालों पर सुनहली तरंगों से चमकते अभ्रक कण। कीचक की प्रेम प्रार्थना पर इन भावों ने चारचांद लगाये। उस नारंगी रंग, अभ्रक चूर्ण और वेशभूषा को साफ करने से पहले ही एक तरुणी कीचक वेशधारी पणिकर के प्रति कामातुर होकर उसके पीछे पड गयी। यह सुनी सुनायी बात भी उसे याद आयी। उस युवती को किसकी चाह थी ; कीचक या कीचक वेशधारी शकर पणिकर की। कीचक की वेशभूषा के प्रति उसका प्रेम अंकुरित हुआ, अन्यथा रंग सज्जा और वेशभूषा धारण न किये व्यक्ति की वह कभी भी कामना न करती। आदमी नही पर कला ने उसमें प्रेम को जाग्रत किया। परंतु मै कीचक नहीं, मेरे निकट पड़ी हुई यह तरुणी 'सैरंध्री' भी नहीं। यहां वेदना को भी वेदना नहीं होती।

कमरे में सर्वत्र सुगधी हिलौरे ले रही थी। सौरभ राजी की सामंजस्यपूर्ण रासक्रीडा थी गुलाब जल, चमेली, जली अगर बत्ती, कस्तूरी मिश्रित कालो चांद[1] पाउडर, बालरामपुरम की जरीदार साड़ी, बारीक दादर, गीला वार्निश, छांह डाले सरकती आम्र की कोयले, सूरजमुखी फूल, सुगंधी की कल-कल छलकती स्वर राग लहरी। उन सबके बीच में से एक ही सुगंधी बिसमिल्लाखां की शहनाई स्वर के जैसे पृथक होकर बहुत बारीक धागों के रूप में उसकी नाक में, नसों में,

1. चांद—ललाट पर तिलक लगाने का द्रव पदार्थ।

जोड़ों में और मुग्ध कल्पनाओं में पहुंचती है। ये सब उसकी महक है कल्याण सौगंधिक खुशबू की भांति। शहनाई का सुरीला स्वर। उसके कानों में आते समय उसके सामने काम दर्प से प्रमत्त एक तरुणी घूंघट डाले प्रस्तुत होती है। ललाट पर चंदन की बिंदिया, बारीक घूंघट के भीतर से भौंहों के ऊपर की टेढ़ी कतार में चमकती चित्तियां दिखती हैं। उसके गाल मोटे है। वह बीच-बीच में घूंघट हटाकर बायीं आंख की टेढ़ी दृष्टि से देखती है। हिंदी या गुजराती में दो चार शब्द अपने पास ही बैठी सहेलियों के कानों में कहती है। लाज से तुतलाती एक लड़की। मन को मदमस्त करनेवाली महक।

महक और जिंदगी के बीच चोली दामन का संबंध है। तमिल भाषा में तिरुमणं का मतलब है शादी। दूल्हे के लिए दुलहन। जिस प्रकार महक और फूल में अभिन्न संबंध है उसी प्रकार तारुण्य और महक का संबंध है। जीवन का आधारभूत प्रमाण, स्त्री और पुरुष है। उनके लिए बदी हुई सुगंधी की खोज में पुरुष और स्त्री का जो प्रयाण होता है, उसे प्रणय कहते हैं। उनकी सुगंधी बढ़ती घटती सुषमा और पूर्णता का ताललय ग्रहण करती है तब जिंदगी की नयी-नयी कोंपले अंकुरित होती हैं। विवाह के मेल में जन्मपत्री की अपेक्षा महक का अधिक महत्व है। नक्षत्रों में सिर्फ रंग होता है, महक नहीं। अपने विवाह प्रस्ताव और समर्थन के समय इन बातों की बिलकुल उपेक्षा की गयी। उस समय नाक में एक दूसरी महक बसी हुई थी। उस तरुणी की यानी किसी दूसरी की।

उस दूसरी की।

प्रतिध्वनि और स्वर।

(ये पंक्तियां अप्रकाशित विश्व विख्यात उपन्यास की हैं। ऐसी और कितनी शालीन शैलियां तथा लंबे-लंबे निष्कर्ष प्रकाश की प्रतीक्षा में हैं।

मिस्टर ब्रिग्स।)

जीनियस ऑव द एजेज़।

युग की प्रतिभा अथवा प्रतिभा का युग ?

क्या युग प्रतिभा का सृजन करता है ?

क्या प्रतिभा के सृजनात्मक कार्य को युग प्रभाव नहीं कहा जाता ?

"हेलो गुड मार्निंग।"

"मार्निंग।"

"क्या मैं मिस्टर ब्रिग्स के दर्शन कर सकता हूं ?"

"क्यों मिलना चाहते हो ?"

"एक बड़ा जरूरी कार्य है।"

"भेंट होनी संभव नही।"

"मुझे उनसे विशेष अंक के लिए एक लेख, कहानी, कविता, एकांकी—लेनी है।"

"मिस्टर ब्रिग्स विशेष अंक के लिए नहीं लिखते। नाच कार्यक्रमों का उद्घाटन भी नही करेंगे।"

"कम से कम एक संदेश या चार पंक्तियां तो दे दें।"

"नही यह संभव नही होगा।"

"हजार रुपये नकद दिये जायेंगे।"

"तुम असभ्य आदमी की भांति क्यों बक-बक करते हो ?"

"तुम मिस्टर ब्रिग्स का सही मूल्यांकन नहीं कर सके।"

"मिस। जरा भेंट कराने की कोशिश तो करो।"

"यू गेट आउट।"

अच्छा, तुम चतुर हो न। ऐसी औरत ही लोगों से बेशरमी का बर्ताव कर सकती है। सेक्रेटरी बहुत ही चतुर है। उसके होंठों का रंग मजंटा है। ब्रीफ केस लिये लिफ्ट के पास पहुंचे ब्रिग्स ने मुस्करा दिया। सेक्रेटरी स्पेनिश प्रकाशक के लिए चिट्ठी टाइप कर रही है।

मिस्टर ब्रिग्स इज वेरी प्लीज्ड···ट्ट···ट···ट्ट···ट, -ट्ट-टाइप करनेवाली सुंदरियों की उंगलियों के एल-ओ-वी-ई के चार अक्षरो पर पड़ते ही उनके हृदय में अंकुरित, पल्लवित और प्रफुल्लित हाव भावों की रंगीन भंगिमा कैसी होगी, इसका स्मरण करते समय उस स्मृति की लहरों के बुलबुलों के जैसे मुस्कराहट होंठ पर झलकती हैं तब उच्च स्वर में खिलखिलाहट की ध्वनि सुनायी पड़ी।

ओ—किरात, राक्षस।

ब्रीफकेस लिये लिफ्ट की ओर जानेवाले युग के जीनियस मिस्टर ब्रिग्स सुहाग-रात में दुलहन की खाट पर, उसकी महक का आस्वादन करनेवाला पुरुष अपने को महसूस करने लगा। उस समय इंडियन स्टैंडर्ड टाइम के अनुसार दो बजकर सैंतीस मिनट हुए थे।

विवाह समारोह के दूसरे चरण की भीड़ या कोलाहल शांत नहीं हुआ। पेट्रोमेक्स दीपों और कार्यकर्ता लोगों की आंखें बंद न हुई। यह अच्छा हुआ कि ग्रामोफोन रिकार्ड अब नहीं चलता। वर्षों पुराना "पूकांविनोद" मे गान से लेकर "पूनिलाविन्नोवुचलिल" ऐसे नये फिल्मों के गीत तक गाते-गाते ग्रामोफोन सो गया है। फिर भी मनुष्य आंखों में रात काटते हैं।

वह धीरे-धीरे खाट पर से उठा और खिड़की के पास जाकर खड़ा हुआ।

घर के बड़े लोग पानदान के सामने बैठे सरस बातचीत में लगे हैं। गंजे, बड़ी तोंदवाले, कोई-कोई हीरे के कुंडल धारण किये, सिर पर चोटी रखे, ललाट पर लंबी रेखाओं का टीका लगाये, कुम्हलाये तुलसी फूल कानों पर खोसे, ऐसे बहुत से लोग वहां मौजूद हैं। उनकी उपस्थिति, लापरवाही और वाक्चातुर्य ने उसको आश्चर्य चकित कर दिया। सचमुच यह पीढ़ी कुशल है। इन सबने मेरे समान दुलहन के शयन-कक्ष में, आराम कुर्सी पर, बिस्तर पर अथवा बारीक घास की रंगीन चटाई पर सुहाग की पहली रातें बितायी हैं।

संप्रति उनके बेटे बेटियां, बहू-दामाद, दूल्हा, दुलहन बन चुके हैं। फिर भी युग के द्वारा धुली यह महक बहुत ही दृढ़, साथ ही साथ कोमल भी है।

विवाह के प्रमुख कार्यकर्ताओं में एक शकुनायर है जो अपनी सुहाग रात की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति कर रहा है। वेलप्प मेनन और उनके साथी उन रसीली बातों पर कान देते रहते हैं। वेलप्प मेनन को देखकर उसे हंसी आयी। एक गोरा मोटा सुंदर युवक। रंग रूप की दृष्टि से कोई कमी नहीं। घी के बने हलवे के समान चमक दमक और रंगवाले उस भीमाकार को सृष्टिकर्ता अपनी कृपा से जो माधुरी प्रदान की, वह एक सौदामिनी का सा हो गया। हलकी आवाज और मोटे शरीर का किसी भी प्रकार मेल नहीं था। चाहे वह कितनी ही महत्वपूर्ण बातें कहे, लोग ठहाका मारेंगे। भगवान की अद्भुत लीला। भगवान भी स्त्री के लिए जो कुछ निश्चित कर रखता है, उसे पुरुष को और पुरुष के लिए जो कुछ निश्चित कर रखता है उसे अनजाने दे देता है। फलतः पुरुष के आकार में स्त्रीत्व और स्त्री के रूप में पुरुषत्व का गुण समा जाता है।

बड़े लोगों के रात के वार्तालाप उसको रसमय लगे। हंसी मजाक में जुटे हुए बुजुर्ग फिर भी वे सरल स्वभाव वाले हैं। चाहे शादी हो, 'कर्कट संक्रांति' हो, दाह संस्कार हो, वे कभी हंसी दिल्लगी नहीं छोड़ते। तमाशा और विनोद उनकी

जिंदगी की जवानी है। बाल पक जाने पर भी वे हमेशा जवान रहते हैं।

मैं और मेरी पीढ़ी ?

इन हृष्टपुष्टों के साथ तुलना की जाये तो यह पीढ़ी केवल छुईमुई है। इतना ही नहीं, छूने के पहले ही कुम्हलाने वाला वर्ग।

हू हल्ला, वाद्य, कुरवा[1], ठहाके आदि कोलाहलों से परिचित इनकी जिंदगी में काम विकार एक गुनगुनाहट नहीं। हरी भरी पल्लवी और अनुपल्लवी[2] मात्र है। रति भाव उनकी चेतना से युक्त एक मादक नशा है।

"लेकिन एक बात याद रखना।"

मेरे विचारों में कौन विघ्न डालता है ?

उसने मुड़कर देखा।

कोई भी नही। वे वहां नहीं है।

मिस्टर ब्रिग्स।

पुराने काम विकार ने मृदुल और नूतन भाव सारल्य प्राप्त नहीं किया है।

वह उससे सहमत नहीं हो सकता।

मिस्टर ब्रिग्सका भी यह कथन उसके हृदय की गहराई में जड़ न पकड़ेगा।

उसने अपने भीतर के ब्रिग्स से प्रश्न किया। कोणार्क और खजुराह में गये तो हमने देखा न ? पत्थरों पर उत्कीर्ण काम विकार।

गुरुवायूर मंदिर के चित्रों के संबंध में उसने कहना चाहा पर उन दोनों ने वहां की दीवारों के चित्र नही देखे है।

पत्थर को भी मांस और रक्त तथा रूप और भाव देने में समर्थ प्रतिमा।

हां, बिल्कुल ठीक, ब्रिग्स ने कहा। उन्होंने काम भाव को उसकी संपूर्णता में शिला पर अंकित किया। तिस पर भी वे जिंदगी में बिलकुल खुरदरे और निष्ठुर नियंत्रित जीवन चर्या में लग गये। मगर वे प्रतिमाएं चेतनायुक्त होकर उठ आवें तो—? हमारे बुजुर्ग ही उन सबको पिशाचों के तहखाने में बंद कर देंगे। बाल्मीकी के द्वारा रामायण में राम शब्द की जो रट हुई है, उससे बढ़कर फ्रायड और युंग का नाम हर एक निबंध में जपनेवाले आधुनिक सररियलिस्ट बाल्मीकी

---

1 कुरवा—विवाह आदि मंगल अवसर पर होनेवाली स्त्रियों की आवाज़।

2. पल्लवी और अनुपल्लवी—समवेत गान।

लोग भी इन बुजुर्गों के जैसे ही हैं। एक दल के लोग जीवन को निर्जीव पत्थर बनाते हैं तो दूसरे दल के लोग अपने छितरे राग में मुरली बजाकर अपने फेफड़े को बेकार करते हैं। मधुमेह रोग के कारण खून के मधु अंश के बेकार होने से दुखी लोग इंसुलिन का इंजेक्शन लेकर बच जाते हैं। इंसुलिन दो पाश्चात्यों का नाम है। उनको रटने पर इंजेक्शन हो जाता है।

मिस्टर ब्रिग्स वैसा ही है। उनके लिए कोई मध्य मार्ग है ही नहीं। उनका ऐसा विश्वास है कि चावड़ी जल्दी नष्ट हो जायेगी। वह ऐसे भ्रांतिजनक विचारों को जगह देने को तैयार नहीं। खजुराह के कलाकारों ने पत्थरों पर काम को चित्रित किया। तब ब्रिग्स ? अक्षरों के बाल्मीकी के भीतर उसे छिपा रखते हैं। आधुनिक रोमांटिक लोग तो संगीत की लय के मुरझाये पत्तों की पोटली बनाये उसे कपूर समझकर सूंघते हैं। काम न तो पत्थर है न अक्षर। धुंधले राग की कपूर-पोटली भी नही।

असाधारण तौर पर मैं और ब्रिग्स ऐसे एक वाद-विवाद में क्यों कर लग गये। उसे आश्चर्य हुआ। जो भी हो, यह विद्वान किरकिरी करनेवाले हैं। उसके उपन्यास का शीर्षक अच्छा है। वह मुंह पर हाथ रखकर हंसा। ढके मुंह से हंसी की झांझ के ताल के बीच ब्रिग्स फिर बोला। वह बहुत आवेश में था।

"हमें बहुत आगे बढ़ना है। काम की भावात्मक कायापलट होनी चाहिए। भावी पीढ़ी की वास्तविकता से काल्पनिकता, क्रियान्वयन से क्रियात्मकता की प्रतीति की ओर बढ़ना चाहिए। पुरानी तथा नयी पीढ़ी के लोगों की जीवनचर्या की कायापलट होनी है। आधुनिकता की चेतनता उस ओर लगी है न ? यह युग वेश्याओं का नहीं। जनता नदियों को पसंद करती है। नवीन युग का मंदिर सिनेमा घर और नाट्यशालाएं हैं। वहां मनुष्य को गुलाम बनाकर देवदासियां नाचती हैं। वे नटियों को वश में करके ऐसी भ्रमात्मक धारणा से व्यवहार करते हैं कि मानो नटियां उनके वश में हैं। ऐसी धारणा से क्रिया के बिना ही वे आत्म संतृप्त बनते हैं।

काम यहां स्वप्न का वेश धारण करता है। क्रिया अभिनय के रूप में परिवर्तित होती है। अभिनय भी विचार प्रधान एक भाव प्रसार बनता है। दिखावा और जादू टोना।"

उसने नम्रता से पूछा, "इस भाषण को फिर जारी रखना है ?"

मिस्टर ब्रिग्स ने दृढ़ता से कहा, "हां, अवश्य, सच्चाई के साथ सीधे मार्ग से जाकर मिलना। पलायन से रक्षा नहीं हुआ करती।

तुम आज भी मनोवैज्ञानिकों के स्वेच्छाचार के जाल में फंसे हो। अविलंब वे तुम्हें छोड़ जायेंगे। एडियस और एन्टिगनी भी आवारा बनेंगे। वह जमाना भी खत्म होगा जिसमें अंधे लोग अंधों को मार्ग दिखाते हैं। तुमको मालूम है कि एडियस अंधा था। पौराणिक पुरुषों की कला का जनेऊ पहनाकर पुजारी बनाने वाले मनोवैज्ञानिकों का भविष्य खतरे में है। उनके बदले समाज में कलाकार संपूज्य बनेंगे। काम कला नहीं, पर कला काम बनेगी। ऐसा ही होगा। अपने परिश्रम को आस्वादन की परम कोटि तक पहुंचाकर कल की जनता कविता, पारायण, चित्र प्रदर्शन, नाटकों का प्रस्तुतीकरण, कहानी, हरिकथा कथन, संगीत सभा आदि से उपलब्ध नशे में कामवासना की तृप्ति प्राप्त करेगी। एक दूसरे काम दहन की संभावना है। मनोवैज्ञानिकों की ओर से काम का दहन। पुरानी और प्राकृतिक चर्चाओं के स्थान पर वैसा ही फल देनेवाली संस्कृत की सिद्धियां प्राप्त होंगी। मनुष्य की नसें बहुत ही बारीक हैं। संस्कृत के द्वारा वह औरअधिक बारीक बनती है। मनोवैज्ञानिक इस जीवनचर्या के आधार पर निष्कर्ष निकालते हैं। उन निष्कर्षों का सामयिक वास्तविकताओं से कोई भी संबंध नहीं। इसलिए नयी-नयी कल्पनाओं की बड़ी आवश्यकता होती है।"

शब्दों के इस जाल से बच जाये तो अच्छा हो ! उसने सच्ची कामना की। "मैं यह संकल्प स्वीकार करता हूं कि जिंदगी एक नाटक है। जिंदगी एक निबंध नहीं, तुम उसे ऐसा बनाते हो।"

ब्रिग्स ने फिर भी अपना कथन जारी रखा। "जिंदगी न नाटक है, न निबंध। नाटक है तो निबंध होने में भी कोई हर्ज नहीं। इतना जरूरी है कि विशेष संबंध के रूप में उसके अर्थ में व्यापकता होनी चाहिए। व्याख्या की समस्या तत्काल यहीं छोड़ दें। एक जमाने में मनुष्य वर्ग कलाकारों को काम देवताओं के रूप में अभिषेक करेगा। पुराने समय के दियोनिस देवता के जैसे, भद्रकाली के समान। कलास्वादन से नयी-नयी उपासना रीतियां पैदा होंगी। वह कला और कलाकार बड़ी ऊंचाई पर विचरण करते होंगे। फिर भी एक बात अवश्य कहूंगा। कोई भी अमूर्त कला को व्यवहार में लाने वाला नहीं होगा।"

"क्यों"

"तुमने जरा भी सोचा है ?"

ब्रिग्स मानो कुछ समर्थन करने जा रहे हैं, इतनी उतावली से जोर से पूछा, "अमूर्त कला का उद्गम स्थान कहां है ? रति के प्रति उल्टा भाव। रौंदी नसों के एकत्र होने से उत्पन्न ताल रहित स्थिति; बिगड़े रूप, चंचल मन और रौंदी नसों की भ्रांतियां हैं।

प्राकृत युग की अमूर्त कला और इस आधुनिक कला का कोई संबंध नहीं। पहली चेतना का उभार और ताललय है। दूसरी दुर्बलता की विकृतियां हैं। जैसे पांडु रोग का गोरापन सौंदर्य बनता है। काम के बारे में हमारा जो संकल्प है, उसी पर निर्भर हैं कला के उद्गम और अस्तित्व, रूप और भाव। काम वासना ही कला का आधारभूत तत्व है।"

यह क्या-क्या बकता है। उसकी समझ में कुछ न आया। वह असमंजस में पड़ गया। वह ब्रिग्स की क्षमता है। वह इन मतों के प्रतिकूल सिद्धांत कभी-कभी आसानी से प्रस्तुत कर सकता है। उस समय मैं भौंचका रह जाता हूं मानो भूला भटका, आंधी में फंसा और भारी बोझ अपनी छाती पर रखे हुए हूं।

उसने अपनी आत्मा में कही कहीं अस्तव्यस्त होकर घूमती-फिरती रेखाओं और रंगों को आकार देने की कोशिश की। कल्पना की कांति, न प्रसारनेवाली भावनाएं बांझ हैं। यह संकल्प युक्तिहीन है कि काम एक जमाने में जीवन से झड़ जायेगा और फिर उसकी रिक्त कली में कला की मंजरी फूट निकलेगी। उसने धीमे स्वर में कहा कि ताकि ब्रिग्स न सुन पाये। तब तक ब्रिग्स अपनी लंकुटी टेकते हुए उसके सामने से जा चुके थे।

मिस्टर ब्रिग्स !

सेक्स के संबंध में उसकी भी कल्पनाएं हैं। उसकी प्रतीक कली है। बहुत ही कोमल और खुशबूदार एक सुंदर कली की कोपलें। सुषमा व सुगंधी का आस्वादन करने के लिए तरसते लोगों को उनको प्राप्त करने की विशिष्ट रीतियां अपनानी हैं। शुष्क व्यवहार करे तो राग की लालिमा धुंधली हो जायेगी। नोच कर चोट पहुंचाने से वह सब कुछ बिगड़ जायेगा।

सुहाग रात के दूसरे दिन गालों एवं होंठों पर सूजन और निशान लिये चलने वाली शर्मीली लड़कियों के बारे में उसने सोचा। अनावश्यक स्थानों पर खरोंचने की पाशविकता, असभ्यता और आघात। उसने उन अरब कहानियों में वर्णित

सुंदरियों के सहृदय भाव की सराहना की जो तहखाने में बंद पुरुषों को रात के समय अंगूर रस और बकरे का पका मांस खिलाने के बाद अंतपुर में लाकर ऊंट के बालों से लपेटे चाबुक से मारती हैं। उन मतवालियों के सामने इन पुरुषों को भेजना है।

"एसथेटिक्स (सौंदर्य-भाव) की ऊंचाई पर विचरण करनेवाली वैकारिकोन्मत मनोवृत्ति है सैक्स।"

फिर मिस्टर ब्रिग्स कहने लगे।

वह जहां रुकता है, वहां से वह शुरू करता है। कभी वह द्वंद्वात्मक बकवादी होकर, फिर कभी एक शून्यवादी की तीव्रता लिये हुए।

घड़ी की सुइयां इस भाव से सरकती हैं कि वह और मिस्टर ब्रिग्स जिंदा ही नहीं रहते। समय के दिल की धड़कन। जमाने के हृदय को बदलकर रखने का समय बीत चुका है।

"ऋतु संसार की अनश्वर नादधारा है। जीवन की चेतनता के विकास का कण मात्र है। घड़ी ऋतु का संक्षिप्त बंधन मात्र है। तेरा, तेरी पृथ्वी का, सूरज का, प्राण तक का एक अंश उसमें है। उसकी चाल के अनुसार तू भी अनजाने चलता है। खिसकते रेंगते तुझसे ही दूर होता है।

इस 'तू' प्रयोग ने उसमें नीरस भाव पैदा किये। ब्रिग्स अपनी सृष्टि है। वह "बोस" नहीं। सृष्टिकर्ता की अवहेलना नहीं करती। फिर भी ये ब्रिग्स वैसा आचरण करते हैं। उसका विरोध करने को उसकी जबान उठती ही नहीं। उसके जीवन की कड़ियां झड़ जाती हैं। घड़ी की सुइयां। हर एक टिक-टिक की आवाज में वे उनको खोद-खोद लेती हैं। तो भी मैं जिंदा रहूंगा चाहे अपने सहायक सभी ऋतु क्रम मिट जायें। मिस्टर ब्रिग्स एक रूपांतर मात्र हैं। "एक जमाने में एक बेवकूफ था"। उसके रचयिता अनेक जीव धमनियों में सुगंधी और स्फूर्ति फैला कर अमर बनेंगे। मैं वर्तमान काल हूं। मेरा भविष्य ब्रिग्स। ब्रिग्स की उंगलियों के बीच जमाने के धागे तुतलायेंगे। हमको रूप देंगे।"

गेरु लगाये फर्श पर चांदनी स्फुरत समस्यायें पीछे हटने लगी हैं। कलेजे के भीतर गुप्त रहस्य घुसते हैं।

नींद में न हो तो वह क्या सोचती होगी? दूर कहीं बुझती संध्या की लालिमा में पूरबी पहाड़ियों के कतार के समान वह खाट पर एक तरफ लेटी है। थोड़ी

दूर पर अरब सागर की लहरों की तरह मैं स्मृतियों के बीच में पड़ा हूं। क्या उसके अंदर भी उसका अपना एक ब्रिग्स है ? अकेलेपन पर इठलानेवाले हर स्त्री-पुरुष अपने हृदय की गहराई में कितनों को ढोते होंगे। वह अकेली नहीं रह सकती। व्यक्ति समाज के कई टुकड़ों को एक-दूसरे के साथ टांककर जोड़ा गया एक रूमाल है। जोड़ अंदर है, बाहर नहीं।

हार और अंगूठी का परस्पर विनिमय हुआ, घंटे बीत गये। अब तक उन दोनों ने वार्तालाप न किया है। वह लज्जाशील नहीं। देखते ही मालूम हुआ कि वह नटखट है। ऐसे नटखटों में भी मूक वार्ता हुई होगी।

गीली मिट्टी में पड़ा एक बीज भी अब तक अंकुरित या पल्लवित नहीं हुआ। बचपन में मूंग के खेतों में चिड़ियों को भगाते समय, अंकुरित मूंग के दानों ने उसे आकृष्ट किया। डंठल के दोनों छोर झुके सिकुड़े खड़े हैं जैसे कोख में मनुष्य का बच्चा सिकुड़ा पड़ा है। बड़े होने पर ही मुझे ऐसा प्रतीत हुआ। सभी बीजों के दो दल हैं चाहे वह प्रकट रूप से एक सा लगे। सृजन क्रम अद्वैत विज्ञान के विपरीत क्यों हो गया। तो भी उसे कुछ कहना चाहिए था न ? पुराने ढंग में तो वैसे "इधर देखिये 'अथवा' जानते हो एक के मन में क्या-क्या विचार है ?" किसी भी प्रकार से आरंभ। मैं भी उससे कुछ न बोला। स्मृतियों को चबाते और संदेहों को आभूषण पहनाते हुए ब्रिग्स से वाद-विवाद करते समय सरक गया।

उसने एक सिगार सुलगायी। वह कोई बड़ी घटना नहीं। कितनी ही सिगार जलाकर पी हैं और बुझाकर दूर फेंकी हैं। लेकिन यह छोटी घटना रही। सिगार में आग लगने पर भी सुलगती दियासलाई को नहीं बुझाया। उंगली के झुलसने तक वह उसे पकड़े रहा। जरी की साड़ी, हरे रेशम की चोली और हाथ भर कंगन पहने उस युवती ने भी इस रोशनी में उसे ही मुड़कर देखा। कंगनों की झनझनाहट सुनकर उसकी आंखें भी उस ओर मुड़ीं। बुझती रोशनी में उसने वे आंखें देखीं। वर्षों पहले देखी आंखें। उन आंखों को उसने कब देखा है ? वह सोती न थी। सोने का बहाना मात्र था।

क्या उसकी पलकें गीली हैं ? वह अनजानें ही चौंक गया। दीवार से टिकी आराम कुर्सी को सीधी करके एक कोने में बैठा जहां से वह उसको और बाहर के दृश्यों को देख सकता था।

क्या दोनों आंखें अभी उसे देख रही हैं ? अंधेरे में कुछ स्पष्ट नहीं होता।

बाहर जलते पेट्रोमेक्स की रोशनी से उत्पन्न हलकी रोशनी में उन आंखों की पुतलियों को ढूंढ़ना मुश्किल है।

आधी रात के बीतते समय स्वप्नों का दुलार पायी आंखों में पंख लगने की खुशी से जो बरौनी खिलने को थी, वह गीली-सिकुड़ी पड़ी है। सुहाग रात के लिए सजे कमरे में अपने बीच कुछ न रखे कोष्ठक की तरह शरमाती अपराधिनी-सी बगल पर लेटी, है तरुणी ! चापलूसी के गरम रसीलेपन में हंसने डुबकी लगाने को तरसती कोमलांगी···!

फौरन उसकी वाक्धारा बह निकली। एक और बार वह विचार मन में जाग्रत हुआ कि वे आंखें परिचित हैं उसे ऐसा लगा मानो स्मृति के लटके धागे में उसका सरल हृदय ढुलकता-ढुलकता सरक जाता है। हृदय रूपी तीन अक्षर उसे अनार के पेड़ के नीचे की ओर ले जाते हैं। अनार का रंग और रूप लगभग मानव हृदय का सा है। उसके छिलके के अंदर जमी हुई रक्तिम बिंदियां हैं। हर एक में जिंदगी के स्पंदन निहित रहते हैं। फ़ेडरिको ग्रेष्यलारक ने इस संबंध में कविता लिखी है कि अनार फल मानव हृदय की तरह है। जो भी हो उस कविता को पढ़ने के बहुत पहले उसने इस तथ्य का पता लगाया था।

प्रत्येक गान प्रेम की नीरवता है। हर एक नक्षत्र समय का घनीभूत भाव है। समय की उलझी हुई गांठें। हर एक उच्छवास क्रंदन की नीरवता है।

लार्क के प्रति उसका बड़ा आदरभाव है। कौन अधिक कल्पनाशील था, लार्क या रिलके ? मिस्टर ब्रिग्स इन दोनों की अपेक्षा अधिक प्रतिभा संपन्न होगा।

घर के बंटवारे के पहले आंगन में एक अनार का पेड़ था। उसके नीचे ही पहले उन आंखों ने उसे देखा,। अनार चुगने के लिए आयी दो चिड़ियां मानव हृदय जैसे अनार फलों पर उड़ती-फिरती थीं, चोंच मारती थी। खून की बूंदें टपक पड़ीं। होंठ में फंले खून के साथ चिड़ियां डाली-डाली से फल की ओर, और फल से डाली की ओर फुर्र-फुर्र चहचहाती उड़ती-फिरती थीं। उन चिड़िया ने अपने तन-तन से मिन्नाये, पंख-पंख में छिपाये कल-कल निनाद से थोड़े रति सुख का अनुभव किया। एकाएक मादा पक्षी नीचे गिर पड़ी मानो मूर्छित हो गयी हो। नर पक्षी भी डर से या और किसी कारण से उड़कर ओझल हो गया।

उसने स्मरण किया कि अनार के पेड़ का एक अभिशप्त इतिहास है।

पहले यानी बहुत वर्षों पहले जब तक यह पेड़-पेड़ नहीं बना था। उसने न जड़

पकड़ी थी, न तना आकाश की ओर बढ़ा था। भूमि और आसमान पर समान रूप से विहार करते हुए एक राक्षस का रूपांतर मात्र था वह अनार का पेड़। उसका मन-पसंद भोजन मानव-हृदय मात्र था। इकतालिस हृदय प्रतिदिन हड़प लेने पर ही उसकी भूख मिटती थी। जिंदगी भर हजारों मानवों की हत्या कर उनकी चौड़ी छाती खरोंच, हृदय निकालकर वह खाता था। एक दिन उसे मनुष्य हृदय न मिला। उसके द्वारा मारे हुए मनुष्यों में किसी में भी हृदय न था। थोड़ी देर के लिए वह स्तंभित रह गया। भूख बढ़ गयी तो उसका आश्चर्य भी दूर हुआ। वह डर गया कि ऐसे वह भूखों मर जायेगा। मानवों को हृदय प्रदान करने की प्रार्थना करने का निर्णय कर वह गुफा से बाहर निकला तब उसने वन के सरोवर में कामासक्त देवस्त्रियों को स्नान करते देखा। राक्षस ने एक राजकुमार का वेश धारण कर उन्हें वशीभूत किया। वह प्रत्येक सुर-कन्या को लेकर गुफा में आया। उनकी छाती फाड़कर उसका दिल पेड़ की डाली पर लटकाया। यह निश्चय किया कि इकतालीस हो जाने पर भोजन का श्रीगणेश करेगा। इस प्रकार उसने छत्तीस हृदयों को डाल पर लटका दिया। उस समय उसी रास्ते से नहाने आयी एक मुनि पत्नी ने यह भयंकर दृश्य देखकर गुस्से में आकर राक्षस को शाप दिया, "अरे, निष्ठुर से निष्ठुर, अधम, तू एक पेड़ बन जाये" दूसरे ही क्षण वह एक पेड़ बन गया। ऐसा कहा जाता है कि यह वही अनार का पेड़ है। जब तक राक्षस अपने खाये हृदयों को अनार के रूप में छत्तीस फल देवताओं को और शेष मानवों को वापस न दे तब तक दानव को शाप मोक्ष न मिलेगा। यह किंवदंती प्रचलित है कि उसने सारे मानव हृदयों को वापस किया; शेष छत्तीस देव हृदयों को देने लायक देवों को भूमि में न देखने से वह आज भी पेड़ के रूप में शाप भोगता है। कहानी सुनने के बाद उसने अनार नही खाया है। देव हृदय खायी चिड़िया का हाल क्या है। क्या वह स्वर्ग चली गयीं ? अनार के पेड़ के नीचे पड़ी चिड़िया को उसने हाथ में ले लिया। चिड़िया ने उसे दीन दृष्टि से देखा। कुछ समय बाद वह ठंडी पड़ गयी। तब भी उसकी आंखों की दीप्ति कम न हुई थी। उस चिड़िया की आंखें।

उस तरुणी की आंखें।

उस चिड़िया जैसी यह तरुणी भी···। वह आगे न सोच सका। यों ही अनावश्यक बातें सोचते हृदय को दुखी क्यों बनाऊं।

यह हृदय कैसी विचित्र वस्तु है। वह अनार ही नहीं, गंदा उगालदान भी है। कितनी जल्दी बुराइयां भर जाती हैं। नीच-से-नीच रति के विकृत दृश्यों को उसने देखा। बकरी, गाय, बाज, कुत्ता, सांप, नेवला इन सभी की रति की रीतियां। उसे अपने से ही घृणा हुई इस स्मरण से कि उसके मन के अंदर इन सब के फेन उमड़ रहे हैं। मन अश्लील दृश्यों की तहों की लपेटों की गठरी है। मन के दृश्यों की खरोंच लेना भी संभव नहीं। ऐसा लगता है कि नीद भी उसे छोड़ गयी। उसने कविता की ओर ध्यान लगाया।

नीद की चिड़िया, मेरी आंखों में
अंडा देने को तैयार हुई,
बरौनियां जाल हैं, ऐसा समझकर,
घबराकर वह उड़ गयी।

हजार वर्ष पहले एक मूरिश कवि ने यह गीत गाया था। उसी परंपरा की एक दूसरी कविता भी वह मन-ही-मन गुनगुनाता रहा।

वह न्यौच्छावर होने को प्रस्तुत हुई
परंतु वह पीछे हट गया।
शैतान के प्रलोभन में न पड़ा।
एक घनी रात में
घूंघट डाले बिना वह पहुंची।
उसके चेहरे की कांति में
रात ने पर्दा हटा दिया
मेरे हृदय के तात्कालिक
काम विकार की अवहेलना का
दिव्य प्रबोध।
मेरे विकारों की बैठक के द्वारा पर,
भलाई से विचलित होने को तैयार
मुझे रोक रखनेवाले पहरेदार के जैसे,
दिव्योपदेश खड़ा रहा।
उस प्रकार उसके साथ
रात बिताने के बाद मैं

जाल बांधे ऊंट का बच्चा सा हूं ।
थन चूसे बिना, अथवा
देखे और सूंघे,
एक बगीचे में
मुझे करने को और क्या रहता है ?
उद्यानों को चराई का मैदान बनानेवाले
आवारा चौपायों की टक्कर का हूं क्या मैं ?

वह जहां से निकला, वही पहुंच गया। देखा और सूंघा तिस पर भी विचारों और दृश्यों को और भी स्पष्टता मिली। जाल बांधे एक ऊंट के बच्चे समान उसने भी उस तरुणी को देखा ।

वह खाट पर लेटी है ।
जाल धीरे-धीरे खोलकर हटाया
धीरे-धीरे उसके पास जाकर
बिस्तर के खाली पड़े भाग में
एक ओर को लेटे, जरा सरका।

उसकी अस्त-व्यस्त पड़ी लटों को संवारा। माथे पर हाथ फेरा, बरौनी सहलायी, उसका गोलापन रूमाल से पोंछा, उंगली जरा ऊपर करके भौहों के टेढ़ेपन का विस्तार नापा । नाक पर अनामिका दौड़ाकर उस पर वीणा के तारों को झंकृत किया, फिर भी अविचलित पड़ी उसके होंठों से होंठ लगाये, एक और बार दबाये, एक गहरी सांस ली। उसने भी लंबी आह खींची; गरम होंठ, मादक सुगंध, नसों का चंचल स्पंदन, ऐसे-ऐसे··· ।

बाहर का शोरगुल रुक गया सिर्फ दीपक जलते रहे। अलसाई आंखों की पलकें बंद हो रही हैं। आधी रात को सभी शिथिल पड़े हैं। पृथ्वी भी सुख की निद्रा में पड़ी है। बेचारी पृथ्वी ! वह अभागिन है। सूरज रूपी सुलतान के अंतःपुर की सुंदरी। सुलतान के पास और भी सुंदरियां हैं, रखेलियों और पत्नियों के रूप में। सुलतान उनके पास जाते समय, भूमि पर पहरा देने के लिए एक काले गुलाम को नियुक्त करता है। वह भी नींद में पड़ा है, नामर्द !

सिर्फ एक व्यक्ति. सोया नहीं है। एक तरुणी के समीप बैठनेवाला। मैं न पहरेदार हूं, न काला गुलाम। फिर,···विचार स्वच्छंद रूप से विचरण करते हैं;

एक खेत से दूसरे खेत की ओर चौकड़ी मारते हैं। मेंड़ पर चराने के लिए नियंत्रित रखे जायं तो वे अस्तव्यस्त होकर खेत में ही कूद पड़ते हैं । फिर एक खेत से दूसरे खेत में तरुणी ने प्रश्न किया, "नींद आती है न ?" उसका यह सवाल सुनकर गुस्सा आया।

सोना है न ? सुहाग रात शिवरात्री कैसे हो सकता है ? फिर वह मुझसे क्यों ऐसा प्रश्न करती है ? अरी लड़की ! सो जा; मेरी प्यारी वधू निद्रामग्न हो जा। क्या वह मुझसे ऐसी प्यार भरी बातों की प्रतीक्षा करती है ? अथवा वह मुझे सुलाने का प्रयास करती है ? वह आयी है, लोरी गाकर सुलाने । क्या सभी स्त्रियां 'अपने-अपने' पति से ऐसा ही व्यवहार करती हैं ?

"रा रा रि रा रो···मेरा कृष्ण जन्मा ?" ऐसी लोरी गाकर लाड प्यार करके हाथ पर लिटाये सुलाये जानेवाले नन्हें-नन्हें शिशुओं के जैसे । हो सकता है । उसका काम विकार भी एक लोरी गीत है। पुरुष का पालन एवं कफन है स्त्री। वह लोरी गाती है । फिर उसे समाप्त कर विलाप शुरू करती है।

सोना है न ?

फिर वही शब्द । लेकिन दूसरे की आवाज अपनी है । उसके शब्दों को दूसरे की आवाज में लपेटकर वापस देना है। तब उसके शब्दों को क्या हुआ ? मिस्टर ब्रिग्स ने सब कुछ हड़प लिया ?

उस तरुणी ने कहा, "नींद नही आती ।"

वह कुछ न बोला !

तब उसने फिर कहा, "काली चींटी काटती है ।"

"बिछौने को झटको-पटको।"

"चींटी वैसे ही जानेवाली नही है ।"

अचानक उसे अपना एक वाक्य, यानी मिस्टर ब्रिग्स की ही शैली याद आयी। उसकी एक सौ आठ प्रेमिकाओ में सबसे नासमझ मिस. विलासिनी के. डिसूजा ने उस बेवकूफ से यों कहा था, "हे प्रभो, आपके सुहाग मंच की एक काली चींटी बनने की मेरी जरा भी इच्छा नही थी ।"

उसने उससे पूछा; बेवकूफ ने विलासिनी से नहीं, वर ने वधू से पूछा, "काली चींटी कहां है ? खाट पर या कलेजे के मंच पर ?"

"कलेजे के मंच पर ।"

"काली चींटी ऐसी है" ब्रिग्स का स्मरण करके उसने उसका विवरण दिया। उनके डंक मारने पर असह्य पीड़ा और टीस होगी। काली चीटी कई तरह की होती है। सबसे बदमाश नीले रंग की और दुबले शरीर की निष्ठुर है। उसके कांटेदार डंक में भयंकर विष है। विष में मृत्यु मिली हुई है।

उस तरुणी ने जवाब नहीं दिया ताकि वह ऐसा न समझे कि उसका गला रुंध गया है। अंधेरे में आंखों से टपकनेवाली अश्रुबूंदें। उसने नहीं देखीं। वह अच्छा ही हुआ। तब पड़ोस के मुर्गे ने कुकड़ूकूं बांग दी। जब स्त्रियां आंसू बहाती हैं तब मुर्गे की बांग सुनायी पड़ती है। अब मुर्गे के सिर पर की कलंगी घुड़सवार की पगड़ी के छोर के समान हिलती होगी।

अर्द्धरात्रि को यह कूजन कैसे रुक गया ?

ब्रोकन इमेज के समान ब्रोकन साउंड भी होता है ? कौन जानता है ? कि जिन मनोवैज्ञानिकों की मैं अवहेलना करता हूं, मेरे विचार में उनकी शैली कैसे उलझ पड़ी ? लज्जा की बात है।

कमरे में कुछ आवाजें ? हवा और जरी की साड़ी एक दूसरे से टकराती हैं। कंगन की झंकार। वह आराम कुर्सी के पीछे आकर खड़ी हो गयी है। पहाड़ी के पीछे का प्रभात के समान उसका सामीप्य मुझमें कविता का खुमार पैदा करता है। उस मंगल मुहूर्त में क्रौंच दंपतियों में से एक को मार गिरानेवाले बहेलिये के नोंकदार तीर के समान हृदय में एक दूसरी स्मृति चुभ गयी। वह बेला, जब मैं बारात में निकलने के लिए स्वयं सज्जित हो रहा था। एक छोकरे ने, एक चिट्ठी लेकर प्रवेश किया। दूल्हा के समान वेशधारी को वह चिट्ठी सौंपी थीं। छोटे-छोटे सुंदर अक्षरों में लिखी कुछ पंक्तियां उसमें ध्यान देने योग्य और प्रतीकात्मक एक वाक्य।

"लो मेरी बधाइयां। आपके पावन पथ का एक कांटा बनने की अभिलाषा मुझ में जरा भी नहीं।" नीचे एक तस्वीर, एक रास्ता, चार-पांच कांटे भी।

बबूल के कांटे और काली चीटी।

सोने का कक्ष और पथ।

पैर पर लगा कांटा स्वयं खिसक गया। कलेजे पर लगी चींटी रेंगती बाहर जायेगी या अंदर डंक मारकर विष फैलायेगी ?

अंधेरे में धुएं के गोले बनाता वह यों ही बैठा रहा। उन घेरों के बीच उसकी

निगूढ़ समस्याएं विहार करती हैं। आखिर धुंएं के उन घेरों के समान वे समस्याएं भी हल्की होकर विलीन हो गयी। घेरे ही नहीं, उनको रूप देकर बाहर निकाले होंठ, मुख, मनुष्य, उसकी आराम कुर्सी, उस पर हाथ रखे खड़ी तरुणी, वह कक्ष वह देहात, सभी अदृश्य हो गये। कितनी जल्दी ये सब परिवर्तन हुए।

जिसके रूप के बदले अब साक्षात मिस्टर एस. ब्रिग्स प्रकट हुए। वे कुछ गर्व में हैं। मिस्टर ब्रिग्स सिगार नही पीते। होंठ के बांयें कोने में ज्यादा लंबा पाइप, असली ऊन की बुनी पोशाक। ओवरकोट। कश्मीरी टोपी। गले के चारों ओर लपेटा हुआ मफलर। पांच दिनों की बढ़ी दाढ़ी-मूंछ उस मुखारविंद को अलंकृत करती है।

स्थान-स्वीडन नामक देश की राजधानी। वहां का राजकीय उद्यान। उद्यान में सब कही लोगों की भीड़। आदमी, औरतें, बाल-बच्चे, कुत्ते सभी कुहरे के अधीन हैं। नुपुर की हल्की रुनझुन ध्वनि से बर्फ की टुकड़ियां झड़ती हैं। "एक जमाने में एक बेवकूफ था" नामक विशिष्ट उपन्यास को उस साल का नोबल पुरस्कार, स्वीडन के महाराज से दयापूर्वक प्राप्त ऐतिहासिक समारोह के दूसरे दिन सायंकाल का समय था। मिस्टर ब्रिग्स अपने श्रद्धालुओं के बचने के लिए उद्यान में चक्कर काट रहे थे।

तब वह उसके पीछे-पीछे चली। उसको इंटरव्यू चाहिये। दिन भर भेंट करने वालों की भीड़ थी। होटल के कमरे का सारा वातावरण, सबका सब हाट बाजार के समान लग रहा था।

फूलों का वल्य, फूलों का हार, बीअर की बोतल के ढक्कन, ह्विस्की लेबल, सिगार के टुकड़े, राख, बधाई के भाषण, कविताएं, टेलीफोन की आवाज़, जवाब, हे भगवन, कैसा कोलाहल है। क्या मनुष्य को पुरस्कार देकर मार डालना है ? अब इस बगीचे में भी सुरक्षा नही। शिकारी कुत्तों से बचकर आया था पर यहां भी पड़ गया फंदे के बीच में। मशहूर साहित्यकार को कहीं भी सुरक्षा प्राप्त नही।

मनुष्य जहां भी हो, सब कहीं उसका शिकार किया जाता है। शिकार अर्थात् भेंट, संवाद, चापलूसी, सवाल-ज़बाब। भैंसे के रूप में जन्म लेने के कारण हल ढोने का विरोध नही किया जा सकता। साहित्यकार हो तो उसकी भेंट, संवाद के लिए तैयार रहना ही चाहिए। "लिखते समय आप पीठ के बल लेटते हैं या उचक

कर किसी आसन पर बैठते हैं ? साहब, क्ष अक्षर लिखते वक्त उसकी सृजन प्रक्रिया के आवेग में उदात्त होकर 'क्ष' के बदले 'श' लिखा करते थे ? लेकिन साहित्य के बाहर की बातें कहना ही समीचीन होगा।

पके फल के समान यह वनिता रत्न बहुत ही होशियार मालूम होती है। क्या क्या हथियार लिये आयी है ? वह मेरे पग सूंघती आयी है। उसको अप्रसन्न करना बेवकूफी होगी। "लाहुमानित्ते" या "न्यूयार्क टाइम्स" की प्रतिनिधि होगी। लाखों जन पढ़ेंगे "मिस्टर ब्रिग्स नोबल पुरस्कार से सम्मानित। रवींद्र नाथ ठाकुर के बाद …।"

"यू मीन टैगोर ?"

"या (जी हां)।"

"फनी ओल्डमैन, आफकोर्स"

सामने बोनस की प्रतिभाशाली संगमरमर की बेंच पर मिस्टर ब्रिग्स बैठ गया। संगमरमर की प्रतिमा की जांघों की इतनी मोटाई आवश्यक थी। किसका शिल्प है ? मुझसे भेंट संवाद के लिए सजकर आयी ललिता भी मिनिस्कर्टवाली है। उसकी जांघें उतनी मोटी नहीं।

वह सब सवाल तैयार कर लायी है। भेंट संवाद रूपी वार के लिए आवश्यक सभी हथियार पहले ही एकत्र कर लायी है। वह एक साधारण संवाद लेखिका मात्र नहीं। सच्ची संपादिका है। युग की मूल समस्याएं उसके विषय हैं।

गंभीर स्वभाव के मिस्टर ब्रिग्स को भी यह सोचकर हंसी आयी कि घुटनों तक ही सीमित मिनिस्कर्टवाली उस औरत की लाल आंखें संसार की गंभीर समस्याओं पर विचार करने को बड़ा कुतूहल दिखाती हैं। लेकिन उसने हंसी रोकी। हंसी नहीं उड़ानी है। उसकी दी हुई प्रश्नावली से यह प्रकट होता है कि यह एक बुद्धिजीवी है। बुद्धिजीवियों को देखते समय भौंहें तानना और खिसखिलाकर हंसना नहीं चाहिए। नंगे दांत दिमाग की अवहेलना करते हैं।

मिस मरिया कोरीसी कहकर उसने स्वयं अपना परिचय दिया—एडिटर 'लाबुरगसी'। लाबुरगसी एक लिटिल मैग्ज़ीन है। प्रतियां कुल एक सौ सत्तर छपती हैं जो पत्थर के छापेखाने में छापी जाती हैं। यह त्रैमासिक संसार के डेढ़ सौ महान व्यक्ति पढ़ेंगे।

इस मासिक के पाठक, ऐसा करने मात्र से बड़ाई की ओर बढ़ते हैं। आतंर

मिलर से लेकर शोलोकोव तक इस परंपरा के अंतर्गत हैं। लाबुरगसी ने सारत्रे का भेजा हुआ लेख काफी दार्शनिक न होने की वजह से प्रकाशित नहीं किया था। कामू के लेख का एक ही बार प्रकाशन किया गया था। यह संपादक को एक छोटा पत्र था। जिस महीने में वह पत्र प्रकाशित किया गया, उस महीने में कामू को नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ। नोबल पुरस्कार द्वारा सम्मानित व्यक्ति ही इस अंक के लिए लेख लिख सकते हैं। संपादक ही पाठकों को भी चुनते हैं। मिस्टर ब्रिग्स का इंटरव्यू करनेवाली लाबुरगसी की विशेष प्रतिभायें यह नहीं, और भी बहुत हैं।

एक हाथ में नोकदार पेंसिल और दूसरे हाथ में पुस्तिका लिये वह मेरे सामने खड़ी है। एक सुंदर शालीन युवती, वीनस की प्रतिभा की पृष्ठभूमि में वह अतीव· सुंदर दिखाई दी। मिस्टर ब्रिग्स उस सुंदरी को देखता रहा। उग्र चितवन के आकर्षण या कटाक्ष के आघात से, पता नहीं, क्यों, वह मेरे सामने घास के मैदान पर उपस्थित हुई। वह घास की नोक से अपना चेहरा खुजलाने लगी तो मिस्टर ब्रिग्स के मन में एक मदमाती भारतीय सिनेमा अभिनेत्री का चित्र उभरा फिर भी बात की बात में वह गदा चित्र अदृश्य हो गया। असल में वह एक शुभ घटना है। तुम अनुमान कर सकते हो कि एक मिनिस्कर्टवाली नीचे घास पर बैठी है और तुम ऊंचाई पर बेंच पर बैठे हो तो तुम्हारी गिद्ध दृष्टि लट्टू के जैसे कहां-कहा चक्कर काटेगी ? छोर रहित घाघरी से उसने अपनी जांघों को आड़ में रखने की चेष्टा की। आखिर अपनी जांघों पर पुस्तिका रखकर ब्रिग्स की सुनहरी बातों को लिपिबद्ध कर दिया। आदर से दी गयी प्रश्नावली पर आंखें गाड़े, मुंह से पाइप निकाले बिना, उसने धुंएं से ढके हुए शब्दों में अपना भाव प्रकट किया।

"इबदाल विश्वविद्यालय में संपन्न अंतर्राष्ट्रीय साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण में इनमें अधिकांश समस्याओं की चर्चा हुई है। क्या तुमने उसे पढ़ा है ?"

"नहीं पढ़ा। मेज की दराज में रखा हैं।" लाबुरगसी की संपादिका ने कहा।

"महिमामय तत्व चिंतन मेज के अंदर रखने के लिए नहीं है। हृदय में सुरक्षित रखने के लिए हैं। मिस्टर ब्रिग्स ने अपनी बातें जारी रखीं। इस दशक में संपादकों के चिंतन दिमाग में नहीं पर आलमारी में हैं। मैं सिर्फ उन पर आरोप

न लगाऊंगा। इस जमाने में जब कि वेद ग्रंथ तक धर्म प्रवर्तक की गद्दी को ऊंचा करने का साधन बना हुआ है।"

वह हंस पड़ी। वह भी हंसा। उसके दांतों का रंग नीला है। सिगार पीने से शायद रंगीन हो गये हों। विटामिन सी की कमी से भी ऐसा हो सकता है। अपनी पेटी में रखी गोलियों में से कुछेक दे दी जायें तो···?, पाश्चात्य गोरी तरुणियों की कई कमजोरियां हैं। कमियों को दूर कर उन्हें सुधारने के लिए मैं क्यों कष्ट उठाऊं। विशेषकर जबकि मैं नोबल पुरस्कार प्राप्त एक एशिया-वासी हूं।

"मिस्टर-ब्रिग्स ! आपने मेरे सातवें प्रश्न पर ध्यान नहीं दिया ? सेक्स और सोसायटी के आपसी संबंध के बारे में।"

"यह आधुनिक संस्कृति की निर्णायक समस्या है न ? "

"इस समस्या पर सांगोपांग-नग्न-रूप से विचार करना है।"

"नेकड इज द वर्ड", मिस मरिया कोरोसी ने मान लिया।

"अस्तित्व की सत्ता व सौंदर्य सेक्स है। सृजनात्मक प्रक्रिया भी सेक्स मात्र है। दूसरी सृजन प्रक्रिया सेक्स का ही प्रतिबिंब है। शाखायें भी कह सकते हैं। पाश्चात्य जनता बहिर्मुखी विचारधारा की है। कला संबंधी कोई मौलिक कल्पना उनमें नहीं। अब,यहां , बस इतना ही कहना है। एग्जिस्टेंश्लिज्म ने उस दिशा में कुछ अनुसंधान आरंभ किये पर लक्ष्य तक पहुंचे बिना हार हुई। बेधड़क होकर कहूं तो तुम्हें बुरा लगेगा न ? तुमको पुरुष और स्त्री की—सेक्स के विकास की संभावनाओं की जानकारी नहीं। उदाहरण के रूप में सारत्रे और मदाम बुवे प्रस्तुत हैं। सारत्रे एग्जिस्टेंश्यलिस्ट सभा के धर्माध्यक्ष हैं और मदाम बुवे मदर सुपीरियर हैं। वे पुण्यात्माओं का वेश धारणकर केवल अभिनय करते हैं। नये-नये वाक्यों का अभ्यास कर रटते हैं। अराजकता की ओर लुढ़कते फिसलते पाश्चात्य बुर्जुवा की पुरानी मॉरैलिटि पर ही वे भी बुनियादी तौर पर विश्वास रखते हैं। एकमात्र अंतर यही है कि मार्कसिस्ट शैली में उसे रंजित कर दिया है। वे क्रांतिकारी नहीं हैं। चिकने चुपड़े विकृत विश्वासों का एकमात्र वितरक है। क्या मैं अपना कथन स्पष्ट कर पाया ?"

"हां श्रीमन। "

किशोर बालक-बालिकाओं की फिलासफी है एग्जिस्टेंश्यलिज्म। कुछ लोगों के

लिए कौमार्यावस्था की चपलता बुढ़ापे का साहस बनती हैं। सेमेटिक वर्ग सच्चे एशियावासियों की तरह विकसित न हो सका। उस वर्ग की धर्मसंहिता ने पाश्चात्य सभ्यता और रहन-सहन का निर्माण किया। पाश्चान्यों की मेधाशक्ति उनके आविष्कारों के द्वारा ही स्तंभित रह गयी। उन्होंने समझा कि सेक्स का प्रतीक सर्प है। यह जानते ही वे सर्प के दुश्मन बन गये। यह ऐसा है जैसे इन दिनों एटम बम बनाकर उसका संवर्द्धन करके उसकी रोकथाम करने के लिए नारा लगाया जाता है। कई दिनों से उनकी दृष्टि पूरब की ओर है।"

"इसका मतलब क्या है ?"

तुम जानते हो कि पुराने आदम व हव्वा के जैसे पाश्चात्य सभ्यता के अदन बगीचे (स्वर्ग) से स्वयं बहिष्कृत युवक-युवतियां झुंड की झुंड कलकत्ता, दिल्ली और केरल में घूमती-फिरती हैं। नैसर्गिकता की निष्कपटता की ओर लौटने को वे तरसते नहीं। उनकी इच्छा है कि सेक्स के चारों ओर सेमेटिक धर्म संकल्पों द्वारा लपेटे गये निरोधों को दूर किया जाये।

"नहीं" ऐसा एक बड़ा वोर्ड सामने रखकर कौन जिंदा रह सकता है। सर्प पिशाच नहीं पर सृष्टिकर्ता है। ईश्वर का दुश्मन नहीं, सहायक है। हिंदू देवताओं को देखो। विष्णु अनंतशायी है। सर्प परमशिव के गले का हार है। सर्प ने ही भगवान बुद्ध को छतरी लगा दी। सर्प के अभाव में देवता सृष्टि नहीं कर सकते।

इसी परिप्रेक्ष्य में एशिया की आबादी की वृद्धि और यूरोप की आबादी की कमी के क्रम का मूल्यांकन करना है। हम जंगली होने के कारण संततियों को पैदा करते हैं, इस बात का तुम प्रचार करते हो न ? संस्कृति संपन्न होने के कारण तुम परिवार नियोजन करते हो। इस पहेली पर नयी पीढ़ी विश्वास नहीं रखती। क्या जीव की चेतना का नाश करना संस्कृति है ? नपुंसकता उसका ध्वज चिह्न है। पाश्चात्य सभ्यता यंत्रों की रखेली के रूप में बदल गयी है। यंत्रों के साथ वार्तालाप करने में ही तुम्हे आनंद की प्राप्ति होती है। गीत सुनने के लिए रेडियो, चित्र देखने के लिए टेलीविजन, सैर करने के लिए मोटर और वायुयान, लेखा-जोखा करने के लिए कंप्यूटर, शवदाह करने के लिए भी विद्युतयंत्र। पाश्चात्य लोगों की ऐसी जिंदगी का कोई प्राकृतिक औचित्य नहीं। तुम परिणाम की सीढ़ी से अभी गिर पड़ोगे। उसके बीच में तुम्हारे धर्म निरोध बोझ लिए आगे बढ़ते हैं। एक

नये धर्म के रूप में मनोविज्ञान का भी विकास होता है। इन सब ने सेक्स पर परदा डाल रखा है। फलतः विकारों का उद्दीपन नहीं पर विघटन होता है धर्म और मनोविज्ञान तुम्हारे ओज का नाश करते हैं। यूरोपीय मनुष्य का नकली मुखौटा है। वह अपनी सत्ता से हाथ धो चुका है। तुम दिखावट में सुरक्षा ढूंढ़ते हो। दिखावटी दांत, दिखावटी बाल, दिखावटी छाती, बनावटी रंग, बनावटी महक, बनावटी कमर, अब तो बनावटी हृदय भी—बनावटी मनुष्य। जो युवक इस पतन से बचना चाहते हैं, वे पूरब की शरण लेते हैं। प्रकाश हमेशा पूरब में उदित हुआ पर बुझ गया पश्चिम में जाकर। नयी उत्पत्ति के, वेद के, जीवन-चर्या के तथा ईश्वर के उद्गम स्थान को खोजते हुए आवारापन की ओर स्वयं कूद पड़नेवाले, पश्चिमी राज्यों के धार्मिक ढोंगों का मुकाबला करनेवाले तथा नूतन प्यास रखने वाले युवक बेरोक एक लैंगिक दर्शन चाहते हैं। लैंगिक दर्शन का मतलब है जिंदगी का पुनरुत्थान शक्ति की क्रांति। पाश्चात्य मनीषी क्रांति के आखिरी संस्कार की तैयारी में जुट गये हैं। उनसे केवल एक ही अपेक्षा हो सकती है—"ठंडी मृत्यु।"

मरिया ने तुतलाकर कहा, "जिंदगी का फिर पुनरुत्थान कहां होगा, कृपया इस बात का विश्लेषण तो करें आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।" ब्रिग्स की मेधा शक्ति से वह प्रभावित होने लगी। उसने भी अपनी बातों को व्यंजित करने के कौतूहल से यों कहा, "भारत में ही उसकी संभावना है।"

मिस्टर ब्रिग्स ने दृढ़ स्वर में कहा, "भारत में ही। तुम जानती हो कि भारत देश में केरल नामक एक राज्य है, छोटा प्रदेश, मनुष्यों से भरपूर। नवीन दर्शन का उदय वहां से ही होगा।"

वह नीले रंग के दांत निकाले बोल उठी, "यह निष्कर्ष रसात्मक है।" तब उसने अपने जन्मदेश फ्रांस का स्मरण किया। कैसा पतन। वहां के तत्वज्ञानी और साहित्यकार कितनी निम्न श्रेणी के हैं। ब्रिग्स का जन्म फ्रांस में हुआ होता तो वह एक तीसरी क्रांति का आह्वाक बनता। उसके मन में इस भूरे रंगवाले के प्रति असीम श्रद्धा भाव उत्पन्न हुआ। वह ब्रिग्स के समीप ही बेंच पर बैठ गयी।

"यू आर ए जीनियस।" थोड़ी देर तक वे एक-दूसरे को देखते रहे। एक निरा कौतूहल।

उसने केरल के बारे में प्रश्न किया।

"अतिपुरातन काल से ही मलबार के लोग नागोपासक थे। प्रागैतिहासिक समय से ही वहां के संयुक्त परिवार के अहाते में सर्पकाव हैं। वहां उत्कीर्ण काले पत्थर, बड़े-बड़े छायादार पेड़, सर्प की मूर्तियां आदि हैं। सर्पकाव सर्पमंडप है, मंदिर है। सर्प पत्थर के नीचे लिपटे सोते हैं। कभी पत्थर पर पूंछ के बल खड़े फन फैलाकर नाचते हैं। काले सर्प, सुनहली चित्तवाले, उड़ने वाले, सिर पर माणिक्य मणिवाले ऐसे कई तरह के सर्प हैं। हम लोग सर्पों का उत्सव मानते हैं। हमारी सुंदर कन्यायें सर्पों के नाच के ताल गीत से तालमेल करके तरंगों-सी नाचती हैं। बाल बिखेरे स्फुटित स्तनों को हिलाते हुए, पसीने की बूंदें टपकाते, बरसात के बादलों की तरह वे नाचती हैं। ऐसे नाच-नृत्यों के द्वारा शिथिल पड़ी कोमल केरल कन्याओं का तन-मन अति कोमल विकारों में लीन हो जाता है। ऐसी तरलता की अनुभूति होती है जैसे संभोग के बाद की है। यह सृजनात्मक सेक्स का नाच विकास है। जिंदगी के प्रति रागात्मक निमंत्रण। मरिया कोरोसी! तुमने बाइबल का पुराना धर्म नियम पढ़ा है न?"

"जी हां, पर कई अंश भूल गयी हूं।"

"लेकिन मुझे कुछ याद है। विस्मृति भी पाश्चात्य लोगों के लिए ला-इलाज रोग हो गयी जिसका उपचार नहीं होता। तुम्हारी ऐतिहासिक जानकारी पर बहुत आघात पहुंचा है। सर्प के साथ संपर्क स्थापित करने के बाद ही आदम और हव्वा को रति बोध हुआ। हव्वा ने सर्प की उपासना करके उसे प्रकट कर दिया। उसे वह बोध सर्प से उपलब्ध हुआ जिसे ईश्वर ने देने से इकार कर दिया। उसने ही पहला सर्प नाच आरंभ किया था। सर्प नाच से उसमें तो उद्वेग हुआ, उससे इनमें काम विकार अंकुरित हुआ जिसे उसने आदम—में भी जाग्रत करके उसे प्रभावित किया। उसी क्षण से वे दोनों लज्जा के अधीन पड़ गये। लज्जा काम विकार का नूतन आवरण है। वह काम को आच्छादित नही करती पर उसे लुभावना बनाती है। यह जान लो कि लज्जा सृजन शक्ति का एक भीना आवरण मात्र है। कामदेव रूपी सर्प से घृणा करना, तिसपर भी उसके निर्देशानुसार रति सुख भोगना—इन दोनों के बीच की दुविधा पाश्चात्य जीवन को अस्तव्यस्त करती है। सैकड़ों वर्षों से तुम्हारे मन में यह संघर्ष जम गया है। इसी पृष्ठभूमि में तुम्हारे समस्त मनोविज्ञान का आविष्कार किया गया है। तुमने कभी जननेंद्रिय के बारे में सोचा है? एक दुर्बल क्षण में भी?"

"कभी-कभी !"

"उस समय तुम्हें क्या अनुभव हुआ ?"

"कैसे बताऊं ?"

"कहने में शर्म आती हो तो न बताओ। कोई जबरदस्ती नहीं।"

"पहले पुरुष और स्त्री के जननेंद्रिय न थे। क्या तुम यह ऐतिहासिक सत्य जानती हो ?"

"जी नहीं, इस निष्कर्ष का आधार क्या है ?" वह अत्यधिक उत्कंठित दिखायी पड़ी।

"जननेंद्रिय भगवान की देन नहीं। पर सर्प की देन है। पुरुष और स्त्री में सर्प का अंश है। केवल वही एक व्यक्ति को पुरुष या स्त्री बनाता है। यहोवा रूपी ईश्वर ने अपने गुलामों से निष्ठुर व्यवहार किया था तब गुलामों पर सर्प का प्रभाव पड़ा। फिर भी भगवान रहमदिल है। दुर्बलता की हालत में और गुस्से की हालत में भी। अपनी सृष्टि की पीड़ा देनेवाले बिलों को भी उसने अनुगृहीत किया। पहले वैसा ही हुआ। तुमको मालूम है कि भगवान ने ही पहली चीर-फाड़ की—अदन बगीचे से आदम और हव्वा को मार भगाने की पूर्व रात को।"

"यह बात पुराने धर्मनियम में अंकित नहीं।"

"अब नहीं पर पहले थी। पुरोहितों ने उन पंक्तियों को निकाल दिया। उन्होंने वेद ग्रंथों में परिवर्तन कर दिया है। भगवान की पुण्यवाणी में भी। वे ही सर्प के जानी दुश्मन हैं। हमेशा सर्प की ओर इशारा करके मनुष्य को अपने आप कर्मों का स्मरण कराने वाले।"

"ईश्वर ने आदि सर्प को मार डाला। उसके टुकड़े-टकड़े कर दिये। एक टुकड़ा लेकर आदम की जांघों के बीच में सिलवा दिया। दोनों बगल में सर्प के दो अंडे भी।"

"रियली", मरिया आनंद से चिल्ला उठी।

"निश्चय ही, फिर दयालु ईश्वर ने हव्वा का पेट चीर डाला।"

"ओ, ही वाज क्रुअल।" उसको दुख हुआ।

"एक घोंसला टांक दिया। उसके लिए एक द्वार भी। 'तुम सर्प के दोस्त हो, इसलिए सतत सर्प पूजा कर वंश वृद्धि करो और सुख चैन से जिंदा रहो।' यों उन दोनों के कानों में कहा।"

"जहर (वीर्य) ही सृजन की चेतना है। पुरुष अपने में निहित जहर शामिल-कर सृजन कर्म में साझेदार बनता है। यही आदि पाप है और मनुष्य की नस्ल में सबसे महत्वपूर्ण सिद्धि भी। सेक्स और सर्प एक ही हैं। सर्प विरोधी विषय सुखों के विरोधी और प्रकृति के विरोधी भी होते होंगे। ईश्वर का नातेदार बनने के लिए कमर कसनेवालों को ब्रह्मचर्य का अनुष्ठान करना होगा, इस सिद्धांत का आधारभूत तत्व यही है। एक सर्प की संतति भी अपने बिल में पहुंचने को तरसती है। हर एक सांप बिल भी उसका विष लगने के लिए लालायित रहता है। दोनों फन फैलाये, नाचते, काम क्रीडा को एक कला का रूप देते हैं।"

"इस प्रकार से मैं और तुम भी हैं।"

"हां, सर्प का अंश हम में भी अंतर्निहित है। सृजनात्मक अंश। वंश परंपरा को कायम रखने के लिए विष—जिंदगी की सत्ता।"

ना मालूम क्यों उसने हथेली ऊपर उठायी। ब्रिग्स ने कहा, "हथेली का आकार सर्प के सिर का है। फन फैलाकर झूमनेवाले सर्प के सिर का। देखो, पुरुष और स्त्री हाथ से हाथ मिलाकर नाचते हैं तब वे सर्प बनकर अभिनय करते हैं।"

ब्रिग्स ने उसका हाथ पकड़ लिया।

उसने विरोध न किया। वह उठा। वह भी उठी। उसकी दोनों हथेलियां उसकी हथेलियों में सिमट गयी। ब्रिग्स ने गीत गाया। "आनु पांपे, मेय्यु मनवु कलिर्नातु पांपे"।[1] उसका गीत ब्रिग्स की समझ में न आया। वह फ्रेंच भाषा मे था। सेक्स की कोई भाषा नहीं।

क्रमशः वे दोनों रूप मिट गये। स्टॉकहोम का उद्यान, वीनस की प्रतिमा और धुंधला प्रकाश। घर का कमरा। कमरे के अंदर दो सर्प। नर सर्प फन फैलाकर झूमता है। मादा सर्प लेटी है। नर सर्प ने उसके सिर को धीरे से चूम लिया। मादा सर्प भी अग्नि की लौ के समान चौंक उठी और फन फैलाकर झूमने लगी। नर सर्प और मादा सर्प झूमते-झूमते लिपट गये।

आखिर गेरु लगे चिकने फर्श पर जहां सूरजमुखी फूल मुरझाये पड़े थे, वहां सूरज के प्रकाश में बिना हिले-डुले, चमकते-चमकते दुगुने सिरवाले एक ही सर्प।

---

1. नाचो नाग, तन मन लगाकर खुशी से नाचो नाग।

6. देहली

'कनाट प्लेस' के बीच के पार्क से चारों ओर देखा तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं एक पिंजरे में फंसा हुआ हूं।

पार्क के दोनों ओर की सड़कों को घेरे हुए काले रालपुते और खुरदरे गोलाकार ऊंचे-ऊंचे स्तंभ एक सीध में खड़े हैं। सामने की दीवारों की खिड़कियों पर विविध प्रकार की वस्तुएं सजी हुई हैं।

जहां मैं खड़ा हूं उस हिस्से को पार्क नहीं कहा जा सकता। उस ऊबड़-खाबड़ गीली जमीन पर घास इधर-उधर फैली पड़ी है। मुझे ऐसा लगा कि अंधकार को बढ़ाने के लिए ही छायादार पेड़ लगाये गये हैं। लकड़ी की पुरानी बैंचें वहां पड़ी हैं।

बहुत देर हो चुकी। सभी दुकानें बंद हो गयीं। निर्जन सड़कों से कभी-कभी एक गाड़ी गुजर जाती। मकानों पर नीले, लाल और पीले अक्षर और चित्र झिलमिलाते और अदृश्य हो जाते।

पार्क में कोई न था। उदास मन के साथ बंदी के समान मैं उधर खड़ा रहा, व्याकुल और दुखी! इसका क्या कारण है? कुछ पता नही। दिन के बीतते-बीतते व्यथा बढ़ गयी और मन को अधिक व्याकुल करती रही।

मुझे इससे मुक्ति चाहिये। भले ही कुछ महीने भी बीत जायें। ऐसा सोचते ही मुझे संतोष का अनुभव हुआ। तत्काल इस ओर ध्यान गया कि मुझे एक सरकारी फैक्ट्री में नौकरी भी मिलनेवाली है।

मैं फिर विचारों के सागर में डूब गया।

फैक्ट्री नगर से बहुत दूर एक पहाड़ी प्रदेश में है। वहां एक छोटा-सा घर बनाऊंगा, जीवन में सुख मिलेगा, मन को शांति प्राप्त होगी।

फिर मुझे वह लड़की याद आ गयी, जिसे मैं भुला बैठा था। वह मेरी अपनी थी। किंतु मुझे उस पर बड़ा क्रोध आता जब मैं उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखता और वह ठुकरा देती। मैं सोचता आखिर वह किसकी प्रतीक्षा में बैठी है। क्या मुझे वह आजीवन दुखी और परेशान करती रहेगी ? क्या वह मेरा घर संभालने और बच्चों की माता बनने का दायित्व नहीं संभालेगी ?

सामने की बैंच पर रजाई में लिपटे किसी व्यक्ति के जोर जे खांसने की आवाज आयी। लगा कि रंगस्वामी अय्यर है। मैं दंग रह गया। यह यहां क्यों है ? क्या उसका कोई नातेदार यहां नहीं है। क्या उसका कोई अपना मकान भी नहीं है। आखिर पब्लिक पार्क की बैंच पर वह जाड़े की ठंडी रातें क्यों बिताता है।

उसे बीस वर्ष पहले पेंशन प्राप्त हुई। रसोइया होकर आया। सरकारी सर्विस में 'आफिशियेटिंग असिस्टेंट' के रूप में सेवा निवृत हुआ। अपनी एकमात्र बेटी का मथुरा में ब्याह कर दिया। पत्नी वर्षों पहले मर गयी। थोड़ी-सी पेंशन मिलती है जो बड़े नगर में पेट भरने के लिए भी काफी नही। फिर भी इस नगर को क्यों नहीं छोड़ता ?

ठंडी हवा के झोके चलने लगे थे। वह सोचने लगा दीपावली में तो अभी दिन हैं। उसके साथ ही जाड़ा शुरू होगा।

ऊपर देखा तो पूर्ण चंद्रमा चमक रहा था और जामामस्जिद के सफेद संगमरमर की बनी हुई मीनारें चांदनी में जगमगा रही थीं।

मुझे ऐसा लगा कि नगर की आत्मा मुगल इतिहास में देखी जा सकती है।

सुंदर नगर के अपने दफ्तर से मुझे काले पत्थर का एक बहुत बड़ा किला दिखायी देता है यहां कभी इंद्रपरस्थ आबाद था। यहां स्वार्थ सिद्धि के लिए झूठ बोला जा सकता था। धोखा दिया जा सकता था, स्वजन, गुरुजन, इन सबका रक्त वहाया जा सकता था। यहां औरतें जुए में गिरवी रखने, स्पर्धा के उपहार के रूप में देने की चीजे बनायी जा सकती थीं।

आज एक मुगल बादशाह के द्वारा निर्मित किला भी खड़ा है। जहां अपने ही भाइयों का रक्त बहा बाप को कैद में रखा गया एक-दूसरे को धोखा दिया गया,

दूसरों की औरतों को अपनाने की चेष्टा की गयी—सत्ता हथियाने के लिए, विलासपूर्ण जीवन बिताने के लिए।

इस किले को देखते ही उदासी बढ़ गयी और मैं सोचने लगा इस नगर की आत्मा क्या है ?

सोचा दफ्तर का चपरासी तरुणी स्टेनोग्राफर को वश में करने का प्रयत्न करता रहता है। यह दफ्तर ही क्यों, इस नगर में ही कितने हैं जो इस काम में लगे हैं। जो काम करते हैं वे, कुएं से पानी खींचने वाले बैलों की तरह उदासीन और मेरी तरह निरुत्साही होकर ही काम करते हैं।

एक रात को वह अपने साथ काम करनेवाले एब्रहाम के साथ 'रिवोली' से 'फस्ट शो' के बाद बाहर आया था। दिसंबर का महीना था। कठिन सरदी थी।

कनाट प्लेस के मध्यवर्ती पार्क में एक बैंच पर लिपटी हुई रजाई के भीतर से रंगस्वामी अय्यर की खांसी की आवाज आयी। फटी-पुरानी रजाई उस पार्क की कड़ी सर्दी को रोकने की क्षमता नहीं रखती। यह रजाई कितने ही वर्षों की पुरानी होगी। ऊपर बिना छप्पर के जिंदा रहने वाला मनुष्य ! अफसोस।

इसी पार्क में उस दिन भी मुझे उसी की याद आयी थी तब अंधेरे में दक्षिण भारतीय के स्पष्ट अंग्रेजी उच्चारण में यों सुनायी पड़ा, "सर दो दिन से मैंने कुछ भी नहीं खाया, एक रुपया दे दें···"

इस प्रकार रंगस्वामी अय्यर के साथ मेरा परिचय हुआ। जो थोड़ी कमाई थी, उसे उसने बेटी के ब्याह के लिए खर्च कर दिया। उलटे उसे कर्ज भी लेना पड़ा। कुछ परिवारों की ट्यूशन की। अफसरों का तबादला हुआ। बच्चे बड़े हुए। रंगस्वामी अय्यर की आय भी घट गयी। उसे कहीं भी नयी ट्यूशन नहीं मिली। तुच्छ पेंशन ही उनकी आय रह गयी, जो खाने-पीने के लिए पर्याप्त नहीं थी। तब किराया देता कैसे ? सार्वजनिक पार्क में रहने पर मजबूर हो गया।

बेचारा अय्यर। इस पेंशन से अपने गांव में रहता भी कैसे ? असंभव होने के कारण वह गांव जाना नहीं चाहता था।

'कोयंबटूर' के नागप्पन चेटिटयार को लिखना है। वह एक नौकरी दे तो रंगस्वामी अय्यर के साथ बड़ा उपकार होगा। तब अपने गांव और बेटी के पास पहुंच सकेगा।

पढ़ाई के दिनों दोनों दिली दोस्त थे। वह अपने पिता के व्यापार को चलाता था। पर सरकारी नौकरी करते-करते सर्वनाश हो गया।

"तू मेरे लांज चल कुछ जलपान करेंगे।" एब्रहाम ने कहा।

वह तैयार हो गया।

एब्रहाम समीपवर्ती दक्षिण भारतीय 'मेस' में रहता था।

कनाट प्लेस की विदेशी शराब की दूकानों पर यह बोर्ड टंगा था, "टुमारो इज ड्राई डे"। यह इस बात की सूचना है कि पीनेवाला आज ही खरीद ले।

एब्रहाम ने पहले ही खरीद रखी है। और वह अकेला भी है। उस कमरे में उसके साथ रहनेवाला अब कमरे पर नहीं है।

शरीर को थोड़ी गरमी लगी तो एब्रहाम ने पूछा, "तुम आओगे ?"

"कहां ?"

"लाजपत नगर।"

मैं उसकी बात समझ गया। एब्रहाम वहां रहनेवाली मरिया का एक परिचित था।

"मैं नहीं आऊंगा।"

सुना है कि मरिया की बेटी कॉनवेंट से आयी है।

एब्रहाम फिर बोला, "पिछली बार उसने कहा था कि बेटी कुछ और बड़ी हो जाये, एक साल भी बीत जाये। इस बार किसी न किसी प्रकार उसे वश में करना है।"

मुझे बहुत बुरा लगा। "तुम एक और को वेश्या बनाना चाहते हो। मां तो इसी पेशे में पड़ गयी। तुम बेटी को भी धकेले देते हो।"

"ओ, तुम्हारा वेदांत।"

एब्रहाम ने फिर कहा, "रवि ! सच्चा संबंध केवल यही है। प्रेम के निरर्थक शब्द नहीं, प्रलोभन भी नहीं। धोखा नहीं। अधिकार लिप्सा नहीं, निराशा और दुख भी नहीं। ऐसा संबंध है जिसका हिसाब तुरंत चुकाया जाता है।

ये बातें मुझे अच्छी नहीं लगीं। स्नेह सिक्त शब्दों द्वारा सब कुछ प्राप्त करने की मेरी कामना थी। मेरा विश्वास था कि मैं उसे एक सुंदर कला का रूप दे सकूंगा।

आखिर······

मेरे बाप इस विवाह के लिए अनुमति नहीं देंगे।

सिर्फ आपके स्नेह से मैं संतृप्त हूंगी। सब यातनाएं सहने के लिए मैं तैयार हूं।

नहीं, नहीं यातनापूर्ण जीवन की ओर मैं तुझे नहीं ले जाऊंगा।

नहीं तो कितने और बहाने हैं।

एब्रहाम उस समय तक जा चुका था। कमरा बंद कर चाबी मैनेजर को सौंपकर मैं भी जा सकता था। पर ऐसा न किया। मन में असीम दुख छलकता था।

खिड़की से छनकर दिखायी पड़नेवाला नीला आकाश केनवस में चढ़े रंग की तरह निश्चल था। पूर्ण चंद्रमा को ढकते और उज्वलित करते हुए फटे नीले मेघ मुझे ऐसे दिखायी पड़े मानो एक किशोरी की नग्न उभरी छाती पर एक दुशाला पड़ा है।

उसने कमरे में ताला लगाया, नीचे उतर आया। मैनेज़र को चाबी देकर बाहर आया। परिचित किशोरी के पास गया जिसने कभी भी किसी का तिरस्कार नहीं किया था।

दूसरे दिन दफ्तर में एक बूढ़े चपरासी से जो लाजपत नगर में रहता था, मुझे खबर मिली।

उसके पड़ोस की एक लड़की ने आत्महत्या कर ली। उसकी मां अपने गुजारे के लिए पेशा करके पैसा कमाती थी। कल ही उस लड़की को इस बात का पता लगा। उसकी मां ने उसे एक पुरुष को भेंट करने की कोशिश की थी। यही आत्महत्या का कारण है।

"अद्भुत सुंदर लड़की।" चपरासी ने कहा। "कैसा रंग, क्या सौंदर्य। सोलह सत्रह वर्ष की लड़की।"

चपरासी यह कह ही रहा था कि एब्रहाम भीतर आ गया। मैंने कहा "मरिया की बेटी ने आत्महत्या कर ली।"

"लड़कियों को समझ न हो तो क्या किया जाये।" एब्रहाम ने निराशा और क्रोध से कहा।

मुझे इस नगर में सबसे नफरत है। मन बहुत दुखी हो उठा है। यहां से बच निकलना चाहिये।

शाम को मैं क्लब में गोपाल से मिला, उस समय भी मन का भाव बदला नहीं था।

उसने पूछा, "तुम इतने उदास क्यों हो, मानो कि तुम्हारा कोई नातेदार हीं मर गया ।"

मैंने कहा, "यहां मुझे मानसिक शांति मिली ही नहीं । यहां से जल्दी से जल्दी किसी भी प्रकार बच निकलना है ।"

"यह नगर तो मुझे पिशाचों की तरह काटे खाता है ।"

गोपाल ने कहा, "वह तुम्हारी आत्मा को हमेशा तंग करता रहेगा ।"

मैंने मुस्कराते हुए कहा, "मैं अपनी आत्मा भेंट कर चुका हूं ।"

"तो अब बचने का कोई उपाय नहीं, तुम उसके गुलाम बन गये ।"

मैं मन-ही-मन हंसा । क्या-क्या कल्पनायें:—पिशाच, आत्मा और गुलामी । मैं यहां से चला जाऊं तो लोग क्या कहेंगे? कुछ हफ्ते में मैं इधर से बच जाऊंगा। मैं गुलाम बन गया, गुलाम ।

नागप्न चेट्टियार यहां एक संसद सदस्य की सहायता से परमिट या लाइसेंस लेने आया ।

मैंने रंगस्वामी को बुलाया । उसे नहाने को तेल और साबुन दे दिया । अपना कुर्त्ता और धोती पहनने को दी। मेरे इस व्यवहार से नागप्पन को रंगस्वामी से भी हमदर्दी हुई। उसने उसकी सहायता करने का वायदा किया । हम उसी के बारे में बातें कर ही रहे थे कि उसी बीच अय्यर बाहर आ गया । मैंने समझा कि वह इन बातों से बहुत खुश हुआ होगा ।

मैंने चेट्टियार को विदा किया । दरवाजे से निकलते-निकलते उसने अय्यर से कहा, "मैं परसों जाऊंगा । मेरे साथ चलना । कोई-न-कोई नौकरी दिला दूगा । गुजारा करने में परेशानी नहीं होगी ।"

मैं अचंभे में पड़ गया । अय्यर झिझकता रहा । नागप्पन ने पूछा, "क्यों बोलते क्यों नहीं ? चलना नहीं चाहते ?"

थोड़ी देर के बाद अय्यर ने कहा, "मैं साहब को बताऊंगा ।"

ठीक है । स्पष्ट था कि उसको यह अच्छा न लगा । मुझे भी बुरा लगा।

अय्यर जल्दी से चला गया ।

रंगस्वामी फिर कभी नहीं आया ।

एक शाम को कनाट प्लेस पर उससे मिला। वह अपनी-फटी पुरानी रजाई ओढे, महिलाओं द्वारा संचालित कपड़े की दूकान के सामने खड़ा था ।

"तुमने एक बात बताने को कहा था, फिर दिखायी ही नहीं पड़े।" इन शब्दों से शेष स्पष्ट था।

उसने एक अपराधी के समान उत्तर दिया, "वह नौकरी मुझे नहीं चाहिए।" कुछ देर के बाद उसने फिर कहा, "अच्छा हो यदि यहां कोई नौकरी मिल जाये।"

मैंने अपना रोष छिपाते हुए उससे यहां से चले जाने की बात कही। यदि वह बचना नहीं चाहता तो मैं क्या करूं। वह स्वयं अपना जिम्मेदार है।

जनवरी के दिन आये। नगर में अत्यधिक सर्दी पड़ रही थी। सफदरजंग के मौसम कार्यालय के तापमान यंत्र का पारा शून्य से भी नीचे था।

शाम को घूमने को सुपर बाजार गया। दूकानों पर हर प्रकार की वस्तुएं रखी थीं। खरीदनेवाले और बेचनेवाले सभी व्यस्त थे।

लौटते समय एब्रहाम के 'मेस' गया। शरीर को थोड़ा गर्म किया। बाहर आया।

कनाट प्लेस के मध्यस्थित पार्क में आया।

प्रतिदिन रंगस्वामी की तलाश रहती।

बेंच पर उसकी रजाई पड़ी देखी। उसमें से खांसी की आवाज सुनायी पड़ी। निकट आने पर देखा कि चीटियों की एक पंक्ति रजाई के अंदर चली आ रही है। रजाई के फटे हिस्सों से शरीर दिखायी दे रहा है। बदबू फैलने पर कोई व्यक्ति नगरपालिका को अवश्य खबर देगा।

मैं बड़ा दुःखी हुआ। एब्रहाम को भी रंगस्वामी अय्यर की कहानी सुनायी।

"जो यहां आया उसे फिर यहां से छुटकारा पाना कठिन है" एब्रहाम ने कहा। थोड़ी देर बाद उसने फिर कहा, "यह नगर एक चतुर वेश्या-सा लगता है। यहां आनेवाले यहीं रह जाते हैं और बरबाद हो जाते हैं।"

यह ठीक है?...

चलते-चलते उसने कहा, "अकबर ने आगरा में एक महान साम्राज्य की स्थापना की थी। ज्योंही उनके अनुयायी इस नगर में आकर बसे त्योंही उनकी बरबादी शुरू हुई। अंग्रेजों ने कलकत्ता में एक साम्राज्य स्थापित किया। इस नगर को मुख्य नगर के रूप में बदल दिया, जरा याद करो उस समय का उनका प्रताप कैसा था। पैंतीस वर्ष भी न बीते, तब तक उनका सर्वनाश शुरू हो गया, क्यों?

तुम्हारा धर्मपुत्र है न ? कुरुक्षेत्र के युद्ध में विजयी होने पर उसको अनुभव हुआ कि इसी नगर को राजधानी बनाकर शासन करना चाहिए। इंद्र के राजमहल के समान एक बड़े महल का निर्माण कर राज-काज का संचालन करने लगा। फिर क्या ? उसके ही जीवनकाल में सब मिट्टी में मिल गया।"

क्या ऐसा कोई शाप इस नगर को लगा है ? किसने इस नगर को देहली नाम दिया। गोपुर द्वारा कुछ और सीमित भाषा में कहा जाये तो फाटक—नाश की ओर ले जानेवाला फाटक ? इस नगर के भीतर प्रवेश करनेवाले सब इस नगर के गुलाम क्यों बनते हैं ? क्या वे इससे बच नहीं सकते ?

हाय ! ये सब सरासर निरर्थक बातें हैं। अंधविश्वास ! मेरा अभी बचाव होगा।

इधर देखो। मुझे अपने जाने के दिन का निर्णय करना बाकी है। कोई भी दिन हो सकता है। मेरे गांव से एक मित्र ने लिखा था कि कंपनी चलाने का अंतिम निर्णय हो गया। सरकार को लिखित में सूचना भी दे दी गयी है।

शायद कल ही—

दूसरे दिन दफ्तर पहुंचने पर मुझे यह खबर मिली कि 'सेक्शन आफिसर' की नियुक्ति की सूची आ गयी है। उसमें शिवचरण अग्रवाल का नाम है, तुम्हारा नहीं।

वह मुझसे भी जूनियर था। अत्यधिक सावधानी और उत्तरदायित्व से जो कार्य करने होते, वे सब हमेशा मुझे ही सौंपे जाते थे। अग्रवाल को सदा सरल कार्य ही दिया जाता था। सरल से सरल कार्यों को भी गड़बड़ करने की उसकी एक विशेष आदत थी। तिस पर भी अब···

एब्रहाम ने कहा, "अरे, तुम बड़े मूर्ख हो। तुम्हारे पास औरत है, शराब है, मालिश के लिए औषधियुक्त तेल है ?"

थोड़ी देर बाद उसने फिर कहा, "और फिर तुम यहां के निवासी भी नहीं। क्या इन्हीं कारणों से सीधे मार्ग से यहां कार्य सिद्धि संभव नहीं होती ?"

निराशा और दुख ने मन को अत्यधिक अशांत कर दिया।

लंच के बाद अंडर सेक्रेटरी ने मुझे बुलाया। मैं गौरव के साथ खड़ा रहा। उन्होंने कहा, "जानते हो क्यों बुलाया है ? एक खुश खबरी देने के लिए। 'रिफायनरी' से पत्र आया है। उन्होंने तुम्हें नियुक्त करने का निश्चय कर लिया

है, तुम्हारे ही गांव में, अच्छा वेतन मिलेगा। फिर यह अब सरकारी नौकरी जैसी है। तुम सचमुच भाग्यवान हो।"

मुझे ऐसा लगा कि उसने उसी वक्त मेरे चेहरे को भी ताड़ लिया। "क्या बात है तुम्हें यह नौकरी पसंद नहीं ?"

"मुझे वह नौकरी नहीं चाहिए, सर।"

"यह क्यों, तुम ऐसा क्यों कहते हो ?"

"मैंने मन में ठान ली है।"

लौटकर सीट पर आया तो उसने स्वयं से कहा, "मैंने यहां लड़ने-भिड़ने की ठान ली है।"

7. मुक्ति का रास्ता

मैं एक रास्ता ढूंढ रहा हूं। मुक्ति का रास्ता।

चलते-चलते बहुत देर हो गयी। मैं थक गया हूं। सारा शरीर दर्द कर रहा है। पैर दुख रहे हैं। हाथ केले के रेशे जैसे कमजोर हो गये हैं। मांस और मज्जा सूख गये हैं। हड्डियां इतनी पतली और सूखी हो गयी हैं कि वे टूट जायेंगी। किसी भी पल। फिर चलना मेरे लिए असंभव हो जायेगा।

बाहर निकल सकूं, तो सुरक्षित रह सकूंगा। मुझे मालूम नहीं कि बाहर क्या-क्या है। फिर भी बाहर सुरक्षा अवश्य होगी। दाढ़ीवाले कुबड़े बूढ़े ने मुझे यह सब बताया। बाहर चिर सुख है। वहां पहुंचना इस यात्रा का लक्ष्य है। वहां के रास्ते का पता लगानेवाले सचमुच भाग्यवान हैं। कौन जाने? मैं उसकी बातों पर भरोसा तो नहीं करता और न ही मैं ऐसे एक शाश्वत सुख की ताक में रहता हूं। फिर भी मुझे पूर्ण विश्वास है, बाहर सुख अधिक है। कारण यहां के कष्ट इतने कठिन हैं कि दूसरा कोई भी स्थान इससे बेहतर ही होगा। इसलिए मैं बाहर की ओर जानेवाला रास्ता ढूंढ़ रहा हूं।

जहां मैं रहता हूं यह एक बड़ा राजमहल है। मुझे पता नहीं था कि यह इतना बड़ा है। अभी मालूम नहीं कि कितना और बड़ा है। चलते-चलते धुंधले प्रकाश के लंबे दालान आगे की ओर बढ़ते ही जाते हैं। टेढ़े-मेढ़े ढंग से बढ़ते हैं। शाखाओं और उपशाखाओं में बंटे हुए हैं। एक अंतहीन रास्ता।

दालानों के सिरे पर घने काले पत्थर की दीवारों की बनी छोटी कोठरियों में क्रूर चेहरे दांत दिखाते हैं। कोढ़ के सफेद चकतों से भरे भयानक चेहरे आंखों में आग भभकती है। ऊपर को मुड़ी हुई नाकें। सूखे फटे होंठ। गालों और सिर पर उभरी हुई गांठें। भुने हुए पापड़-सी घृणित उंगलियां। सिकुड़ती नाटी उंगलियां

जगह-जगह दबोचने की चेष्टा करती हैं। बचकर चलना पड़ता है। मगर हमेशा यह संभव नहीं होता। हाथ लगे तो कोढ़ लगेगा।

अंगहीन कुष्ठ रोगियों के पास मिठाइयां, सोना और धन है। उनकी कोठरियों के पीछे लाल मसलिन परदों के पीछे नग्न औरतें हैं। काली चुभती दृष्टियां। वशीभूत करनेवाली नशीली चीजें। छाती से लगाने के लिए आगे बढ़ाये मोटे-अवयव। आलिंगन में दबे, अधर रस पान करने पर तुम्हें एक लंबी निद्रा आ घेरेगी। जागने पर सारे शरीर पर फोड़े-फुंसियां।

मेरे शरीर पर व्रण है—गरमी का व्रण। हाय ! छि ! नहीं ! मुझे गलत-फहमी हुई है। यह व्रण नहीं हैं। खटमल ने काटा होगा। नहीं तो चींटी ने।

कोढ़ लगे हुए इन दालानों का अंत नही। थके सिर, क्षीण शरीर और शिथिल पैरों से मैं कब से चल रहा हूं !

कब से ?

मैं किस दिन यहां आया ? मुझे याद नहीं। समय बहुत हो गया। आया अकेले। नातेदारों के बिना। नल के जैसे बरतन में दबते घुटते मैं इस मकान में आया। छोटे द्वार से होकर। बिल से झांकनेवाले चूहे की तरह मैंने अपना सिर बाहर निकालकर देखा। खुली आंखों से भयभीत होकर मैंने किसी चीज को ढूंढ़ा। मैंने क्या ढूंढ़ा। आज भी मैं क्या ढूंढ़ता हूं। मुझे मालूम नहीं। उसमें मेरे गिरते ही फाटक बंद हो गया था। फिर वह फाटक मेरे लिए कभी नहीं खुलेगा। वहां लौट जाने का आग्रह भी नहीं। कारण यह है, मैं नहीं जानता कि वहां का हालचाल कैसा है। इस मकान में आने पर मुझे देखने की शक्ति प्राप्त हुई। मुझे पता नहीं, किसी मंत्र शक्ति या मानसिक आघात से मेरी स्मरण शक्ति नष्ट हो गयी। जो भी हो, जहां से मैं आया, वह स्थान मेरी लंबी विस्मृति के अंधेरे में भूला पड़ा रहता है। मैं उसे याद भी नहीं कर सकता। कभी-कभी नींद आने पर मैं एक स्वप्न देखता हूं कि गीले, गरम और स्निग्ध थैली में एक पालने में मैं लेटा हुआ हूं। शायद वही जन्मस्थान जिसे मैं छोड़ आया हूं। एक स्निग्ध फाटक से होकर मुझे इस खतरनाक चक्रव्यूह में जबरदस्ती से डाल दिया गया है—वहां से !

मेरे यहां गिर पड़ने पर चारों ओर के भयानक चेहरे दांत दिखाकर हंस पड़े। उन्होंने गीत गाये, नृत्य किया, मेरे आगमन को धूमधाम से मनाया। वे मुझे पसंद

आये। फोड़े और फुंसियों से पीड़ित उनके शरीर में मैंने पहले पहल सौंदर्य देखा। मुझे कुछ भी मालूम नहीं था।

उन्होंने मुझे अपनी भाषा सिखायी। चलना, दौड़ना और कूदना भी सिखाया। मैं बाद को समझ गया कि किसी न किसी उद्देश्य से प्रेरित होकर ही उन्होंने मुझे और भी कई बातें सिखायीं। उनकी हंसी में भी मेरे रक्त के लिए प्यास थी।

उनके मध्य से होकर मैं चलने लगा। अंधकार से आच्छादित गलियों से। इनमें किसी ने मुझे गिरने के लिए मेरे मार्ग में कंकड़ और कांटे डाल दिये। मुझे फंसाने के लिए उनके फंदे तैयार रहे। मैं बहुंत सतर्कता से चला। थक जाने पर मैं खाली कोठरियों को तलाश कर सो गया। तब स्वप्न मेरे पीछे पड़े। मैंने स्वप्न में बेदाग और फोड़े रहित मनुष्यों को देखा यों मैं समझ गया कि सुंदरता और कुरूपता में क्या अंतर है।

मुझे पता नहीं चला कि किसने इस मकान का निर्माण किया। यह बहुत पुराना मकान है और हमेशा बढ़ता रहता है। इसलिए पुरानी स्थिति प्रकट नहीं होती। नये कमरे, नयी साज-सज्जायें। यह मकान सबसे पुराना और सबसे नया दिखता है।

कई विचित्र जीव इसमें अपना जीवन बिताते हैं। वे सब अज्ञान में बड़े होते हैं। वे इस बात से अनभिज्ञ रहते हैं कि वे कहां से आये। यह भी मालूम नहीं कि उन्हें जाना कहां है। मेरे जैसे बाहर जाने को तरसनेवाले भी उनमें बहुत रहे होंगे। परिश्रम से उनका मन ऊब गया होगा और उन्होंने ठान ली होगी कि अंत तक यहीं दिन काटेंगे। उनके सिर और होंठ पर खाज हैं। ऐसी खाज जिससे मुक्ति असंभव है।

वहां मार्गदर्शक बहुत हैं।

उनमें एक है—कुबड़ा। उसकी दाढ़ी है। गले में एक जयमाला है। कटिबंध अंगोच्छा है। दालान के एक छोर पर एक कोठरी में सुगंध युक्त चीजों का धुआं उड़ाते हुए तुम्हारी बाट जोहता है। मोटी जीभ बाहर निकाले, सोना पोते हुए, दांत निकाले, गोश्त देखे हुए कुत्ते-जैसी हंसी हंसते हुए उसने मेरा स्वागत किया। उसके चेहरे की फुंसी दाढ़ी के बालों से ढंकी रहती है। इसलिए उसके बुलाने पर, मैं बिना डर के उसके पास चला गया। फुंसी से निकलते मवाद की बदबू को उसने

सुगंधित धुएं में छिपा रखा है। उसने मुझे बेटा कहकर संबोधित किया और बैठने को कहा। मेरे बैठने पर वह कहने लगा।

"मैं जानता हूं तू यात्रा से थक गया है। तुझे थकावट दूर करनी है न ?"

"नहीं नहीं, मुझे यहां से जाना है ?" मैंने शिकायत की।

"हां, वही परम लक्ष्य है। यहां से जाना है। इसके बाहर नित्य सुख है। वहां पहुंचना जरूरी है। लेकिन अभी तेरी बारी नहीं आयी है। उस समय तक तुझे चलते ही रहना है। सीधे चल, मैं बाहर जाने का रास्ता दिखाऊंगा। पर रास्ता तुझे ही तय करना है। ले यह जप माला, गले में पहन, थक जाने पर इस माला का जप करना, मुझे याद करना, थकावट दूर होगी। फिर चलना।"

गले में उसकी पहनायी माला और होंठ पर उसके सिखाये मंत्र के साथ मैं उतर आया।

चलते-चलते थक गया तो मैंने उसके मंत्र का स्मरण किया। आश्चर्य की बात है, वह प्रत्यक्ष हुआ। लेकिन काला कटिबंध अंगोच्छा और दाढ़ी नहीं। मोटे आकार में उसका पेट बहुत फूला हुआ था। सिर मुंडा हुआ। उसको सूंड भी थी। सुगंधित वस्तुओं की सुवास से वह बदबू को छिपाये रखता था। मैंने सूंड़ की पिछली ओर फुंसी देखी। मैंने उसकी आवाज से उसे पहचान लिया। उसने फिर चलने का आदेश दिया। बाहर का रास्ता दिखने तक चलना। कुबड़े की बातों पर विश्वास तो नहीं हुआ, पर विश्वास करने योग्य और कुछ था भी नहीं, इसलिए मैं चलने लगा।

कुष्ठ रोगियों की लालायित आंखों के सामने से होकर मैं लड़खड़ाता चला। मुझे लगा घिसते-घिसते मेरी टांगें छोटी हो रही हैं और रास्ता अंतहीन होकर बढ़ता ही जा रहा है।

थक जाने पर मैं एक बार फिर लेट गया। झपकी आयी तो स्वप्न मुझे ढूंढ़कर आये। मेरे सुख मेरे स्वप्न मात्र हैं। चिकनाई, गीलापन, थोड़ी-सी गरमी और स्निग्धता की थैली में मैं लेटा हूं। अपने उसी स्थान पर, उस जन्म भूमि में वापस जा सकूं तो। स्वप्न फिर आये। स्वप्न में कुष्ठहीन मनुष्य भी।

जागने पर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं स्वप्न में ही पड़ा हूं। स्वप्न से मनुष्यों के जैसे एक स्वरूप ने मुझे जगाया। वह एक लड़की है जिसमें चमेली की सुगंध, नीलकमल का सौंदर्य और अभी जोती हुई नयी मिट्टी की गरमी है। उसकी

मुसकराहट ने मेरी कमजोरी दूर की। उसकी आवाज में मेरा भय विलीन हो गया। उसकी लाड-प्यार पूर्ण थपकी में मैं स्वय को भूल गया।

उसने कहा : "मैं तेरा इंतजार करती थी।"

मैंने अनजान होकर जवाब दिया, "मैं तेरी खोज में भटकता था"। मैंने जो कुछ कहा, झूठ था। मैं तो खोजता था बाहर का रास्ता, मगर मेरे ऐसा कहने से वह खुश हुई। मैं भी खुश हुआ।

उसने कहा, "मैंने तेरे लिये कमरा सजा रखा है। बेलबूटे काढ़े हुए तकियों और सुगंधी लीपे धवल बिछौनों से सज्जित।"

मैंने पूछा, "कहां ?"

फिर दोहराया : "कहां ? मुझे वहां ले जाओ। उस सुख की खोज करता हुआ मैं यहां तक चला आया हूं।"

मैंने उसका हाथ पकड़ा।

किसी ने घंटी बजायी।

किसी ने हमारे ऊपर पुष्पवृष्टि की।

किसी ने कहा, "तुम आपस में मिल-जुलकर सतत रहो। परस्पर प्रेम करो, प्रेम के सूत्र में एक बने रहो।"

मैं उसके हाथ पकड़े सजे हुए कमरे में घुसा तो वे शब्द मुखरित थे। सुगंध से भरे कमरे के धुंधले प्रकाश में हमारा प्रवेश होते ही पीछे फाटक बंद हुआ। तब शब्द न सुनायी पड़ते। उस सज्जित कमरे में दूसरे लोक की-सी सुगंध और नीरवता की अनुभूति हुई। थोड़ी देर बाद एक दिव्य राग पतली तरंगों पर झूलता कहीं से आ पहुंचा। सुगंध वेष्ठित बिछौना, चंदन से महकते तकिये। बिस्तर पर उसकी नग्नता की मादकता।

"यही है मेरा फाटक जिसकी मुझे तलाश थी। यहीं है मेरा स्वर्ग।" मैंने उसके कानों में कहा।

वह मांस की गरमी के साथ तुतलायी—"मुझे कभी न छोड़ना।"

"कभी नहीं।"

मैंने उसके भीतर प्रवेश करने की चेष्टा की। उसमें अपने को, अपने भय को, अपने दुखों को विलीन करने को तरसता था। वह भी उसी लालसा से मेरी साझेदार बनने का यत्न करती थी।

समय एक दिव्य राग बन गया। वायु मदमत्त करनेवाली नशीली चीज। राग और नशा। अंधेरा बढ़ गया, गीलापन अधिक हो गया। गरमी बढ़ गयी, मस्ती भी बढ़ गयी।

मेरी जीभ में हृदय में, नसों में, हर कहीं उसका प्रवेश हुआ, गुदगुदी पैदा करती हुई वह रेंगती रही।

मैंने उसे संबोधित किया।

"मेरी रानी।"

उसने भी वैसे पुकारा।

"मेरे राजा।"

समय रूपी राग के ताल लय बिगड़ गयी तो मैं नींद में जा डूबा। स्वप्नहीन पहली नींद।

जब जागा तब प्रकाश फैल गया था।

मुझे छाती में एक गीला अजगर रेंगता-सा लगा, मैंने देखा, उसका हाथ था। काटे हुए जमीकंद के रंग का हाथ। पूरे हाथ पर लाल दाग, छाले। मैं चौंक गया और मुंह मोड़ा। मैं उसके आलिंगन में हूं। उसके सारे शरीर पर छाले, फोड़े और फुंसियां।

मैंने रोने चीखने का प्रयास किया। मेरी आवाज बाहर न निकली। मैंने उसको हिलाकर पुकारा पर वह नहीं जागी। मैंने उसका ठंडा हाथ झटक कर हटा दिया। सर्दी से ठिठुरती लेटी उस स्त्री को देखा तो बीती हुई मस्ती के क्षणों की याद लौट आयी, मैं कांप उठा।

मैंने बंद फाटक पर लात मारकर उसे तोड़ डाला और बाहर निकला। भय-भीत चकित और शिथिल होकर मैं दौड़ा। थक जाने पर लेट गया। नींद आयी तो उस ठंडे लाल ठिठुरते हाथ ने मुझे हिलाकर जगाया।

मैं फिर दौड़ा। थकने पर भी मैं लेटा नहीं। मुझे डर था कि लेटने पर उसका वह घिनौना रूप मुझे जगायेगा। इसलिए मैं न लेटूंगा, न सोऊंगा।

थके पैर, शिथिल शरीर और दुर्बल मन से मैं चलता ही रहूंगा।

अंधकारपूर्ण गलियों से होकर मेरी जो यात्रा है, वह कब समर्पित होगी? कुष्ठ रोगियों से बचते, कुबड़ों की दृष्टि में पड़े बिना इस यात्रा का अंत होगा? पता नहीं। मुक्ति का रास्ता मेरे लिए कब खुलेगा? कौन जाने।

8. चट्टानें

मृगांग मोहन को कई बातें याद आयीं। मंद धूप का स्पर्श पायी चट्टानों पर अस्त होता सूर्य नाचता हुआ आगे दूर बढ़ जाता था तब तलहटी के उस पार देवी का मंदिर दिखायी देता था। बाप की छिगुनी थोड़ा और कसकर पकड़े मृगांग मोहन ने पूछा, "पिताजी, मैं उस मंदिर तक जाऊं ?"

बाप ने प्रश्न किया, "क्यों ?"

थोड़ी देर तक वह बाप के पीछे-पीछे चुपचाप चलता रहा। पक्षी मछलियों के समान उड़ते गये। धूल से कभी गोबर की गंध, कभी तुलसी की गंध निकलती रही।

बाप ने कहा, "मृगांग। तूने उत्तर नहीं दिया।"

मृगांग मोहन ने सिसकते हुए कहा, "मुझे···मुझे उस देवी के दर्शन करने हैं।"

बाप का चेहरा लाल हो गया।

बाप ने कहा, "वहां देवी नहीं। केवल पत्थर पर उत्कीर्ण एक मूर्ति मात्र है। पत्थर का टुकड़ा देखने के लिए इतनी दूर तक क्यों जाता है ?"

पिता को समझाना मुश्किल है। इसके अलावा बाप के क्रुद्ध चेहरे को देखकर ही मृगांग मोहन हताश और भयभीत हो गया। सहारे के लिए बाप की छिगुनी को ही फिर कसकर पकड़ा। बाप से जो कुछ कहना था, वह फिर कह न सका। परंतु इस बात ने मृगांग मोहन के मन में अव्यक्त जिज्ञासाओं को जन्म दिया। जब संध्या को चट्टानों पर टहलने रोज निकलता था और दूर के देवी मंदिर पर नजर पड़ती तो उसे अपनी स्वर्गीय माता की याद आ जाती, किंतु बाप से कहने की हिम्मत न होती।

मृगांग मोहन ने फिर पूछा, "मैं पड़ोस की सुनंदा के साथ वहां चला जाऊं ?"

बाप ने कहा, "नहीं, किसी के भी साथ न जाना ।"

उसके बाद दोनों ने कुछ नहीं कहा। मृगांग मोहन को पैरों तले की चट्टानें कठोर-सी लगीं। नन्हें पैरों में थरथराहट शुरू हो गयी यहां तक कि इसकी लपेट में उसका पूरा देह आ गया। दोपहर को अकेले बाहर जाने का मौका मिले तो मृगांग मोहन घर के चारों ओर के आम के बागों और मैदानों में घूमता रहेगा। पुरानी सर्प शिलाओं के सामने बैठे नाग देवताओं के शिला फणों को सहलाते हुए पूछेगा, "मुझे काटोगे ?"

वे कहेंगे, "दुलारे, तू हमारा लाडला बेटा है न ?"

"नाग देवताओं ! क्या तुम मेरे साथ खेलने आओगे ?"

"तू हमारे साथ खेलने आ, माणिक्य के सुरक्षित भंडार को दिखायेंगे, नीली मछलियों से भरे कुमुद के सरोवर दिखायेंगे। सूर्यास्त की मंद धूप लगी शिलाओं पर तू सो सकता है ।"

फिर उसे बचपन की याद आ गयी। पैरों के नीचे चट्टानों पर फिर वही मंद धूप। बहुत दूर, जंगल जलकर बुझ चुके थे। उसके उस पार विष मिश्रित समुद्र। समुद्र के ऊपर अणु प्रसार के रंग बदलते बादल। मृतकों की प्रतिध्वनि के साथ झंकारता झंझावाद। मृगांग मोहन दूरबीन लेकर जंगल की कालिमा के बीच खोजने लगा। अंत में वह उसे मिल गयी। कालिमा के बीच में वह छिपी पड़ी थी। मृगांग मोहन ने हथियार चट्टान के ऊपर रखा। उसी क्षण चट्टान पर उसकी हथेली छू गयी। जैसे बचपन में हुआ था, वैसे ही चट्टानों से स्पंदन मृगांग मोहन की हथेली में व्याप्त हुए। उसने इस रहस्य को जानने का यत्न किया।

चट्टानों ने कहा, "बेटे, तूने यह हथियार क्यों हाथ में लिया ? क्या हमारे प्यार का बदला हथियार से देगा ?"

मृगांग मोहन ने कहा, "मैंने तुम्हें कोई हानि नहीं पहुंचायी ।"

चट्टानों ने कहा, "तूने हमारे प्यार को गहरी चोट लगायी है। तूने हथियार हाथ में लिये, उसी क्षण हमारे प्यार को चोट लगी। तू कह रहा था कि हमारी शांति में तू हिस्सेदार बनना नहीं चाहता।"

मृगांग मोहन के हृदय में दुख की तरंगें उमड़ पड़ीं। उसने आशा की कि वह फिर एक बच्चा बन जाये। उसे देवी मंदिर की प्रतिमा याद आयी। उसे बिना

देखे, बिना स्पर्श किये ही, बचपन बीत गया। वह पहाड़ी प्रदेश, मंदिर, और संध्या समय अब भी वहां पर होंगे क्या ? शायद काल की तरंगों से सब चकनाचूर हो गये होंगे । मृगांग मोहन ने कहा, "देवी ! मुझे सुनंदा के साथ आपके मंदिर में आना चाहिये था । दोपहर को जब पिताजी सोते हों या शिकार को गये हों। मैं सुनंदा के साथ छिपे-छिपे भागकर आ सकता था ।"

मृगांग मोहन सचेत हुआ। अब चट्टानों के स्पंदन सुनायी नहीं पड़े । उसने अपनी पीठ पर रखी थैली खोलकर एक सफेद झंडी निकाली । पहाड़ी की घाटी से एक सूखी टहनी तोड़कर सफेद झंडी उससे बांधकर वह तलहटी की ओर उतरा। जंगल की जड़ता सैकड़ों व्यर्थ मूर्तियों के रूप में दर्शित हुई। सूर्यास्त की मंद धूप का दुख के मंद आतप से स्पर्श किया।

कालिमा के बीच से मृगांग मोहन ने सफेद झंडी उठाकर दिखायी । उसने ऊंची आवाज से निवेदन किया, "मैं निहत्था आया हूं । तू मेरी सफेद झंडी देख ले ।"

थोड़ी देर बाद ही धीमी आवाज में उत्तर मिला—"मैं समझ गयी । मैं बाहर आऊंगी । हथियार के बिना ही वहां मेरी प्रतीक्षा करना ।"

वह बाहर आयी ।

मृगांग मोहन के मुंह से एकाएक ये शब्द निकले—"हाय ! तेरा सारा शरीर झुलस गया है ?"

वह हंस पड़ी।

उसने पूछा, "तुम क्यों मेरे कारण दुखी होते हो ? मैं तुम्हारी दुश्मन हूं न ?"

वह कुछ न बोला। वह कल्पनाओं में डूब गया—चट्टानों के ऊपर से होकर शाम की यात्रा; बाप के तर्क से पैदा हीन भाव। वह उसकी दुश्मन है—इस वास्तविकता ने अपने अपार तर्क रूपी हाथ फैलाकर मृगांग मोहन को रोक दिया ।

वह पास आयी ।

उसनें कहा, "दुखी न हो, ये सब छाले नहीं हैं। मैंने यों ही शरीर पर काला रंग पोता था ।"

उसने काला रंग पोंछ डाला। तब चीनी नारी का पीला रंग प्रकट हुआ। एक छोटी बिकिनी (पोशाक) का निचला आधा हिस्सा ही उसकी पोशाक था।

उसनें पूछा, "तू कुछ और पहने नहीं है ?"

उत्तर मिला, "सब कुछ नष्ट हो गया। "देखो, कमर का यह फीता मात्र बाकी है।"

मृगांग मोहन उसके निकट खड़ा रहा।

उसने पूछा, "तानवान। मैं तुझे सुनंदा नाम से पुकारूं?"

उसने प्रश्न किया, "क्यों? तानवान एक मनोरंजक नाम है। चीनी भाषा में उसका मतलब तुम जानते हो?"

उसने कहा, "मुझे तेरे किसी भी कार्य से मतलब नहीं। तू मेरी दुश्मन है। दुश्मन को किसी भी चीज से कोई मतलब नहीं होता, न उसके सौंदर्य से।"

"ऐसा कहता कौन है?"

"यह मेरे राष्ट्र नेताओं का कथन है। तेरे नेताओं ने तुझे भी यह बता दिया होगा।"

तानवान ने कहा, "ठीक है।"

"पर मेरे नेताओं और तुम्हारे नेताओं में कोई भी अमर नहीं है। वे सब इस प्रकार सुनहले धूल कणों में सड़-गलकर नष्ट हो गये। देखो।"

उसने अपनी तर्जनी से इशारा किया। उस तर्जनी ने क्षितिजों को पीछे की ओर लपेट दिया। क्षितिज ढह गये। पतंगों के पराग के जैसे समस्त भूतल सुनहली धूप से भर गये। नगर, संस्कृतियां साम्राज्य और अहंकार हैं वे धूल। उस धूल के द्वारा विविधता में एकता आयी।

"पर" मृगांग मोहन ने कहा, "मैं और तू—हम दोनों दो शत्रु सेनाओं के आखिरी सैनिक हैं। हमको यह बात भूलनी नहीं चाहिये।"

तानवान ने अपनी बिकिनो (पोशाक) उतार दी। उसके सामने नंगी खड़ी होकर उसने कहा, "देखो।"

उसने कहा, "तू सुंदरी है।"

तानवान ने कहा, "नहीं इतना ही नहीं, तुम मेरी नाभि और उसके नीचे की तराई तो देखो?"

चट्टानों के स्पंदन के समान किसी आवेग की तरंगे उसके अंदर व्याप्त हुई।

"हां, देख सकता हूं," उसने उत्तर में कहा। वहां से थोड़ा-सा रक्त टपका।

वह बोली, "वर्षा ऋतु है—नयी वर्षा। मेरी कोख आंसू बहाती है।"

फिर पूछा, "आंसू बहाती है?"

उत्तर मिला, "हां इस वीभत्स पराग समूह के विरुद्ध ।"

वह बोला, "तू कहेगी, युद्ध के विरुद्ध । पर ऐसा क्यों ?"

उसने कहा, "बता दूंगी। लेकिन वह तुम्हारे देश प्रेम को विचलित कर दे तो ?"

"बता देना ।"

"तो मैं बताती हूं । इस पराग राशि में मेरा छोटा बेटा मिल गया था । तुम्हारे हथियार के आघात से ही चार साल की उम्र का मेरा 'चेन' मर गया । नन्हें पैरों और नन्हें हाथों पर वह प्रसार व्याप्त हो गया । मुझे आज भी उसके मरने से पूर्व की सारी वेदनाएं याद आती हैं । उसने कहा था 'माताजी मुझे बड़ा दर्द हो रहा है' ।"

वह रोने लगी ।

उसने अपने बच्चे के बारे में फिर कहा कि "उसने कहा था, 'माताजी मुझे बड़ा दर्द हो रहा है ।' दुख की गहराई केवल इन शब्दों में है । मेरे दुख का यही कारण है इससे ज्यादा और क्या दर्द हो सकता है । मेरे बेटे ने मेरी ओर हाथ बढ़ाया । विश्राम की शाम के समान मेरी ओर एक अंगुली बढ़ा दी । मैंने उसका स्पर्श नहीं किया । मेरे देशप्रेम और कर्तव्य बोध ने ऐसा न करने दिया क्योंकि मैं अपने देश की आखिरी स्त्री सैनिक थी । मेरा 'चेन' जो कभी मेरी छिगुनी पकड़े बिना कहीं नहीं जाता था, वह इस संसार से उठ गया । मैं अब उस प्रसार भाव को अपनाना नहीं चाहती ।"

उसने पूछा, "मेरे जीते जी तेरी मृत्यु हो जाये तो तेरे राज्य की हार होगी न ?"

"जी हां ।"

"परंतु तेरा राज्य कहां है ?"

तानवान ने उत्तर दिया, "मेरे और तेरे राज्य आज नहीं हैं । किसी का भी राज्य नहीं । कोई भी जिंदा नहीं रहता, मेरे और तुम्हारे सिवा । कंप्यूटर यही कहता है कि केवल तुम और मैं इस संसार में बाकी हैं ।"

भावों के वेग में उसको अचानक ऐसा अनुभव हुआ कि उसके शब्द उसके कुरते के बचे हुए भागों को शरीर से पकड़कर दूर फेंक रहे हैं । वह भी उसके जैसे नग्न हो गया । उसी हालत में परस्पर हाथ मिलाये आगे चले । सब कहीं एकाकीपन,

संध्या, धधकता लावा। पौधों के, प्राणियों के, महानों के, यंत्रों के इन सबके संकीर्ण रूपों के जल जाने पर राख बनी हुई शिथिलता, उन सबके ऊपर वह प्रसार। सुनहली धूल-सा मृत्यु का पराग।

मृत्यु के इस असीम बाग में मैं और वह अकेले हैं।

मृगांग मोहन ने तुरंत अपनी कहानी कहते हुए कहा, "तानवान, मेरी बेटी तीन साल की थी। वह मेरे पास सोती थी। रात को बिस्तर को दूसरी ओर उसे हटाये जाने की बात उसे सवेरे मालूम हो जाये तो वह अर्धनिद्रा में लुढ़कती हुई मेरे समीप आ जाती। फिर वह अधखुले नेत्र से मुझे निहारकर स्वयं धीरज बांधती। अर्ध निद्रा में, अर्ध स्वप्न में वह हंसती। मैं उसके धीमे शब्द अभी भी सुनता हूं। उसका नाम गीता था। एक बार एक पड़ोसी की लड़की ने उससे पूछा, 'बेटी तेरा नाम सीता है न ?' मेरी बेटी के होंठ एकदम टेढ़े हो गये। वह सहम गयी और रोने लगी। दिन भर गीता रोती रही क्योंकि पड़ोसी ने उसे सीता नाम से पुकारा था। मैंने अपने बेटी को अत्यधिक प्यार से शरीर लगाया। उसका रोना देखकर मैं हंस पड़ा। फिर उसकी याद कर कई बार हंसा। पर मरते समय भी वह अपने होंठ ऐसा टेढ़े करके ही रोती रही।"

तानवान मृगांग मोहन के बहुत निकट आ गयी। उसने उसकी बांह में अपना हाथ डाला।

उसने कहा, "ऐसा न कर।" फिर भी उसने अपने हाथ को उसकी पकड़ से मुक्त करने की चेष्टा नहीं की।

"तू मेरा दुश्मन है" उसने कहा।

"सूरज डूब रहा है" वह बोला।

हाथ में हाथ डाले। उन्होंने संध्या के बादलों की ओर देखा। आसमान देखते-देखते काला हो गया। काले आसमान के बीच में लावा फिर प्रकट हुआ। मृत्यु का पराग स्पष्ट दिखायी पड़ा।

याद आने पर उसने कहा, "मेरा चेन।"

"अंधकार के बढ़ने पर उसे डर लगता था। वह दौड़कर मेरी छिगुनी को पकड़ लेता था। फिर भी मैंने उसका स्पर्श नहीं किया।"

उसने मुख फेर लिया।

मृगांग मोहन कह उठा, "तानवान, तू रोती है ?" बिना सोचे विचारे, ऐसा

कह उठा। बिना सोचे विचारे, एक और बार उसकी पीठ पर हाथ रखा। बिना सोचे विचारे, उसको छाती से लगाया।

"तानवान ! तू मत रो।"

उसने मृगांग के कंधे पर अपना कपोल रख दिया। होंठों को दबाया। कंधे पर गरम आंसू टपक पड़े। उसने उसके चेहरे को पोंछा।

"तानवान !" वह बोला, "मुझे तुम्हारी छाती पसंद आयी।"

रोना धीरे-धीरे रोक कर उसने उसकी आंखों की ओर देखा।

उसने माफी मांगते हुए कहा, "वे छोटी हैं। मैं भी कभी कामना करती थी कि तुम्हारी औरतों के समान मेरी छाती भी बड़ी हों। मैं भी मंदिर के शिल्पों के जैसे सुगठित शरीर वाली औरत होती तो···"

उसने प्रश्न किया, "ऐसी होती तो क्या होता ?"

तानवान ने थोड़ी देर तक उत्तर नहीं दिया। अंत में कहा, "मैं तुमको आनंद दे सकती।"

वे मंद धूप की चट्टानों के ऊपर चले।

उसने पूछा, "मैं तेरा स्पर्श करूं ?"

वह बोली, "पूछते क्यों हो ?"

उभरे हुए कपोलों, पतली रेखाओं जैसी निस्सार आंखों, छाती, नाभि और जांघों को उसने चूम लिया।

"मृगांग !" उसने कहा, "अंधेरा छाया जा रहा है। मुझे एक दुर्बल विकार का अनुभव हो रहा है। मैं अपनी कोख के रोने से वशीभूत हो रही हूं।"

"तू इतनी विकल मत हो।" उसने उन सब चेष्टाओं को निस्सार बनाने की कोशिश की। उसने गर्भनिरोध के साधनों के बारे में सोचा। आर्तव रक्त के सागर में, गर्भनिरोध की पेटी में सैर करनेवाले शुक्ल बीजों को याद किया।

तानवान ने कहा, "अंधेरा हो रहा है।"

अचानक वह अंधकार के लिए लालायित हो उठा। अंधकार रूपी सागर और नक्षत्र रूपी शुक्ल बीज।

उसने कहा, "नक्षत्रों के बीच तू सुंदर दिखायी देगी।"

"ओह !" वह बोली। उसने आंखें बंद कीं। फिर आंखें खोलकर उसकी आंखों में आंखें डालीं। उस चितवन में अर्पण और श्रद्धा के भाव थे। उसमें इतिहास

चमक उठे। मैं तुझे अपनाता हूं। किसी शर्त का धनुष भेद कर इस मिट्टी में जन्मे बंधन में पड़े तुझे मैं स्वीकार करता हूं।

उसने उसे पुकारा, "मैथिली।"

उसने कहा, "प्रिय क्षणिक विकारों के आवेग में पड़कर मैं क्या-क्या करना चाहती हूं। मैं आपके सामने घुटने टेक दूं।"

तानवान घुटनें टेकती रही। मृगांग मोहन उसके ऊपर हो गया। इतिहास के राजाओं के समान उसने दुख का अनुभव किया।

यंत्र उस समय भी उनसे बातें कर रहा था। यंत्र के मानव समाज के अंत समय के अनुभव समझा दिये। प्रसार के बढ़ते प्रभाव से हेरफेर और परिणाम प्राप्त हुए तिलचट्टे। एक यज्ञ के जैसे चट्टानों के ऊपर चुपके से आगे बढ़ते उस पार की लावा में गिरकर मर गये। कभी-कभी, थोड़ी देर से आया हुआ एक अंतरिक्ष यान, कप्तान का जड़ शरीर लेकर डेरे पर पहुंचा।

मृदुल चिकनी घास पर मृगांग मोहन और तानवान, दोनों लेटे।

"यहां प्रसार नहीं," उसने कहा।

"यहां घास उगती है," उसने कहा।

"यहां फूल खिलते हैं।"

उसने कहा, "हमारे लिये यह डेरा डाला गया है।"

"किसने ?"

"ईश्वर ने।"

"क्यों ?"

मृगांग मोहन ने उसके सारे शरीर पर हाथ फेरा और कहा, "सृजन प्रक्रिया को जारी रखने के लिए।"

ऊपर नक्षत्र चमक उठे।

तानवान ने कहा, "सभी नक्षत्रों में मृत्यु है। प्रत्येक सेल में युद्ध है। एक दूसरे की हत्या कर या दूसरे का जीवन अपने में विलीन करके ही जीवन-क्रम जारी रहता है। हमें लाचारी से रोनेवाले बच्चे में भी यह निष्ठुरता प्राप्त होती है।"

उसने अनुरोध किया, "मुझे याद मत दिलाओ।"

जब वे जागे तो सूरज चढ़ चुका था।

चीनी औरत ने समझाया "भाग जाओ, मैंने तुमको पांच पल दिये हैं।"

मृगांग मोहन भागकर अपने रक्षा स्थान पर पहुंचा। वहां उसका हथियार रखा हुआ था। तानवान घने जंगल की कालिमा में जा छिपी।

युद्ध फिर शुरू होनेवाला है। शतरंज खेल की तरह हताश भाव से वह लड़ता रहा। समय ढल गया तो फिर सफेद झंडी फहरायी गयी।

नक्षत्रों के बीच से उसने कहा, "प्रिय, सृष्टिकार्य फिर जारी रहेगा।"

उसने कहा, "पराग के इस अपार सागर के ऊपर वटवृक्ष के एक पत्ते पर भगवान लेटा रहेगा। फिर सृजन और विकास करेगा।

उसने पूछा, "इस निष्ठुरता को जारी रखने के लिए ?"

उत्तर दिया, "हां, मारकर खानेवाले सेलों की सृष्टि करने के लिए।"

तानवान ने कहा, "धर्म युद्ध के नाम पर प्राणियों को धोखा देनेवाली बात को चलने नहीं देंगे।"

मृगांग मोहन के गरम शरीर पर तानवान लेट गयी। वह रो पड़ी।

उसने कहा, "प्रिय, हमारे राज्य आज नहीं। चाहें तो हम सृष्टि की परंपरा जारी रखें। लेकिन मुझे अपने 'चेन' की याद आती है। तुम अपनी 'गीता' की याद करो।

उसने कहा, "याद करता हूं—उसका जन्म दिन; उसके नन्हें हाथ; उसका रोना; तुतलाती बोली।"

वह बोली, "ये सब क्रूरता है।"

उसने कहा, "हां, किसी ने हमें धोखा दिया। व्यर्थता के एक बड़े जाल में फंसा दिया।"

"प्रिय !" उसने कहा, "तुम ध्यान से सुनो। मैं अब अपने राष्ट्रों या युद्ध के बारे में नहीं सोचती। वे सब अपमानजनक और निस्सार हैं। मैं अब अपने बच्चों के बारे में सोचती हूं। हमें आज ही इसका अंत करना है।"

उसने पूछा, "किसका ?"

तानवान ने कहा, "क्रूरता का, सृष्टि रूपी झूठ का।"

उसने अनमने भाव से कहा, "हां अंत करें।"

तानवान और मृगांग मोहन के मन में अपने बच्चों के चित्र फिर आखिरी

बार उभरे। बच्चे खेलते रहे। ठोकर खाकर गिर पड़े। रोते, हठ करते और हंसते रहे।

तानवान ने तीर मारा। मृगांग मोहन गिर पड़ा। फिर प्रसार का तीर लेकर उसने स्वयं अपनी छाती पर मारा।

उसने कहा, "प्रिय ! विदा।"

उसने कहा. "विदा, मैथिली।"

प्रसार का घातक प्रभाव अंतड़ियों से होकर सारे शरीर पर व्याप्त होने लगा। सर्वनाश होने पर सुनहला पराग समूह मात्र शेष रह गया।

चट्टानों पर हवा बही।

युगों पुरानी बात है जब नमकीन पानी की तरंगों के चट्टानों पर पटक-पटक कर ठोकर खाने से पहला जीव अंकुरित हुआ था। दूसरों को मारकर खाता गया और वह बड़ा बनता गया। यद्यपि स्वस्थ परिवर्तन की प्रक्रिया बहुत धीमी होती है पर चुटकी बजाते वह समय भी बीत गया।

भूल का सुधार किया गया। चट्टानों को इसका पता लगा। चट्टानें फिर समाधि में लीन हो गयीं।

9. प्रभात से प्रभात तक

उसको स्टेशन पर उतारकर गाड़ी ने सीटी दी और "छक् छक् छक् छक्..." के साथ उत्तर की दिशा की ओर चल दी। गाड़ी तो आंखों से ओझल हो गयी पर उसका फेंका हुआ धुआं अभी सामने बिखरा हुआ था। कालाधुआं अपना रूप बदलता हुआ आसमान में छा गया। धुआं देखकर वह स्वयं भौचक रह गया। धुएं की लपटें नीराली[1] की तरह सहस्रों पैरों पर तैरती रहीं।

वह भीड़ भरे प्लेटफार्म में अकेला खड़ा रहा। हर ओर अपरिचित चेहरे। वह इनमें किसी को भी जानता नहीं। इनके शब्द परिचित नहीं हैं। इनकी गंध से भी उसका परिचय नहीं है। ये कौन हैं? ये यहां क्या करते हैं? खाकी पोशाक के पोर्टरों को देखने पर जिज्ञासा उसकी जाग उठी। हरी झंडी लिए, दफ्तर में घुसता स्टेशन मास्टर भी कुतूहल की वस्तु था।

आंखों में व्यग्रता, हाथ में संदूक पकड़े एक कोने में खड़ा हो गया।

कुछ समय के बाद प्लेटफार्म विजन हो गया। वह अकेला रह गया। तब उसको गाड़ी की याद आयी। दूर-दूर तक खिंची हुई रेल की पटरी से उसकी आंखें सैर करने लगी। पटरी के अंतिम सिरे से गाड़ी अदृश्य हो गयी थी। दूर शून्य में पटरियां भी गायब हो गयी थीं। गाड़ी से निकला धुआं अब तक आकाश में विलीन हो चुका था। उसे अकेलापन अनुभव होने लगा। उसे लगा मानो वह नाभिनाल से अलग किया गया एक शिशु है। इस प्लेटफार्म में इस विजन प्लेटफार्म में, मैं अकेला हूं। मैंने जो-जो शब्द सुनें, वे सब एकांत के शब्द थे। जो रंग देखे वे एकांत के रंग थे। प्लेटफार्म की छत को थामे हुए जंग लगे ये खंभे, आम के पेड़ के नीचे पड़ी ये सीमेंट की बेंच, धूप में जलती मचलती ये रेलें, सब एकांत भावों

---

1. नीराली—ओक्टोपस (अष्टभुज मछली)।

को जगाते हैं। यह रेलवे स्टेशन, यह छोटा शहर, शहर के ऊपर लटकता प्रज्वलित यह आकाश, आकाश में भभकता यह सूरज, सब एकांत को पुकारते हैं, जगाते हैं।

इस बड़ी भूमि के ऊपर फैले हुए इस विशाल आकाश के नीचे मैं अकेला हूं।

अपने को स्टेशन पर छोड़कर भागी हुई गाड़ी की याद में दुखी होकर वह प्लेटफार्म में अपने संदूक पर बैठ गया। गाड़ी, लौट आ, मुझे ले जा। गर्म, गीले और मृदुल अपने शरीर की ओर मुझे वापस बुला ले। नाभिनाल से मुझे बांध ले। गाड़ी ने उसके शब्द नहीं सुने। गाड़ी मीलों दूर, पीछे की ओर मुड़कर देखे बिना, पीछे छोड़े मार्ग का स्मरण किये बिना, समय की तरह दौड़ती रही।

"बेटा" !

सिर उठाकर देखा। एक बूढ़ा आदमी—एक धोती और कुर्ता पहने।

"मेरा नाम नाणुनायर है।"

नाणुनायर ने स्वयं अपना परिचय दिया और पान के दाग लगे दांत फाड़कर हंसा।

"नाणुनायर को नहीं जानता ?"

वह संदूक पर से एकदम उठ खड़ा हुआ।

नाणुनायर ? उसे कौन नहीं जानता ? कितने ही वर्षों से उसका नाम सुनता आ रहा हूं। कितनी बार कितने ही लोगों ने नाणुनायर के बारे में मुझसे बातें की हैं। उससे मिलने और परिचय प्राप्त करने का आग्रह भी कई बार किया है। अब इसका अवसर मिल गया।

नाणुनायर दयालु और संवेदनशील है। अब किसी का डर नहीं। इस आकाश के नीचे, इस भूमि के ऊपर किसी से कोई डर नही। नाणुनायर मेरा साथ देगा।

"गाड़ी कब आयी ?" नाणुनायर ने पूछा।

"कुछ विलंब हो गया।"

नाणुनायर की बातों पर उसने ध्यान नहीं दिया। वह नाणुनायर को ताकता ही रहा। उसका गला बहुत मोटा है। सिर के बाल पूरे पक गयें हैं। पैरों में टूटा जूता, इस बड़े आदमी का रूप कितना छोटा है।

नाणुनायर ने अपने हाथ के अंगोछे से गला और मुख पोंछे। वह पसीने से तर हो गया था। कुर्ता भीगकर पीठ से चिपक गया था।

"तो चलें"।

उसने सिर हिलाया।

"संदूक मुझे दे दो।"

"मेरे हाथ में रहने दीजिये।"

"इधर दे दो, बेटे।"

नाणुनायर ने जबरदस्ती संदूक ले लिया। हाथ में संदूक लेते ही उसके दुबले हाथ की नसें तन गयीं। ऐसा दिखता है मानो नाणुनायर के हाथ पर मांस या, हड्डियां नही केवल नसे ही हैं।

"यात्रा सुखद थी ?"

"हां"

वह दिन भर सोता रहा था।

"खाना मिलता था ?"

नाणुनायर प्रश्न करता हुआ स्टेशन के बाहर की ओर चल पड़ा। वह उसके पीछे चल दिया। बाहर बड़ी भीड थी। मोटरें कतार में खड़ी थी। चार-पांच घोड़ा-गाड़ियां भी खड़ी थीं। आम के पेड़ों की छाया में पक्षी शास्त्र बताने वाले[1] और चूहों को आग में भूनकर खानेवाले कोंकणियों[2] का पड़ाव दिखायी दे रहा था। रास्ते के उस तरफ एक-दूसरे से सटी हुई दुकानों की कतारें थी।

"चल नहीं सकता बेटा, मोटर मे जाने की दूरी तो नही।"

"हां चलें।"

चलूं तो चारों ओर के दृश्य अच्छी तरह देख सकूंगा। नाणुनायर ने संदूक को नीचे रखकर जेब से एक बीड़ी लेकर जलायी और धुआं उड़ाया। वह बीड़ी और उसके सिरे के अंगारे को आश्चर्य से देखता रहा। नाणुनायर की नाक और मुंह से धुआं उड़ा तो वह और अधिक घबरा गया। नाणुनायर मंद-मंद मुस्कराता हुआ संदूक लेकर चल पड़ा। बीड़ी उसके मुंह में दबी हुई थी। उसने धूप में अपनी और नाणुनायर की परछाई देखी। अपने साथ चलनेवाली छायाओं को वह आश्चर्यपूर्वक देखता ही रहा। "बेटे तेज चलो, बहुत तेज धूप है"। नाणुनायर ने संदूक दूसरे हाथ मे पकड़ लिया। उस समय एक घोड़ा गाड़ी सामने से आयी।

1. पक्षाशास्त्र बतानेवाला—पक्षी की सहायता से भविष्य बतानेवाला।

2. कोकणि—दक्षिण भारत में कोंकण देश की जनता।

घोड़े के मुंह से झाग निकल रहे थे। गर्दन की घंटियां झनक रही थी। घोड़ा-गाड़ी पास आयी तो घोड़े की ओर इशारा करके उसने पूछा:—

"वह क्या जानवर है ?"

"वह घोड़ा है ।"

नाणुनायर ने बीड़ी मुंह से हटाये बिना, जवाब दिया। घोड़ा-गाड़ी चले जाने के बाद भी उसने घोड़ पर से आंखें न हटाईं । मुड़कर घोड़े की ओर देखता रहा। घोड़ा गाड़ी के सामने थे। इसलिए वह उसकी टांगें ही देख सका। लुढ़कते पहियों के बीच में घोड़े के पैर ताल से आगे बढ़ते थे।

"चल बेटा ।"

नाणुनायर ने मार्ग दिखाया। उसने चलते-चलते घोड़ों के संबंध में बातें कीं। पुराने जमाने में घोड़े जंगली जानवर थे। प्यास लगने पर पानी पीते, भूख लगने पर घास खाते और यौनेच्छा होने पर उसकी संतुष्टि करते, जंगलों में रहते थे। जंगलों में जीवित मनुष्य रूपी बंदर घोड़ों का शिकार कर खाते थे। बाद में मनुष्य ने घोड़े को जाल में फंसाकर जीवित पकड़ कर खेतों में काम कराया। धीरे-धीरे उन्होंने घोड़े पर सवार होना सीख लिया। उन दिनों मनुष्य की प्रधान सवारी घोड़ा थी। पहियों का आविष्कार होते ही घोड़े गाड़ी खींचने लगे। घोड़े ने मनुष्य को खींचकर उसे जंगलों, गांवों और शहरों की सैर करायी।

"मनुष्य ने घोड़े का पूर्णतया शोषण करना कब शुरू किया, तुझे मालूम है ?"

"नहीं ।"

उसने सिर हिलाया।

युद्ध के समय। पुराने जमाने में युद्ध में घोड़ों का पूरा-पूरा योगदान था। जिस देश में घोड़े अधिक थे, उस देश ने कम घोड़ों के देश को हरा दिया।"

आज घोड़ों का उपयोग कम हो रहा है। खेतों में काम करने के लिये ट्रैक्टर हैं। मनुष्य को सैर कराने के लिए मोटर, हवाई जहाज और पानी के जहाज हैं। घोड़ों की संख्या कम होती जा रही है।

"लेकिन सरकस वाले अब भी घोड़ों को काम में लाते हैं," नाणुनायर ने अपना भाषण समाप्त किया। पीले रंग के, नाल लगे खुरों वाले, लगाम लगे और जुगाली करते घोड़ों का स्वप्न देखते हुए वह आगे बढ़ा। वे तिराहे पर पहुंच गये, जहां तीन रास्ते मिलते हैं।

"घर का रास्ता कौन-सा है ? मालूम है ?"

"नहीं ।"

उसने सिर हिलाया। वह कुछ नहीं जानता। अपने घर का रास्ता भी मालूम नहीं। नाणुनायर घर की ओर जानेवाले रास्ते की ओर मुड़ा। रास्ता पक्का या चौड़ा नहीं था। पत्थरीला और गड्ढ़ों से भरी एक देहाती सड़क। गाड़ियों के पहियों की छाप नहीं दिखती थी। पर मनुष्यों और जानवरों के पद चिह्न इधर-उधर बिखरे हुए थे। कुछ चिड़ियों के पैरों के चिह्न भी कहीं-कहीं दिख रहे थे।

"मुर्गी या कौए का होगा" नाणुनायर ने कहा। उसने संदूक नीचे रखकर एक और बीड़ी लेकर जलायी।

"छोटा पद-चिह्न बच्चों का और बड़ा बड़ों का है।" नाणुनायर ने कहा और संदूक लेकर आगे बढ़ गया।

अपने पैरों के पीछे, अपने पार किये पथ में पैरों की छाप पड़ते देख उसे कौतूहल हुआ। नाणुनायर के पैरो से भी पदचिह्न बन रहे थे। दोनों के पदचिह्न एक-दूसरे से भिन्न थे।

"मैंने जूते पहने हैं। तेरे पांव में जूते नहीं हैं।" नाणुनायर ने स्पष्ट किया।

पदचिह्नों के जुलूस के आगे-आगे उनकी यात्रा जारी थी।

"यह कौन-सा पेड़ है ?"

रास्ते के किनारे के कटहल के पेड़ की ओर इशारा करते हुए उसने पूछा। बीड़ी मुंह से निकाले बिना नाणुनायर ने उत्तर दिया—

"वह कटहल है"

"कटहल के पेड़ पर कटहल फलता है। ठीक। तब आम ?"

"आम, आम के पेड़ पर फलता है।"

"आम का पेड़ किधर है, नाणुनायर ?"

"दिखा दूंगा।"

चलते-चलते नाणुनायर ने अंगोछे से अपना गला और छाती पोंछी उसका सारा शरीर पसीने से भीग गया था। ललाट, कनपटी और गले से होकर पसीना नीचे की ओर बह रहा था। वह हांफ भी रहा था।

"संदूक मैं पकड़ूं नाणुनायर।"

"न बेटा, नाणुनायर की यह आदत-सी हो गयी है।" लाल मिट्टी के रास्ते पर वे आगे बढ़ते रहे।

"नाणुनायर !"

"हां बेटा ?"

"आम का पेड़ होता है या लता ?"

"पेड़ होता है, बेटा।"

"फिर लता क्या होती है ?"

"ककड़ी और करेला सब लताओं में फलते हैं। काली मिर्च भी लता में होती है।"

"काली मिर्च क्या !"

"ठहर बेटा, तू सब धीरे-धीरे सीख जायेगा।"

वह कुछ देर तक चुप-चुप नाणुनायर के पीछे-पीछे चलता रहा। धोती का छोर जमीन पर लटक रहा था।

बालों से भरे पैर पसीने से तर थे। फिर भी वह थका नहीं था। वह हांफ नहीं रहा था। नाणुनायर तो थक गया था और हांफ भी रहा था।

"देख, वह आम का पेड़ है।"

नाणुनायर ने एक आम की ओर इशारा किया। लहलहाता चारों तरफ फैला हुआ एक बड़ पेड़ हर टहनी पर आम के फल। टहनियां एक-दूसरे से लिपटी पड़ी थीं। एक निचली टहनी पर बैठे ऊंघते एक कौए पर उसकी दृष्टि पड़ी।

"नाणुनायर !"

"वह कौआ है। कौए की कई जातियां होती हैं।

"बलिकाक, माप्पिलाकाक और समुद्री काक।"

"यह बलिकाक है न ?"

"न बेटा, यह माप्पिलाकाक है।"

"माप्पिलाकाक और बलिकाक में भेद कैसे किया जा सकता है ?"

"वह आसान है बेटा। बलिकाक पतला होता है। कंठ पर दूसरे रंग के बाल होते हैं। यह चोरी भी करता है।"

आम के पेड़ पर बैठनेवाले कौए के दुबले शरीर, पतले पैर और कंठ पर ताम्र रंग के बाल थे।

"बिलकुल ठीक है, वह माप्पिलाकाक है।"

उसने सिर हिला दिया। वे उस रास्ते से मुड़कर खेत में उतरे और मेड़ से होकर चलने लगे।

"देख, वहां तेरा घर है।"

नाणुनायर ने इशारा किया। एक बड़ा-सा घर, सामने है उसका चोपाला युक्त फाटक और ताड़ के पत्तों का छप्पर। खेत को पारकर वे घर के सामने पहुंचे। नाणुनायर ने धक्का देकर चौपाले का फाटक खोल दिया। सामने की ड्योढ़ी में कुछ लोग खड़े थे।

"आया मेरा बेटा आया है ?"

कानों में सोने का कर्णफूल और सफेद कपड़ा पहने एक औरत घर के आंगन में दौड़ी आयी। उन्होंने उसे छाती से लगाया, वह एकाएक घबरा गया। उसे देखकर नाणुनायर ने मंद हंसी से कहा "तेरी मां है, बेटा।"

वह मां से लिपट गया। मां के मुंह में काली सुपारी की सुगंध थी। वे ड्योढ़ी में पहुंचे। नाणुनायर ने एक-एक करके सब का परिचय कराया।

"ये तेरे पिता हैं।"

पिता कपड़े की कुरसी में लेटे थे। मोटा ताज़ा गोरा शरीर। कानों में कुंडल। दरवाजे के पीछे आड़ में खड़ी एक लड़की को जो वायल की साड़ी पहने हुए थी, लक्ष्य करके नाणुनायर ने प्रश्न किया "मालूम है वह कौन है ?"

"नहीं"

"तेरी पत्नी है, बेटा, चंद्रिका।"

उसने दरवाजे के निकट जाकर उसे देखा। माथे पर काली बिंदी, शंख का सा सुंदर कंठ। देहली पर खड़ी हुई उसकी उंगलियों को उसने धीरे-धीरे सहलाया। सिर नवाये खड़ी उस लड़की के कपोल एकदम लाल हो गये।

मां ने कहा, "नहाकर आ, पानी रखा है। साबुन और तौलिया स्नानगृह में है।"

वह स्नानगृह में गया और नहाकर लौटा तब तक मेज पर खाना तैयार रखा था।

"नाणुनायर, खाना खायें।"

पिताजी और नाणुनायर ने झारी[1] से पानी लेकर हाथ धोये। उसने भी ऐसा ही

1. झारी—पानी रखने का एक प्रकार का लोटा जिस पर लगे नल से पानी लिया जाता है।

किया। घास की चटाई में बैठकर खाना खाने लगा ।

खाते समय नाणुनायर ने उससे पूछा :—

"सबसे परिचय हो गया न ? सब कुछ समझ गया न ?"

उसने सिर हिलाकर 'हां' कहा। भोजन के बाद पिताजी और नाणुनायर ने पान सुपारी खायी, आसपास के कुशल समाचार पूछे। वह खंभे से टेक लगाये आकाश और पेड़ों की सुंदरता का आस्वादन करने लगा। पेड़ों का रंग हरा है। आकाश का रंग नीला। इस बीच में वह ये सब कार्य समझ चुका था। उसने ज्ञान प्राप्त किया था। वह सब कुछ जानता है अब।

मां ने पूछा : "तीन-चार दिनों की यात्रा की है बेटा तू थक गया होगा ?"

"थोड़ा सो जा," पिताजी ने कहा।

वह सीढ़ियां चढ़कर ऊपर के अपने कमरे में पहुंचा। कमरे में खिड़की के समीप चंद्रिका सिर झुकाये खड़ी है। खिड़की से आनेवाली हवा में उसके बिखरे बाल उड़ रहे थे। उसने उनके पास जाकर उसका मुख दोनों हाथों में भरकर ऊपर उठाया उसकी अंजन लगी आंखें गीली थीं।

"चंद्रिका, रोती है क्या ?"

वह मुस्करायी।

वे दोनों चारपायी पर बैठे। उसने उसके हाथ लेकर अपनी गोद में रखे और प्लास्टिक की चूड़ियां गिनने लगा—एक, दो, तीन, चार, पांच, छह, सात। उसने उसके केश और कपोलों को सहलाया। पीठ के बल लेटी उस तरुणी के कंठ से अपना गाल मिलाकर वह लेट गया। उसका दाहिना हाथ उसकी छाती पर विश्राम करने लगा।

जागा तो संध्या हो चुकी थी। वह चारपाई से उठ बैठा। उसे अचानक याद आया। उसने सब कुछ नाणुनायर से पूछकर समझ लिया था। पर सबसे अहम प्रश्न मैं कौन हूं ? तो पूछा ही नहीं। मैं एक मूर्ख हूं। सबका परिचय लिया, सबके नाम भी पूछ लिये। पर स्वयं अपना नाम न पूछा। मैं बड़ा बेवकूफ हूं। नाणुनायर से पूछ लेना चाहिए। वह सीढ़ियां उतरकर नीचे आया।

"नाणुनायर कहां है, पिताजी ?"

"अभी बाहर गया है।"

वह आंगन में उतरकर बड़े फाटक की ओर दौड़ा। रास्ते में जाकर देखा नाणुनायर बहुत दूर पहुंच गया था।

"नाणुनायर!"

ऊंचे स्वर में आवाज दी। नाणुनायर ने नहीं सुना। उसने पूरी ताकत के साथ पुकारकर पूछा,

"मेरा नाम क्या है, नाणुनायर? मैं कौन हूं, नाणुनायर?"

नाणुनायर ने सुना नहीं। मुड़कर भी नहीं देखा। संध्या की ओर, अंधेरे में, धुंधले प्रकाश में, नाणुनायर ओझल हो गया।

10. जार्ज षष्ठम् की अदालत

पेनांग से एक तार मिला। "मटत्तिराम सीरियस—शीघ्र पहुंचो।" मृत्यु शैया पर पड़े व्यक्ति के बारे में ही ऐसा तार भेजा जाता है। "सख्त बीमार।"

फिर मटत्तिराम चल बसा। मर गया। मर जाने दो। दुर्जन मरते ही हैं। सज्जन लौट आते हैं। दोनों में इतना ही भेद है।

लौट आनेवाले बहुत ही कम होते हैं क्योंकि सज्जन विरले होते हैं। लौट आने को मोक्ष कहा जाता है।

ऐसी स्थिति में सफेद बाल काले हो जायेंगे। गंजे पर नये बाल उगेंगे। झुर्रियां जाती रहेंगी। शरीर स्वस्थ हो जायेगा। हाथ, आंख और छाती के बाल गिर जायेंगे, चेहरे के रोएं भी। आवाज कुछ भारी हो जायेगी। दांत गिर पड़ेंगे। सातवें दर्जे में पढ़ेगा। फिर छठे में, फिर छठे से पांचवें में। यों पहले दर्जे तक फेल होते आयेंगे। उसके बाद कलरी[1] की ओर, ताड़पत्ते पर लिखने से लेकर हरि श्री तक के दिन-विस्मृति के दिन। फिर से विद्यारंभ, अन्नप्राशन। चलते-चलते थक जाता है। घुटने टेकता है, सरकता है। शिशु बनता है। मां का दूध पीता है। एक दिन जिस रास्ते से आया, उसी रास्ते से लौट जाता है।

मां की कोख की ओर।

उसके बाद गणना का क्रम उलटा शुरू होता है। दस महीने, नौ महीने, आठ महीने, सात, छह फिर खास भोजन में रुचि, फिर रुचि न होना, उल्टी आना।

खून का खून की ओर लौट आने की अनंत प्रक्रिया।

---

1. कलरी—केरल की प्राचीन ग्रामीण पाठशाला को कलरी कहते हैं जहां शस्त्र और शास्त्र संबंधी विद्या सिखायी जाती है।

मगर···उसके लिए मां कहां ?

मां कहां है ? बाप कहां ? पीढ़ियां कहां ?

पीढ़ियां ही लौट जाने के दरवाजे हैं। सोने के जैसे चमकीले, पीतल की चिटकनियां डाले हुए दरवाजे।

उनको युगों से होकर लौट जाना है। कोल्लम[1] पहुंचे तो वहां चिङम (पहली तारीख)। रोम पहुंचे तो सूली पर चढ़ाये ईसा देखें।

फिर ऐसी यात्रा है जब वर्ष की गणना ही नहीं होती।

सब बीते हुए अवतार फिर जाग उठते हैं। वराह (सुअर) से कूर्म कछुआ की ओर कूर्म से मत्स्य (मछली) की ओर और मत्स्य से मोक्ष की ओर लौट जाता है।

संहार स्थिति से होकर सृष्टि की ओर। सृष्टि और संहार एक होने की स्थिति है।

दुष्ट मर जाते हैं। जैसे सियार खेड़ी (आंवल) की चीरफाड़ करता है, वैसा ही हाल इन दुष्टों के शव का भी होता है।

खेड़ी मनुष्य का एकमात्र नातेदार है। बच्चे को किसी के द्वारा एक बार चूमे जाने से पहले ही मनुष्य की वह नातेदार खेड़ी कुत्ते ने फाड़ दी उसे अहाते में घसीटकर ले गया।

प्रसव होते ही काली गाय खेड़ी खाती है। यह उसकी गर्भ रक्षा के लिए प्रकृति का दिया हुआ मेथी रसायन है।

बिल्ली भूख के मारे अपने बच्चे को खाती है। मकड़ी की संतान अपनी मां को भी खाती है।

चतुराई के कारण मनुष्य चोरी करके खाता है।

चोरी करके खानेवाले दुष्ट होते हैं। मटत्तिराम के जैसे दुष्ट लोग।

शिवरात्रि पर्व के रेतीले मैदान में उसने मुझे पकड़ लिया था। जेब से दो रुपये ले गया। मैंने जब उससे एक प्याला चाय के लिए कम से कम दोवन्नी वापस देने को कहा तो हाथ पकड़कर मोड़ दिया। उंगलियां तोड़ने लगा था।

उसको मार डालना चाहिये। सभी दुष्टों की हत्या करनी चाहिये।

---

1 कोल्लम—कोयलोन—दक्षिण केरल का एक प्रधान शहर है। सन् 825 ई. में यहां केरल का मलयालम वर्ष प्रारंभ हुआ।

अच्छे लोग जीवित रहते है। जिंदगी से ऊब जाने पर वे लौट आते हैं।

आसमान से देवता भूमि पर उतरते हैं। जानवरों से संभोग करते हैं। उससे अच्छे मनुष्यों का जन्म होता है। चोरी न करनेवाले, डाका न डालनेवाले लोगों का।

मृगस्पति महर्षि का जन्म इसी प्रकार हुआ। वे मटत्तिराम नामक उस असुर को शाप देकर भस्म कर देते हैं जिसने महर्षि के तपोवन की पवित्रता नष्ट की थी। जिस मिट्टी में वह भस्म गिरा वहां सेहुंड, बबूल आदि कांटेदार पेड़ उगते हैं। केनार, कुचला आदि पेड़-पौधे उगते हैं। कंटीले पौधे। कड़ुवे पत्ते। विष उगलने वाले फल। सांप का दंशित अमरूद। आग लगने पर जलनेवाली सेहुंड का दूध।

सेहुंड का दूध जलाने के लिए ऐसी जादूगरी की जरूरत है जो जले हुए मुर्ग को उड़ा देती है। यह नीच कर्म है, अति उग्र कर्म।

काली बिल्ली की खोपड़ी उसके तुलसी पौधे के नीचे गाड़ी जाती है। उसके बाद उसको कुचले के तख्ते पर कीला जाता है।

तब देखें, वह कैसे हिल सकता है। कैदी।

ऐसा किये जाने पर वह कैदी सड़क पर ही, मिलते ही मेरी धोती उतारकर फेंक नहीं देगा ?

फिर वह मेरी ओर कैसे पत्थर फेंक सकेगा। उसके हाथ कुचले के तख्ते से ठोके जा चुके हैं।

यदि हिलेगा तो दर्द होगा। नीले रंग का खून बहेगा। दुष्टों का खून नीले रंग का होता है। उनके हृदय से, धमनियों में जिस खून का संचार होता है, वह अशुद्ध ही होता है।

डंडे के सिरे पर दो कुत्तों का सिर।

डंडा सांप बनता है। कुत्ते पागल बनते हैं। पागल कुत्तों का सिर वाला सांप। पागल सांप। उसके सिर पर डसेगा।

उसने मिर्च पीसी हुई चक्की का धोया हुआ पानी मेरे चेहरे पर उंडेल दिया था, उसके लिये यही सजा है।

जहांगीर बादशाह का न्याय उसको सजा देगा।

कोई भी हो, कसूरवार को सजा मिलनी ही चाहिये।

मेहरुन्निसा बेगम हो या मटत्तिराम हो, अपराधी सजा का अधिकारी होता है।

मजिस्ट्रेट की अदालत से सेशन न्यायालय के सामने मुकदमा रखा जाता है। न्यायालय में फांसी की सजा का फैसला होता है। उच्च न्यायालय ने पुर्नविचार की प्रार्थना रद्द कर दी। फांसी के पहले का आखिरी भोजन, वधिक, फांसी बारहवीं नंबर वाली रस्सी।

पेनांग से फिर तार। "दाह क्रिया हो चुकी। अब न आना।"

न आने की बात की सूचना पहले ही दी जा चुकी है।

विदेश में मरने से मोक्ष प्राप्त नहीं होता। मृत्यु पितर पिंड लेने से इंकार कर देते हैं। आखिर पितर काग-कच्चा चावल चुगता है। काग असुरों के पितर हैं। मनुष्य के पितर कौए हैं। देवों के पितर कोयल हैं।

मटत्तिराम के पितर कागकौए हैं। वे असुर हैं।

देवासुर से युद्ध होना है। देवलोक से तार आता है—"मटत्तिराम जल्दी चले आओ।" असुरों से मिलकर युद्ध करना है। मंजूर है। घमासान लड़ाई में असुरों की हार होती है। महाविष्णु का चक्र देवों की रक्षा करता है। शरीर के भाग आसमान से भूमि पर गिरते हैं। कबंध-बेसिर का धड़। यह सिर किसका है! काला मस्सा और कनखजूरे जैसी मूंछें। मटत्तिराम का है यह हाथ, यह छाती जिस पर छुरी भोंकने का निशान है यह सब मटत्तिराम का ही है।

उपदंश रोग से ग्रस्त यह कमर किसकी है? बालोंवाले कान किसके हैं? यह भी उसी का है।

मां! तू क्यों रोती है? तेरी कोख ने असुर को जन्म दिया था। वह शापग्रस्त है। असुर के द्वारा चूसे तेरे स्तन, असुर को चूमे तेरे होंठ, असुर को देख पुलकित तेरा तन, सब अभिशप्त हैं। तुम शाप मोक्ष के लिए प्रार्थना करो। मुक्ति प्राप्ति के वरदान के लिए।

मटत्तिराम! तूने मुझे बंदी बनाया था। चाबुक से मारा था। "नायकरणा" नामक पौधे का रज मेरे चेहरे पर पोत डाला था जिससे असह्य खरोंच पड़ी। मेरी जांघ और पीठ पर खरोंचें पड़ीं। तूने आंखों में भी वह रज लगाया था।

तूने मुझे भूखा रखा। तूने मुझ प्यासे के मुंह पर नमक डाल दिया। सेंधा नमक।

पागलपन के लिये दवा—प्यास लगाने के लिए सेंधा नमक।

सेंधा नमक दवा है। तूने मेरे मुंह पर जो कुछ डाल दिया, वह सेंधा नमक नहीं शोरा था। उसके बाद गंधक डाला।

शोरा और गंधक। जले भूसे की राख से सवेरे दातुन करते समय धमाका होने के लिए।

तुझे मालूम था कि शोरा गंधक और भूसे के रज—सब मिलाकर पीसते समय बारूद बनता है। धोखेबाज।

उसी दिन से मैंने दातुन करना छोड़ दिया।

गंधक और शोरे का मजा अभी दूर नहीं हुआ है।

तू चेचक का टीका लगानेवाले का वेश धारण करके मुझे ढूंढ़ता रहा। तेरी सिरिंज में टीके की दवा नहीं थी, बल्कि असली चेचक के जीवित अणु थे।

नारद महर्षि 'लाट गुरु' के रूप में प्रकट हुए। उसने ही मुझे इस उपरोक्त बात की सूचना दी थी। मैं बहुत प्रभावित हुआ और उसी दिन से मेरा ठिकाना मंदिर का गर्भगृह हो गया। दुष्ट ब्राह्मणों ने मुझे वहां न रहने दिया। उन्होंने मुझे बाहर निकाल दिया। चबूतरे पर बरगद के पेड़ से मुझे बांध दिया। चबूतरे के उसी बरगद से जिससे 'अहोर' नंपूतिरी मठ के पद्मनाथ नामक मदमत्तहाथी को जंजीर से बांधा गया था।

बरसात और गर्मी से मेरे शरीर में काई लग गयी। दीमकों ने तलवों को चाट-चाटकर खा लिया। उंगलियों के अग्र भाग पर अंकुर लगे। मेरे रोम जड़ बने। हाथ शाखाओं के रूप में बदल गये। नयी अंगुलियां, नयी टहनियां, नयी-नयी कोपलें आयीं। हरे रंग के पत्ते निकल आये। पकने पर वे पीले रंग के हो गये। बसंत ऋतु में मैं फूल उगा। तितलियां पराग लेकर आयीं तो मुझे गुदगुदी हुई। उड़नेवाली चिड़िया मेरी डालियों पर आ बैठीं और आराम किया तो मैं धन्य हुआ।

मुफ्त खाना देनेवाले भोजनालय का निर्माण करने के लिए ब्राह्मणों ने वह पेड़ काट डाला। सबसे पहले तूने ही कुल्हाड़ी मारी, तेरी कुल्हाड़ी को भी कोढ़ नहीं लगा। कोढ़ी को काटते हुए भी कुल्हाड़ी को कोढ़ नहीं लगता।

किसने उमयम्मा रानी[1] की आठों संतानों को—कुलिप्यान[2] कुलं तालाब

1. तिरुवितांकूर राज्य की रानी।

2. कलिप्पान कुलं—एक तालाब का नाम है।

में डुबोकर दम घोट कर मार डाला था।

मटत्तिराम।

आयिल्यं तिरुनाल[1] महाराज को श्री पद्मनाभ स्वामी मंदिर के नैवेद्य "नेय्पायसं"[2] में किसने विष मिलाकर दिया !

मटत्तिराम तूने ही।

किसने वाणप्पल्लि कुणिक्काव के बड़े खेतों को दान के रूप में अपनाने के बाद गिरवी रखा। मैं पूछता हूं किसने ?

यह सच है कि यह कुणिक्काव ने इष्टदान में दी थी। पर वह वस्तु उसकी नहीं थी। दूसरों की थी। यह अहोर नंपूतिरि ब्राह्मण मठ का ब्रह्मस्वं था। आलङाट्ट देवस्वं का धन कल्लिल शारत[3] की वसीयत से मिला हुआ और कुञ्ञिक्काव के साथ शादी।

कुञ्ञिक्काव के साथ शादी करने का वादा करके उसके बड़े-बड़े आय के खेतों की इष्टदान में प्राप्त करके उसकी आंखों में धूल डालकर कौन चला आया ?

मटत्तिराम।

ब्राह्मणों से छल बल करना ब्रह्महत्या है। देवताओं को छलना देवहत्या है। इस लोक और परलोक में तुझे शांति नहीं मिलेगी।

पाला[4] पेड़ के नीचे के गणक के अधीन सत्रह खोटे देव हैं। खोटे देव सत्रह हैं। पाला के नीचे के गणक से खेलना आग से खेलना है। तूने पाला गणक को वश में करके मुझे पागल बनाने की चेष्टा की है न ? शबरी गिरि शास्ता[5] के प्रसाद के बहाने विष मेरे पास भेज दिया था। जब मैं खाने लगा तो अग्नि कोण

1. तिरुवितांकूर के महाराज अपने जन्म नक्षत्र के नाम से जाने जाते हैं। आयिल्यं तिरुनाल—अशेषा नक्षत्र।

2. नेय्पायसं—घी, गुड़ और चावल की बनी खीर।

3. शारत—मंदिर की सेवा करने वाला एक कुल।

4. पाला—एक बड़ा पेड़ जो देवी मंदिरों के बगल में लगाया जाता है।

5. शबरी गिरि शास्ता—केरल का एक प्रसिद्ध मंदिर है जहां शास्ता की प्रतिष्ठा है जिसके दर्शन के लिए भक्त विशेष व्रतानुष्ठान करते हैं। समस्त भारत से दर्शनार्थी आते हैं। मेष और मकर संक्रांति दर्शन विशेष महत्व का है।

(दक्षिण पूर्व का कोना) से छिपकली ने तीन बार 'चू' 'चू' 'चू' आवाज की थी।

मत खा विष है; मत खा।

मैंने नहीं खाया।

तब वे खोटे देव आये। पेरयकाप्पल्लि कुञ्ञन तुरंत 'चोट्टांनिक्करा' देवी मंदिर में जाकर भजन में बैठा और देवी के निर्माल्य से जपे कुसुम के लाल फूल और विल्व के पत्ते ले आये। खोटे देव वापस चले गये। समझा दिया कि पेरयकाप्पल्लि कुंञन का सर्वनाश नहीं किया जा सकता। गणक ने फिर यक्षियों को भेज दिया।

खोटे देव दिन में और यक्षियां रात में नाक में दम करती हैं। पाला के नीचे के गणक ने यक्षियों को अपनी रखेली के रूप में रखा है, पूर्णतः अपने वश में ताड़ के कुंज से लंबे कुंचित केशवाली यक्षियां। रात में घुंघरू बजाती आती हैं। एक नहीं, दो नहीं, अनेक। मंदिर के तालाब में— तिरुवातिरा[1] स्नान करती हैं और आंख मारकर ले जाती हैं। मनुष्य केवल एक ही धोती पहने उसके पीछे जाता है। कहां जा पहुंचता है? राजमहलों में, अंतःपुरों में। किसके अंतःपुर में ? क्या अकबर बादशाह के अंतःपुर में है ? नहीं। पाला के नीचे के गणक के अंतःपुर में।

उधर गीता गोविंद। ये यक्षियां मनुष्य को छाती से लगाते समय उनकी सोने की करधनी तोड़ लेंगी। चूमते समय जीभ से सोने के दांत उखाड़ेंगी, फिर खून चूसकर पियेंगी, बिलकुल सूख जाने पर आंखें बांधकर रुखे सूखे खेत में फेंक-डालेंगी। वहां चांदनी में छोड़े गये मुर्गे के जैसे चक्कर काटकर मर जायेंगे।

जिस दिन तूने पाला के नीचे के गणक को कब्जे में कर लिया था तब से, मैंने सोना छोड़ दिया है। मैंने निश्चय किया कि रात में सोना नही चाहिए। पलक झपकते ही तू नष्ट हो जायेगा। रात धोखा है। सब छल-कपट हैं। प्रवंचना है।

वेश बदलकर चलनेवाली यक्षियां। शैतान, चुड़ैल, बाल प्रेत।

चोर पुलिस के वेश में और पुलिस चोर के वेश में।

---

1. तिरुवातिरा—केरल की नारियों का एक विशेष त्यौहार है जबकि नारियां धनु महीने के आर्द्रा नक्षत्र के दिन ब्राह्म मुहूर्त में उठकर स्नान एवं देवदर्शन कर अचल सुहाग के लिए व्रतानुष्ठान करती हैं

कौन किसकी चोरी करता है।

उनमें बनवास के लिए निकले पांडव भी हैं। भीमसेन कीचक के राज महल में है। यह मालूम नहीं कि लाक्षालय में कब आग लगेगी। मंदिर भी लाख घर के समान है।

मगर लाख घर के जल जाने पर भी देव का कुछ नुकसान नही होता। पेरयकाप्पल्लिकुणन का कुछ नुकसान नहीं होगा।

पुजारी आता है; जाता है; मर जाता है। माला पिरोनेवाली वारस्यार[1] अनजाने ही बूढ़ी हो जाती है। मारन्मार[2] मर जाते हैं। कार्यकर्ता बदल जाते हैं। चपरासी बदल जाते हैं। भट्टतिरिपाड़[3] की संपत्ति के लिए कलह हुआ। कट्टिक्काट्ट देवस्व किसके नाम पर हैं? इस निर्णय के लिए न्यायालय में पहुंचा। कुंभ के महीने की शिवरात्रि को फैसला हुआ।

देवस्व किसी के भी नाम पर नहीं। देव के नाम पर है। देव परिवर्तनशील नहीं है।

पेरयकाप्पल्लि कुंञन का भी परिवर्तन नही होता। कुट्टिक्काट्ट, देवस्वं पेरयकाप्पल्लि कुंञन को। शूद्रस्वं प्राप्त हुआ।

परंतु कुंञन को सोना नहीं चाहिए। पलक भी नहीं झपकनी चाहिए। मुर्गे का खून पीने के लिए पिशाच चाय के पौधों के बीच में छिपे रहते हैं।

पिशाच और सांपों को मुर्गे का खून चाहिए।

सर्प पूजा अबाध करानी चाहिए। छुट्टी के दिनों में सरकारी कर्मचारियों को सांपों के अलावा बिच्छू, कनखजूरे आदि की भी आराधना करनी चाहिए। यक्षियों और चुड़ेलों से रक्षा के लिए सर्प पूजा आवश्यक है। सांपों को मुर्गों का खून देना है। मुर्गा, जल मुर्गा, जंगली मुर्गा, काल मुर्गा, सागर मुर्गा, मुर्गी, बटेर आदि सप्त मुर्गों का खून। शेषनाग, तक्षक, वासुकी, आठ फुट लंबाईवाला भुजंग, सफेद सांप, पीला सांप, जल सांप (डोंडहा), कान सांप, पान सांप, सुपारी सांप, बंबाकू सांप आदि समस्त सर्पों की पूजा करनी चाहिये।

1. वारस्यार—केरल के मंदिरों में माला पिरोने का काम करने वाली एक जाति।
2. मारान्मार—मंदिर के शंख फूंकने या विभिन्न बाजे बजाने वाली एक जाति।
3. भट्टतिरिपाड़—केरल की ब्राह्मण जाति के एक उपवर्ग का व्यक्ति

सांपों के देव 'पांपुमेयक्काट' मठ के नंपूतिरि हैं। पांपुमेयक्काट मठ से दो सर्पों को एक शीशी में डालकर वारिक्काट सर्पक्काव[1] के एक बिल में उनकी प्रतिष्ठा करते हैं। दूध पिलाकर पूजा करते हैं। गाय का दूध, भैंस का दूध, बकरी का दूध, बाघिन का दूध, सेहुंड़ का दूध, रबड़ का दूध, मां का दूध, दुग्ध चूर्ण, जैसे दूध पर्याप्त मात्रा में देते हैं।

"विष सोने के बर्तन में रखने से अमृत नहीं हो जाता।"

सांप को दूध पिलाने पर वह दूसरे ही क्षण डसता है।

मटत्तिराम को

मुर्गी का रक्त पीकर पागल बने हुए पान-सांप यक्षियों को डसते हैं।

वटपत्रशायी कृष्णा ! तू पान सांपों से मेरी रक्षा कर।

मटत्तिराम रूपी असुर ने पाला गणक को अपने वश में कर लिया, यही इन सबका कारण है।

मांसाहार प्रकृति का नियम है। मुर्गा दीमक को खाता है। सियार मुर्गे को खाता है। मनुष्य सियार को खाता है। मनुष्य मनुष्य को खाता है। शेर मनुष्य को खाता है। गीध शेर को खाता है। चींटी गीध को खाती है। एक कीट चींटी को खाता है। दीमक उस जीव को खाती है। मुर्गा दीमक को खाता है।

मनुष्य मछली खाता है। मछली मनुष्य को खाती है।

यह व्यवस्था ठीक नहीं। आत्म निर्भरता प्राप्त करनी चाहिये। हमको दूसरे जीव का मांस नहीं खाना चाहिये। अपना ही मांस खाना चाहिये।

सांप को भूख लगने पर अपनी पूंछ खानी चाहिये। हाथी को अपनी सूंड खानी चाहिये। धान के कुंज को धान के लिए खाद बनना चाहिये।

पराश्रयी मटत्तिराम सजा का पात्र है।

विलायत से तार आया। पेरयक्कापल्लि कुञन को तुरंत चल देना चाहिये। विलायत की ओर। जार्ज षष्ठम् के राजमहल में पहुंचना चाहिये। पेरि-

---

1. केरल के हिंदू घरों और मठों में सर्प पूजा होती आयी है। सर्पकाव वह स्थान है जहां सर्पों की प्रतिष्ठा कर उनकी पूजा की जाती है। आश्लेषा नक्षत्र सांप पूजा का प्रधान दिन है।

यक्काप्पल्लि कुंञन को अंतःपुर के द्वारपाल की नौकरी मिलेगी। आज से वह विलायत में होगा।

मगर कुंञन राजमहल का खाना नहीं खाता। जार्ज षष्टम् ईसाई हैं। ईसाई का खाना नहीं खाना चाहिये।

एक दिन कुंञन ने जार्ज षष्टम् से कहा।

"हमारे अन्नदाता श्रीमान् महाराज। कुन्नत्तुनाटु तालुका के रायमंगल गांव के पुल्लुवषि करयिल मटत्तिवोट्टिल वेलुपिल्लै रामन नायर के कारण से हम तंग आ चुके हैं। यह रामन मनुष्यों और जानवरों को मारकर खाता है, कर भी लेता है।"

जार्ज षष्टम् को गुस्सा आया।

"हाय। मेरे राज्य में एक दूसरा राजा भी है?"

तुरंत ही आज्ञा जारी की।

"पेरयकाप्पल्लि कुंञन जाकर मटत्तिराम को बंदी बनाकर मेरे सम्मुख हाजिर करो।"

कुंञन दो वारंट चपरासियों और एक गुमाश्ते के साथ मटत्तिराम को हथकड़ी बेड़ी पहनाये राजपथ में लाया। जार्ज षष्ठम् के सम्मुख प्रस्तुत किया।

जार्ज षष्ठम् की अदालत में।

जार्ज षष्ठम् विक्टोरिया महारानी, श्री चित्तिरा तिरुनाल[1] महाराज बालराम वर्मा महाराज अहीर मठ के विष्णु नंपूतिरि और राजवैद्य धंवंतरी मूस्सत्[2] सब उपस्थित हैं। राम अभियुक्त के कटघरे के अंदर है। कुंञन ने आरोप पत्र प्रढ़ा। मुकदमा शुरू हुआ।

जार्ज षष्ठम् ने पूछा—

"मटत्तिल राम अथवा मटत्तिल घर का रामन नायर हाजिर है?"

"हाजिर जनाब।"

"स्टेंड अप···सिट डाउन···स्टेंड अप···सिट डाउन।"

"उतार-चढ़ाव की दशा का मतलब क्या है?" मटत्तिराम बोलो।

वह चुप रहा।

---

1. चित्तिरा तिरुनाल—चित्रा नक्षत्र महाराज।

2. मूस्सत—नंपूतिरि जाति के एक उपवर्ग का व्यक्ति।

"ज्योग्राफी के माने क्या हैं ?"

फिर भी मौन रहा।

"तुम्हें कुछ भी मालूम नहीं। बेवकूफ कहीं के। कुछ भी पढ़े बिना यहां चला आया ?"

"पिस्सू कैसे पैदा होता है ? बताओ मटत्तिलरामन।"

"बड़े पिस्सू छोटे पिस्सू को पैदा करते हैं।"

"करेक्ट। पतंगे कैसे बनते हैं ?"

"रोशनी देखने पर।"

"गलत। कुंजन, तुम बताओ।

"दीमक को पर लगने पर पतंगे बनते हैं।"

"जुगनू कैसे बनते हैं ? मटत्तिरामन इस बार तुम ही बताओ।"

"कान—सांप को पर लगने पर जुगनू बनते हैं।"

"अमर बेल खाकर जीनेवाले जंतु कौन-कौन हैं ?"

"पराश्रयी सुअर।"

"सत्ताईस सरकारी चक्र[1] के मूल्य के कितने ब्रिटिश रुपये होते हैं ?"

"अठाईस।"

"गलत, अठाईस सरकारी रुपये के बराबर हैं सत्ताईस ब्रिटिश रुपये। खैर, तुम जा सकते हो।"

फैसला दूसरे दिन के लिए स्थगित रखा गया। अगले दिन मटत्तिराम को फांसी की सजा का फैसला हुआ। जिस प्रकार वेलुत्तंपी को फांसी पर लटकाया गया था उसी प्रकार बाजार के चौराहे पर खुले तौर पर फांसी देने की सजा दी गयी। उसी दुपहर को मटत्तिराम ने मृत्यु से पहले का आखिरी खाना अटाप्रथमन[2] के साथ खाया था।

वधिक नहाकर तिलक लगाये, आ पहुंचा। पाला गणक को बुलाकर फांसी पर चढ़ाने का समय निश्चित किया गया। जादूगर को बुलाकर भूतप्रेत आदि की बाधा से बचाने के लिए प्रायश्चित करवाना है।

1. चक्र—तिरुवितांकूर में प्रचलित एक सिक्का।

2. अटाप्रथमन—चावल पीस कर बनी हुई मधुर खीर।

नहीं तो मटत्तिराम प्रेत होकर साथ रहेगा। यह अपमृत्यु होगी न ?

कौन आया है ? कह दो, कुंजन इधर नहीं है, विलायत गया है।

पिशाच को ठोंकना है ।

कुचला पेड़ के तख्ते पर—राल कूट कर बनी धूल दो पाव चूना और हल्दी मिला हुआ द्रावक परा[1]।

फिर कोई आया। "क्यों आये हो ? अ···अ···क्यों करते हो ? मैंने पहले ही कह दिया है कि कुंजन यहां नहीं है।"

हैं—कौन आया ?

अच्छा तुम हो।

अरे, देख। मुझसे मत खेल। मेरा कहना सुन।

हाय, रे अंगुली की चोट न पहुंचाओ। वह टूट जायेगी। धोती दूंगा। हे मटत्तिराम मेरी अंगुली मत तोड़। अरे देख इस जेब में दो रुपये चार आने हैं। पैसा ले पर धोती न ले जाना। पहनने को मेरे पास दूसरी धोती नहीं है। मटत्तिराम ! मुझे इस हाल में छोड़कर मत जा। मटत्तिराम वह धोती मुझे देकर फिर कहीं जाना।

हाय—मटत्तिराम।

मेरे···

कहां हैं जार्ज षष्ठम् ?

1. परा—करीब चालीस पाव का माप।

11. अस्थि पंजर

एक बूढ़ा आम का पेड़ आसमान को सर पर और सूरज को अपने पूर्वी कंधे पर ढोता हुआ खड़ा है। पत्तों और जीर्ण टहनियों से नीचे की ओर छनती हुई सूरज की किरणों ने गली के कंकड़ों में अषाढ़ की बारिश[1] से बने छोटे-छोटे गड्ढों के पानी में आलपिन-सी खोस दी है।

वह गांव की नजरों से, पड़ोसियों की तीक्ष्ण दृष्टि से भयभीत था। जिस घर में वह कन्या रहती थी, उस घर के द्वार पर पहुंचने पर उसके पैर कांप गये। जिस प्रकार रसोई के आंगन पर मुर्गियों और केले के पेड़ों पर सूरज का प्रकाश पड़ रहा है, वैसे ही मनुष्यों पर भी वह प्रकाश पड़ रहा है क्योंकि वे लोग उसकी तरफ देख नहीं रहे थे इसलिए उन सबका वह कृतज्ञ हुआ।

उसके हृदय में तीव्र गति से आगे बढ़ने की इच्छा हुई फिर सोचा कि आंगन मे पैर लगते ही रेतकणों की किर-किर उसके आगमन की सूचना देगी। घर के सामने का दरवाजा बंद है। वह सावधानी से आगे बढ़ा। कन्या के पढ़ने के कमरे का अधखुला दरवाजा मानो स्वागत के लिए तैयार है। उसने कान धरकर रसोई से किसी आनेवाली आहट को सुना, फिर अंदर पहुंचा। दीवार पर टंगी कालेज के जमाने की गुप्त फोटो के एक कोने में वह मुस्कराती दिखायी पड़ी।

कमरे में उसने देखा कि चमेली की मुरझायी पड़ी कलियां हैं, देहाती वाचनालय की किताबों पर पड़ी हुई काजल की डिबिया है; मेज पर सिंदूर की सूखी लाल बूंदें पड़ी हैं; डोरी पर सिल्क की साड़ियां पड़ी हैं। उसकी मधुर सांसें और खुशबूदार स्वप्न झपकी लेते हुए उस गुप्त संसार में, उसकी अनुपस्थिति में उसका शरीर, उसकी निराली सुगंध उस वातावरण में व्याप्त थे।

---

1. केरल में वैशाख आषाढ़ महीने में मानसून के कारण खूब वर्षा होती है।

वह खुली खिड़की की तरफ गया। अचानक वह दंग रह गया क्योंकि एकदम वह दिखायी पड़ी। खिड़की के सविचों के उस पार, बरामदे में फर्श पर, उसके बिखरे बाल—बिना संवरे बाल। हाथ में कंघी थी। चेहरा पीला था। शोक के मोती और अनंतता लिए नेत्र। कालेज के गुप्त फोटो में वह 'लो वेइस्ट' साड़ी पहने थी, पर अब उसका वह पहनावा नहीं, अब तो वह केवल एक धोती और ब्लाउज पहने है; अब तो वह बेचारी लड़की सिमेंट के फर्श पर बिना अंगोछा बिछाये ऐसे ही बैठी है।

कंघी गोद में पड़ी है। छोटे घुंघराले बाल दोनों हाथों से सवारकर एक छोटा जूड़ा बनाया। उसने होंठों पर अपनी जीभ फेरी मानो दुख का एक बड़ा ढेला गलाकर निगल चुकी। खड़ी होकर धोती झाड़ दी फिर नीचे का होंठ दांतों से दबाया। उसने मुंह फेरा।

खिड़की पर सिर्फ उसका चेहरा दिखायी पड़ा। उसकी आंखों की वेदना के निगूढ़ बीज लज्जा के बीज बनकर झड़ गये।

"मैं डर गयी। तुम यहां कैसे पहुचे !"

उसका चेहरा ही नहीं तब शरीर भी दिखयी पड़ा। वह हंस पड़ी।

उसने पूछा, "दरवाजा बंद करे बाहर क्यों खड़ी है ?"

उसने मुंह फेरा, केवल शब्द खिड़की के सीखचों से होकर सुनायी दिये।

"मेरी तबियत अच्छी नहीं है।"

"क्या बीमारी है ?"

वह बिना उत्तर दिये कुछ दूर हट गयी।

बरामदे के उस पार खुले आंगन के किनारे पर लाल केले का झुरमुट था। अभी फलनेवाले एक केले के कुछ पत्ते बरामदे से लगे हुए थे। नीचे जमीन पर चेंपरत्ति-जपा[1] है। टहनियों पर लाल फूलों और की मंजरीवला कनेर का पौथा है लाल फूलों और फूलोंवाला चांपा[2] (जंपु)। सर्वत्र मंद लालिमा। लालिमा के उस प्रलय प्रदेश को देखकर उसने पूछा, "तुम्हारी मां कहां है।"

वह इस प्रकार खिड़की के पास आयी कि उसका आधा चेहरा ही नजर पड़ा।

---

1. चेंपरत्तिजपा—लाल फलोंवाला एक पौधा—"शू फ्लावर"।
2. चांपा—एक पेड़ जिस पर लाल फूल और स्वादिष्ट फल उगते हैं—'रोज एप्पल'।

उसने पहले खिड़की के सीखचों को पकड़ा। एक हाथ, सर का आधा भाग, एक आंख, आधी नाक, आधा होंठ, एक छोटी छाती—इस प्रकार दिग्दर्शन कराती कन्या ने लालिमा युक्त हंसी के साथ कहा—

"मां दीदी के घर गयी हैं।"

वह कुछ न बोला। कन्या ने उत्तर की प्रतिक्षा की। बाद को कनेर की टहनी की मंजरी-सी अरुणिमा लिए उसने झरोखे के सीखचों से अपना चेहरा लगा लिया।

गालों पर लज्जा की अरुणिमा, होंठों पर मुस्कराहट और स्मृतियां उभर आयीं।

उसने कहा, "दासुचेट्ट कुछ बोलो तो सही।"

"मैं क्या कहूं ?"

"कुछ बात करो।"

देहाती लड़की तू मासिक वेतन रूपी पूंछवाली कुरसी पाकर देहात छोड़कर शहर पहुंची। दिन भर दफ्तर के फाइलों के कफन में दबे रहकर उनसे मुक्ति पाकर शाम को सूखे होंठों से प्रेम भरी बातें करने के लिए सड़कों के किनारे बाट जोहा करती थी। संध्या समय जब तुझे महिला सदन के फाटक पर छोड़ने जाता तो वह विदाई के क्षण बोझिल कर दिया करते और वापस आकर अपने किराये के कमरे में पड़ा-पड़ा कई पहर स्वप्नों की हड्डी बटोरते रात बिता देता था।

फिर एक और याद ताजा हुई।

शहर का वह दो कोठरियों का गंदा घर, अंधकार और गर्मी रूपी बरतनों में भुने हुए, भुनभुनाते, गीत गाते, तलवार की पैनी नोक चुभानेवाले मच्छर। छोटी-सी एक चारपाई यह सब कुछ होते हुए पसीने में तरबतर छाती की मधुर धड़कन और पुलकानेवाले चुंबनों के फूलों का वह मादक संसार।

उसने पूछा, "स्वप्न और सुख की तलाश की बातें कभी खतम होंगी ?"

स्वीकार सूचक सिर हिलाते हुए उसने 'हां' कहा और दांतों तले उंगली दबायी।

संकोच भरे स्वर में उसने कहा, "क्या तुम मुझे पत्र भी नहीं लिख सकते थे ?"

एक मुरझाये फूल की-सी मंद हंसी उसके चेहरे पर उभरी।

"सच बात तो यह है कि घर में बैठे-बैठे मैं ऊब गयी हूं। उस दिन तुमने जिस

नौकरी की बात कही थी क्या वह मिलेगी ? ठीक-ठीक बताओ।" शिशु सहज जिज्ञासापूर्ण चेहरे और भोली बातें करते-करते वह उसकी ओर ताकती रही।

"अरी, चिंता क्यों करती है, तुझे नौकरी अवश्य मिलेगी।"

यह बात सुनकर भी प्रसन्नता उसके चेहरे पर नहीं झलकी। अभी उसका इतना मानसिक विकास नहीं हुआ था कि वह सच्चे अर्थों में भले बुरे की पहचान कर सके।

एक नर गिलहरी पास के जंपु पेड़ से लाल केले के पौधे पर कूदा। केले के उस अंकुर पर बैठा जहां अभी फल लगनेवाला है। वह अपनी पूंछ इस खुशी से हिला रहा था मानो वह अपने ही घोसले में आराम से बैठा हो।

उसने कहा, "उधर देख, एक नर गिलहरी केले पर बैठ सपना देख रहा है।"

कन्या ने गिलहरी को देखे बिना कहा, "मैंने उसे पहले ही देख लिया है। वह मुझसे जरा भी नहीं डरता। कभी-कभी वह मेरे शरीर पर आ चढ़ता है।"

"तेरा हृदय सदा प्रेम से परिपूर्ण रहता है। इसलिए गिलहरी भी तुझसे प्यार करता है।"

गिलहरी केले के पौधे से आंगन में कूदा। दूसरी चौकड़ी में वह सिमेंट के फर्श पर पहुंचा। कुहनी टेके, सिर थामे बैठी उस कन्या की गोद से होकर वह दूर जाकर बैठ गया। पीठ पर तीन रेखाओंवाला वह नर गिलहरी अपनी चमकती आंखों से उसे निहार कर "श्चिल, श्चिल" स्वर में कुछ गाने लगा।

दोनों एक-दूसरे को देखकर हंस पड़े।

"यह गिलहरी मेरा दिलीजान है।" यह सुनकर पुरुष की हंसी गायब हो गयी।

घुटनों पर ठोडी रखे, नीचे की ओर नजर किये, बैठी उस कन्या की हंसी भी काफूर हो गयी।

नरगिलहरी आंगन की ओर छलांग मारकर लाल केले पर चढ़कर आंखों से ओझल हो गया।

उस लड़की ने कहा, "मैं दुख का अनुभव कर रही हूं।"

"क्यों दुखी होती है ? दुख का कारण तो बता।"

"मैं अपने दासुचेट्टन को एक चाय बनाकर भी नहीं दे सकती।"

"मैं तेरा मेहमान हूं। मुझे तेरे हाथ की बनाई चाय की अभिलाषा है। तेरी चाय रोज पीते रहना एक सुनहला स्वप्न है न ?"

उसने सिर झुका लिया।

पुरुष के निरंतर बातें करते रहने से वह कन्या बहुत चकित हुई।

"देख घर खाली है, न मां है न कोई और, बिलकुल एकांत है। कितनी मादकता है इस एकांत में। क्या अच्छा हो कि तेरी मां जब तक आये हम ऐश करें, तू मेरी पत्नी बन जाये और मैं तेरा नाथ।"

उसकी आंखें दीप्त हो उठीं। वह लगातार बोलता ही रहा।

"कुछ समय तक इस घर में पति-पत्नी ऐश लेकर जियें और चैन करें।

एक गहरी सांस लेने पर वह हंस दी।

"हे मेरी पत्नी रूपी कन्ये। मुझे तेरी मोठी चाय चाहिये।"

"नहीं नाथ मैं चाय नहीं पिला सकती मैं स्वस्थ नहीं हूं।"

"तो फिर क्या किया जाये ?"

"नाथ तुम्हीं चाय बनाओ।"

आज्ञाकारी पति रसोईघर में पहुंचा। आंगन से चक्कर काटकर पत्नी भी रसोई द्वार तक पहुंची। अगीठी में आग जलकर राख हो चुकी थी। पति ने राख में और लकड़ी डालते हुए पूछा, "चाय बनाऊं ?"

पत्नी ने सिर हिलाकर अनुमति दी।

दियासलाई से आग जलायी। जब लपटें ऊपर आयीं तो पति ने छोटा बर्तन हाथ में लेकर पूछा, "पानी कहा से लिया जाये ?"

ढक्कन से ढके एक बड़े बर्तन की ओर पत्नी ने इशारा किया।

पति ने ढक्कन हटाकर देखा किंतु निराश होकर कहा, "इसमें पानी नहीं।"

"हाय, मां ने इसमें पानी नहीं भरा। अब क्या किया जाये।"

पत्नी ने खेद प्रकट करते हुए कहा, "मुझे कुएं से पानी खींचना भी मना है।"

"हम, तुम और यह एकांत घर, ऐसे वातावरण में मेरे हाथ की बनी चाय पीने की तुम्हें इच्छा है न ?"

पति कुएं की ओर गया। पत्नी उसके पीछे-पीछे उसके पदचिह्नों को मिटाती आगे बढ़ी।

पति ने बाल्टी कुएं में डाली, तब पत्नी ने घबराहट से कहा, "आवाज न होने पाये पड़ोसी न सुन लें।"

पति ने कुएं से एक बाल्टी पानी धीरे-धीरे ऐसे खींचा कि घिर्री से आवाज न निकले।

धधकती आग के चूल्हे पर पानी रखने के बाद पति ने पूछा, "चाय का डिब्बा कहां है ?"

"देखो, वह रखा।"

"इन डिब्बों में से कौन-सा है ?"

"वह लाल वाला डिब्बा।"

"यही।"

"वह लाल वाला नहीं।"

"तो फिर कौन-सा ?"

"पीले के पासवाले डिब्बे के पास वाला लाल डिब्बा?" पत्नी को गुस्सा आया।

उसने एक लंबी लकड़ी हाथ में लेकर भीतर की ओर संकेत करके कहा, "मैं इस लकड़ी से छूकर दिखाऊंगी।"

जब उसने चाय के डिब्बे में दुबारा चमच डाला तो उसे रोकने के लिए पत्नी ने पीछे से पति की पीठ पर लकड़ी चुभोते हुए उसे ऐसा करने से रोका।

चीनी डालते वक्त पति ने पत्नी की ओर देखा।

पत्नी ने संवेदन भाव से कहा, "मेरे पतिदेव पसीने से तर हो गये।"

आखिर चाय बन गयी।

एक घूंट पीकर पत्नी ने कहा, "धन्यवाद, चाय अच्छी है।"

"आपके धन्यवाद की शुक्रिया।"

चाय पी चुकने के पहले पत्नी ने कहा, "मैं दोनों गिलास धोकर रखूंगी।"

दूध के खाली बर्तन को अच्छी तरह ढक कर रखा, आग बुझायी, फिर रसोई को पहले जैसे व्यवस्थित करके पत्नी और पति दोनों अलग-अलग रास्ते से पढ़ने के कमरे की ओर चले।

पके जंपु फल खाकर पेड़ पर गोरैया चहचहा रही थी। कनेर के पेड़ के नीचे बने नये महल की ओर सरकनेवाले दीमकों ने गीत गाये। टहनियों पर सिकुड़ी पड़ी कोयल, और पुष्पों की सुगंधि लिए मारुत ने भी गीत गाये।

सीखचों के भीतर से एक चंचल हाथ, पुरुष की हथेली में आ पड़ा। गोल लंबी हड्डियों पर लाल और गोरी चमड़ीवाली उंगलियां उसे पंखुड़ियों के समान लगीं। पांच दलों के उस फूल पर पुरुष ने हाथ फेरा, उस फूल को पकड़ा, कुरते के भीतर की छाती पर हाथ फेरा और मजा लिया।

लाल रेशम में ढकी टेढ़ी तलवार की झिलमिलाती हुई रजत धार की भांति वह शर्मा गयी।

"श···श···मुझे छूना मत।"

उसने अपने हाथ हटाये न थे। उसने उसे भींचा और फिर बरामदे में पहुंची।

उसके गालों पर लालिमा छा गयी। नथुने फूल उठे, होंठों का सांवलापन गहरा हो उठा।

उसके पतले सुंदर होंठों पर उसने चुंबन किया। दोनों आनंद विभोर हो उठे।

कुछ समय बीता। उसकी आंखें भर आयीं। दोनों गालों से उसके आंसू बहे। उन्हें अब यह पता ही न था कि वे कमरे के भीतर हैं या बाहर।

अहाते के अंधकार के किसी कोने में छिपे बैठे उल्लू की कराहती आवाज सुनायी पड़ी। दुबारा उसकी आवाज पुरुष के कानों को अच्छी न लगी। कन्या की आंखों मे डर समा गया।

वह सामने के आंगन की ओर दौड़ी। उसी चाल से लौट आयी और कहा, "मां, दीदी, जेठ और कोई और भी आ रहे हैं।"

इतना कहकर वह कहीं को छिप गयी।

उस बेचारे ने भी इस स्थिति से बचने का उपाय किया। मेज पर पड़ी एक पुस्तक उठाकर खोली, आंखें उसके पन्नों पर टटोलती एक छोटा बिल बना सकीं। फिर भी दरवाजे की ओर बढ़ती आहटों और उन आवाजों ने उसे परेशान कर दिया।

वह अपने इस भाव को किसी मुखौटे से छिपा न पाया।

फिर भी कन्या की मां ने हंसते हुए पूछा, "तुम बहुत दिनों से दिखायी नहीं दिये। कहो क्या समाचार है।"

दीदी ने कठोर स्वर में कहा, "मां ! जाकर कॉफी बनाओ। यह समय बातें करने का नहीं है।"

मां रसोई की ओर चली तो उसकी दीदी ने व्यंग्य भरे प्रश्नों की बौछार कर दी।

"क्या तुम्हारा इस कमरे में बैठना उचित है ? यह अच्छा नहीं। यदि ये आने-वाले सज्जन तुम्हें यहां देख लें तो क्या यह कोई अच्छी बात होगी ?"

मां फिर आयी उसने चीखकर कहा, "मैंने जो दूध ढक कर रखा था वह अब नहीं है। बरतन खाली है और ढका भी।"

दीदी ने पूछा, "तो फिर किसने दूध पी लिया ?"

आंखें बंद कर दुख भरे स्वर में रोती दरवाजे की ओर छिपे-छिपे आती बिल्ली को देखकर उसकी मां ने कहा, "हमारी बिल्ली दूध चुराकर नहीं पीती।"

"बिल्ली की बात छोड़ो, मां। जाकर दूध दुह लो। वह कहां गयी ?"

"वह रसोई के बाहर है। उसकी तबीयत ठीक नहीं है। वह आज किसी को भी चाय नहीं पिला सकती।"

"क्यों नहीं पिला सकती। क्या उसके मासिक धर्म की बात उसके माथे पर लिखी है ? मैं उसे अच्छी-सी साड़ी पहनाकर अभी लाती हूं।" उसकी दीदी जमीन पर पैर पटककर उधर को चली गयी।

रसोई, सामने के दालान तथा सारे घर में उसके स्वर गूंज उठे। उसकी आवाज दीवारों से होकर बाहर तक आयी, जहां वे लोग बैठे बातें कर रहे थे।

"वेतन छह सौ रुपये। रसोई में बर्तन टकराये गये। क्वाटर्स, प्रमोशन, लड़की ग्रेजुएट हो तो तीस दिन के अंदर सरकारी नौकरी।"

उस समय कुएं की घिरनी रो पड़ी। दीदी की गालियों की धीमी-धीमी आवाज गूंजी।

लाल केले पर छिपा बैठा नर गिलहरी कूदकर बरामदे मे उस स्थान पर पहुंचा जहां वह कन्या पहले बैठी थी। उसकी पूछ हिलने लगी। गोल आंखें चारों ओर घुमाकर देखा। खिड़की से टिके खड़े हुए उस पुरुष की आंखें लाल हो गयी। उसने दीवार की खूंटी से लटकी हुई छतरी खीचकर खिड़की से फर्श पर पटक दी। गिलहरी न हिला, न डुला। जरा सिर उठाकर चारों ओर देखा। उसने एक और बार उस जंतु को मारा। गिलहरी का सिर फट गया। पूछ एक बार तड़प उठी। फर्श पर खून बह गया। वह मर गया।

"मेरे गिलहरी को मार डाला ?"

जंपु के नीचे आंसू भरी आंखों से कन्या ने पूछा, "हत्या कर डाली ?"

उस पुरुष ने खिड़की के सींखचों से दूर के पेड़ों के उस पार देखा। वहां अंधकार को छिपानेवाले बांसों का झुरमुट था। उल्लू की डरावनी आवाज कहीं से सुनायी पड़ी।

तेरे चेहरे के तिल का सौंदर्य, नाभि दलों के पसीने की मोती रूपी बूंदें, होंठों की बिजली, गालों की लाली के रज, इन सबका क्या कोई और मालिक बनेगा। मगर वे सफेद हड्डियां जिन्हें कोई नहीं चाहता, हृदय और चर्म के मध्य टिकी तेरी हडिड्यां···।

उसने बांस के झुरमुट के उल्लू से पूछा।

"नीबू, जमंती और चमेली से बना हार पहनने को, मृत्यु के पर की फड़फड़ाहट और तड़प में छाती से लगाये रोमांचित होने के लिए मुझे सिर्फ एक हड्डी मिलेगी।"

अंधकार में बैठकर उल्लू ने फिर मृत्यु का क्रंदन सुनाया। ङहू-हूं-ङहूं-हूं।

तब ही उसकी दीदी कमरे में पहुंची। डोरी पर पड़ी हुई साड़ियों को एक-एक करके देखा। कन्या को पहनाने के लिए एक साड़ी पसंद की। इसके बाद कपड़ों की गहेज की वह पेटी खोली जहां लड़कियों के स्वप्न पड़े सोते रहते हैं।

कुछ पुरानी स्मृतियां फिर से याद आयीं। कमरे में पहुंची, उसने कपड़ों की पेटी भी खोली तो वही कपड़ा जिसे वह पहनती थी, उस पर केनार की कलियों का लाल रंग भी लगा हुआ है। पेटी के बाहर कपड़ा निकाला तो वह लालिमा हवा में छहर गयी।

उसकी दीदी चौंक पड़ी। हाथ से कपड़ा फिसल गया। नीचे गिर पड़ा।

12. कल्पांत

कल्पांत का आरंभ हुआ। आरभ हुआ माने अभी शुरू ही हुआ। उस एक ही क्षण में उसके दो जन्म समाप्त हुए। तीसरे जन्म का भी अंतिम समय आ पहुंचा।

बेचारे बंदर ने एक मंदिर के सामने के वट वृक्ष की डाली पर बैठे-बैठे सोचा।

इस जन्म में जो कुछ वह उपलब्ध कर सका, उसके संबंध में ही नहीं, विगत जन्मों में भी उसने, जो कुछ उपलब्ध किया, उस सबके बारे में वह सोच रहा था।

वट वृक्ष की डाली को दृढ़तापूर्वक पकड़े अपनी धूसर भौंहों को उठाकर मोतिया-बिंद (तिमिर) ग्रस्त आंखों से सामने की ओर देखा।

अंतरिक्ष यान की तरह आकाश को भेदकर जाते हुए एक बहुत बड़े आकार के गोपुर और उसकी छाती पर एक स्तन जैसी घुडी पर उसकी नजर पड़ी। पूर्व जन्म की स्मृतियां गर्भस्थ शिशु की तरह कुलबुलायी तो आंखो में आंसू भर आये। आंखें भर आयी तो सभी दृश्य धुंधले पड़ गये। गोपुर धुंधला हो गया। घड़ी अस्पष्ट हुई। मंदिर अव्यक्त नजर आया।

धुंधलापन बढ़ते-बढ़ते सर्वत्र अंधकार छा गया, अंधकार में अंतर की आंखें चमक उठीं। उसे चमक में पूर्व जन्म दृष्टिगोचर हुए।

प्रथम जन्म रेगिस्तान में एक मनुष्य पुत्र के रूप में प्राप्त हुआ। एक प्रशस्त और श्रेष्ठ कुल के कुलनायक की चौथी पत्नी के तेरहवें पुत्र के रूप में उसका जन्म हुआ।

युवावस्था में पहुंचकर वह ऊंट को हांकता, खजूर का फल खाता और व्याभि-चार करता हुआ अपना दिन काटता था। इस बीच उसने शादी की। सात संतानों का पिता भी बना।

उसी समय, एक धर्मगुरु का उपदेश सुनायी पड़ा। वह ऐसा जमाना था जब

रेगिस्तान में आंदोलन हो रहा था। धर्मगुरु के अनुयायियों और दुश्मनों के बीच में भयंकर युद्ध तथा भयंकर संघर्ष चल रहा था।

धर्मगुरु हिरा पहाड़ की गोद में बैठे भगवान से बातें कर रहा था। पवित्र ग्रंथ के अध्याय एक-एक करके भूमि पर उतर रहे थे। सत्ताइसवें दिन भगवान ने धर्मगुरु को अपनी ओर, अपने निवास-स्थान पर आमंत्रित किया। आश्चर्य से स्तब्ध धर्मगुरु ने पूछा।

"मैं उधर आऊं? आकाश एक दो नहीं, सात है। मैंने इन सात आकाशों और उनके बीच के शून्य आकाश को लांघकर अनेक युग बिताये; हे भगवान! अब तू मुझसे अपने पास आने का अनुरोध कर रहा है। क्या मुझसे यह हो सकता है? हे भगवान! क्या तू मेरी परीक्षा ले रहा है?"

भगवान ने कहा:

"धर्मगुरु! तू एक बात याद रख। मेरी मदद मिल जाये तो इस ब्रह्मांड में कुछ भी असाध्य नहीं। क्या तू यह सत्य भूल गया कि तेरे मन के अलावा पंचेंद्रिय ही नहीं, षडेंद्रिय भी हैं।"

धर्मगुरु ने विनय से सिर झुकाया। रात की आखिरी इबादत के बाद धर्मगुरु बुराक पर चढ़ गया। बुराक छलांग मारकर ऊपर उड़ गया। एक के बाद एक आकाश और शून्य आकाश को लांघकर धर्मगुरु भगवान के सामने पहुंचा।

ऐसी भेंट जो कभी विस्मृत नहीं हो सकती।

संवाद और गुप्त संवाद चले।

धर्मगुरु वापस भूमि पर उतरा। उसी समय की अजान गूंज उठी। धर्मगुरु पुलकित हो गया। एक रात से, एक ही रात से, हे देव, तेरी लीला, तेरी माया।

धर्मगुरु ने अपने शिष्यों से यह न पूछा कि वे कब से उनकी बाट जोह रहे है।

यह कथा सुनकर वह खिलखिलाकर हंसा। शहर के चौराहे पर उसने इस कथा की सारहीनता साफ-साफ बतायी। लोगों ने उसके साथ मिलकर धर्मगुरु की हंसी उड़ायी। वह भी हंस पड़ा।

वह हंसता-हंसता घर पहुंचा। उसकी पत्नी उस समय भी रसोई में बैठी रोटी बना रही थी। बच्चे आंगन में बैठे खजूर के बीजों से खेल रहे थे। हंसी देखकर पत्नी की भौंहें चढ़ गयीं। समय नष्ट न कर उसने उसे जल्दी नहाकर आने को कहा।

तेल और साबुन लेकर वह अपने घर के सामने के तलाव में नहाने गया।

पानी में उतरकर एक बार अच्छी तरह डुबकी लगायी। पानी के ऊपर आने पर वह आश्चर्यचकित हो गया। वह एक बड़ी नदी के तट पर खड़ा है। कई औरतें उसके चारों ओर नहा रही हैं। आश्चर्य ! वह इतनी अर्धनग्न तरुणियों के मध्य में। अपने कंधे पर लटकते लंबे बालों और भारी छाती पर उसकी दृष्टि पड़ी।

इस बार फिर वह पसीने से तर हो गया।

वह एक सुंदर औरत के रूप में परिवर्तित हो गया था। उसने कपड़े बदले नदी की सीढ़ियों से होकर ऊपर चढ़ा।

फिर क्या-क्या हुआ। किसी ने उससे विवाह किया। पति के साथ जीवनयापन। पांच बच्चों को जन्म दिया। बाल पकने लगे।

कोई विशेष घटना नहीं घटी। समय बीतता रहा। तब एक दिन वह सीधे-सादे नदी में स्नान करने गयी।

डुबकी लेकर सीधे खड़ी हुई तो वह दंग रह गयी। वह अपने पुराने गांव में पहुंच गयी थी। वही पुराना तालाब, जहां वह अपने पुरुष के रूप में आखिरी बार नहायी थी।

अब वह औरत के रूप में नहीं थी।

सीढ़ियों पर रखे कपड़े वैसे ही पड़े थे। उसने कपड़े बदले। वे ही रास्ते। घर की ओर दौड़ा। घर पहुंचा तो पत्नी अभी रोटी बना ही रही थी। बच्चे अब भी खजूर के बीजों से खेल रहे थे।

वह भय से कांप गया। उसकी सांस आश्चर्य से फूल गयी।

पत्नी ने पूछा, "इतनी जल्दी स्नान कर लिया ! कौए का स्नान है ? समय की विचित्र माया का उसने अनुभव किया। वहां वर्ष बीत गये और यहां केवल कुछ पल ही बीते उसे ऐसा लगा कि धर्मगुरु का, आकाश में बिताया, आधा दिन भूमि में वर्षों के बराबर होगा। उसे ज्ञान प्राप्त हो गया।

फिर उसके विश्वास के प्रमाण बदल गये।

उसने सोचा।

समय का अर्थ क्या है ?

आसमान का छोर कहां है ?

समय के बारे में सोचते-सोचते वह इस नये निष्कर्ष पर पहुंचा। निष्कर्ष लिखे गये।

समय था।

समय होगा।

लेकिन समय है, ऐसी एक स्थिति नहीं। पल बीतते हैं और आगे बढ़ते हैं। सूरज निकला, डूब गया। लोग इसे दिन नाम देते हैं।

समय की गिनती होने लगी। खजूर के सात बीजों से हफ्ते के चिह्न लगाये। चार गुंजे के बीजों से महीने का अंकन हुआ। धुंधची बीजों से वर्ष सूचित किया गया। सोने के दस सिक्कों से दशाब्दि का अंकन किया गया।

समय का निर्णय हुआ। परछाई को नापा। रांक्वाकार बोतलों में रेत भरी, नोक से होकर रेत के कण निमिष के रूप में नीचे झरने लगे।

नक्षत्र को देखकर पहरों की गणना की।

अंक बनाये गये।

कलेंडर (पंचांग) का आविष्कार किया।

घड़ी इस क्रम में निर्मित आखिरी अद्भुत वस्तु थी।

आकाश के बारे में सोचने लगा ही था कि वह मर गया।

[2]

भारत नामक देश में मनुष्य के रूप में उसने दूसरा जन्म लिया। जब जन्म हुआ तब सिर्फ काल की ही स्मृति मन में रह गयी थी। कोख में भी वही एक स्मृति उस पर शासन करती थी।

परमाणु से, तुटी से, जिज्ञासा से, पल से, काष्ठ से, हंडिये से, घड़ी से, क्षण से, दिन रात से, महीने से, वर्ष से उसका विकास शुरू हुआ।

पुण्य नदी में स्नान कर, तीर्थ जल पीकर, भगवान की प्रतिभा के सामने हाथ जोड़कर, पक्षी और जानवरों को प्यार कर, केवल कंद-मूल खाकर वह बढ़ा।

जब वह बड़ा हो गया तब बुद्धि का विकास हुआ। उसने स्वयं से पूछा :

"काल क्या है ?"

काल के संबंध में ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसने दिन-रात एक कर अनुसंधान किये। कोई फल न निकला। लेकिन एक बात समझ में आयी। इस ब्रह्मांड में उसे ज्ञानी बनाने की क्षमता केवल ब्रह्मा में ही है।

आठों पहर उसने तपस्या की। प्रकाश केवल स्मृतिमात्र रह गया। जटा सर

पर लपेट ली, दाढ़ी के बाल बढ़ते-बढ़ते जमीन तक आ गये।

विष्णु के नाभिस्थल से निकले कमल से उत्पन्न ब्रह्मा की एकमात्र स्मृति उसके ही शरीर के हर अणु में व्याप्त थी।

वर्ष क्या, युग भी बीत गये।

एक बार क्षितिज में एक बिंदु-सा एक हंस प्रकट हुआ। कुछ ही पलों में ब्रह्मा उसके सामने थे।

उसने ब्रह्मा का शब्द सुना।

आंखें खोलीं।

ब्रह्मा ने नेत्र न खोले।

"बेटा, यह व्यर्थ प्रयत्न किसके लिए ? समय संबंधी हिसाब सिर्फ मेरे पास ही है।"

"देव कृपया मुझे बता दीजिये।"

"वृथा क्यों सुनना चाहता है ?"

"देव, मेरा यह आग्रह अटल है।"

"तो सुन", ब्रह्मा ने कहा, "दिन रात से, महीने से, ऋतु से, अयन से, मनुष्य वर्ष से, देव वर्ष से, महायुग से, कल्पांत से होकर मेरे दिन और रात समाप्त होते हैं। वह एक दिन तेरे 864,00,00,000 वर्षों के समान है।"

"देव मुझे क्षमा करें।"

ब्रह्मा और हंस अदृश्य हो गये।

वह तपस्या से उठ गया।

उस समय तक उसकी पीढ़ियों के द्वारा बनी बनायी नदी तट संस्कृतियां मिट्टी में मिल गयी। उन संस्कृतियों की स्मृतियों ने बाद में किसी को व्याकुल न किया। इतिहास के मंदबुद्धि विद्यार्थी टूटी-फूटी अंग्रेजी में अपनी उत्तर पुस्तिकाओं में उसकी व्याख्या कर रहे थे।

इतने में हिमवान देवता की भद्रता को एक अभिशाप के रूप में बरबाद करने में लगे हुए दो फाटकों से होकर मानसून हवाओं का प्रवेश हुआ। उनके साथ कई विषैले जीवों ने भी इस पुण्य भूमि के भीतर छिपे-छिपे प्रवेश किया।

फलतः यहां वर्ण शंकर जातियां हुईं। उसकी संस्कृति में भी मिश्रण लाने का प्रयत्न हुआ।

अत्यधिक मानसिक पीड़ा से वह एक तथ्य समझ गया। उसके प्रिय ब्रह्मा के संकल्प नष्ट हो रहे हैं। उसकी परंपरा भी मलिन हो रही है।

फिर वह भी नीच विदेशी भाषा पढ़ने को मजबूर हो गया। उस भाषा के माध्यम से उसने समय के बारे में, शून्य आकाश के बारे में विचार किया।

राइट और लेफ्ट ?

टाइम शेयर्स द फेट ऑव स्पेस

आर ऑल पाइंट्स ऑव व्यू इक्वीवेलेंट ?

द रिलेटिव एप्पियर्स एब्सोल्यूट,

द एब्सोल्यूट टर्न्स आउट टु बि रिलेटिव

वेलोसिटी हैज़ इट्स लिमिट।

इतने दैविक वाक्य ग्रहण करने पर किसी ने उससे कहा, "शाम के पांच बज गये हैं।"

उसने पूछा—"कहां ? भारत में या अमेरिका में ?" इस प्रकार आइंस्टीन का निरपेक्षता सिद्धांत आधा ही पढ़ पाया कि तब तक उसके दूसरे जन्म की कथा भी समाप्त हो गयी।

पुनर्जन्म की खोज में उसकी आत्मा भटकती रही।

[3]

उस भाग्यहीन का तीसरा जन्म एक बंदर के रूप में हुआ। बंदर के स्वजन या बंधुजन न थे। ऐसे एक वर्ग में जहां औरतें सार्वजनिक संपत्ति मानी जाती थी, उसका जन्म हुआ। इस वजह से वह अपने पिता के बारे में कुछ न जानता था। माता के पीछे चलता, उसका स्तन पान करता, उसके सिर से जूं निकालकर उसे मारता, ये सब बातें उसे याद हैं। दूसरे गर्भधारण के साथ माता ने उसे अपने से अलग कर दिया।

फिर साथियों के साथ उसका निवास हुआ। उनके साथ पेड़ों पर उछलता, कूदता, बड़ी-बड़ी दीवारों पर चढ़ता और मंदिर की ऊपरी छत पर नृत्य करता, वह मजे से दिन काट रहा था। एक दिन अमरूद के बाग से अमरूद तोड़कर चोरी-चोरी खा रहा था कि माली ने गुलेल घुमाकर पत्थर फेंका। पत्थर पीठ की हड्डी पर जोर से लगा। वह रो पड़ा। दो-तीन दिन तक असहनीय दर्द हुआ। फिर वह

भाग लाल हुआ और सूज गया। एक सप्ताह के बाद वहां घाव बन गया। घाव के आसपास के बाल झड़ गये। घाव से पीप और रक्त बहने लगे। पीप बालों में भीगकर सूख गयी। मक्खियां घाव पर सतत नृत्य करने लगीं। उसमें कीड़े भी रेंगने लगे थे। बदबू भी निकलने लगी। वह सबसे पृथक हो गया।

आज बंदर निस्सहाय है। वह अकेला है। बाप नहीं, मां नहीं। सम्मिलित परिवार नहीं। साथी-संगी नही। जराग्रस्त पीठ पर कभी न सूखते व्रण लिए वह भैंसे की प्रतीक्षा में समय व्यतीत करता है।

मंदिर के सामने का वट वृक्ष उसका उभय स्थान है। वह वट वृक्ष एक ऐसे चौराहे पर स्थित है जो मदिर, शहर, पुलिस स्टेशन और नदी को सड़कों से जोड़ता है।

शाखाओं और उपशाखाओं में बंटे, चारों तरफ छाये और फैले, जड़ और तने से मूलों को बढ़ाकर जराग्रस्त पीढ़ियों की लाचारी को देखते-देखते निस्संग भाव से वह वट वृक्ष वहां खड़ा है। उसके खोखले छिद्र सांपों के शरणस्थल हैं। डालियों पर चिड़ियों के घोंसले हैं। शाखाओं में हवा तैरती है चीटियों की कतारे शाखाओं से होकर आगे की ओर सरकती हैं। तन पर फैले छोटे-छोटे पत्ते हवा में कांपते हिलते हैं।

बंदर विगत कई वर्षों से इस वट वृक्ष की एक निस्सार डाली पर बैठा नीचे प्रवाहित जिंदगी का दर्शन कर रहा था।

रास्ते से आते-जाते मनुष्यों और जानवरों तथा उड़ते पक्षियों और यानों से वह अपने पूर्व जन्म की कहानी कहने को तरसता रहा। लेकिन जबान से कुछ न निकला। उसने परछाई नापकर समय का निर्धारण किया, रेत की शीशियों की सहायता से समय नापा, अंकों का आविष्कार किया। कलेंडर (पंचांग) उसकी अपनी ही सृष्टि थी, तपस्या कर ब्रह्मा को बुलवाया—ऐसे कितने ही तथ्यों की छाप चित्रों के रूप में उसके मन पर पड़ी।

पथिकों में कोई भी उस पर ध्यान न देता। बच्चे भी उसे देखकर उसका उप-हास न करते। खाना भी न मिलता। प्रसाद भरी थाली लिये भक्तजनों को मंदिर से उस रास्ते जाते देख उसके मुंह में पानी भर आता। पेट भूख से जलने लगता पुजारी मंदिर का फाटक बंद कर खीर पीता तो वह पलक मारे बिना उसे ही देखता अपनी भूख बुझाता।

रात में सबके सो जाने पर वह पेड़ से नीचे उतरकर मंदिर के आंगन में गया। भक्तजनों के द्वारा फोड़े हुए नारियल के टुकड़े, सड़े हुए फल, मिठाई के धूल लगे अंश, या आम की गुठली उसे कभी-कभी मिल जातीं। कुछ न मिलता तो मंदिर के तालाब में उतरकर पानी पीता, पुजारी वहां पर न हो तो मंदिर की छत पर चढ़ कर घंटी बजाता, फिर बात की बात में दौड़कर वट वृक्ष पर चढ़ बैठता।

सोना मुश्किल। बीते जन्म, समय, आकाश, पीठ का दर्दनाक कच्चा घाव, जरा लाचारी आदि का स्मरण करते-करते उसका हृदय तीव्र यातना का अनुभव करता। पौ फटते समय उसकी आंखें मुंदने लगतीं।

'सायरन' सुनकर वह प्रतिदिन जागता है। नगरपालिका के दफ्तर के बहुत बड़े गोपुर के सामने सायरन बजता है। तब घड़ी में समय छह बजते हैं।

गोपुर में, गोपुर की छाती का एक स्तन-सी दिखती घड़ी को जबसे वह देख रहा था उस समय से उसकी एकमात्र अभिलाषा उसे विह्वल करती थी।

वह एक दिन उस गोपुर की चोटी पर चढ़कर घड़ी हासिल करना चाहता है। संभव हो तो घड़ी भर में चंद्रमा को छूना चाहता है। यह अभिलाषा तुषानल की तरह उसके हृदय में सुलग रही थी। उसी हृदय में जिसने समय के बारे में इतना सोच-विचारकर समय का निर्धारण किया, घड़ी का आविष्कार किया, निरपेक्षता सिद्धांत का अध्ययन शुरू किया और पूर्व जन्मों में सत्कर्म किया।

कई रातों में वह गोपुर तक गया। पर उस समय तक गोरखा पहरेदार, गोपुर द्वार के फाटक पर ताला लगाकर सोया रहता है।

महत्वपूर्ण दिन आया। सुंदर चांदनी रात। गोपुर की चोटी का त्रिशूल सीधे चंद्रमा को छेद रहा है। चौकीदार गोपुर द्वार बंद करना भूल गया और खर्राटे लेकर सो गया।

बुढ़ापे की परवाह न कर, घाव का दर्द सहते हुए, भूख को भूलकर वह गोपुर की सीढ़ियां चढ़ने लगा।

उसे याद नहीं कि वह कितनी देर में ऊपर चढ़ा। सैकड़ों हजारों सीढ़ियां। शरीर पसीने से तर हो गया। चक्कर आया। पैर थक कर टूट से गये। हृदय का स्पंदन बढ़ गया। सांस आंधी के जैसे चलने लगी।

अंत में वह अपने लक्ष्य पर पहुंच गया। वह घड़ी को, आवेग से, बिकारों के

आवेश से सहलाता रहा, उसकी सुइयों को उसने चूम लिया। फिर सारी शक्ति लगाकर उसे गोपुर से तोड़ लिया।

गोपुर का स्तन नष्ट हुआ, शूर्पणखा का दर्द।

उसकी अभिलाषा पूर्ण हुई। घड़ी के आविष्कार के हाथ में घड़ी आ गयी।

घड़ी को अपनी घावग्रस्त पीठ पर रखकर वह गोपुर की चोटी पर खड़ा रहा। प्रकाश में नहाया आकाश। चंद्रमा शूल से कुछ ही दूर, चाहे तो स्पर्श कर सकता है। चद्रमा को छूकर वह जिस रास्ते से गया, उसी से लौट आयेगा।

चंद्रमा को छूने के लिए पैर के बड़े अगूठे के बल खड़े होकर उसने एक हाथ से घड़ी उठायी, दूसरा हाथ ऊपर की ओर फैलाया। पैर फिसल गये, केवल यही याद है।

दूसरे दिन मंदिर की ओर जानेवाले भक्तों ने देखा कि खून से सने एक बंदर का शव और टूटी घड़ी के पुर्जे गोपुर के नीचे बिखरे पड़े हैं।

कल्पांत का अभी आरंभ हुआ।

13. यमराज

मृत्यु के बारे में मुझे सबसे पहले 'कारत्तु' नामक दाई ने ही बताया था। झुर्रियां पड़ा हुआ चेहरा और लटके हुए स्तनवाली कारत्तु दाई।

बीस साल पहले, बरसात की भीगी हुई एक रात को मैं अपनी मां से लिपटा पड़ा था। मेरे चारों ओर प्रसव की गंध थी। प्रसव की शिथिलता में बेहोश पड़ी मां की चारपाई के नीचे बूढ़ी कारत्तु पान चबा रही थी। जब वह सिर हिलाती तो उसके लबे कानो के कर्णफूल भी हिलते डुलते। सिर्फ एक अंगोछे से उसकी छाती ढकी थी जिसकी खाल सूखी और सिकुड़ी पड़ी थी।

कुछ समय बाद जब मां ने आंखें खोली तब कारत्तु ने कपड़े में लिपटे मुझ शिशु को उठाकर दिखाया।

"कल्याणिअम्मा तेरे लड़का हुआ है।"

उसके बाद अपने गदे और लाल होठों को मेरे माथे पर रखकर फुसफुसाने लगी और कहा—

"लड़का पैदा तो हुआ है किंतु इसे भी मरना है।"

मां ने यह न सुना। प्रथम प्रसव की व्यथाभरी अनुभूति में उसे फिर नींद आ गयी।

कारत्तु ने मेरे कानों में कहा, "बेटा क्या तुझे मृत्यु प्रिय है ?"

मैंने सिर हिलाया।

"फिर तू क्यों पैदा हुआ ?"

मुझे इसका उत्तर न सूझा। काश मैं कह सकता, "तुम मुझे खींच लायी, इस वजह से मैंने जन्म लिया।" लेकिन मैं बोल नहीं सकता था।

कई वर्षों के बाद ही मैंने अ, आ और ए, बी, सी, सीखा था। तब तक मेरे

विचारों ने अक्षरों का रूप धारण नहीं किया था। वे केवल चित्रमात्र थे। विविध रूपों और रंगों में वे चित्र मेरे नन्हें दिमाग में करवटें बदलते थे। मैंने पांच साल के बाद पेड़ पर चढ़ने की कला सीखी, उन दिनों ही एक संध्या को मैंने कारत्तु की मौत होते देखी।

वही कारत्तु मर गयी जिसने मेरी मृत्यु की बात कही थी। मुझे उस पर क्रोध भी आया और हंसी भी। मृत्यु फाटक के भीतर छिपी रहती थी, यह जानते हुए भी मैंने उसकी मृत्यु के थोड़े समय पहले उस कुटिया में प्रवेश किया।

गोबर से लिपी जमीन पर एक चटाई पर कंबल बिछा था जिस पर कारत्तु दाई निष्प्राण-सी पड़ी थी। उसके सिरहाने कांसे का एक दीपक जल रहा था। उस बूढ़ी के तीन बेटे बाहर के बरामदे में बैठे बीड़ी फूक रहे थे। भवानी नामक बेटी को कोई बुलाने गया था जो दक्षिण प्रदेश में कहीं रहती थी। आंगन के एक कोने में उपले और नारियल के छिलके रखे थे।

चीतियन रामन नायर[1] घड़ी पहने दाह संस्कार कराने की प्रतीक्षा में बैठा था। वह बार-बार घड़ी में समय देखता। दक्षिणी दिशा में पड़ोस के कुछ युवक चिता तैयार करने में जुटे थे।

सब प्रतीक्षा में थे।

मुझे डर लगा। मृत्यु एक काले गीध के रूप में पंख फैलाये घर के ऊपर मंडरा रही है, एक जंगली भैंसे के रूप में बाहर गुर्रा रही है। मृत्यु गले में फंसायी जाने वाली रस्सी बनकर बाग मे कहीं सिकुड़ी पड़ी है। चारों ओर मृत्यु की गंध। इस घर के सब लोग उसके चगुल में हैं। मृत्यु की कुदृष्टि कहीं गलती से किसी दूसरे पर पड़ गयी तो कारत्तु बच जायेगी और वह मारा जायेगा। इसके पहले और कोई घटना हो मैं हड़बड़ा उठा। वहां से कहीं भाग निकलने की सोची।

गदगद स्वर में मैं चीख उठा "कारत्तु अम्मा !"

मेरी चीख सुनकर कोने में निश्चित बैठी दो बुढ़ियों ने सिर उठाकर देखा और पूछा :

"क्यों बेटा, इस त्रिसंध्या को तू यहां क्यों खड़ा है ? मां तुझे डांटेगी न ?"

मैंने साहस से कहा, "नहीं, नहीं। मैं कारत्तु की मृत्यु देखने आया हूं। मेरी

1. केरल में चीतियन नायर वर्ग का चीतियन नामक हिंदू दाह संस्कार कराता है।

मृत्यु की बात उसने ही कही थी। इसलिए ही मुझे उसकी मृत्यु देखनी है और मुझे उससे पूछना है—बूढ़ी, तुम अब मर रही हो न ?"

मैंने पूछताछ की, "बूढ़ी के मरने में कितनी देर है ?"

बुढ़ियों में से एक ने छींककर कहा, "ऐसा न कहो बेटा, इस जगत् को छोड़ना इतना आसान नहीं, माया का बंधन जकड़कर पकड़ता है। ढीला करने पर भी ढीला नहीं होता। काटने पर भी नहीं कटेगा।"

मैंने बूढ़ी के पास घुटनों के बल बैठकर हल्के स्वर में पुकारा "कारत्तु अम्मा !" कई बार आवाज देने पर उन्होंने आंखें खोली।

मैंने प्रश्न किया—"तुम कब मरोगी ?"

वह धीमे स्वर में बोली, "जब भगवान बुलायेंगे तब ही चल बसूंगी बेटा !"

"क्या तुम्हें मृत्यु प्रिय है ?"

"नही बेटा, भवानी की बेटी का ब्याह देखे बिना कैसे मर जाऊं ?"

"फिर तुमने मेरी मृत्यु की बात क्यों की थी ?"

"बेटा तू भी जल्दी ही मर जायेगा। चलना है—चल, मैं तुझे ले चलू।"

बूढ़ी कारत्तु की पैनी आंखें चमक उठी। उसमे एक अद्‌भुत तेज था। उसने मुझे डरा दिया। बूढ़ी मेरी मृत्यु की भविष्यवाणी फिर कर रही है। वहां से कहीं भागकर बच निकलने को दिल चाहा। जब जन्म हुआ था तब मैंने कहा था कि मुझे मरने का भय भी नही पर अब मरने से डर लगता है। उस बूढ़ी से बहुत-सी बातें पूछने और समझने की इच्छा हुई।

"मैं कब मरूंगा ? कैसे मरूंगा ?"

तब तक कारत्तु का शरीर एकाएक कांप उठा। सिर एक ओर ढुलक गया। मुंह खुल गया। उसी क्षण एक काला मुर्गा बाहर चीख उठा। मैं चौंका। दूसरा काला मुर्गा भी चीखा।

सारे बाग में यमदेव का शंखनाद गूज उठा। बूढ़ी की आंखें अधखुली पड़ी हैं। बुढ़ियों ने उठकर अपनी-अपनी आंखें पोंछ लीं और धीमे-धीमे सिसकती रहीं। जो बेटे बरामदे में बैठे बीड़ी पी रहे थे वे दौड़कर आये। रामन नायर ने घड़ी में देखकर लंबी सांस ली। मैं अपने आपको इतना शिथिल अनुभव करने लगा जैसे मैं कोई डरावना स्वप्न देखकर अभी जागा हूं। जिस बूढ़ी दाई ने बताया था कि मैं मर जाऊंगा वह मर गयी। उसके साथ वह रहस्य भी मर गया। मुझे अब

किसी से भी इसके बारे में कुछ नहीं पूछना । वह बात अब कोई भी नहीं बता सकता।

मेरी पिछली स्मृतियां जाग उठीं। दसवी वर्षगांठ के दिन की बातें याद आयीं ।

बरसात की एक शाम को जब मैं स्कूल से आ रहा था तब कोटेल नामी पहाड़ी के बगल से किसी ने मुझे पुकारा—

"अप्पु कुट्टा···"

मैंने चारों ओर देखा वहां कोई भी नहीं था । थोड़ी देर में रात होनेवाली थी। जिस मंदिर के मैदान में लड़के खेलने के लिए जमा होते थे वह खाली पड़ा है। काजू के पेड़ों पर से अब भी पानी की बूंदें टपक रही हैं । मुझे कुछ डर लगा। पानी बरसा । संध्या की कालिमा बढ़ती जा रही है, यदि मैं जल्दी से आगे न बढ़ा तो अंधकार के गड्ढे में जाकर फसूगा । इस प्रकार मैं हड़बड़ा कर और तेज भागा । फिर वही आवाज आयी । "अप्पु कुट्टा···" इस बार मैंने देखा कि काजू के पेड़ की डाली पर एक काली चिड़िया चोंच फाड़े कूक रही है। मैने अचानक मुड़कर पूछा, "तुझे क्या चाहिये ?"

"क्या तू मुझे पहचानता है ?"

"नही।"

"नही, एक और बार याद कर देख।"

"नही मुझे तेरे बारे में जरा भी याद नही।"

पक्षी चोंच खोलकर जोर से विकृत भाव से हंस पड़ा । इसी बीच काजू के बाग में बारिश हुई । पक्षियों का एक झुंड क्रंदन करता उड़ गया । बरसात की बौछार से पत्ते झड़ गये । ऊपर से आयी हवा के झोंकों में पत्ते उड़ते रहे । मेरा सारा शरीर भीग कर सर्दी से सिहर उठा । दांत किटकिटाने लगे।

"मुझे पहचानता नही ? नही ? ह···ह···ह···मैं ही तुझे मां की कोख से बाहर लायी । तू भूल गया क्या ?"

भय के कारण मैं कुछ बोल न पाया और खड़ा का खड़ा रह गया । वर्षा से, कोट्टेल नामी पहाड़ी की हवा से, काली चिड़िया से बचने के लिए मैं एक आम के पेड़ के नीचे एक सुरक्षित स्थान ढूंढ ही रहा था कि वह शब्द फिर एक बार और सुनायी पड़ा । "अप्पु कुट्टा, एक बार और इधर देख।"

मैंने देखा।

पक्षी के लंबे कानों में कर्णफूल हिलते दिखायी दिये। पानी के रंजित लाल होंठों के ऊपर झुरियां पड़ी चमड़ी।

स्मृतियों ने मुझे एक बार फिर कैद करके हरा दिया।

"अप्पु कुट्टा, आ तुझे मैं ले जाऊंगी।"

"न, न" मैं दौड़ा, बिना मुड़े दौड़ता ही गया पर फिर भी पीछे-पीछे विकृत हंसी सुनायी पड़ती रही।"

"बचने की चेष्टा न करना, मैं फिर कभी आऊंगी।"

घर पहुंचते ही मेरे मुंह से झाग आने लगे। मैं शिथिल होकर गिर पड़ा। तीन दिन मैं उसी दशा में पड़ा रहा। बुखार की तपन में झुलसता रहा। मां ने कहा, "डर गया होगा।" वे फूट-फूटकर रो पड़ीं।

तब गोपाल गणक आया। भेंगी आंख वाला गोपाल गणक। उसने राशिचक्र खींचा। कौड़ी बराबर रखी। तब मेरे ग्रहों की चालें उसने समझ ली। उन्होंने उसके मन में रंगीन चित्र अंकित किये। उसने उन चित्रों को जमीन पर भी बनाया। मरे हुए लोगों की आत्माओं तथा काले पक्षियों को डराया धमकाया और शिकार किया।

अंत में मुझे पता चला।

"आयु की दुर्दशा है। मौत कभी भी आ सकती है। आज या कल।"

मां सिसक-सिसककर रोयी। बड़ी प्रतीक्षा और मिन्नत मनौती करके प्राप्त पुत्र का जीवन-काल अनिश्चित है। आज या कल। खतरनाक मृत्यु होनेवाली है।

कारत्तु दाई ने जो कुछ कहा था वह ठीक ही निकला।

काजू के बाग वाली काली चिड़िया ने जो कहा वह भी ठीक है।

आज या कल…बिना विलंब के

मैंने अपनी जिंदगी के पल गिने, जो पतंगों के समान निकलकर उड़ते-उड़ते झड़ भी गये।

गोपाल गणक ने विश्वास से कहा, जमीन पर ही दुर्घटना होगी, पानी में सुरक्षित रहेगा।

उसी समय से मुझ पर प्रतिबंध लग गया। पहरेदार मेरे लिये रखा गया। स्कूल आते-जाते पड़ौस के दो बच्चे मेरे साथ पहरेदार के रूप में जाने लगे। छुट्टी के दिनों में घर के नौकर पंकुण्णि नायर की लाल आंखें मेरी रक्षा के लिए चारों ओर घूमती

रहीं। पेड़ पर चढ़ने की अनुमति नहीं थी। कटहल, आम और अमरूद के पेड़ों पर मौत का खतरा है। पानी से कोई खतरा नहीं है। नहा सकता हूं, तैरने जा सकता हूं।

यों दिन आगे की ओर बढ़ते गये। कौमार्य की संध्या की ओर, स्मृतियों की संध्या की ओर।

पंद्रहवीं वर्षगांठ का दिन आया।

उस दिन एक गोसाईं मेरी तलाश में आया। बिन बुलाये मेहमान की तरह चला आया। ड्योढ़ी के फर्श पर आ बैठा। गठरी नीचे रखी। उसके ललाट पर भस्म लगी थी। बीच में कुंकुम की एक बड़ी बिंदी भी थी। उसका चेहरा लाल था, होंठ भी लाल थे और कानों के कुंडल भी लाल।

मेरी ओर घूरकर देखते हुए कृत्रिम हंसी हंसकर उसने पूछा—

"याद है ?"

"नहीं।"

"याद तो करके देख।"

"नहीं, बिलकुल याद नहीं आता।"

उसने अपनी थैली से एक चुटकी भस्म लेकर मेरे मुख पर फूंक मारी। मेरी आंखें धुंधली पड़ गयीं। चेहरा शिथिल हो गया।

मेरी स्मृतियां वर्षों के, केले के छिलकों की गुजरी बात की ओर वापस गयीं। उस समय मैंने उस मुख पर कारत्तु दाई का रूप देखा। बरसों पहले उस टूटी-फूटी कुटी में चारपाई पर देखा हुआ वही चेहरा; भस्म लगाया मुख; अधखुली आंखें। उसने मुझे घूरकर देखा। आंखें चार हुईं। उस चुंबकीय शक्ति से मैं मोहित हुआ।

"अब याद आया।"

"हां।"

"कब, कहां मुझसे मिले थे ?"

"वर्षों से…जन्मों से…।"

आंखें परस्पर रहस्यमय बातें करने लगीं। बूढ़ी कारत्तु का भर्राया हुआ स्वर सुनायी पड़ा मानो एक बार फिर वह याद दिलाने के लिए आयी है। ऐसा लगा कि बूढ़ी की आवाज शाप की कड़ी बनकर मेरे पीछे आ रही है।

जन्म लेते ही मृत्यु के बारे में उसने मुझसे कहा था। मरने से पूर्व एक बार और याद दिलाया था। अब फिर याद दिलाती है।

दाई कारत्तु प्रेत बनकर क्यों मेरे जीवन को प्रभावित करती है ? क्या मेरी जिंदगी और मौत का समय निश्चित करने का अधिकार उसे इसलिए दिया गया है क्योंकि उसने ही मुझे इस संसार में घसीट लाने का काम किया था ? वह दाई ऐसा न करती तो क्या मां मुझे जन्म नहीं दे सकती थी ? मां की बड़ी कोख में दम घुटकर एक सड़े हुए बीज के रूप में मेरा विनाश हो जाता।

गोसाई परिहास के स्वर में हंस पड़ा। चुटकी बजाकर संकेत से मुझे पुकारकर पूछा—"चलेगा मेरे साथ ?"

"नहीं, नहीं।"

"फिर कब आयेगा ?"

"दसवें दर्जे की परीक्षा का परिणाम आने के बाद।"

"अच्छा, मैं तब ही आऊंगा। याद रखना।"

"नहीं, नही···यहां कभी मत आना। मुझे तुम्हारा चेहरा कभी नही देखना है। कारत्तु एक बार एक काली चिड़िया बनकर काजू के पेड़ों पर आ बैठी थी। अब एक गोसाई का रूप बदलकर आयी। अब इस घर में कभी न आना। यदि इधर आयी तो मैं चीख चिल्लाकर गुल मचाऊंगा। लोग तुम्हें मार डालेंगे।"

ह···ह···ह···उसकी वह नीरस हंसी बाग में सर्वत्र गूंज गयी। बरसों पहले कुटी में जो शब्द सुनायी पड़े थे वे ही शब्द, बाहर काले मुर्गे चिल्ला उठे। यमदेव का शंखनाद।

भैंसे का गुर्राना।

मैं जोर से रोया।

मां और बड़ी बहनें दौड़ी चली आयीं।

"क्या हुआ अप्पु कुट्टा ?"

"गोसाई···गोसाई···" मैंने फाटक की ओर इशारा किया।

"गोसाई कहां है ?"

फाटक खुला पड़ा था। वह जा चुका था।

"कहीं कुछ देखकर डर गया होगा। ऐसा भी क्या डरना। हमने ऐसा डरपोक कभी देखा ही नहीं।"

मैं थर्रा गया। पुरानी स्मृतियां मेरे लिए अभिशाप बन गयी।

मैं फिर आगे बढ़ा। स्मृतियों की संध्या की ओर।

मेरी आयु के पल झड़ रहे थे। मुरझाये फूल के समान। पके पत्ते के समान।

धुनी हुई स्मृतियों को लेकर किशोरावस्था की संध्याओं में मैं घूमता रहा।

स्कूल छोड़कर कालेज में दाखिल हुआ। नेकर के बदले धोती पहनना शुरू किया। यौवन आया। नाक के नीचे बाल उगे, वे घने भी हुए। कहीं मृत्यु हो, तो अब वह आकर तो देखे मैं उसका सामना करूंगा।

मां एक नये गणक से मिली और यह पता चलाया कि जमीन पर नहीं मुझे पानी में ही संकट का सामना करना पड़ेगा। इसलिए पानी से सावधान रहना है। तुम्हारा पुत्र कितना ही बड़ा क्यो न हो जाये उसे पानी की ओर अकेला कभी न जाने देना। यदि वह पानी में गया तो चाहे घुटनों तक ही पानी क्यों न हो जल पिशाच उसे गहराई की ओर घसीटकर ले जायेगा।

मुझे नदी की ओर जाने की मनाही थी। बीसवीं वर्षगांठ के दिन मुझे पेड़ों पर चढ़ने की अनुमति मिल गयी।

उसी दिन 'बेलिच्चप्पाड[1]' की बेटी राधा से मेरा परिचय हुआ। सांवला सलौना चेहरा, मुखपर जवानी के मुहासे मानो उसकी जवानी उबली पड़ रही थी। उत्सव मैदान के उस पार, दुर्गा देवी के मंदिर के उस पार, टूटे-फूटे पत्थर के चबूतरों के पीछे नदी के घाट पर हम दोनों रोज शाम को मिला करते थे। शाम को राधा नहाने आया करती थी। नदी तट पर और कोई न होता था। मोटे गोलमटोल शरीरवाली राधा। वह कमर तक के पानी में अंगिया पहने नहाया करती। मैं किनारे पर उसके इंतजार में रहता क्योंकि मुझे पानी में उतरने की अनुमति नहीं थी। मुझे बताया गया था कि मेरी मृत्यु पानी में होगी। मेरे और राधा के बीच में एक सीमा रेखा है, पानी की एक पतली रेखा। उसे लाघूंगा तो मृत्यु हो जायेगी।

वह कपटपूर्ण हंसी से, भीगे वस्त्र पहने पानी में खड़ी होकर मुझे इशारा करके बुलाती। उसके कटाक्ष में न फंसने की इच्छा से मैं किनारे पर ही दृढ़तापूर्वक खड़ा रहता। नहाने के बाद मेरी ओर देखे बिना, वह चली जाती। उसे पानी में ही मेरी जरूरत है। जमीन पर मेरी जरूरत नहीं।

---

1. वेलिच्चप्पाड—देवता के आवेश में पड़कर नाचते-नाचते भविष्य बताने वाला।

एस संध्या को जब उसने पहले पहल अपनी अंगिया उतारी, तब मैंने भी सीमा रेखा का उल्लंघन किया।

नदी तट के बालू पर राधा हांफती-सी लेट गयी। हम दोनों ने परस्पर आलिंगन किया। मेरे शरीर की गरमी से वह लोटपोट हो गयी। प्रेम के फव्वारे फूट निकले। एक जल पिशाच के समान वह पानी की ओर लुढ़कती चली गयी। मैं भी साथ हो लिया।

प्रथम मिलन की मादकता में वह पानी में कूद पड़ी। वह पानी मे मौज उड़ाती रही। पानी फुलझड़ी के रूप में छितर गया। तब उसका चेहरा भी अदृश्य हो गया मगर उसकी मस्त हंसी और हांफने की सांय-सांय सुनायी पड़ रही थी। संध्या की आखिरी किरन भी पानी में विलीन हो चुकी थी। हल्के अंधकार में काला पानी मात्र छितरता-बिखरता अनुभव होता। मैं अतृप्त और हताश होकर अपनी सीमा रेखाओं को पार कर पानी से होकर आगे सरकता रहा। हाथ पैर चलाते चलाते उसकी खोज में दूर बहुत आगे बढता गया।

अंधकार में मेरी आंखें धुंधली पड़ गयीं।

पानी की लहरों में से मुझे वह शब्द फिर सुनायी पड़ा "अप्पुकुट्टा याद है।"

मैं चौक उठा। कितने भयावह थे वे क्षण। वे पल जो मेरा शिकार कर रहे थे। पानी की काली फुलझड़ियां आंखों के सामने छितर गयीं। मेरे चेहरे पर पानी के उबाल का तूफान फिर आया।

औरत का भर्राया शब्द—"अप्पु कुट्टा ! मेरे साथ आयेगा ?"

हू···ह···ह···

मैं सिर से पैर तक थर-थर कांप उठा। सिर भारी हो गया। हाथों पर पिशाच भरपूर शक्ति से खरोंचे मार रहा था। नहीं, इसे दोहराने न दिया जायेगा। कारत्तु दाई बनकर, काली चिड़िया बनकर, गोसाई बनकर, राधा रूपी जल पिशाच बनकर···।

नहीं।

नहीं।

नहीं।

पागलपन और बड़े आवेग के साथ मैं आगे की ओर कूद पड़ा। पानी की लहरें केले के छिलके के समान फट गयीं। काली चिड़िया का गला घुट गया। भारी सिर

लिये किनारे की ओर दौड़ आया, यद्यपि उस समय मैं कांप रहा था फिर भी मुझे अपूर्व शांति का अनुभव हो रहा था। मैं मृत्यु का बंधन काट चुका हूं। पीछे पड़ने वाली परछाई दूर हट गयी।

यद्यपि अब मैं अमन से था तब कल मेरा वकील आया। कटघरे के उस पार, एक दार्शनिक के जैसे उसने कहा, मृत्यु से बचना असंभव है। अंतिम आवेदन पत्र का भी तिरस्कार हुआ।

मैंने कल रात को कारत्तु दाई का वह भर्राया हुआ शब्द फिर सुना। कटघरे के बाहर से, दीवार के बाहर से, वह मुझे ढूंढ़ता आया।

"अप्पुकुट्टा, मेरे साथ चलते हो ?"

"हां, हां," मैं चिल्ला उठा।

14. येशुपुरम् पब्लिक लाइब्रेरी के संबंध में एक शिकायत

मान्यवर,

सदियों पुरानी एक महान् संस्था है येशुपुरम् पब्लिक लाइब्रेरी। यह संस्था अब ह्रासोन्मुख है। वर्तमान दशा यदि जारी रही तो इसका विनाश होने में अधिक समय न लगेगा। अधिकारियों और सामान्य जनता का ध्यान अविलंब आकृष्ट करने के लिए मैं येशुपुरम् लाइब्रेरी से संबंधित कुछ तथ्य प्रस्तुत करता हूं।

मैं इस लाइब्रेरी का एक आजीवन सदस्य हूं। यानी मृत्यु तक मैं इसका सदस्य रहूंगा। एक दिन मेरी मृत्यु हो जायेगी। लेकिन इस लाइब्रेरी की मृत्यु कभी नहीं होनी चाहिए। उसको जारी रहना चाहिए। येशुपुरम् पब्लिक लाइब्रेरी के और भी कई आजीवन सदस्य हैं। अन्य सदस्यों और मुझसे संबंध रखनेवाली एक प्रमुख समस्या को मैं पहले पहल प्रस्तुत करता हूं। मेरा ही हाल देखिये। इस लाइब्रेरी का पतनग्रस्त होना मुझ जैसे आजीवन सदस्य को बहुत अधिक व्याकुल किये देता है क्योंकि इस लाइब्रेरी का भविष्य मेरे अस्तित्व का प्रश्न है। जब से मैं इसका आजीवन सदस्य बना, तब से ही मेरे जीवन का इस पुस्तकालय से अटूट संबंध हो चुका है। दिल खोलकर कहूं तो कह नहीं सकता कि इस बात का क्या सबूत है कि इस लाइब्रेरी के न होने पर मैं तथा उससे अटूट संबंध रखनेवाले अन्य आजीवन सदस्यों का अस्तित्व कायम भी रह पायेगा या नहीं। मेरी इच्छा लंबे अरसे तक जीने की है। मैं मर नहीं सकता। क्या तुमको मृत्यु पसंद है ? हो नहीं सकता। हम सब मृत्यु से डरते हैं। मैं तुम लोगों से प्रार्थना करता हूं कि कृपया तुम लोग इस पर जरा विचार करो कि इस लाइब्रेरी का नाश होने पर इसके आजीवन सदस्यों का क्या हाल हो जायेगा। येशुपुरम् लाइब्रेरी के सामान्य पाठकों से मेरा एक विशेष निवेदन है। तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़े, पर तुम हमें

भूलना नहीं। तुमको किसी भी महीने इस लाइब्रेरी से अलग हो जाने का अधिकार है। तुम्हें अधिकार है कि उसके बाद भी जब चाहो सदस्य बनकर सहयोग दे सकते हो। लेकिन हमें ऐसा अधिकार नहीं। हमारा जीवन येशुपुरम् लाइब्रेरी के जीवन के साथ संलग्न हो गया है। येशुपुरम् लाइब्रेरी का स्थायित्व हमारी अनिवार्य मांग है। मैंने आजीवन सदस्यों की एक मीटिंग कुछ दिन पहले ही बुलायी है। मैं चाहता हूं कि इस मीटिंग में लाइब्रेरी से संबंध न रखनेवाली सामान्य जनता और लाइब्रेरी के साधारण सदस्य दर्शक के रूप में सम्मिलित हों। येशुपुरम् लाइब्रेरी के अंधकारमय भविष्य ने हमारे चेहरों पर जो भय, दुख और घबराहट अंकित कर दी है, यदि तुम उन्हें देखो तो दया के तौर पर ही सही, इस लाइब्रेरी का विनाश होने नहीं दोगे।

आजीवन सदस्यों की सभा में एक सदस्य ने विशेष तौर पर एक तथ्य का उद्घाटन किया है जिसे मैं एक अत्यधिक महत्वपूर्ण विषय मानता हूं। यानी अगर यह लाइब्रेरी हमेशा के लिए कायम रहे तो उसके साथ हम जैसे आजीवन सदस्यों का अस्तित्व भी स्थायी रूप से रह पायेगा। क्या यह सच नहीं ?······हमारी लाइब्रेरी के वयोवृद्ध एक प्रमुख विद्वान सदस्य ने ही यह राय प्रकट की थी। यदि हम आजीवन सदस्य तन, मन, धन से कमर कसके परिश्रम करें तो शायद इस लाइब्रेरी के साथ हमारा भी अस्तित्व कायम रहेगा। हम ऐसे साहसपूर्ण परीक्षण के लिए तैयार हैं, किंतु पहला प्रश्न तो लाइब्रेरी के अस्तित्व को ही बनाये रखने का है।

लेकिन कृपया तुम ऐसा न समझो कि मैं और इस लाइब्रेरी के अन्य सभी आजीवन सदस्य स्वार्थी हैं। तुम्हारी तरह ही हम भी अस्तित्व की अनिश्चतता से भयभीत मनुष्यमात्र हैं। बस इतना ही है कि हम विशेष रूप से उससे बंधे रहते हैं। तुम विश्वास करो, जिस प्रकार तुम लोगों को जिंदा रहने, खाने-पीने और रोगों से मुक्त रहने के प्रति मोह है, ठीक वैसे ही हम लोग लाइब्रेरी के अस्तित्व को कायम रखने के अभिलाषी हैं। अस्तित्वहीनता का भय किसको नहीं होता ? तुम लोग भी अगर किसी संस्था के आजीवन सदस्य बने होते तो तुम हमारे दिल की वेदना को ठीक से समझ पाते। तुम केवल जिंदगी के आजीवन सदस्य हो। तुम्हारी सदस्यता का आखिरी दिन कहीं दूर भविष्य की तह में छिपा पड़ा है। तुम यह बात सुविधानुसार भूल भी सकते हो। लेकिन हम ऐसा नहीं

कर सकते। हम ऐसे रोगी हैं जिनका डाक्टर मृत्यु का नुस्खा लिख चुका है। रोगी की जिंदगी की तरह पुस्तकालय का विनाश होता जा रहा है। इसके मिट जाने के बाद हमारा क्या हाल होगा। रोगी को कम-से-कम मृत्यु अवश्य आती है। हमारी दशा इसके विपरीत अनिश्चित और अतिशोचनीय है।

येशुपुरम् पब्लिक लाइब्रेरी का विनाश कई तरीकों से होना शुरू हो गया है। पुस्तक वितरण विभाग को ही ले लो। यह विभाग एक पागलखाने जैसे लगता है। पुस्तकों का ढेर पड़ा है। अलमारियों में रखी पुस्तकों में कोई क्रम नहीं। वर्णमाला या विषय की बात तो दूर, आकार या रंग की दृष्टि से भी येशपुरम् लाइब्रेरी की पुस्तकों में कोई परस्पर संबंध नहीं। पुस्तकों की क्रम से स्थान विशेष पर रखना, इसके लिए नियुक्त चपरासी के अबोध मन की सूझ-बूझ पर निर्भर रहता है। मैंने कई बार एक ही प्रकाशक के द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकें पास-पास पड़ी देखी हैं। लेकिन यह केवल ऐसे ही संयोग की बात है जैसे कि हमारी जिंदगी में कभी-कभी भाग्य से आकस्मिक घटनाएं घट जाती हैं। किसी एक आलमारी में एक बार 'संजयन' के पहले और पांचवें भागों को पास-पास रखे देखकर मेरे मन में जो आनद हुआ था वह आज तक मुझे याद है। एक बार शेक्सपीयर के दो नाटक पास-पास रखे देखे थे। उस बात की मैं आज भी याद करता हूं कि एक नौजवान चपरासी ने एक ही आकार और एक ही रंग की पुस्तकें एक साथ सजा कर रखी थी। उन दिनों अलमारी एक अपूर्व सौंदर्य से चमक उठी। लेकिन शीघ्र ही धीरे-धीरे अनाड़ी सदस्यों और दूसरे चपरासियों ने मिलकर इस क्रम को तितर-बितर कर डाला। उस नौजवान चपरासी ने उसे व्यवस्थित करने के कई विफल प्रयत्न किये। लेकिन वह प्रयास कभी भी एक-दो दिन से ज्यादा सफलतापूर्वक टिका नहीं रहा। न जाने क्यों वह एक दिन अपनी नौकरी से इस्तीफा देकर कहीं चला गया।

वितरण विभाग की इस व्यवस्थित रीति के बारे में एक दूसरे ढंग से विचार करनेवाले लोग भी हैं। इनकी दृष्टि से येशुपुरम् लाइब्रेरी की हर एक आलमारी एक संसार है, बाहरी संसार की सभी विविधताओं से भरे कागज़ और लकड़ी का संसार। हम इसे येशुपुरम् लाइब्रेरी की एक बड़ी विशेषता या गुण मान सकते हैं किसी और लाइब्रेरी में भी ऐसा विश्वव्यापी दृष्टिकोण तुम्हें देखने को नहीं मिलेगा। एक अलमारी में किसी एक पुस्तक की तलाश करनेवाला एक

व्यक्ति, तलाश करते-करते कितने ही विषय, ज्ञान और विज्ञान के संपर्क में आता है। इन लोगों का मत है कि यह व्यवस्था अन्वेषकों में कम-से-कम यह बोध पैदा करने में तो सहायक होती है कि अपने परिचित विषय से परे कई विषयों का एक महासागर ही वहां लहरें ले रहा है। भूगोलशास्त्र वाली अलमारी में रखी पुस्तकें नीचे लिखे सभी विषयो से संबंधित हैं। जीवनी, यात्रा-विवरण, जंतु-विज्ञान, साहित्यालोचन, गणित, दर्शन, संगीत, समाजशास्त्र, सामुद्रिक विज्ञान, कहानी, वनस्पति विज्ञान, हास्य, अर्थशास्त्र, यौवनविज्ञान, नृत्यपाठ, सैनिक विद्या, इतिहास, ज्योतिष, आत्मकथा, सविधान का अध्ययन, क्रिकेट, इंद्रजाल, जीवन-विजय, चिकित्सा विज्ञान, नाटक, प्राकृतिक चिकित्सा, मनोविज्ञान, सरकस, बंदूक निर्माण कला, एक्सरे विज्ञान आदि।

इन विषयों की पुस्तकें भूगोलशास्त्र की अलमारी में एक साथ रखी गयी है। पर उस अलमारी में भूगोलशास्त्र की एक भी पुस्तक नहीं।

मैं यह बात मानने में झिझकता नहीं हूं कि उपर्युक्त दृष्टि से देखने पर, इस उलझन में भी कुछ गुण दिखायी देते हैं। लेकिन हमें यह भी याद रखना है कि प्रत्येक व्यक्ति के पास लाइब्रेरी के लिए समय ही कितना होता है। एक पुस्तक की खोज में, उससे कोई संबध न रखनेवाली हज़ारों पुस्तकों और विषयों के बीच से होकर चक्कर काटने में समय नष्ट करना क्रूरता है न? हम तो चाहेंगे कि जल्दी ही हमें वह पुस्तक विशेष मिल जाये जिसकी हमें तलाश है ताकि हमारा कीमती समय नष्ट न हो। व्यर्थ की खोज मे जितना हमारा समय बरबाद होता है उसका हमारे लिए बहुत महत्व है। अलमारी के अन्य सभी विषय हमे संसार भर का जो बोध कराते हैं उससे हमें क्या लेना। इतना खोजने के बाद भी यदि हमें वह पुस्तक न मिले जिसकी हमे तलाश है और इस तलाश में ही पुस्तकालय बंद होने का समय हो जाये तो हमें बेकार की पुस्तकें देखने मात्र से क्या लाभ? वास्तव में कई सदस्यों ने अब अपनी पसंद की पुस्तक तलाश करनी छोड़ दी है। वे अलमारी के बीच से होकर दोनों तरफ दृष्टि डालते हुए इस आशा से घूमते हैं कि संयोग से कुछ-न-कुछ फल मिल जायेगा। लेकिन इस फल प्राप्ति का अब अधिक विश्वास नही है।

हमारा कीमती समय इस प्रकार के निरर्थक और विफल अनुसंधान में बर-बाद करना येशुपुरम् लाइब्रेरी के नाश का एक चिह्न मात्र है। अनुसंधान तो

अनिवार्य है। लेकिन शोधकर्ताओं की सहायता करने के बहाने विषय-सूची रूपी मार्ग निर्देशक यदि ग़लत निकले तो अनुसंधान करनेवालों का क्या हाल होगा।

यह भी दुखद तथ्य है कि यह लइब्रेरी हम से कई पुस्तकों को छिपा कर रखती है। यह भी एक तसल्ली है कि अलमारी की पुस्तकों के खुले ढ़ेर के बीच से भूले-भटके हमारे शोध का फल किसी-न-किसी दिन जरूर मिलेगा। इसकी संभावना ही हमें जिंदा रखने की आशा प्रदान करती है। लेकिन येशुपुरम् लाइब्रेरी में अब ऐसी आशा की गुंजाइश ही नहीं क्योंकि किसी की जानकारी के बिना ही हजारों पुस्तकें अलमारी से बाहर जाने के बाद फिर वापस आती ही नहीं। अन्य हजारों पुस्तकें भी अलमारी तक पहुंचती ही नही। पुराने दुर्लभ ग्रंथ ही प्रायः गायब हो जाते हैं। नये ग्रंथ अलमारी में पहुंचते ही नहीं। इस लाइब्रेरी का नाश इस प्रकार दो रूपों में हो रहा है। जो पुस्तकें मौजूद हैं वे गायब हो जाती हैं और नयी पुस्तकें आती ही नहीं। इस प्रकार लाइब्रेरी के सदस्य दोहरा नुकसान भुगतते हैं। भूतकाल में संचित और वर्तमानकाल की नयी रचनायें दोनों एक ही समय नष्ट हो रही हैं। यदि भविष्य में भी ऐसा होता रहा तो सदस्य बने रहने से क्या लाभ है ? अधिकतर सदस्यों ने इसी कारण अपनी सदस्यता जारी नहीं रखी। फलतः वे लोग अब इस अनिश्चित वर्तमान दशा में ऐसा करने के लिए स्वतंत्र हैं। लेकिन हम, आजीवन सदस्यों का क्या हाल है ? समय के इस टेढ़े-बुकड़े पहिये से हम तो बधे हुए ही हैं। अगर हम इसे सीधा और ठीक करने में असमर्थ रहें तो हम पागल हो जायेंगे। इसकी गति थम जायेगी तो क्या होगा ? महाशय, यह केवल हंसी-मजाक नहीं। मैं जान चुका हूं कि पुराने ग्रंथ किस प्रकार गायब हो जाते हैं। कोई सदस्य पुस्तक पढ़कर वापस लाता है तो उसी क्षण काउंटर के नीचे के ढ़ेर में पुस्तक फेंकी जाती है। कई दिनों के बाद वह ढ़ेर एक बहुत बड़ी मीनार के एक भाग का रूप धारण करता है। अंत में जब काउंटर के नीचे से कई मीनारें सिर उठाती हैं उन्हें छूते ही वह गिर पड़ती है। जब ये मीनारें एक अर्धवलय में भर जाती हैं तब उन्हें खोलकर गठरियां बनाकर दफ्तर के भीतरी विशाल कमरे में रख दिया जाता है। इसके पीछे धारणा यह है कि स्थान परिवर्तन क्षणिक ही है। मतलब है कि इस स्थान परिवर्तन का उद्देश्य केवल यही है कि उनको सुविधानुसार कई हिस्सों में बांट करके फिर आलमारी में रखा जायेगा।

लेकिन बरसों यह उद्देश्य क्रियांवित नहीं होता। अगर कोई पूछे कि वापस

आये इन ग्रंथों को फिर उस कमरे में ले जाने का उद्देश्य क्या है तो उद्देश्य किसी को मालूम नहीं होगा। ले जाने का क्रम जारी रहता है। वे ग्रंथ कई बरसों से इस कमरे के फर्श पर इकट्ठे किये गये हैं। इन बड़े ढेरों ने एक के बाद दूसरे के रूप में फर्श से छत तक की ऊंचाई में कमरे को पूर्णरूप से वश में कर रखा है। कमरे में घुसने के लिए अब कोई जगह नहीं। दरवाजा आधा ही खोला जा सकता है। इसलिए इसका जिम्मेदार चपरासी पुस्तकों को पहले दरवाजे के बाहर लाकर रखता है इसके बाद एक-एक करके अधखुले दरवाजे से हाथ बढ़ाकर दोनों तरफ और ऊपर की ओर फेंक देता है। फिर वे हमेशा के लिए गायब हो जाती हैं। जल्दी ही इस कमरे का दरवाजा जरा भी खुलना बंद हो जायेगा। शायद इसलिए पासवाले एक कमरे को कार्ड-इंडेक्स रहित स्टेंड से भरे एक कमरे को खाली कर रहा है। हम आजीवन सदस्य चिंतितमन से इस बात का अंदाजा लगाते थे कि लाइब्रेरी की सारी पुस्तकें इस कमरे से इस प्रकार गायब होने में कितने वर्ष लगेंगे। एक दिन इस दूसरे कमरे का भी दरवाजा खुलना मुश्किल हो जायेगा। और हमेशा के लिए बद हो जायेगा। फिर भी हमारे मन में कई आकांक्षाएं पनपती हैं। इस लाइब्रेरी का रेफरेंस विभाग और उसके भीतर की यह अंधकारपूर्ण कोठरी हमारा प्रमुख आशा केंद्र है। आज तक वहीं था। फिर लाइब्रेरी के कर्मचारी हैं। लाइब्रेरी से पुस्तकों के पूर्ण रूप से गायब होने के बाद भी क्या वे कर्मचारी सरकार के वेतन-रजिस्टर से इस लाइब्रेरी का नाम कट जाने देंगे ! मुझे ऐसा होता नजर नहीं आता क्योंकि पुराने कर्मचारियों के अवकाश ग्रहण करने और पेंशन लेने पर नये कर्मचारी इन खाली अलमारियों की निगरानी के लिए नियुक्त हो रहे हैं। मैं समझा था कि यह अच्छा ही हुआ कि सरकार ने इस संस्था की जिम्मेदारी ले ली है। किंतु हमारा ध्यान और आशाएं उन पुस्तकों पर केंद्रित हैं जिन्हें गैर-जिम्मेदार सदस्य वापस देना भूलकर या जान-बूझकर वापस नहीं करते। जब तक इन पुस्तकों के लौट जाने की संभावना है, तब तक इस लाइब्रेरी के अस्तित्व की भी आशा है, यही हमारी दलील है और यही हमारी आशा है। इसका कौन निर्णय कर सका है ? हमें मालूम नहीं हम धैर्य धारण करके आशा मात्र करते हैं।

उस सभा में हममें से कुछ क्रांतिकारी चिंतकों ने एक बात कही थी। उनकी राय थी कि पुस्तक अलमारियों के खाली होने में अधिक देर नहीं लगेगी; इस

बात का पता लगते ही आजीवन सदस्यों को किसी न किसी तरह पुस्तकों को अपने घर ले जाना चाहिए। पुस्तकालय के अस्तित्व को मिटने से बचाने के एक-मात्र उपाय के रूप में ही उन लोगों ने ऐसा आदेश दिया था। उन्होंने यह तर्क भी प्रस्तुत किया कि पुस्तकें न लौटानेवाले लोगों की अनिश्चित आशा की अपेक्षा हमारा स्वयं निर्णय ही अच्छा है। लेकिन मुझ सहित अन्य सदस्यों ने बताया कि यह एक अनैतिक कार्य होगा। लेकिन अंतकरण की अब भी यही पुकार है कि क्या अस्तित्व के प्रश्न के आगे नैतिक और अनैतिक जैसी कोई बात होती है ? इस लाइब्रेरी में अब बहुत ही कम पुस्तकें बाकी हैं। मान्यवर, पहले मनुष्य को जिंदा रहना है, बाद को धर्म और अधर्म की बातें उठानी हैं।

मैं यह भी बताना चाहता हूं कि नयी पुस्तकों की क्या गत बनती है। भूरे रंग के कागज से ढकी गठरियां खोली ही नहीं जातीं। प्रतिवर्ष फर्श की सतह के नीचे के रेफरेंस विभाग के पासवाले कमरे में उनका ढेर हो जाता है। मैं एक पुराना आदमी हूं। समसामयिक चिंतन और लेखन के तरीकों से मैं बिलकुल अनभिज्ञ हूं। फिर भी एक बार मैंने अंधेरे में घुसकर उसमें से एक-दो गठरियों को खोलकर अपनी चाबियों के साथ लगी पेन टार्च के सहारे उन पर दृष्टि डाली थी। इतनी अधिक नवीनतम रचनाएं, नयी विधाएं, विचारधाराएं, भाव और सौंदर्य चाहे ये सब कितने ही अपरिचित क्यों य हों, एक अधेरे कमरे में पड़े देखकर मैं बहुत दुखी हुआ। दूसरी तरफ इस दृश्य ने मुझे रहस्यपूर्ण शायद बहुत ही स्वार्थपरक दिलास भी दिया क्योंकि जब तक इन बिना खोली गयी पुस्तकों की गठरियां पड़ी रहेंगी तब तक लाइब्रेरी का भविष्य भी एक प्रकार से उज्ज्वल रहेगा। जब ऊपर अलमारियों के खाली होने पर लाइब्रेरी पर ताला लगाया जायेगा तो उसी क्षण उन्हें नीचे बुलाकर इन पुस्तकों की गठरियों को गौरव के साथ दिखाऊंगा जो हम आजीवन सदस्यों की एक सुरक्षित संपत्ति है।

सच कहूं तो रेफरेंस विभाग से संबंधित यह कोठरी एक बड़ा कमरा है। इसका नाम है रेफरेंस विभाग दफ्तर। लेकिन बरसों से उसमें आयी हुई पुस्तकों की गठरियां और अंधकार दोनों के कारण यह एक छोटी कोठरी सी लगती है। मैंने कई बार उसके सामने खड़े होकर सोचा है कि गत कितने ही वर्षों को नूतनता इस अंधेरे कमरे में धूल धूसरित छिपी पड़ी है। मेरे मन में अब कभी-कभी यह विचार भी उठता रहता है कि अंधकार में छिपी पड़ी यह नवीनता किसी

न किसी दिन हमारे अस्तित्व की धीमी दीप-शिखा को फिर से प्रज्ज्वलित करने वाली ज्वाला बनेगी। दरवाजे पर घंटों खड़े होकर भीतर की ओर देखने से ही अंदर के अंधकार से आंखें परिचित हो सकेंगी। तब अंधकार की सीमा के चौकोर आकार की पुस्तकों की गठरियों की दीवार तथा उनके और दरवाजे के बीच की तंग जगह पर एक मेज, कुर्सी और उस पर एक आदमी दिखायी पड़ेगा। यही आदमी रेफरेंस विभाग का क्लर्क है। मुझे उस दिन की याद आज भी ताजा है जबकि एक बार मैं अकेले यहां से सैकड़ों खंभों के बीच से घूमते-घूमते पहले-पहल इस गुप्त कोठरी के प्रति आकृष्ट हुआ और अंधकार से इसके भीतर की ओर अपनी पैन टार्च के प्रकाश से देखा तो मैं डर के मारे कैसे थर-थर कांप उठा था। उस मेज के पीछे की कुर्सी पर दूर की ओर ताकते रहने वाले एक अचल मूर्ति की प्रतीक्षा मेरी आंखों ने नही की थी। मैं यह सोच भी न सकता था कि मेरे पीछे इन कभी न खोली गयी नयी पुस्तकों के ढ़ेर के लिए एक व्यक्ति रेफरेंस विभाग रूपी उस धुंधले अंधकार में पहरा देता होगा। मुझे ऐसा कभी न लगा कि अपने सामने के दरवाजे से दिखने वाले सैकड़ों खंभों से या उनके बीच के खाली मेज कुर्सियों से या अव्यक्त रूप से प्रदर्शित अलमारियों से या अपने पीछे के अंधकारवृत पुस्तक ढेरों से उसका कोई संबंध था। लेकिन मुझ जैसे आजीवन सदस्य की चिंता और पीड़ा उसको देखकर कुछ कम हुई। मुझे ऐसा लगा कि वह व्यक्ति हम आजीवन सदस्यों की रक्षा के लिए एक अपूर्व शक्ति है। उस धुंधले साम्राज्य की कभी न बाहर जानेवाली रेफरेंस पुस्तकों तथा अंधकार में पड़े पुस्तक ढेरों की अमूल्य संपत्ति को हमारे लिए सुरक्षित रखनेवाले एक प्रहरी के रूप में वह दिखायी दिया। मैं उससे कुछ बोला तक नहीं। जब कभी मुझे उससे बातचीत करने की इच्छा होती थी तब मुझे यह डर लगता था कि अगर मैं उससे बात करके उस रहस्यपूर्ण कमरे की खामोशी को भंग करूंगा तो न जाने क्या हो जायेगा। इतना ही नही मुझे यह आशा भी नही थी कि वह उत्तर में कोई शब्द भी कहेगा। मुझे उसे देखे अधिक समय नही बीता है। पहले ही कह चुका कि उससे मुलाकात कैसी आकस्मिक घटना थी। रेफरेंस विभाग की स्थिति ऐसी है।

रेफरेंस विभाग कई खंभों से घिरा हुआ एक भूगर्भ विभाग है। उसके दोनों ओर एक-एक बल्ब अपने धुंधले प्रकाश से इस कोठरी को अंधकारमय बनाता है। इस

धुंधले प्रकाश में खंभों की भीमाकार छायाओं के बीच इधर उधर रखी अलमारियों में कभी कभी किसी मोटी पुस्तक की अस्पष्ट आकृति दिखायी पड़ती है। यहां पांच महीने तक लगातार रेफरेंस का काम करने वाला मेरा एक मित्र एक नेत्ररोग अस्पताल में छह महीनों तक चिकित्सा के लिए पड़ा रहा। अब भी वह एक आंख से पूर्ण रूप से नहीं देख सकता। लगातार पांच महीने यहां आने पर भी उन्हें अभी तक शोध विभाग के क्लर्क का पता नहीं चला होगा। अधिकांश लोगों ने शोध विभाग को शायद ही देखा हो। इस ओर साहसी लोगों में से कुछेक बिरले ही आया करते थे। मैं कई बार हिम्मत बांधे इन खंभों के निश्चित रूपों के बीच से होकर चला हूं। मेरी धुंधली छाया ने उन खंभों की नीरवता को छाती से लगाया और मेरे पैरों की आहट एक विश्वास की भांति उस धुंधले अंधेरे में ऊपर उठी भी है। मैंने उन अलमारियों के काले रूपों का स्पर्श और जांच करने का यत्न भी किया है। जांच से मालूम हुआ कि इनमें से अधिकांश ग्रंथ शब्दकोश हैं। छोटे-बड़े शब्दकोश और एक भीमकाय मानव शरीर विज्ञान ग्रंथ भी था। दूसरा ग्रंथ एक बहुत बड़ी सचित्र बाइबल थी। उनमें से एक तो हैवलॉक एलीस के 'साइक्लाजी ऑव सेक्स' के दोनों भाग थे। इधर उधर की कुछ किताबों का भी मैंने एक बार अपनी पेन टार्च की सहायता से निरीक्षण किया। अधिकांश पुस्तकें, डायनों की कहानियां थी। मुझे स्वयं मालूम नहीं कि एक निर्जन पथ से अकेले जानेवाले एक आदमी का चुपचाप पीछा करती हुई एक डायन के डरावने चित्र को एक किताब मे देखकर मैं किस प्रकार उस अंधकार से कांपा। पीछे मुड़कर देखता हुआ सीढ़ियां चढ़कर ऊपर पहुंच गया था। इसी बीच मैंने एक और किताब भी देखी, वह जे. कृष्णमूर्ती की 'कमेंटरीज ऑन लिविंग' का दूसरा भाग थी। उन दिनों मुझे इसका पता भी नहीं था कि मेरे अलावा उस भूगर्भ के एकांत में, उस अंधेरे की आड़ में एक और आदमी छिपा रहता है। जो भी हो आजीवन सदस्यों के रूप में हमारा इस रेफरेंस विभाग और उसके पहरेदार के प्रति सद्भाव होना स्वाभाविक ही है क्योंकि उपर्युक्त सूचना के अनुसार कभी नष्ट न होने वाली ऊपरी कमरे की ओर कभी न जाने वाली पुस्तकें यहां मौजूद हैं। भविष्य में फिर खोली जाने वाली पुस्तकों के ढेर भी यहीं सुरक्षित हैं।

परंतु महोदय, आज मेरी आशा और महत्वाकांक्षा की शक्ति पर अब कुठाराघात हो गया है। इसलिए मैं जल्दी से यह शिकायत—यह नम्र निवेदन लिपिबद्ध

करता हूं। मैं अब और प्रतीक्षा करने में असमर्थ हूं। मेरी शंका है कि रेफरेंस विभाग का भी विनाश होना शुरू हो चुका है। मैं आज सवेरे, रेफरेंस विभाग में गया। मुझे वहां एक प्रकार की बदबू सी आयी। कारण ढूंढ़ते-ढूंढ़ते मैंने अपनी पेन टार्च को उस दफ्तर की ओर किया तो देखा कि रेफरेंस विभाग के क्लर्क ने आत्महत्या कर ली है। वह ऊपर की छत से लटका हुआ है। उसको इस प्रकार लटके कम से कम तीन दिन बीत चुके होंगे। जानते हो भविष्य में इसका क्या परिणाम होगा ? अब रेफरेंस विभाग की ज़िम्मेदारी संभालने के लिए कोई दूसरा आदमी तैयार होगा, इसकी क्या गारंटी। वहां की पुस्तकें भी एक-एक करके कोई उड़ा न ले जायेगा। मैं अविलब ही उसके आजीवन सदस्यों की एक विशेष सभा बुलाऊंगा। भावी कार्यवाहियों के लिए एक विशेष सभा बुलाऊंगा। भावी कार्यवाहियों पर तुरंत ही विचार करना अनिवार्य हो गया है। उसका एक ही पहलू विनम्र शिकायत के रूप में मैं आपके सामने प्रस्तुत करता हूं। हे भगवान ! आगे की कौन जाने।

15. अभियोग पत्र का जवाब

मैं, के. सत्यरूप, पिछले पंद्रह वर्षों से आपके दफ्तर में एक चपरासी हूं। मेरा दिल गवाह है कि इस अवधि में मुझे जो भी काम दिया गया उसे मैंने पूर्ण निष्ठा और लगन से किया। चालीस वर्ष की इस अवस्था में मेरी जो दुर्दशा हुई है, उसके लिए मैं अपने दुर्भाग्य को ही कोसता हूं, मैं किसी और को क्यों दोष लगाऊं। मुझे जिस दिन निलंबित कर नौकरी से हटाया गया उस दिन से मेरी नींद हराम हो गयी। आप स्वयं ही अनुमान कर सकते हैं कि एक सौ चव्वन रुपये मात्र माहवार वेतन पाने वाला एक चपरासी सस्पेंशन के दिनों में सिर्फ गुजारा भत्ता (सबसिस्टेंस एलाउंस) से इस नगर में जीवन निर्वाह कैसे कर सकता है। मैंने स्वप्न में भी यह नहीं सोचा था कि आप जैसे भाग्यशाली, उच्चपद प्राप्त युवक मेरे प्रति ऐसा व्यवहार करेंगे। शिक्षा प्राप्ति के दिनों में आप प्रगतिवादी विद्यार्थी संघ के नेता थे और अब भी श्रमिकों के हितैषी हैं इसलिए मेरी उन धारणाओं को बड़ी ठेस पहुंची है।

जिस दिन मुझे अभियोग पत्र दिया गया था उस दिन आपसे मिलने का मैंने प्रयत्न किया तो बड़ी देर तक प्रतीक्षा करने के बाद आपसे मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। आप रिवालविंग कुर्सी पर बैठे अंग्रेजी समाचार पत्र पढ़ रहे थे। मुझे देख कर क्रोध और घृणा से आपने पत्र मेज पर पटक दिया। उस दिन आपने मुझे जो कुछ कहा शायद अब आपको याद न हो। पर साहब ! मैं उन शब्दों को भूल नहीं सकता क्योंकि वे तीर की तरह मेरे तन बदन में घुस गये थे।

मुझे जो कुछ निवेदन करना था, मेरा निवेदन सुनने की न आपको इच्छा थी न समय था। आपने कहा था, "कमरे से तुरंत निकल जाओ अन्यथा तुम्हें अभी बाहर करा देने के लिए मजबूरन मुझे कोई कार्यवाही करनी पड़ेगी।" मैं हाथ जोड़े

खड़ा रह गया। आपके चपरासी ने आपके दस्तखत किये हुए फाइल बाहर ले जाते समय जूते से मूरे अंगूठे को कुचल डाला। मैं भी एक चपरासी हूं; एक जूता तक खरीदने में असमर्थ चपरासी। फिर भी मैंने उस आदमी को घूरकर देखा तक नहीं क्योंकि मैं उस समय अभियोग के कटघरे में खड़ा था और उससे बच जाने के विचार में डूबा हुआ था।

जब मैंने आपसे प्रार्थना की कि मुझे बचा लीजिये तब आप मेज पर हाथ पटक कर चिल्ला उठे, "गेट आउट।"

उसी क्षण मैं बाहर आ गया और कमरे के बाहर उसी पायदान पर आरोप-पत्र लिये खड़ा हो गया जिस पर "गॉड इज ट्रुथ" अंकित है। तभी आपके चपरासी ने आकर मुझे सूचना दी कि आप मुझे बुला रहे है। यह सुनते ही मेरे मन में उत्साह के सुमन खिल उठे।

आपका चेहरा तमतमा रहा था। आपने अपने लंबे बालों पर हाथ फेरते हुए कठोर शब्दों में कहा—

"दस दिन के अंदर जवाब देना है, यह अवधि बढ़ाई नही जायेगी। जवाब न दिया गया तो 'एक्स पार्टी फैसला हो जायेगा। एक बात विशेष ध्यान देना हितकर रहेगा। अभियोग स्वीकार करने से इंकार करोगे तो हम प्रमाणों को काम लायेंगे और तुम सर्विस से निकाल दिये जाओगे। अपराध स्वीकार करने पर सजा में कमी हो जायेगी। तुम अब जा सकते हो।"

मैं नमस्कार करके बाहर चला आया। सीढ़ियों से उतरकर बरामदा पार किया। जहां मैंने इतने दिनों तक काम किया था उस 'डिस्पैच सेक्शन' को दूर से देखकर दिल में एक हूक सी उठी। गोंद गलाने की महक और लाख पिघलने की तेज गंध के वातावरण में क्या मैं फिर से सांस ले सकूगा? उस कमरे में जहां हाथ लगने पर चिपक ही चिपक होती है घुसने का सौभाग्य क्या फिर से प्राप्त होगा?

अभियोग पत्र मेरे हाथ में था। मुझे बड़ी झुंझलाहट हो रही थी। मेरा नाम सत्यरूप है। किसने मुझे यह नाम दिया—सत्य का रूप। क्या तमाशा है। मां ने ही यह नाम रखा होगा। पिता नामकरण कर ही नही सकते थे क्योंकि वे मेरे जन्म से छह महीने पहले ही जेल जा चुके थे। और डेढ़ साल बाद वापस हुए। तब तक मैं एक साल का हो चुका था।

सरकार! मेरे पिता ने जो अपराध किया था। उसके बारे में भी तो आपको

जानना चाहिए न ? उन्होंने लोहे की छड़ से मुक्केबाज रामन पिल्लै नामक सब इंस्पेक्टर के कंधे की हड्डी टुकड़े-टुकड़े कर डाली थी। इस अपराध के लिए उन्हें दंड भोगना पड़ा। पर बेटा कसूरवार न होने पर भी दंड भोगने जा रहा है। हाय रे न्याय।

पोर्टिको में खड़े होकर मैं आरोप पत्र पढ़ने लगा। उसे पढ़कर मैं स्तब्ध रह गया। दिल बैठने लगा। आंखों के सामने अंधेरा छा गया।

मुझ पर लगाये गये आरोप विचित्र थे। उनमें से एक भी तो सही नहीं था। इन अभियोगों के बारे में मैं कभी सोच भी नहीं सकता था। मुझ पर आरोप था कि मैंने रिश्वत ली है। —असह्य आरोप ! मेरा तो कोई दुश्मन भी नहीं जिसने यह आग लगायी हो और अधिकारियों को भड़काया हो।

अभियोग ये हैं : हेड कांस्टेबल श्री पी. के. कुंजुमोयदीन ने अपनी बेटी की शादी के लिए 'प्राविडेंट फंड' से 'नान रिफंड' के रूप में एक हजार रुपये पेशगी लेने की अर्जी दी थी। उससे दस रुपये रिश्वत के रूप में लेकर विभाग के क्लर्क की सहायता से जल्दी से काम कर दिया गया।

2. तालुका आफिस से पेंशन प्राप्त श्री पी. कुंजुरामन पिल्लै से पंद्रह रुपये घूस लेकर संबंधित विभाग के क्लर्क की सहायता से पेंशन और ग्रेचुएटी एक हफ्ते के अंदर मंजूर करा दी।

3. मेडिकल कालेज के असिस्टेंट प्रोफेसर डा. कुज्जुण्णी नायर को 'सरेंडर लीव' सेलरी और दो महीने का वेतन यानी एक हजार तीन सौ से अधिक रुपये का पेयस्लिप् दिलवाकर ट्रेज़री कापी जल्दी से पहुंचाने का वादा किया जिसके लिए उनसे पांच रुपये घूस ली।

मेरी आंखें उमड़ पड़ीं। बाहर सख्त धूप थी। मेरा गला सूखने लगा। पानी का कूलर खराब पड़ा था। अन्यथा एक गिलास ठंडा पानी पी लेता।

सरकार, मैंने अपने आप साहस बटोरने का यत्न किया और अपने अस्वस्थ मन को स्वस्थ रखने की व्यर्थ कोशिश की। मैंने स्वयं अपने आप से कहा, 'रे सत्यरूप ! मूर्ख मत बन। यह बड़े दुख की बात है कि तू इतना घबरा रहा है। तू बेकसूर है। तुझे दंड नहीं मिलेगा। न्याय तुझे मिलकर रहेगा। साहस को हाथ से जाने न दे। तेरे नौजवान अफसर श्रमिकों के हितैषी हैं। तुझे कोई हानि पहुंचने नहीं देंगे।"

मैं दफ्तर के द्वार के बाहर निकला। गाड़ियां ऐसे हार्न बजा रही थीं मानो मैं उनका दुश्मन हूं। कॉफी हाउस से बाहर आते हुए गोविंद, तोमस और अच्युत ने मुझे देखा। मेरे पास आये। इन लिपिकों को मेरे प्रति बड़ा स्नेह था। क्योंकि मैं इनका बिजली का बिल जमा कर दिया करता था। इनके लिए डेरी से दूध का कूपन ला देता, ट्रेज़री में चालान जमा करा दिया करता। वे सब मुझे पहली तारीख को एक-एक रुपया दे दिया करते और कहते थे, "सत्यरूप कॉफी पी लेना।" पर इस बार उन्होंने तीन-तीन रुपये मेरी जेब में डाल दिये। शायद यह सोचा हो कि आजकल मुझे बुरे दिनों का सामना करना पड़ रहा है। उनके चेहरे से हमदर्दी प्रकट होती थी इसलिए मैं कुछ भी न कह सका। उनके स्नेह के सामने मेरा गला रुंध गया। मैं सिर झुकाकर आगे बढ़ा।

सेक्रिट्रयेट के सामने असाधारण भीड़ थी। हवा में लाल झंडे फहरा रहे थे। मैं छाया में खड़ा चारों तरफ देखता रहा तब एक पुलिस कांस्टेबल मेरे पास दौड़ा आया। मेरे कंधे पर हाथ रखकर आदेश दिया—"यहां से चले जाओ। ये बद-माश लोग जान-बूझकर झगड़ा करेंगे। क्या तुमने यह झडा नही देखा ? लाठी जब चलती है तो बंधुओं और परिचितों को नहीं देखती। तुम्हारा यहां से तुरंत चले जाना ही उचित है।"

पुलिस वाले के कहने पर भी मैं वहां से भागा तो नही किंतु मैं भयभीत अवश्य हुआ मैंने उस भय को प्रकट होने न दिया और धीरे-धीरे चल पड़ा। कुछ दूर तक पुलिस वाला मेरे साथ चला उसने कहा, "यह मेरी दुर्बलता है कि मैं उपकारी लोगों को भूल नही सकता जो कुछ आपके साथ हुआ मुझे उसके लिए दुख है।"

यह कहकर कांस्टेबल विदा लेकर चला गया। अचानक शोरगुल सुनायी पड़ा। लाठी प्रहार शुरू हुआ। लोग तितर-बितर हो गये। जूतों की खटाखट और हे ही—चीखपुकार बढ़ती रही। मैं बायीं ओर के रास्ते से भाग गया।

अपने किराये वाले कमरे में पहुंचने पर भी मैं हांफता रहा। वह पुलिस वाला सलाह न देता तो इस समय मैं अस्पताल मे होता। देखिये साहब। कम आय वाले के प्रति उसका कितना आदर भाव था। उपकारी को कभी भूल नही सका। पुलिस वाले ने जो कुछ कहा, वह क्या है ? मैंने उस पर सिर नहीं खपाया। पर एक ही संदेह बाकी रहता है संभवतः पुलिस वाले को भूल हुई होगी। उसने मुझे न पह-चाना हो। पुलिसवालों में भी ऐसे स्नेही मनुष्य होते हैं ?

आपने मेरा किराये का कमरा नहीं देखा। देखते तो इस बेचारे को तंग करने का विचार ही आपके मन में उत्पन्न न होता। केवल एक खिड़की है उसके सामने पास वाले मकान की दीवार खड़ी है जिसके कारण मेरे कमरे में हवा और प्रकाश तक नहीं पहुंचता। वह दीवार एक राक्षस जैसी खड़ी है। एक प्रसिद्ध नागरिक का दुमंजिला मकान है। खैर, मेरे कमरे की ओर देखो। मैं, एक स्टोव, अलूमिनियम के दो तीन बर्तन, एक टंगना और उस पर कुछ मैले कपड़े, बस केवल इतना ही है।

सरकार, मैंने एक राशन कार्ड प्राप्त करने के लिए कितना ही कष्ट उठाया। सवेरे मांड पीकर दुपहर के लिए चावल की पोटली लिये मैं दफ्तर जाता। पौष्टिक भोजन की कमी के कारण मैं चर्म रोग से पीड़ित हो गया।

समाचार पत्र का ग्राहक बन, पत्र पढ़ने की मेरी आर्थिक स्थिति नहीं इसलिए एक दिन चूक हो गयी जिससे राशन कार्ड बदलवाने के दिन की सूचना न पढ़ सका।

पिछले हफ्ते में मुझे राशन नहीं मिला। निलंबित होने के कारण मेरे पास खूब समय था। राशन के आफिसर से मिला। उन्होंने मुझे डराया, धमकाया भी और कहा, "राशन कार्ड की जरूरत न होगी, जरूरत होती तो उसे बदलवाने की तारीख याद रखते। जो भी हो कुछ दिन अवश्य लगेंगे। दो तीन हफ्ते तक होटल में खाना ही होगा।"

मेरे होश उड़ गये। जब वेतन पूरा मिलता था तब भी गुजारे के लिए कष्ट उठाना पड़ता था। सस्पेंशन के समय मिलने वाली रकम से कैसे जीवन निर्वाह करूं। मैं हताश होकर राशन के आफिस के बरामदे में खड़ा रहा।

एक आदमी ने मेरी पीठ थपथपायी, तभी मैं चौंक उठा। वह सफेद बालों वाला आदमी मुझे देखकर हंसा। मैं उसे पहचाना नहीं फिर भी मैं हंस दिया।

"कहो यहां कैसे ?" उसके पूछने पर मैंने अपने गम को हल्का करने के लिए दिल खोलकर सब कुछ कह सुनाया। "बहुत ही सरल कार्य है।" वह आदमी मेरे हाथ से राशन कार्ड लेकर अंदर चला गया। मैं अब भी अपनी स्मृतियों की उलझनों को सुलझा रहा था। इस व्यक्ति से कहां हमारा परिचय हुआ ? उससे पूछना ठीक नहीं। मैं अकसर भूल जाया करता हूं।

साहब मैं संक्षेप में बताऊंगा। आधे घंटे के अंदर नया राशन कार्ड मिल गया।

उस आदमी ने मुझ से कहा कि मेरे पेंशन प्राप्त कर लेने पर भी वह अफसर मुझ पर बड़ा मेहरबान है।

रास्ते में एक दूसरे आदमी को देखते ही, "जाऊं" कहते हुए उसने विदा ली और वह बूढ़ा चला गया।

आप शायद सोचते होंगे कि अभियोग पत्र के जवाब में ये सब बातें क्यों बतायी जा रही हैं। आप नौजवान हैं, साहब, आपको सांसारिक अनुभव नहीं। इस संसार में केवल आप और मैं ही तो नहीं। करोड़ों मनुष्य हैं। उनमें एक या दो विशाल हृदय और भलेमानस लोगों का परिचय करता हूं। बस इतना, साहब, माफी दीजिये।

जवाब देने के लिए दस दिन ही दिये गये। पांच दिन बीत गये। दिन के समय सोने के कारण रात को नीद नहीं आती। रात में नींद न आने के कारण दुस्वप्न देखकर चौकता नही।

सारे शरीर पर बुरी तरह से खुजली होती है। मांड और मूंग ही लगातार खा रहा हूं। हफ्ते में सिर्फ एक बार सिर पर थोड़ा तेल लगाता हूं। फिर क्यों खुजली न हो? रात भर खुजाता रहा। सारे शरीर पर खरोंच पड़ गयीं। असह्य होने पर मैंने मेडिकल कालेज के अस्पताल में जाने का निश्चय किया।

लंबी क्यू में मैं बहुत देर तक प्रतीक्षा में खड़ा रहा। अंत में क्यू मेरे पीछे भी हो गयी। द्वार खोलकर मैंने डाक्टर को हाथ जोड़कर प्रणाम किया। डाक्टर आत्मीयता से हंसे। मुझे स्टूल पर बिठा दिया। मेरी बीमारी की पूछ-ताछ की। मेरे शरीर की अच्छी तरह जांच की और उन्होंने कोई पेटेंट गोली तजवीज की।

उन्होंने यह भी कहा, "यह गोली यहां नही है। तुम्हें यह बाजार से खरीदनी होगी। यह महंगी है। प्रत्येक गोली पैंसठ पैसे की होगी। तुम्हें खरीदने में कठि-नाई होगी।"

डाक्टर ने दराज खोली। यह लो। सेंपिल के रूप में कंपनी वालों की दी हुई है।

मैं स्तब्ध रह गया। सरकारी अस्पताल के डाक्टरों में भी इतने भले होते हैं। मैंने उठते हुए प्रणाम किया।

तब उन्होने कहा, "इन्हें खाने से पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाओगे, यदि नहीं तो

फिर आ जाना। संदेह न करो। तुम मेरे लिये ट्रजरी और अन्य स्थान जाते थे न ?"

अपने संदेह को दूर करने के लिए कुछ कहना ही चाहता था कि दूसरा बीमार स्टूल पर आ बैठा और मैं बाहर निकल आया।

शायद भ्रम हुआ हो, हमशक्ल बहुत से लोग इस धरती पर होते हैं। मुझे एक शरारत सूझी मैंने सोचा चाहे जो भी हो, मुफ्त में दवा प्राप्त हुई, फोरन यहां से चले जाना चाहिये। भूल हुई, पहचान न सका, ऐसा कहकर यदि डाक्टर बुला ले तो।

मेरे पूज्य अफसर। इस डाक्टर से कुछ सीख लीजिये। वह मेरे वेतन से चार गुणा वेतन पाता है। उसका वह व्यवहार देखा न ? दवा पिये बिना ही बीमारी आधी रह गयी। ऐसी हमदर्द थी उसकी।

समय बीत रहा है। दी गयी अवधि पूरी हो चुकी। लिखित कानून आपके हाथों में रबड़ के समान हैं। मेरे लिये एकदम इस्पात। कितने आश्चर्य की बात है।

दसवां दिन आज पांच बजे पूरा हो जायेगा। आज सवेरे भी मैंने आपसे मिलने की चेष्टा की। आपने पहली बार मिलने से इंकार कर दिया आप कुछ बड़े-बड़े लोगों से बातों में व्यस्त थे। एक घंटे के बाद में फिर आया। आपके चपरासी ने उपेक्षा भाव से दरवाजा खोल दिया।

जब में आपके सामने पहुंचा तब आंखें भर आयीं। मैंने निवेदन किया, "सरकार मेरी रक्षा कीजिये। आपके अतिरिक्त मुझे कोई भी बचा नहीं सकता।"

आप जो फाइल देख रहे थे, भौहें चढ़ाकर आपने उसे एकदम उलट दिया।

"जवाब लाये हो ?"

"नहीं," मैंने विनम्रता से कहा।

"आज पांच बजने से पहले जवाब आ जाना चाहिये। नहीं तो मुझे स्वयं नहीं मालूम कि क्या होगा। रिश्वत लेने की बात है। कसूर स्वीकार करना ही अच्छा है। प्लीज गेट आउट।"

मेरे सुइयां सी चुभने लगीं। दालान में मेरे साथी अपने-अपने काम में व्यस्त थे। मेरा शरीर पसीने से तर हो गया। दफ्तर के उस बड़े बरगद के पेड़ के नीचे मैं जा खड़ा हुआ। मुझे लगा कि मेरा पसीना कभी नहीं सूखेगा।

मैंने सिर उठाकर देखा तो यूनियन आफिस सामने था। अंधेरे में आशा की

किरण जैसा। सेक्रेट्री पूछेगा, "तुम इतने दिन क्या कर रहे थे ?" तब मैं क्या जवाब दूंगा। इतने दिनों मैं यही सोच रहा था।

मैं सीढ़ियों पर चढ़ा। सेक्रेट्री कुछ लिख रहा था। थोड़ी देर तक मैं खड़ा रहा। मेरे खांसने पर सेक्रेट्री ने सर उठाकर देखा।

"हेलो, सत्यरूप। मुझे पता चल गया है। चीफ से मिलकर सब बातें कर ली हैं न ?"

"हां साहब, कोई आशा नहीं।"

"क्या घर पर भी मिले थे ?"

जवाब न बन पड़ा। मन तो दुखी था। मैंने कहा, "जी नहीं।"

"अच्छा" कहते हुए सेक्रेट्री फिर लिखने में व्यस्त हो गया। कुछ देर बाद कहा, "यह नोटिस लिखने के बाद मैं चीफ़ से मिलूंगा।"

"ठहरो।"

मैं सेक्रेट्री के मेज के पास खड़ा रहा।

सेक्रेट्री लिखता ही रहा।

हमें यह बात समझ लेनी चाहिये कि कुछ लोग दूसरों का मुंह बंद करके इस संगठन को अपनी हीन और संकुचित राजनीतिक उद्देश्य के लिए एक मंच बनाना चाहते हैं। इन लोगों से हमें संघर्ष करना है। हम इन 'नये गणतंत्रवादियों' को ऐसे ही अलग-अलग कर देंगे जैसे इनको अन्य क्षेत्रों में पराजित किया है। ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है···अभिवादन के साथ···। आओ।

सेक्रेट्री ने अभियोग पत्र हाथ में लिया। मैं सेक्रेट्री के पीछे-पीछे चला। मन आशावान होने लगा। बचने की संभावना है।

सेक्रेट्री चीफ के कमरे में पहुंचा। मैं एक कोने में दीवार पर नाखून का चिह्न बनाये बिना ही चुपचाप खड़ा रहा। मेरे हाथ-पांव उत्कठा की सर्दी में ठिठुरते रहे।

सेक्रेट्री अचानक अप्रत्याशित रूप से जोर से दरवाजा खोलते हुए बाहर आये।

अभियोग पत्र लापरवाही से मेरी ओर फेंक दिया। सेक्रेट्री की आंखें लाल हो उठी थीं। सेक्रेट्री गरजकर बोला—

"रिश्वत लेने वाले लोगों को बचाने के लिए कोई कानून नहीं है। घूस लेते समय सोचना चाहिए था। पुलिस, डाक्टर, पेंशनवाले, इन-सब की लिखित शिका-

यतें मुझे दिखा दी गयी हैं। मैं अपमान और शरम से पानी-पानी हो गया।"

सरकार, मैंने कोई अपराध जान-बूझकर नहीं किया। मुझे इनमें से किसी भी आरोप का पता तक नहीं।

"नही, मुझे कुछ नहीं सुनना। केवल इनकी ही शिकायतें होती तो तुम्हें बचा सकता था। पर संबंधित सेक्शन क्लर्क ने लिख दिया है कि उन्होंने तुमको रिश्वत लेते देखा है।"

"झूठ। सरासर झुठ।"

"झूठ है ? गोबिंद, थोमस और अच्चुत ने अपने हाथों से जो कुछ लिखा है सब कुछ झूठ है ? बस···बस।"

"घूसखोरों का सेक्रेट्री रहना भी मेरे लिये अपमनि की बात है। तुम भाड़ में जाओ, मुझ से कोई मतलब नहीं।"

सेक्रेट्री सीढ़ियां उतर कर चला आया तो मेरा दिल चाहा कि एक छोटे बच्चे की तरह चीख-चीख कर रोऊं।

मेरे आदरणीय विभागाध्यक्ष, अब मैं क्या करूं ? कब तक मैं आंखे पोंछता खड़ा रहूं ? आप तो श्रमिकों के हितैषी थे किंतु आपने उनकी भलाई और कल्याण के तमाम भावों को अपने मन से निकालकर कहीं निष्ठुरता के अंधकार भरे कमरे बंद करके ताला डाल दिया है और उस ताले की चाबी को किसी कुएं में फेंक दिया और अब आप मनमानी करने पर तुले हैं। इतना ही नहीं सेक्रेट्री ने भी मेरी उपेक्षा की और इस प्रकार श्रमिकों के प्रतिनिधियों ने मेरी आशा पर पानी फेर दिया, "मैं ऐसी विकट परिस्थिति में क्या करूं ?"

'बाघ का बच्चा बाघ ही होना चाहिए' इस कहावत की याद आते ही दिल चाहता है कि आप का दरवाजा धक्का मारकर खोल डालूं और भीतर घुसकर कुर्सी या पटरी से आपको मारूं, आपको विवश करने के बाद मैं सीधा पुलिस स्टेशन में हाजिर हो जाऊं। खाकी पोशाक वाले मुझे बुरी तरह मारें। मेरी हड्डी पसली अलग-अलग हो जाये। मैं ज़ेलखाने में बंद हो जाऊं।

मैं सिर्फ संकल्प ही कर सकता हूं। अमल में लाने के लिए असमर्थ हूं। मुझे जीवित रहना है। इस विशाल विश्व में भूखों मर कर भी जीना है। इस आखिरी घूंट को भी मुझे पीना है।

मुझे माफ कर दीजिये। आपके द्वारा दिये गये अभियोग पत्र में जो जो आरोप

लगाये गये हैं, सब ठीक हैं। कम आय वाले एक चपरासी का, घूसखोरी के अतिरिक्त और कोई सहारा भी तो नहीं।

पुलिस वाले से लिये हुए दस रुपयों से मैंने अपनी बेटी को एक हाफ साड़ी खरीद दी थी। पेंशन वाले से ग्रहण किये पंद्रह रुपये से अपने बूढ़े और बीमार बाप की ऊन का कपड़ा और डाक्टर से लिये पांच रुपये से पित्त से पीड़ित अपनी पत्नी के लिए आइरन टेब्लेट भी खरीदी।

भविष्य में ऐसा कभी न होगा। गरीबी से तंग आ गया हूं। मुझे क्षमा कर दीजिये। जीने के इच्छुक इस बेचारे को माफ कीजिये।

सरकार, साढ़े चार बज रहे हैं। मेरे पास जो कलम है उसमें कभी स्याही होती है कभी नहीं। उस नाकारा कलम से मैंने इतना लिखा है। सातवें दर्जे तक ही मेरी शिक्षा हुई है। इसी कारण व्याकरण की कई गल्तियां होगी। माफ करें।

मेरा भविष्य पूर्णतया आपके कलम की नोक पर है। इस वजह से अपने संबंधियों की खातिर आपसे माफी का निवेदन करता हू। केवल एक और प्रार्थना।

यह जवाब आपके हाथो सौपने के बाद मैं सीधे अपने किरायेवाले कमरे को जा रहा हूं। मेरा दुख इतना बढ़ गया है कि मेरे दिल की चार-दीवारी को ही चकनाचूर किये दे रहा है। उस कमरे में पड़े-पड़े मैं अपने बाप का स्मरण करूंगा। कम-से-कम इस अवसर पर मैं कायर अपने साहसी पिता की याद करके अभिमान तो कर सकूं। मुझे ऐसा लगता है, सन् बावन के, एक किसान आंदोलन में आलप्पुषा जेल में पड़े मेरे बाप ने अंतिम सांस ली। सेरिबरल त्रोबोसिस या और किसी मर्ज को बताने वाला भी कोई वहां न था। अस्पताल के जैसे जेल में भी मृत्यु स्वाभाविक थी। आलपिन के रूप में, कच्ची तीली के रूप में, मोटी लकड़ी का रूप धारण किये और कभी मिर्च का चूर्ण बने मृत्यु वहां प्रत्यक्ष होकर मौत का कारण बना करती थी। बाप का स्मरण करते ही मुझे रोना आता है। रो-रोकर ही तृप्त हो जाता हूं तब मैं स्वयं अपने बारे में सोचता हूं।

इस शहर में उनतालिस वर्ष की उम्र तक भी अविवाहित रहा। मेरे जीवन का भविष्य क्या है···?

सरकार, मेरी एक ही प्रार्थना स्वीकार कीजिये।

मुझे रोनें दें।

मैं रो-रोकर अपना हृदय धो डालूं।

16. हमशक्ल

जे. ने यह दुखद सत्य समझ लिया था कि उसका ही हमशक्ल एक अन्य व्यक्ति इस छोटे शहर में कहीं है। साइकिल वाला खड़ी उतराई से उतरकर मुश्किल से ब्रेक पकड़े जे. से पूछता है, "तुम एम. हो न ? हमारी मुलाकात हुए कितने दिन हुए ?"

लाल आंखें, बड़ी मूछें, मुख पर चोट के निशान ! साइकिल वाले को देख भय से कांपते हुए कहा, "मैं एम. नहीं हूं।"

साइकिल उस रास्ते से नीचे की ओर बढ़ी।

जब थियेटर में रोशनी आयी तब पास की सीट पर बैठे आदमी ने पीठ पर थप्पड़ मारते हुए पूछा, "तुम हर जगह दिखायी पड़ जाते हो।

जे. ने चौंककर कहा, "मैं एम. नहीं हूं।"

यद्यपि जे. से उसने बालों से भरे हाथ जोड़कर माफी मांगी, तथापि जे. वहां फिर बैठ न सका। फिर लाइट आफ होने पर वह उठकर बाहर आ गया।

जे. समझता है कि उसका हमशक्ल दूसरा आदमी इस शहर में बहुत दिनों से रहता है।

जिमनासियम के सामने के रास्ते के ऊपर स्टेडियम की मोड़ के आड़ पर पेड़ों के पत्तों की छाया फैली हुई है। दस्तकारी की चीजें बेचने वाले इंस्टिट्यूट से मोटर गाड़ी में चढ़ने वाले मध्य वयस्क लोगों ने ऐसी आवाज दी मानो पानी में पत्थर गिर रहे हों।

एक बार फिर एम. की पुकार सुनी। ढीली और शानदार पैंट वाले अमीर चुरुट पीते हुए आये।

"कह तो दिया पर कहने के अनुसार काम भी करोगे।"

जे. कहने लगा, "मैं……।"

"पैसा लेने के बाद यह नहीं भूलना चाहिए कि पैसा किसलिए लिया।" उसके मुं से बदबू निकली। वह जे. को कहने का मौका दिये बिना चिल्ला उठा।

"सुकेशिनी को ले आऊंगा—या तो पैसा लौटा दो नहीं तो आज रात को……"

"मैं एम. नहीं, जे. हूं।"

वह गुस्से में फुफकारता आगे बढ़ गया। तब तक इंस्टिट्यूट से मोटर गाड़ी उसे पार कर आगे बढ़ गयी। जे. इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि एम. दुश्चरित्र है। इतना ही नहीं, जान-पहचान वालों को धोखा देकर पैसा कमाता है।

वह धोखेबाज नहीं है।

जो भी हो अपने ही हमजिस्म अपने ही हमशक्ल उस व्यक्ति को अवश्य तलाश करना चाहिए।

वह जेब में चाकू रखकर उसकी तलाश में निकल पड़ा।

उसने सभी चेहरों पर दृष्टि डाली। लंबी आंखें, उनके ऊपर भृकुटी की रेखाएं। लिपिस्टिक लगे या बिना लिपिस्टिक के मुंह। उलटे दिखते नथुने, कान, और बदबू युक्त गुफाओं से झांकती जीभ। कितने करोड़।

पर अपना हमशक्ल ढूंढ निकालना है तो लांज में खूटी पर लटके टूटे-फूटे दर्पण पर प्रकाश पहुंचना होगा।

जे. ने घड़ी पर नजर डाली। शाम के पांच बजकर चालीस मिनट हो गये हैं। इसका मतलब यह है कि सभी आने-जाने वालों की घड़ियों में समय पांच बजकर पैंतालिस और पांच बजकर पैंतीस मिनट के मध्य में है। हर एक अपनी-अपनी घड़ी के अनुसार काम करता है। दस बजकर बीस पर पुल के पास प्रतीक्षा करनी है। क्या वह आयेगा? डेढ़ बजे दक्षिण से आनेवाली गाड़ी (लड़कियों की बस) की दूसरी सीट पर बायीं ओर एक सौंदर्य है। सवा तीन बजे खुजलीवाला लड़का शाम का अखबार बेचने के लिए निकलेगा। बूथ में दूध लेने आये लोग पौने चार बजे लौटते हैं। आदि, आदि…।

चलते-चलते जे. की घड़ी से दूसरे की घड़ी टकरायी। एक का काल चक्र दूसरे के काल-चक्रपर रगड़ गया। जे. को ऐसा ही लगा।

भीड़ भरी सड़क। कमर तक एक ही जैसे दो पैर वाले स्त्री पुरुष। एक ही

तरह के बायें पैर—इस प्रकार आगे बढ़ने वाली चंचल संख्या।

भाग्य से घड़ी पर कोई खरोंच नहीं लगी।

जे. ने सिर उठाकर देखा तो लगा कि वह एम. ही हैं, दर्पण का प्रतिबिंब नहीं।

"एम. हो न ?"

"हां; जे. !"

"कैसे पहचाना ?"

"कई लोग मुझे ही जे. समझते हैं।"

जे. की जेब पर उसकी ललचाई नज़र पड़ी। जेब में मुरझाया पीला-सा दस पैसे का एक बस टिकट अकेला पड़ा था।

जे. ने औपचारिकता से पूछा, "क्या करते हो ?"

एम. हंसते हुए बोला, "यों ही दिन काटता हूं।" फिर बड़ी मित्रता के अंदाज से हाथ पकड़ लिया।

"कोई नौकरी ?"

एम. ने कहा, "कोई खास काम नहीं। दूसरों की मदद करके यों ही समय बिताता हूं।"

जे. ने कहा, "यह तो मैं पहले ही समझ गया था, (बेशरम कुत्ता)।"

जे. अविवाहित है। फिर भी कठिनाइयो और झंझटों का बोझ उस पर है। कम वेतन पाता है। छोटी रकम के मनिआर्डरों की कई रसीदें उसके पास जमा हैं। अपने घर की जिम्मेदारियां संभालने का अभिमान करता है। किसी से अपना परिचय देते समय अपनी जिम्मेदारियों का हवाला भी देगा।

"अरे, देखो मैं अपने कंधे पर पूरा घर ढोता हूं। देखते हो न ?"

एम. को दिखाया।

एम. उसको वहीं छोड़कर चला गया।

आगे फिर मिलते समय तक एम. लखपती हो गया होगा।

विजय ऐसे लोगों की ही होती है। दुष्टता और कुकर्मों की मजदूरी दिलानेवाला जमाना।

रविवार दिन भर पार्क में घूमता रहा। थक जाने पर धोती उतार दी और

तलाब में उतर कर हाथ पैर उछाल-उछाल कर तैरने लगा। नाक में पानी चढ़ गया। कान बंद हो गये।

पानी की गहराई तक जाकर डुबकी लेने के बाद बाहर आया पानी के तल पर लेटे हुए ऊपर से चमकती हुई सूरज की किरणों को देखा। पलकों पर पानी के बुदबुदों की झलक देखकर बहुत खुश हुआ।

शरीर पोंछा। ठंडी हवा के झोंके लगे। जिंदगी एक बुलबुला मात्र है, ऐसा सोचते हुए चलने लगा, तभी एक बालक दौड़कर आया और उसे एक चिट्ठी दी।

"क्या प्रेम वह रात हैं जो अश्लील पुस्तकों में चित्रित चार आसनों में समा जाती है ?"

मुड़कर देखा तो वह बालक गायब हो गया था। औरत की चिट्ठी। "तुम कहा करते थे कि हर एक नयी लड़की नये टुथपेस्ट के शौक की तरह है। लेकिन मैंने कभी यह सोचा तक न था कि तुम अपनी बातों को अमल में लाओगे दुष्ट।"

एम. दुष्ट है। उसने चिट्ठी के जंत में यह भी लिखा था कि वह मर जायेगी।

"गुरुवार सवेरे दस बजे सेनिटोरियम के सामने के बस स्टाप पर आओगे ?"

जे. ने गुरुवार की छुट्टी ली। निश्चित स्थान पर पहुंचा। अंदर की ओर सिकुड़ी पीठ और मैले ताश के पत्ते जैसी छाती, मीठी उम्रवाली प्रेत-सी एक स्त्री ठीक समय पर सेनिटोरियम से बाहर आयी।

"तुम्हारे साथ कहीं आऊं तो (चाहे होटल में ही या किसी नरक में हो) सिर्फ तुम्हारी ही प्रतीक्षा होगी। दोस्ती का बहाना। बहुत पैसा मिला होगा न ?" वह रोयी। तुम पर भरोसा करने से मैंने धोखा खाया। तुम मेरी जिंदगी को थोड़ा-थोड़ा करके खा रहे थे। अब, अंत में ऐसा भी हुआ।"

जे. फुसफुसाया, "मैं एम. नहीं हूं।"

सड़क पर सामने से आयी हवा में एक आत्मा को अदृश्य होते देखा।

इतने में उस सड़क से एक मोटर गाड़ी गुजरी। उसके सामने की सीट पर जे. ने अपना प्रतिरूप देखा। फिर कई गाड़ियों में कभी न हंसने वाले अपने को हंसते हुए देखा। एक दोपहर को एयरपोर्ट की ओर जानेवाली बस में बैठे होशियार एम. ने बेचारे मुझ (जे.) को देखकर हाथ हिलाया।

जे. मन ही मन दुखी हुआ।

वह मंदिर गया। भगवान से पूछा कि सिर्फ एम. का रूपाकार देकर उसका भाग्य भी मुझे क्यों न दिया।

फिर क्या मिला।

"मिलिटरी कैंटीन से रम देने का वादा करके पैसा लेने के बाद अब छिपा फिरता है?"

"मैं जे. हूं।"

"कर्ज़ लेने पर उसको चुकाना भी पड़ता है। तलाशी लेते समय बेहोशी का बहाना बनाकर लेटे तो मैं तुम्हारी हत्या कर दूंगा। रास्कल।"

"मैं जे. हूं मिस्टर।"

तुम्हारे ब्लड (रक्त) का रिजल्ट आ गया। पोज़िटिव है। जल्दी से कुछ न कुछ करना होगा।

"मैं जे. हूं एम. नहीं।"

कहला भेजा है कि दीदी मर जायेगी।"

"लेकिन मैं एम. नहीं हूं जे. हूं।"

"आगे मैं इसको छिपाकर नहीं रख सकती। अभी सहेलियों का शक है। एक महीने बाद तो······?"

"मैं जे. हूं। यह चिट्ठी मेरे लिये नहीं।"

"उस दिन के वादे का सोना।"

"हाय, मैं जे. हूं, मैं जे. हूं।"

मुझे हराकर मेरा हमशक्ल अमीर बन गया होगा। उसने मोटरगाड़ी खरीदी होगी। वह रोटरी क्लब में भाषण देता होगा। होटल के कमरों में कं करते, कालेज की लड़कियों को आर्थिक सहायता देते, और ढीला वस्त्र पहने, सभी से नम्रता से बोलता होगा।

जे. को ईर्ष्या हुई।

परिचित व्यक्तियों के सामने भी सिर झुकाये चलने वाला आदमी मूर्ख बन गया।

कोई भी व्यक्ति एक शहर में जितने वर्ष चाहे, रह सकता है। बस इतना ही होता है कि दस वर्ष तक लगातार रहने पर वह उस शहर की ऐतिहासिक वस्तु बन जाता है। यह कैसे? दीमक उसकी पीठ के छिलकों को ले जाता है। मकड़ी उस आदमी की आंख और कान पर जाला बुन देती है। आते समय खरीदी पैंट

उस दिन भी कायम रहती है। फटी पुरानी और पैबंद लगी पैंट।

तुमने जो कहा वह ठीक है। काफी हाउस के सामने एकत्र, अभी पैदा हुए नये कीड़े। जे. जा रहा था तब उसने बताया—"पंद्रह वर्ष के पहले का फैशन।"

अनुसंधान में लगे विद्यार्थियों ने ध्यान लगाकर पढ़ा कि ऐतिहासिक वस्तु के कंघी करने और आस्तीन को लपेटकर रखने की रीति, जूते आदि के फैशन में क्या क्या परिवर्तन आये हैं। उन सबके बारे में विस्तृत नोट्स भी लिख डाले। जे. को एक और बार एम. का सामना करना पड़ा। अपने चेहरे की वही प्रतिछाया। ऐसा लगता है कि समय सबके लिए एक ही ढंग से बीत जाता है। पांच मिनट का अंतर चेहरे की झुर्रियों पर नहीं दिखता। दोनों व्यक्ति एक समान।

एम. लखपति हो गया होगा। जे. ने सोचा।

एम. पास आया। "तुम को देखे बहुत दिन हो गये।"

"बिलकुल ठीक है।"

घोड़े की लीद पीसकर धुली हुई सड़कों पर पथिकों का थूक सूख गया। जिंदगी! केवल बुलबुले के समान है। एम. ने उसके ऊपर थूका। खून मिश्रित, बदबू भरी थूक ने सड़क को गीला कर दिया। अनफूटे बुलबुलों पर लाल रंग फैल गया।

एम. ने पूछा, "शादी हुई क्या ?"

"कहां ? जिम्मेदारियों और कठिनाइयों से सारा जीवन भरा है, अभी संदेह है कि एक क्षण के लिए भी सुख चैन की जिंदगी होगी भी या नहीं। जाने दो वो बातें। खैर तुम्हारी जिंदगी कैसी बीत रही है ?"

"मुसीबत ही मुसीबत।"

जे. ने आकांक्षा से पूछा, "करोड़पति तो बन गये होगे ?"

"कौन ?"

मैंने सोचा...

अरे, वह सिसक-सिसककर रोया। उसकी जेब का निचला भाग फटा हुआ था आंखों में जाला दिखायी पड़ा। उस पर मकड़ी के बच्चे रेंग रहे थे।

कभी-कभी सफेद मूंछ से नाक से निकलता सिशांक चाटता रहा।

जे. को डर लगा। एम. ने मांगा।

"पच्चीस पैसे की जरूरत है। दोगे ?"

भय दूर हुआ। सहानुभूति हुई।

उसके पास कुल जो उन्नीस पैसे थे, वे एम. को दिये।

जे. ने कहा, "मैंने सोचा था कि…"

"तुम अच्छी आय कर लेते थे।"

"यह सब गलत है। हम सबके अभिभावक सर्वसाधारणजन हैं। जे.! फिर कैसे अधिक आय कर लेते?"

"पुराने काम-काज…"

"क्या तुम समझते हो छोड़ दिया? वे अब मेरी जिंदगी है। जिंदगी की आशा हैं।"

जे. ने उन्नीस पैसे दिये, एम. ने उसका शुक्रिया अदा किया। फिर आगे बढ़ गया। छलते समय आंखों में मकड़ी के बच्चे दौड़ रहे थे। आंखें भूख और प्यास से पहले जैसी नग्न नृत्य करती रहीं।

जे. ने भी भीतर की ओर देखकर आवाज दी "तेरे जैसे एक व्यक्ति" तुझसा एक व्यक्ति जो अविवाहित और दस पंद्रह इंक्रिमेंट पाया एक सरकारी कर्मचारी है। चार आंखों में एक ही तरह के मकड़े।

दोनों नाकों में एक ही तरह के सिशांक का स्रोत।

ज़िंदगी में पहले पहल जे. को एक आवेग की अनुभूति हुई। वह रोक नहीं पा रहा है। किसी को यह बात बताना चाह रहा है।

17. तिलचट्टे

सवेरे वह रसोईघर में कॉफी बना रही थी। तभी उसकी नजर तिलचट्टे पर पड़ी। मेज के एक किनारे पर थोड़ी देर तक किर-किर की आवाज करते हुए डरावने ढंग से वे उसे घूरते रहे और फिर मेज की दूसरी तरफ गायब हो गये।

वह कॉफी लेकर शयनागार की ओर गयी। पति अब तक जागा नहीं था। स्विच आन करने पर आंखों को अच्छी लगनेवाली मंद रोशनी कमरे में फैलने लगी। खाट पर बैठकर कॉफी के लिए हाथ बढ़ाते हुए उसे देखकर मुस्कराया।

वह चुपचाप खड़ी होकर उसे उदासीन भाव से कॉफी पीते देखती रही। उसने सोचा रोज के उन्हीं कामों से उसका मन ऊबने लगा है। जब-जब वह अपने पति का पीला मुख और अधपके बाल देखती थी तब-तब उसे सहानुभूति होने लगती। केवल इसी सहानुभूति ने उसे झगड़ालू बनने से रोक रखा था।

वह दालान से होकर खाली प्याला लिए लौट रही थी तब उसे सूझा कि डिस्टेंबर की हुई दीवार पर एक काला छोटा जीव चुपके से रेंग रहा है। उसे देखने की इच्छा हुई पर सहज प्रेरणा वश वह बिना रुके आगे बढ़ गयी।

रसोईघर में अब बहुत से तिलचट्टे थे जो किरकिराहट फैलाते हुए मेज और दीवार पर रेंग रहे थे। जैसे ही वह रसोईघर मे घुसी एक दो तिलचट्टे उड़कर उसके सिर पर बैठ गये। उसने उन्हें हाथ से दूर करने की चेष्टा की। पर तिलचट्टे इतने अधिक थे कि उसे ही पीछे हटना पड़ा। इनके बारे में पति को बताने की इच्छा हुई।

पर शयनागार में पति न जाने किससे लड़ रहा था। किससे लड़ रहा था। यह उसे तभी मालूम हुआ जब लड़ते-लड़ते वह चिल्ला उठा, 'तिलचट्टे'। यह एक

तिलचट्टे को समाचार पत्र मोड़कर मार रहा था। पर तिलचट्टे उसे धोखा देकर उड़ गये।

उसने कहना चाहा कि इससे कोई फायदा नहीं। रसोईघर में कम-से-कम सौ तिलचट्टे होंगे। पर उसने कुछ कहा नहीं। वह अपने पति को मरे तिलचट्टे को कागज पर उठाकर खिड़की से बाहर फेंकते देखती रही।

वह हांफता हुआ बोला "यह कैसी अनोखी बात है। इस फ्लैट में अभी तक एक भी तिलचट्टा नही दिखता था। अब देखो तो···।"

उसने अब तक शायद यह भी नहीं सोचा होगा कि इस फ्लैट में तिलचट्टे हैं भी या नहीं। पड़ोस में बहुत से उसके परिचित लोग हैं पर किसीने अब तक तिलचट्टों के बारे में शिकायत नहीं की थी।

वह रसोई की ओर लौट गयी। आठ बजे के पहले पति के लिए नाश्ता तैयार करना था। तभी साढ़े आठ बजे वे ट्राम पकड़ सकेंगे। डलहौजी स्क्वायर के दफ्तर नौ बजे तक पहुंचना पड़ता है। उसे एक तरकीब सूझी। मैं उनसे निपट लूंगी। बाजार जाते समय थोड़ा तिलचट्टा विष खरीदूंगी।

बाजार अधिक दूर नहीं था। दक्षिण एवेन्यू से होकर चलते समय तिलचट्टों ने उसे तंग नहीं किया।

वह एक दूसरी विशेष बात के संबंध में सोच रही थी—शाम को डाक्टर से मिलने की बात।

"यह बहुत ही आसान है" पति की ऐसी संदेह भरी बात उसे याद आयी। "बहुत आसान सिर्फ एक इंजेक्शन। जरा भी दर्द नहीं होगा, विश्वास करो, जरा भी दर्द नहीं···।"

पहले उसने उस प्रस्ताव का विरोध किया। इस सुखद भार को वहन करने का अपना जो नैसर्गिक हक है, उसकी रक्षा के लिए उसने आवेग के साथ अपने पति का विरोध किया।

तब पति ने ऐसा निर्णय लेने के लिए बाध्य करनेवाली आर्थिक परिस्थितियों का उल्लेख किया। अभी दो बच्चों का पालन-पोषण करना है। उन्हें शिक्षा देनी है। लड़की बड़ी है। उसे बेसिक शिक्षा देना काफी है, पर लड़के को उच्च तकनीकी शिक्षा ही देनी होगी। उसने यह भी कहा "नौकरी का मार्किट बहुत टाइट है। लड़के को अच्छी शिक्षा न मिली तो उसका भविष्य नष्ट हो जायेगा।"

इसके अलावा, दूसरे भी कई खर्च हैं। घर का किराया, बिजली, धोबी आदि। बुढ़िया नौकरानी को भी वेतन देना है। कलकत्ता जैसे शहर में गुजारा करना कठिन ही है। वह इसी निष्कर्ष पर पहुंची कि उसे अपनी सहमति देनी ही होगी। परंतु यह कार्य बहुत पीड़ादायक था।

अपनी कोख में बढ़नेवाले जीव के बारे में सोचते वह दुख विह्वल हो गयी। यहां अस्तित्व की समस्या है। जिनका जन्म हो गया है, उनके जीवन निर्वाह की समस्या। उनके बीच में नया जन्म लेकर आनेवाली को रोकने का विचार मात्र ही घृणित था। पर सहना ही पड़ेगा।

उसे अपने बच्चों की याद आ गयी। अच्छा हुआ कि गर्मी की छुट्टी में बच्चों को मायके भेज दिया था। उनकी अनुपस्थिति में वह मसोसती रहती है, पर समझती है कि वे वहीं बेहतर हैं। उनको अभी यहां लाना ठीक नहीं। मामा के यहां उनको यहां की अपेक्षा अधिक सुख-सुविधाएं होंगी।

बाजार में अधिक भीड़ नहीं थी। ताजी सब्जियों की गंध हवा में फैल रही थी। पर उसका मन बच्चों और डाक्टर से मिलने के लिए मचल रहा था। बाहर आयी तो गली में बहुत लोग इकट्ठे थे। वे लंबे लाल बेनर पकड़े चल रहे थे। सभी बेनर बंगला भाषा में लिखे होने के कारण वह उसको पढ़ नहीं सकी। वे ऊंची आवाज में नारे लगाते हुए अपने हाथ आकाश की ओर उठा रहे थे। अचानक उसे अपनी रसोई में घुसे तिलचट्टे याद आ गये।

कुछ देर के लिए वह तिलचट्टे को भूल गयी थी।

दवा की दुकान पास ही थी। काउंटर पर बैठे बालक से, जो आलसी दिख पड़ा, उसने तिलचट्टे का विष मांगा। पर अंग्रेजी में पूछने के कारण, वह समझ नहीं सका।

"जी नहीं," उसने कहा, "यहां नहीं है।" फिर उसके चेहरे के अद्भुत भाव को देखकर उस लड़के ने कहा, "ठहरो।"

वह वहीं ठहरी रही। लड़के ने काउंटर पर जाकर लंबे-पतले आदमी से धीमी आवाज में कुछ कहा। उस लंबे आदमी ने काउंटर पर आकर पूछा, "काकरोच का पाउडर ही चाहिए न ?"

उसने स्वीकृति में सिर हिलाया। उसने एक शीशे की अलमारी से एक लाल पैकेट लेकर उसे दिया। साथ ही इस्तेमाल करने की रीति भी बताने लगा। "मुझे

मालूम है।" कहकर उसने उसकी वाकधारा को रोक दिया। फिर भी, उस पर ध्यान दिये बिना वह आदमी कहता रहा। तो उसने कहा, "शुक्रिया।"

उसने एक ताकीद के साथ अपना भाषण खत्म किया, "वह विष है, समझ लिया ? भयंकर विष।"

शाम को डाक्टर ने इंजेक्शन दिया तब उसने ये ही शब्द एक बेचैनी से स्मरण किये। डाक्टर एक मोटी औरत थी। उन्होंने उसके बच्चों के बारे में पूछा।

"दोनों बच्चे स्कूल जाते हैं, यहीं बताया था न ?"

"जी हां" उसे एकाएक ऐसा लगा जैसे एक पतली सुई उसके शरीर में चुभ रही है।

लेडी डाक्टर ने कहा, "कोई बात नहीं, घबराओ मत।"

वह एक टैक्सी में घर वापस आयी। रास्ते में कोई दिक्कत नहीं हुई। परंतु वह बहुत व्यग्र हो गयी। उसने कांपते हाथों से अपना निचला पेट सहलाया। उसकी छाती एकदम सिसकी से भर गयी। दम घुटने लगा। उसकी इच्छा हुई कि एकांत में बैठकर देर तक रोती रहे। वह सोचने लगी कि कितना अच्छा होता यदि पति को भी पश्चाताप होता। पर उसके चेहरे पर पश्चाताप के चिह्न तक नहीं थे। वह बाहर की ओर ताक रहा था।

शयनागार के स्पष्ट प्रकाश में उसका मुख पीला और थका हुआ दिख रहा था। पति डर गया।

"तुझे क्या हुआ ?"

उसने कहा, "कुछ नहीं, सिर में दर्द है। सेरिडान ले लूंगी।"

वह चारपाई पर लेट गयी। पति बहुत घबराया हुआ था। उसका अंतःकरण उसे सता रहा था। उसने सोचा, यह एक प्रकार का अपराधी ही तो है, पर वह ऐसा करने के लिए बाध्य है, दूसरा कोई उपाय भी तो नहीं। जीवन को यदि खुशी के साथ निर्वाह करना है तो इस दुखद स्थिति को झेलना ही होगा। इस भयानक स्वप्न की स्मृतियां कल तक फीकी पड़ जायेंगी। तभी शांति मिल सकेगी।

उसने सोचा, 'बच्चे को अब लिवा लाना चाहिए। उन्हें देखे बिना रहा नहीं जाता। ये पंद्रह दिन कितने लंबे हो गये हैं। यह एकाकीपन जैसे मुझे काट खाने को दौड़ रहा है।'

डाक्टर के पास जाने के पहले ही उसने खाना तैयार कर लिया। बस परोस कर खाना ही था। भोजन करने पर उसे जरा चैन आया। लाल चूर्ण कार्डबोर्ड के टुकड़ों में छोटी-छोटी ढेरी बनाकर हर कोने में रखते पति को वह देखती रही। रसोई में टिन के डिब्बों के ढकनों पर तिलचट्टों की किरकिराहट तथा उनके फर्श पर गिरने की आवाजें उसे सुनायी देने लगीं।

इधर-उधर भागकर बचने का प्रयास। मृत्यु की कराह! वह तिलचट्टों के बारे में सोचने लगी।

वह शयनागार में पहुंची तो पति लेटा हुआ था। बत्ती बुझाकर वह चारपाई पर लेट गयी।

गली के बल्ब की रोशनी खिड़की से होकर अंदर सरक आयी। उसने देखा पति अभी सोया नहीं था। उसने करवट बदल कर उसे बाहुपाश में भर लिया था।

"अब कैसी हो?"

उसने कहा, "अच्छी हूं, अब कोई बेचैनी नहीं।"

उसने उसकी पीठ पर प्यार के साथ हाथ फेरते हुए गालों को चूम लिया।

"कल तक तुम बिलकुल स्वस्थ हो जाओगी।"

वास्तव में वह अपने पति से ऐसा एक विश्वासप्रद वाक्य सुनने के लिए तरसती रहती थी। उसे प्रसन्नता हुई।

उसको लगा कि उसका आलिंगन धीरे-धीरे ढीला हो रहा है। उसकी सांस संतुलित हो गयी। कुछ ही क्षणों में वह गहरी नीद में डूब गया। कुछ देर तक उसने अपना ध्यान टाइमपीस की टिक-टिक पर लगाये रखा और फिर बाहर गली में एक गाड़ी को दूर जाती हुई फट-फट की आवाज पर।

इस बीच में उसने देखा कि वे काले जीव उड़ते आ रहे हैं—तिलचट्टे वे हजारों थे। तिलचट्टे एक जुलूस का संचालन कर रहे थे। जुलूस गली में एकत्रित हुआ। वे जोर से नारे लगा रहे थे और क्षुब्ध होकर इधर-उधर उड़ रहे थे। उसका आश्चर्य तब और बढ़ गया जब उसकी दृष्टि तिलचट्टों के हाथों में उठाये हुए, बेनरों पर पड़ी।

उसने सोचा मैं पागल हो जाऊंगी। जुलूस अधिक क्षुब्ध हो उठा। कुछ तिलचट्टे उसकी ओर उड़ आये। उसे लगा जैसे कोई हवाई हमला हो गया। वह चिल्लाती हुई जाग गयी। तब उसको पता चला कि यह केवल स्वप्न था उसे।

खुशी हुई। वह अपने पति से लिपट कर लेट गयी। नींद से पलकें भारी हो गयीं।

सुबह वह बहुत देर तक सोती रही। जागने पर देखा कि सूरज की किरणें कमरे के अंदर चुपचाप घुस रही थीं। उसने ज़मीन पर तिलचट्टों को देखा। मरे पड़े तिलचट्टे। तब जाड़ों में पेड़ों पर से झड़ते करोल के बारे में, वर्षों पहले चल बसी अपनी मां के बारे में, बच्चों के बारे में और जीवित रहने के हक से वंचित उस नये जीव के बारे में उसने सोचा।

वह उदास हो गयी।

18. स्वप्न

मैंने दरवाजा खोला। अंदर घुसा। मैंने उसे पुकारा पर वह चुपचाप लेटी रही। एक बार और पुकारा, फिर भी नहीं उठी। इसलिए मैं बाहर चला आया।

टैक्सी ड्राइवर से कहा, "तुम जा सकते हो।" वह निराश होकर वापस चला गया।

तंकम को क्या हुआ। नौ बज गये फिर भी वह नहीं उठी। कल रात कहा था कि सवेरे ही डाक्टर के पास जाना है। मैंने सोचा कि इतने में टैक्सी लेकर आऊंगा तैयार मिलेगी। रात सोयी न होगी। फिर किसी दूसरे दिन उसे डाक्टर के पास ले जाऊं।

कल आधी रात बीतने पर भी तंकमणि को नीद न आयी। वह लेटी-लेटी अपने आपको कोसती रही। पैदा न हुई होती तो अच्छा था···पर अब इस आकांक्षा से क्या लाभ ? जन्म तो हो ही चुका है। जब से होश संभाले तब ही से वह ऐसी सोचती रहती। "इस रात को ही मर जाय तो···" नही तो कल सवेरे डाक्टर के पास जाने पर सारा गुल खिलेगा। गुप्त बातें प्रकट हो जायेंगी।

पति उसे छोड़ देंगे।

फिर क्या होगा ?

कुछ भी सोच नहीं पायी।

पड़ी-पड़ी करवटें बदलती रही। स्मृतियां जागृत होती रहीं।

स्कूल में पढ़ते समय उसे घमंड था। काफी संपत्ति है। काफी गहनें हैं। अपनी सब सहेलियां गरीब हैं। वे उसे काली कलूटी और नाटी कहती थीं। तब वह गुस्से में आकर गालियां देती थी। जब सब कुछ समझ में आया तब उसने हार मान ली।

वह काली है, नाटी है, बदसूरत है। इसलिए कोई भी लड़का उसे देखता तक नहीं।

सहेलियों के साथ चलते समय सब लड़के दूसरों की ओर ताकते हैं। क्या पुरुष को काले रंग के प्रति इतनी घृणा है? नाटी है, कुरूप है, फिर भी एक बार देखने में क्या नुकसान है? जिंदगी में किसी से एक चितवन भी न मिली।

सभी सहेलियों से ईर्ष्या होती थी। खासकर रमा से। उसके पास न बढ़िया कपड़े हैं, न आभूषण। फिर भी लड़के उसे सुंदरी मानते हैं। उसकी ओर ताकते हैं, गाते हैं, मौज उड़ाते हैं। इन सबसे उसको घृणा थी। पुरुषों और सुंदर औरतों के प्रति एक प्रकार की घृणा।

रंग गोरा न होने के कारण उसे बड़ा दुख होता था। ऊंचाई और सौंदर्य की कमी होते हुए भी घरवालों का दिया हुआ नाम जानते हैं? तंकमणि। और 'तंकम' (शुद्ध सोना), कैसा सुंदर नाम है। खैर, जिन लड़कों ने अभी तक न देखा है, उन्हें धोखा देना सरल है, इतना ही।

स्कूल की पढ़ाई के दिनों, आइने के सामने कितने ही घंटे बिताया करती थी। खूब पाउडर लगाया करती, 'लेक्टोक्लामिन' थोपती। मालायें बदल-बदल कर पहनती। कानों में कभी वृत्ताकार कर्णफूल, कभी तारे जैसे और कभी लटकते बुंदे।

खूब लंबे बाल थे, यह अच्छा ही था क्योंकि और कुछ न सही, जूड़ा बना सकती थी। ऊंची एड़ी का जूता पहना करती थी। ताकि कद में ऊंची दिखे।

इतना सब करते हुए भी वह संतुष्ट नहीं थी। इन सबसे कोई फायदा नजर नहीं आता।

वह जितनी ही साज सज्जा करती थी, उतनी ही कुरूप लगती थी। सहेलियां केवल तमाशे के लिए उसकी हंसी उड़ाती थीं। "काली", "नाटी" कहकर पुकारना कैसे तमाशा नहीं बन सकता? उनके कथन में भी सच्चाई है न? वह काली है, नाटी है, कुरूप है। नाम तंकमणि है। ये सब सच है न?

आखिर मन बैठ गया। सब अलंकार छोड़ दिये। स्त्रियों के पास चाहे संपत्ति न हो, पर सौंदर्य होना जरूरी है। घर की नौकरानी माधवी भी मुझसे गोरी है और सुंदर भी है। उसकी उम्र पैंतीस साल है तब भी सौंदर्य फीका नहीं पड़ा।

कोई भी उसकी ओर देखेगा। तब तो वह माधवी से भी···

दसवां दर्जा उत्तीर्ण कर लेने पर पिता ने कहा, "बेटी! तुम्हें अब पढ़ाना नहीं

है—परीक्षा पास करके नौकरी करना गुजारे के लिए आवश्यक भी तो नहीं।"

इस बात से उसे संतोष हुआ कि चलो अब पढ़ाई खतम हुई। वह सुख से घर पर रहेगी। सहेलियों की शादी के निमंत्रण पत्र मिलते रहे। किसी के यहां नहीं गयी। किसी को भी बधाई नहीं दी। पहले भी किसी से ज्यादा बातें करने की आदत नहीं थी, खासकर पुरुषों से। पड़ोस के घरों में भी नहीं जाती थी। एकांत प्रिय थी। भाई-बहन थे नहीं। घर के कामों में लगा रहना भी जरूरी नहीं था।

बाप वातरोग से पीड़ित थे। घर के कार्यों का संचालन मां की ही देखरेख में होता। इन हालात में उसके एकाकी जीवन व्यतीत करने में कोई विघ्न पड़ता ही न था।

एक रात की नींद में एक स्वप्न से वह चौंक पड़ी। एक पुरुष ने उससे शादी कर ली है। कुछ समय बाद उसको पता चला कि वह बांझ है, तब उसने उसे छोड़ भी दिया।

भयानक स्वप्न। वह एक चीख के साथ जाग उठी। अंधकार में वह टटोलती रही—भागते पति को रोके रखने के लिए।

ऐसा दर्दनाक स्वप्न देखकर फिर उस रात को उसे नींद नहीं आयी। वह सोच में पड़ी रही।

एक पुरुष का उससे विवाह करना कितनी खुशी की बात थी। पर कुछ वर्षों के बाद छोड़ देना···यह जानने पर कि वह बांझ है। ओह ! क्या वास्तव में वह बांझ है ?

स्वप्न कभी-कभी यथार्थ बन सकता है न ? स्वप्न में भी कभी-कभी सच्चाई होती है।

तब उसके जीवन का क्या होगा ?

वंश परंपरा उसके साथ खतम हो जायेगी।

वह पीढ़ी की आखिरी कड़ी बनेगी।

उसने चिंतित मन से प्रार्थना की "मेरे गुरुवायूरप्पा[1] ! मेरी रक्षा करना।"

मन में हमेशा एक ही चिंता रहती है। वह बांझ है। वह उसी स्वप्न की चिंता

---

1. गुरुवायूरप्पा—केरल के सबसे प्रसिद्ध मंदिर गुरुवायूर में प्रतिष्ठित भगवान महाविष्णु की मूर्ति।

में समय बिताती नहीं। यह सोचकर उसको कुछ संतोष होता था कि उसे कम-से-कम एकांत का सुख तो है।

पुरुषों के प्रति घृणा होने लगी। उनसे कोई लगाव न रहा। बात करने को भी जी नहीं चाहता था। कितनी बार नौकर के पूछने पर ही वह जवाब देती थी।

उसकी आकांक्षाएं भी अनेक थीं। वह भी एक स्त्री है न ? दुनिया और दुनिया वालों के प्रति अवहेलना भाव। जिंदगी के प्रति अनमना भाव।

विचारों की अनंत नदी पर बांध बांधने और उसकी गति रोकने का प्रयास करती है फलस्वरूप उसका प्रवाह उसी में लीन होकर समाप्त हो जाता है। आंखें बंदकर सिर झुका लेती, तब वह दुखद स्वप्न फिर स्मृति में आता है—पति की परित्यक्ता, अनाथ एक बांझ। परंपरा को आगे बढ़ाने में असमर्थ स्त्री; स्मरण करते समय पीड़ा का ऐसा अनुभव होता है कि वह पीड़ा में पूर्णरूप से गल-गलकर पीड़ामात्र बन जाती है।

उस समय सब कहीं अंधकार हो जाता। केवल अंधकार और पीड़ा। वह पीड़ा बन रही है। अंलकार बन रही है। फिर मानव के रूप में बदलती है। तभी कठिनाई अनुभव करती है।

अंधकार मात्र बन जाती, पीड़ा मात्र बन जाती तो उसे उनकी अनुभूति नहीं होती।

एकांत में विलीन हो जाने में सुख है। सब कहीं सूनापन है न ? वहां वह भी सूनी बन जाती है। वह एक प्रकार का निर्वाण है। वह स्वयं भूलकर शून्य बनती है। अंधकार बनती है, फिर मानव के रूप में बदल जाती है। इस प्रकार पीड़ा तन और मन को खा रही है।

मां-बाप को दुख का अनुभव होने लगा। लाडली बेटी क्यों इस प्रकार सूखती जा रही है। आने-जानेवालों ने कहा, "शादी न होने की वजह से वह सूखती जा रही है।"

ओह इसका कारण शादी न होना है। तब उसका क्या हाल हो जायेगा। उसके तप्त मन का हाल किसको मालूम है।

पिता के बार-बार अनुरोध करने से एक डाक्टर के पास गयी। वे एक साइकैं-आट्रिस्ट थे। उसने डाक्टर को दिल खोलकर सब कुछ बताया। उसने स्वप्न की

बात का भी वर्णन किया। उन्होंने उसके मन की तह की बात जान ली। विस्तृत 'मेडिकल चेकअप' भी किया गया। उसके बाद उन्होंने कहा, "मानसिक दुख ही शारीरिक कमजोरी का कारण है। ऐसी-वैसी बातें सोचकर मन को व्यथित नहीं करना चाहिए।"

एक टॉनिक का नुसखा लिख दिया और कहा, "एक डाक्टर के नाते मैं तुम्हें एक स्पष्ट सुझाव देता हूं। बुरा मत मानना। तुम शादी कभी न करना।"

उन्होंने और जो कुछ कहा, वह सब कुछ पूरा सुन नहीं सकी। उसे चक्कर आ गया।

घर पहुंची और घर जाकर सबसे यही बताया कि मानसिक दुख ही शारीरिक कमजोरी का कारण है। शादी न करने का सुझाव किसी को नही बताया। उसने सोचा कि वह रहस्य कोई भी न जाने। वह उसी के हृदय में रहे, जलकर धुआं बने। इससे तो मर जाना ही अच्छा होगा।

टॉनिक और दवाओं से अलमारी भर गयी। वह कोई दवा लेती ही नही थी। मन की पीड़ा घनीभूत होती गयी। वह एकाकी बैठे जल-जलकर राख होती रही। स्वप्न यथार्थ बन गया। ऐसा स्वप्न जिसने जिंदगी को रौंद डाला, ऐसा स्वप्न जो रौंदता रहता है, ऐसा स्वप्न जिसने मानसिक शांति का गला घोंट डाला, ऐसा स्वप्न जिसने मुझे समझा दिया कि वंश को आगे बढ़ाने की क्षमता मुझ में नही है। काश ! मैं स्वप्न न देखती।

एक दिन मां ने देख लिया कि मैं गिलास में टॉनिक लेकर छिपे-छिपे आगन में फेंक रही हूं।

"बिटिया, तू क्यों इस प्रकार दवाइयां फेंक देती है। उसे लेने से ही तुझे लाभ होगा।"

फिर मां के अनुरोध पर दवाइयां लेनी पड़ी। मा पास बैठ कर पिलाने लगी।

वर्षों से बीमार पड़े पिता की तबीयत दिनोदिन खराब होती गयी। परंतु उसका शरीर स्वस्थ होने लगा। माता की सेवा और लगन से ही ऐसा हुआ होगा। टॉनिक स्वास्थ्यवर्धक होते हैं।

उसके मन में अंधकार और संघर्ष है। वह प्रकाश की कामना करती है। उसके लिए तरसती भी है। लेकिन इन सबके लिए वह योग्य नहीं।

आखिर अंधकार की ही जीत होती है। भूमि पर प्रकाश फैलता है पर वह प्रकाश मन को उद्दीप्त नहीं करता।

जैसे काले बादल सूरज को निगल लेते हैं वैसे अंधकार प्रकाश को।

वह कई रूपों में बदलती है। पीड़ा, शून्यता, और अंधकार। बाप की मजबूरी असह्य हो गयी। इकलौती बेटी है। मरने से पहले शादी देखने का उनका मोह। अब बीमारी से मुक्त होकर स्वस्थ हुई। वह आंसू पीकर रह जाती है कि वह स्वस्थ क्यों हुई।

मां तैयारी करने लगी कि पिताजी की आशा की पूर्ति करनी है। उसमें भी आशा की नयी-लयी कोपलें फूटने लगीं। पर वह जानबूझकर एक पुरुष को कैसे धोखा देगी।

सच बात बताऊं तो ? मां और बाप चिंता और रोग से मर जायेंगे।

बाप फिर भी मजबूर कर रहे हैं। एक दिन पास बुलाकर सहलाते हुए बोले, "बिटिया, मरने के पहले मुझे तेरी शादी करनी है। मेरी कोई और बेटी भी नहीं जिसकी शादी देख सकूं।"

उसने कुछ भी नहीं कहा, खामोश रही।

फिर भी अंत में मां बाप के आग्रह के सामने नत मस्तक होना पड़ा। मन के भीतर संघर्ष था।

लड़का लड़की देखने आया जब उसके सामने आयी तो सिर चकराने लगा। पर वह समय किसी न किसी प्रकार ठीक से गुजर गया।

विवाह का निश्चय हुआ। शादी का दिन आया। लड़के ने जब मंगलसूत्र बांधा तब फिर सिर चकराने लगा। मन में अंतर्द्वंद्व हुआ।

उसने सोचा कि यदि वह सत्य को छिपायेगी, गलती करेगी, धोखा देगी।

एक बार और सत्य की हार हुई। भाभी पीछे से उसे पकड़े रही ताकि मंगल-सूत्र बांधते समय वह गिर न पड़े। जो अनिष्ट होने वाला था वह उससे बच गयी।

प्रथम रात वह शयनागार में जाकर चारपाई पर चुपचाप बैठ गयी। पति कुरसी पर प्रतीक्षा में बैठा रहा। दोनों बहुत देर तक चुप रहे। अंत में उन्होंने पुकारा :

"तकंम···"

वह कुछ न बोली।

एक बार फिर पुकारा। वह बैठी नीचे की ओर देखती रही। वे पास आये। उन्होंने उसके शरीर का ऐसा स्पर्श किया मानो कोई फूल को छू रहा हो। फिर भी स्तब्ध सी बैठी रही। उनकी आशाओं पर पानी फिर गया।

मन का संघर्ष कम न हुआ। उसने दिल में सोचा कि गलती की है किंतु सच्चाई कुछ देर के लिए हार गयी और मन के विकार उस पर हावी हो गये।

हफ्ते और महीने बीतते गये। मातृत्व से परिपूर्ण स्त्रियों और गर्भिणियों के प्रति उसे घृणा होने लगी।

उसकी सहेली रोजी का विवाह उसके विवाह के दिन ही संपन्न हुआ था। वह पड़ौसी थी। इस अरसे में उसके दो बच्चे पैदा हो चुके। मां बनने से पहले उससे जो स्नेह था अब वह कम हो गया। उसके दुलारे बच्चे को घर लाते समय पति और सास उसे दुलार करते थे उसे देखकर उसे नफरत होती थी, बच्चे और रोजी से। वह भीतर के कमरे में जाकर बिस्तर पर लेटकर सिसक-सिसककर रोती। चुपके से आंसू पोंछती।

उसने सुना कि रोजी ने एक और बच्चे को जन्म दिया है किंतु फिर भी उसके घर जाकर उससे न मिली।

पति की मां अकसर ताने दिया करती थी। पड़ोस के बच्चों को बड़े प्यार से पुचकारा करती, चूमती और कभी-कभी अपने पुत्र की गोद में बच्चे को दे दिया करती। यह सब वह छिपकर देखा करती थी।

शादी हुए पांच साल बीत चुके। आज भी पति उसे एक नववधू जैसी ही मानते हैं। पति उसे बहुत प्यार करते हैं—क्योंकि उसमें प्यार है। वह उन्हें भी प्यार करती क्योंकि प्यार करने को वह मजबूर की गयी थी।

अकेलापन, पीड़ा और अंधकार हमेशा उसे घेरे रहते।

कई रहस्य हृदय में छिपा रखे हैं। फूट पड़े तो ?

इतने समय तक वह रो-रोकर दिन काटती थी। आखिर कल रात को···

मां बरामदे में बैठी पिता की टूटी ऐनक पहने भागवत पढ़ रही थी।

पति शयनागार में चले गये जिसका तात्पर्य था सोने का समय हो गया। वह भी उसके पीछे-पीछे गयी। प्रतिदिन की तरह बाल खोलकर और संवारकर जरा ऊपर करके जूड़ा बनाया।

तब पति ने उसे छाती से लगाकर धीरे से कहा "तंकम"।

उसने भी धीमे स्वर में कहा "हां।"

"तू मुझसे प्यार करती है न ?"

"कैसी बात पूछते हो ?"

"तो मेरी बात मानेगी।"

"हां।"

फिर थोड़ी देर तक कुछ भी न बोले।

वे सोच में पड़ गये। गंभीर मुद्रा में हैं। शायद तलाक देने की बात सोच रहे होंगे।

यदि ऐसा हो तो अच्छा ही है। कम से कम उनका भविष्य तो सुधर जायेगा। चार साल बीतने पर भी उन्हें बच्चा प्राप्त होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। शायद उसके बारे में ही वे गौर कर रहे हैं। अन्यथा वे इतने गंभीर न बैठे होते।

उसे आलिंगन में लेकर कहा, "कल सवेरे हम डाक्टर के पास चलेंगे। शादी हुए चार साल बीत गये। हम पता तो करें कि आखिर बात क्या है।"

यह सुनकर वह चौंकी।

उसके होंठों से अपने होंठों को अलग करने का प्रयास किया।

कुछ नहीं कहा कि जायेंगे या नहीं। कल उसके बारे में अंतिम निर्णय हो जायेगा। सब कुछ प्रकट हो जायेगा।

दिल धड़कने लगा। वह चिंतित हो उठी, मन में सोचा कि क्या अच्छा हो यदि मौत आ जाये।

याद नहीं कितनी देर तक वह यों लेटी रही। घंटी के दो बार बजने का नाद उसने सुना। शायद यह घंटी भी पीड़ा से व्यग्र है।

प्यास लगी। एक गिलास पानी पीने उठी। उसने अपने शरीर पर से अपने पति का हाथ धीरे से हटाया। वे खर्राटे ले रहे थे।

दो गिलास भर पानी पिया। फिर आकर लेट गयी। बुखार सा लगा। थोड़ी सी सर्दी भी लगी। हृदय में अनेक पीड़ाएं थीं, अंधकार घना हो गया।

आंखें मूदकर लेट गयी। मन का अंधकार बाहर की ओर और बाहर का अंधकार मन की ओर प्रवाहित होता रहा। अंतर्द्वंद्व चलता रहा…हाय रे सूनापन… अंधकार…काश ! कि मैं अब कभी उठायी न जाऊं।

लेखक-परिचय

1. एन. पी. मुहम्मद

सन् 1928 ई. में कोषिक्कोड के आसपास उनका जन्म हुआ। हाईस्कूल करने के बाद स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया। कुछ समय बाद सभी सार्वजनिक कार्यों से अलग होकर एकात अध्ययन में व्यस्त हुए। वे एक अच्छे प्रबधकार एवं चितक भी है। साहित्य की किसी विशेष धारा से उनका कोई संबंध नही। उनके पात्र आत्मा की पवित्रता के लिए लड़ते हैं। जिस मुसलमान समाज मे उनका जन्म और पालनपोषण हुआ, उस समाज का सच्चा चित्रण उनकी कहानियों में मिलता है।

कुछ रचनाएं : टोपी और नकाब,[1] सज्जनों का लोक, मृत्यु ने लोरी गायी, बयालीसवें घर में शैतान।

कवितायें—पसली, प्रेसिडेंट की पहली मृत्यु।

कहानियां—पेड़, अरब का सोना (कहानी संग्रह)।

उपन्यास—हिरण्यकश्यपु।

2. पट्टत्तुविला करुणाकरन

मलयालम वर्ष 1101 कर्किटकं (आषाढ़) महीने में कोल्लम शहर में इनका जन्म हुआ। कालेज शिक्षा मद्रास और न्यूयार्क में हुई। इसके बीच थोड़े समय तिरुवनंतपुरम 'केरल कौमुदी' दैनिक पत्र मे काम करने का मौका इनको मिला था। उच्च शिक्षा प्राप्त करके न्यूयार्क से लौट आने के बाद 'पियेर्स-लेरली' नामक विदेशी कंपनी में काम करने लगे। उन्होंने कुछ कहानियां ही लिखी हैं। लेकिन वे इतनी मार्मिक है कि मन पर गहरी छाप डालती हैं।

---

1. नकाब—केरल में पर्दा प्रथा नहीं। केरल की मुस्लिम औरतें सिर पर एक बारीक रंगीन कपड़ा डालती हैं जिसे तट्टा कहते है।

अंतर्मुखी होने के कारण किसी खास विचारधारा या सार्वजनिक दल से उनका कोई संबंध नहीं है। वे अपनी जिंदगी सबसे पृथक रहकर ही बिताते है।

कुछ रचनाएं : कण्णे मटङ्ङ् बूर्षवा स्नेहितन (आंखें लौटीं)।

कहानी संग्रह—मुनि।

3. कोविलन

उनका असली नाम वट्टम परंपिल वेलप्पन अय्यप्पन है। मलयालम वर्ष 1098 गुरुवायूर के पास एक गरीब परिवार में उनका जन्म हुआ। संस्कृत कालेज में आचार्य की शिक्षा के बीच में ही पढ़ाई छोड़नी पड़ी। 1942 ई. में 'भारत छोड़ो' आंदोलन मे उन्होंने भाग लिया। 1943 ई. में 'नेवी' में भर्ती हुए पर एक साल बाद ही नेवी क्रांति के कारण वहां से भी वे निकाले गये। चार साल के बाद सेना की सिगनल कोर में शामिल हो गये। 1968 ई. में हवलदार मेजर के पद पर रहते उन्होंने अवकाश प्राप्त किया। उनकी जिंदगी दर्द और परेशानियों से भरी थी। उनकी प्रारंभिक रचनाओं में यह स्पष्ट दिखता है। यद्यपि उन्होंने एक कवि के रूप में ही साहित्य में पदार्पण किया था, पर उन्होंने कहानियां और उपन्यास ही अधिक लिखे। मलयालम कहानी साहित्य में "सैनिकों की कहानियां" विधा का विकास करने में उन्होंने अपना योग दिया।

कुछ रचनाएं :

कहानी संग्रह—एक जमाने में मनुष्य था, हड्डी का एक टुकड़ा, एक पाव बारूद, यह जिंदगी अनाथ है।

नाटक—तेरा विश्वास तेरा भला करेगा।

उपन्यास—मग्न हृदय, ए माइनस बी, तोट्टम (त्योहार)।

4. एन. मोहनन

सन् 1933 ई. में रामपुरम में उनका जन्म हुआ। उनकी माता प्रशस्त कवयित्री एवं कहानीकार ललितांबिका अंतर्जन्म हैं। कालेज शिक्षा समाप्त करने के बाद दो साल तक किसी कालेज में प्राध्यापक के रूप में कार्य किया।

बाद में सरकारी सेवा में आ गये। वे मलयालम कहानी साहित्य धारा के शक्तिशाली स्वच्छंदतावादी कहानीकार है।

कुछ रचनाएं : मेरी कहानी (तेरी भी), दुख की रातें, पूजा के लिए न चढ़े फूल (कहानी संग्रह)।

5. एम. गोविंदन

जन्म सन् 1919 ई. में हुआ। जिंदगी की कठिनाइयों के कारण उच्च शिक्षा से वंचित रहे। मद्रास में एक छोटी नौकरी मिली थी। कुछ समय वे पढ़ाई में लगे रहे। एम. एन. राय के आराधक तथा रेडिकल ह्युमेनिस्ट बन गये। राय के साथ उनकी मित्रता ने उनकी चिंतन शक्ति को विकसित किया। केरल प्रदेश बनते ही त्रिवेंद्रम में सरकारी सेवा में नियुक्त हो गये। कम्युनिस्ट सरकार के प्रति विरोध प्रकट करने के लिए उन्होंने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। केरल भर मे जनतत्र वेदियों की स्थापना करके तथा 'समीक्षा' नामक मासिक पत्रिका का संपादन कर उन्होंने अपने दर्शन तथा सिद्धातों का खूब प्रचार किया। शीघ्र ही भारत के बुद्धिजीवियों के बीच उन्होंने आदरणीय स्थान पा लिया था। उनकी अद्भुत मौलिक चिंतन-शक्ति ने मलयालम में दार्शनिक व. रचनात्मक स्तरो पर गहरा प्रभाव डाला है। अंग्रेजी व मलयालम कवि के रूप में वे पर्याप्त चर्चित हुए। (ये अब नही रहे)।

कुछ रचनाएं :

कविता संग्रह—ज्ञान स्नान, मेनका।

कहानी संग्रह—रानी की कुतिया।

नाटक—तू मनुष्य को न मारना।

निबंध—अन्वेषण का आरंभ, थोड़ा सोच ले तो क्या? ज्ञान के फल, मानवीय मूल्य, साम्यवाद से आगे बढ़ना, शैतान और मनुष्य, वसीयतनामा, बषीर का लाडला चूहा, समस्यायें-समाधान।

6. जयदेवन

पी. जनार्दन मेनन इनका असली नाम है। अर्नाकुलम महाराजा कालेज व लॉ कालेज की शिक्षा समाप्त करने के बाद कुछ समय तक केरल हाईकोर्ट में वकालत की। दिल्ली में केंद्र सरकार के विधि मंत्रालय में राज्यभाषा आयोग मे भी कार्यरत रहे। उन्होंने आकाशवाणी के लिए बहुत नाटक, कहानियां आदि लिखे हैं। ।

कुछ रचनाएं :

कहानी संग्रह—गोपुर द्वार पर, घमंड।

उपन्यास—वृश्चिक हवा में।

7. काक्कनाटन

काक्कनाटन जार्ज वर्गीस का उपनाम है। सन् 1932 ई. में कोल्लम में उनका जन्म हुआ। उनके पिता जार्ज काक्कनाटन ने गिरजाघर व वहां की दूषित प्रवृत्तियों के विरुद्ध अपनी आवाज उठायो। वे प्रगतिशील युवक थे। इसलिए जब उनके ही समाज ने उनका बहिष्कार किया तो उनको अपनी जन्मभूमि से पलायन करना पड़ा। सन् 1922 ई. में बी. एस. सी. पास करके उन्होंने मद्रास व तिरुनाप्पिल्ली में काम किया। फिर दिल्ली मे रेल मंत्रालय में दो साल तक काम करते रहे। पूर्वी जर्मनी के निमंत्रण पर टेर्पसिग विश्वविद्यालय में "भारत की वर्तमान सामाजिक, आर्थिक परि-स्थितियों में साहित्यकार का उत्तरदायित्व" विषय पर अनुसंधान करने के लिए गये। लेकिन एक वर्ष के बाद अनुसधान को अधूरा छोड़कर वापस आ गये। अब वे अपना सारा समय साहित्य की सेवा में लगा रहे है। आधुनिक प्रमुख कहानीकारों में उनका अच्छा खासा स्थान है।

कुछ रचनाएं :

कहानी संग्रह—व्यापार, स्फटिक घर, सत्रह, युद्ध का अंत,
बाहर का रास्ता।

उपन्यास—साक्षी, चेतक, सातवीं मुद्रा, गरम मेखला, अज्ञान की तराइयां,
परंकी पहाड़।

8. ओ. वी. विजयन

जन्म सन् 1931 ई. में हुआ। वे कवि, उपन्यासकार एवं कहानीकार है। साथ ही अखिल भारतीय स्तर कें प्रख्यात कार्टूनिस्ट भी। अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद तीन साल के लिए उन्होंने प्राध्यापक का काम किया और बाद मे दिल्ली के शंकर्स वीकली मे व्यंग्य-चित्रकार बन गये। वे पेट्रियट दैनिक के व्यंग्य चित्रकार भी रहे। इडियन एक्सप्रेस, हिंदुस्तान टाइम्स, लिंक आदि पत्रों के वे आर्ट क्रिटिक है। मलयालम कहानी, उपन्यास में नवीन प्रवृत्तियां लाने वालो में उनका महत्वपूर्ण स्थान है।

कुछ रचनाएं :

कहानी संग्रह—तीन युद्ध, उच्च कोटि।

उपन्यास—खसाक का इतिहास।

9. एम. मुकुंदन

सन् 1942 ई. में पुराने फ्रांसीसी प्रदेश माही में उनका जन्म हुआ। फ्रांसीसी ढंग की शिक्षा हुई। शैशवावस्था मे लबे अरसे तक बीमारी के कारण वे अपनी पढ़ाई पूरी न कर सके। सन् 1961 ई. में नौकरी की खोज मे दिल्ली आये। एक फ्रांसीसी स्कूल मे और मलयालम स्कूल में दो वर्ष तक काम किया। 1961 ई. से अब तक वे कहानी व उपन्यास लेखन में जुटे हुए हैं। वे आधुनिक मलयालम कहानी के प्रणेताओं मे से एक है।

कुछ रचनाएं :

कहानी संग्रह—घर, नदी और नाव, वेश्याओं ! तुम्हारे लिए एक अवलंब, साढे पांच वर्ष उम्र का बच्चा।

उपन्यास—देहली, आसमान के नीचे, आविला का सूर्योदय, हरिद्वार में घंटी बजती है, यह दुनिया और उसमे एक छोटा मनुष्य, मय्यषि नदी के किनारे पर।

10. एम. पी. नारायण पिल्लै

सन् 1939 ई. में जन्म। 1960 मे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से बी. एस. सी. की उपाधि ली, पांच साल तक दिल्ली के योजना आयोग में

काम किया । 1966 ई. में हांगकांग के फार ईस्टर्न इकोनोमिक्स रिव्यू में सहसंपादक के पद पर नियुक्त हुए । बंबई के 'काममं' नामक प्रकाशन में भी रहे । 1963 ई. से मासिक पत्रों में लिख रहे है । उनका एक कहानी संग्रह 'मुरुकन नामक सपेरा' प्रकाशित हुआ है ।

11. तुलसी

तुलसी इनका उपनाम है । सन् 1916 ई. में जन्म । अंग्रेजी साहित्य को मुख्य विषय के रूप मे लेकर बी. ए. पास किया । शिल्पविधान की दृष्टि से सुंदर कहानियों की रचना करने वाले तुलसी नये कहानीकारों में अग्रणी हैं ।

कुछ रचनाएं :

उपन्यास—टापु, युवती, आर्द्रा, राग, चटकें गरमी की सीमा ।

कहानी संग्रह—करेला की निचोड़ प्रतिदिन, तू और तेरा रास्ता, लाल ज्वाला की स्त्री, अभिशप्त रात ।

12. पुनत्तिल कुंजब्दुल्ला

दक्षिण मालबार में 1942 ई. में जन्म हुआ । बी. एस. सी. पास करने के बाद अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में चिकित्साशास्त्र पढ़ने के लिए भर्ती हुए । अलीगढ़ मे पढ़ते समय परिवार तथा समाज के विरोध की अवहेलना करके उन्होंने एक ईसाई लड़की मरियाम्मा के साथ विवाह किया । 1971 ई. में पत्नी की मृत्यु हुई । एम. पी. मुहम्मद की कहानियों की तरह ही कुंजब्दुल्ला की कहानियों में भी मुस्लिम समाज के अंधकारपूर्ण पहलुओं का चित्रण पाया जाता है ।

कुछ रचनाएं :

उपन्यास—गलती, अलीगढ़ का कैदी ।

कहानी संग्रह—चाक, पैदल सेना का आगमन ।

13. सेतु

पूरा नाम ए. सेतुमाधवन । जन्म 1942 ई. में । बी. एस. सी. पास करने के बाद छह साल तक उत्तर भारत के विविध स्थानों पर उन्होंने काम किया ।

स्टेट बैंक ऑव ट्रावनकोर से सम्बद्ध रहे है। नयी पीढ़ी के एक ख्याति प्राप्त कहानीकार।

कुछ रचनाएं :

कहानी संग्रह—प्रकाश का उद्गम, सांप और सीढ़ी।

नाटक— अस्तभय।

उपन्यास—हम गुलाम है, गीली मिट्टी, अज्ञात रास्ते।

14. सक्करिया

पोल सक्करिया इनका पूरा नाम है। 1945 ई. में मध्य ट्रावनकोर में इनका जन्म हुआ। एम. ए. पास करने के बाद कालेज में प्राध्यापक हो गये। एक साल के लिए रूसी टायर वर्क्स की कोयंबटूर शाखा के मैनेजर पद पर कार्य किया। छोटी उम्र में ही साहित्य रचना मे लीन सक्करिया समसामयिक प्रकाशनों में खूब लिखते है। अब तक उनके दो कहानी संग्रह प्रकाशित हुए है।

15. एम. सुकुमारन

जन्म 1943 ई में पालघाट जिले में हुआ। हाईस्कूल की पढ़ाई समाप्त करने के बाद त्रिवेंद्रम में महालेखा पाल के कार्यालय मे अवर श्रेणी लिपिक के पद पर रहे हैं। मलयालम मे पायी जानेवाली विचारधाराओं से अछूते रहकर जीवन-संबंधी कथाओं की रचना करते है। ट्रेड यूनियन मे सक्रिय भाग लेते हैं। क्रांति में भाग लेने के कारण सस्पेंशन में भी रहे।

कुछ रचनाएं :

उपन्यास—चट्टान, नदीमुख।

16. प. पद्मराजन

1945 ई. में आलप्पुषा में जन्म हुआ। रसायन शास्त्र में बी. एस. सी. की उपाधि प्राप्त की है। 1965 ई. से लेकर आकाशवाणी के त्रिवेंद्रम केंद्र

में उद्घोषक का काम कर रहे हैं। गत कई सालों से निरंतर कहानियां लिख रहे हैं।

कुछ रचनाएं :

कहानी सग्रह—प्राहलिका, दूसरों की गरमी, अपर व्यक्ति, धुआंधार ऐनक, एक, दो, तीन।

उपन्यास—हे नक्षत्र !, पहरा, ऋतुभेदों का पुरस्कार, यहां तक, किराये के लिए एक हृदय।

17. ई. हरिकुमार

1943 ई. में जन्म बुआ। मलयालम के विख्यात कवि ईटश्शेरी गोविंदन नायर के सुपुत्र हैं। मैट्रिक पास होने के बाद नौकरी की खोज में कलकत्ता गये। वहां किसी व्यापारी संस्था मे काम करने के साथ-साथ सायंकालीन कक्षाओं में भी जाते रहे तथा इस प्रकार बी. ए. पास किया। कलकत्ता, बंबई, दिल्ली इन तीन महानगरों में उन्होंने काम किया है। कम कहानियां लिखने पर भी उनके द्वारा प्रतिपादित विषयों की गहराई और सुंदर दुरुस्त शैली के कारण उनकी गणना अग्रणी लेखकों में होती है।

रचनाएं :

कहानी संग्रह—तिलचिट्टे।

18. अशमन्नूर हरिहरन

पूरा नाम टी. के. हरिकुमारन नायर है। जन्म 1940 ई. में। मनोविज्ञान में एम. ए. करने के बाद केंद्र सरकार के प्रतिरक्षा विभाग में मनोवैज्ञानिक के रूप में नियुक्त हुए। कवि व उपन्यासकार भी हैं।

कुछ रचनाएं :

निबंध—मानसिक रोग

उपन्यास—पीली चिड़ियां

खंडकाव्य—सेहुंड